## बेबे जी

*(एक व्यक्ति के मन में संसार की तस्वीर बनाने का विचार आया। वर्षों मेहनत के पश्चात् उसने राजधानियाँ चित्रित कीं, हुकुमतें दिखाई, पर्वत, समुद्र, बंदरगाहे, जहाज़, मछलियों, बादलों, घोड़ों और लोगों का चित्रण अनेक रंगों में कुशलता से किया। मृत्यु से कुछ समय पूर्व उसने देखा कि संसार की बजाए इसमें चित्रकार के स्वयं के नैन नक्श दिखाई देने लगे हैं जार्ज लूई बोरखेज़)*

छठी कक्षा में पढ़ता था उस समय। हम सभी बहन भाई स्कूल जाने से पहले चूल्हे के इर्द-गिर्द बैठे थे। कुत्ता और बिल्ला हमारी तरह ही पूरे ठाठ से हम लोगों के बीच बैठते थे। बेबे ने रोटी तवे पर डाली तभी पूर्व से घोड़े के हिनहिनाने का स्वर सुनाई दिया और पलक झपकते ही मामा जी आ गए। मामा जी निहंग सिक्ख थे। ननिहाल, हरियाणा में था। मामा जी ने बेबे को माथा टेका। आशीर्वाद देकर कहा, “तवे पर जब पहली रोटी डाली थी तभी तू याद आया। उसी क्षण सामने आ गया। तू कहीं बड़ा बाबा तो नहीं?”

मामा जी ने कहा, “न बेबे न। उसके जैसा वही था। न पहले उसके जैसा कोई हुआ है न बाद में। परन्तु ये सत्य है कि प्रत्येक बहन बेबे नानकी होती है”।

ये लेख कहाँ से प्रारम्भ करूँ, समझ नहीं आ रहा क्योंकि घटनाएँ तेज़ वेग में अव्यस्थित ढंग से आ जा रही हैं। इसलिए गुरू महाराज के नाम का मंगलाचरण उचित होगा। सम्भव है बाबा जी को याद करने से इस लेख के नैन-नक्श कुछ सही हो जाएँ। सुर ठीक हो, आलाप सही हो तो गायन स्वयं ही अच्छा हो जाता है अकसर।

पिता जी का ननिहाल भी हरियाणा में था। बड़ी अम्मा 90 वर्ष तक जीवित रही किन्तु गरीबी होते हुए भी संसार से सुखी विदा हुई। जब ननिहाल से कोई मिलने आता तो बेबे जी उनके साथ हरियाणवी में बातें करती। हमारे साथ हमारी भाषा में बात करती। अम्मा ने समस्त आयु एक भी वाक्य पंजाबी का नहीं बोला। वह हमें गोद में बिठाकर समस्त लोक कहानियाँ हरियाणवी में सुनाते हुए कहती, “थारी माँ की एक बात अच्छी नहीं। भाषा नहीं इंसान को छोड़नी चाहिए अपनी। अच्छी है थारी माँ, पर जौनसा भाषा छोड़ दे वह बे-एतबारा होआ करे है। बे-एतबारे बंदे का अच्छापन के काम?”

दो ढाई वर्ष की आयु का बचपन मुझे याद है। सिर पर घड़ा रखकर माँ कुएँ पर पानी भरने जाती तो प्रत्येक चक्कर में मैं उसके कमीज़ का किनारा पकड़ कर उसके साथ जाता। अनेक बार टांगों में उलझ कर गिर जाता और माँ भी मुश्किल से गिरने से बचती। डांट तो हमेशा ही मिलती, परन्तु कभी कभी एक आधा थप्पड़ भी मिल जाता, तब भी जाने से न रुकता।

बिल्कुल इसी तरह मेरे साथ कुत्ता और बिल्ला करते। जब बिल्ले को भूख लगती तो वह म्याऊँ म्याऊँ करते हुए टांगों के बीच आकर रोकने का प्रयास करता। ठोकर लगने पर चिल्लाता। तब भी कुछ खाने के लिए देने की बजाए मैं उसे गोद में बिठाकर सहलाने लगता। वह सो जाता और खराटे मारता। हम बहुत हँसते कि जानवर कितनी जल्दी मूर्ख बन जाते हैं। थोड़ा सहलाओ, न भूख याद न प्यास। ये अब पता चलता है कि प्रेम के सामने जानवर तो क्या, व्यक्ति भी मुग्ध हो जाता है। भूख प्यास की बात तो छोड़ो प्यार करने वाले ये भी भूल जाते हैं कि जीना अच्छी बात है या मरना ठीक है। गुरू गोबिन्द सिंह जी ने प्रेम से बाबा बंदा सिंघ के सिर पर हाथ रख दिया, वह अपनी सारी तपस्या, ज्ञान भूलकर उनका शिष्य बन गया। संसार से विरक्त जंगल में बैठे इस हठी तपस्वी को गुरू बाबा जी ने किसी दूसरे काम में लगा दिया, जिसके बारे में उसने सोचा भी नहीं था। एक बार नहीं बाबा बंदा सिंघ लाखों बार गुरू के नाम पर शहीद होने के लिए तैयार हो गया।

बेबे के बारे में थोड़ी सी बातें करनी है भाई, परन्तु साथ साथ इसमें दूसरी बातें भी होती रहेंगी। पेंटिग की अपेक्षा लेखन में यही बड़ा अन्तर है। एक ही झलक में सारी पेटिंग दृष्टि में आ जाती है। लेखन का महल एक एक ईंट ईंट रखने से निर्मित होता दिखाई देगा।

चार वर्षीय मेरा बेटा बेबे जी की गोद में बैठकर पूछने लगा, “बेबे जी मुझे पता चला है कि गाँव में आपने पशु रखे हुए थे। बताओ कौन कौन से थे?” बेबे ने कहा“ कटरू, बछरू तो सभी घरों में होते हैं परन्तु मैंने मुर्गे और मुर्गियों को पाला हुआ था। खरगोश होते। कुत्ता और बिल्ला होते। ये जानवर बहुत भले थे। कहना मानते थे। तू मेरा कमाल देख पुत्र, तेरे पापा जैसे खतरनाक जानवरों को भी मैंने पाला।”

गाँव से जब एक बार पटियाला आई, बेटे का जन्मदिन मना रहे थे। मित्र खिलौने लेकर आए थे। इतने अधिक कि ढेर लग गया। बेबे ने कहाइतने खिलौनो का तेरा बेटा क्या करेगा? मैंने कहा बेबे ये बहुत काम के खिलौने हैं। दिमाग को तेज़ करने वाले, बुद्धि बढ़ाने हेतु वैज्ञानिकों ने बनाया है इन्हें। बेबे ने कहा जब तू छोटा था मैं दरवाज़े के नीचे की तरफ लगी जंजीर को तेरे हाथों में पकड़ा देती थी, तू उसे छनकाते छनकाते बड़ा हो गया। इसका मतलब तुझे तो बिल्कुल अक्ल नहीं आई। चम्मच कटोरी या जंजीर का कुण्डा कहाँ दे सकता है अक्ल?

घर में बहुत गरीबी थी। कर्ज कभी उतरा नहीं था। फीस एक रूपया मासिक होती और चंदा दस पैसे। एक रूपया मास्टर जी माफ कर देते तो दस पैसे माफ करवाने के लिए नई अर्ज़ी लिख देता। मास्टर जी कहते कि चंदा कभी माफ

नहीं होता। मेरे जैसे पाँच चार और भी थे कक्षा में। हम इस बात पर बहुत हँसते कि मास्टर जी एक रूपया तो सरलता से माफ कर देते हैं परन्तु दस पैसे माफ करने के लिए रोते क्यों हैं? पढ़ाई में होशियार होने के कारण मास्टर जी कभी कभी अपनी तरफ से दस पैसे दे देते थे। वर्ष 1966 में आठवीं कक्षा की मैरिट लिस्ट में नाम आया तो आठ रूपये महीना का वजीफा मिलने लगा। एक वर्ष पश्चात् 96 रूपये मिले तो माँ की हथेली पर रख दिए। इसके बदले में लाखों आशीर्वाद मिले। इन पैसों का क्या करें? घर में संदूक नहीं था। सारा वर्ष रजाईयों, गद्दों पर धूल-मिट्टी गिरती रहती। अस्सी रूपये का संदूक समाना शहर से लेकर आए और 16 रूपये के लड्डू पड़ोसियों में बांटे और स्वयं भी मौजें कीं। ये संदूक अभी तक न तो टूटा है न ही कहीं से गला है।

बड़ा भाई हवाई सेना में भर्ती हो गया तो बेबे बहुत रोई। न दिन देखती न रात, रोती रहती। बहुत समझाते। कहती, मेरे वश में क्या है? रोने को किसका मन करता है? नहीं रुका जाता, क्या करूँ? दो तीन महीने ऐसे बीत गए। हमारे पन्नूओं के भाईचारे में से बहुत समय पहले जीत सिंघ चाचा भर्ती हुए थे। इनकी माँ की मृत्यु तो बहुत समय पहले ही हो गई थी, पालन पोषण बाबा जी ने किया था। बड़े जीत सिंघ को फौज में भर्ती करवा दिया। हमने सोचा बेबे को बाबा जी के पास लेकर जाएँ और उनसे पूछे कि उनका मन कितने महीनों के बाद लगा था। मैं बेबे जी के साथ गया। बाबा जी घर में ही थे। माथा टेका और बैठ गए। बातें शुरू हुई तो बेबे जी ने पूछा बाबा जी गुरुदयाल के फौज में जाने के बाद मेरा मन नहीं लगता। जब अपना जीत भर्ती हुआ था तब आपका कितने समय बाद मन लगा था?" बाबा जी ये सुनते ही रस्सी बनाते बनाते रोने लगे मेरा तो अब तक मन नहीं लगा। ग्यारह वर्ष हो गए जीत को भर्ती हुए, अब तक वही हाल है।

बेबे घर आकर चुपचाप बैठ गई। हम बच्चे बहुत हँसे। और करवाओ बड़े हकीम से ईलाज। ले आए वहाँ से जलेबियाँ।

बैल मर गया तो कलवाणू गाँव के बनिए चूहड़ मल्ल से चार सौ रूपये का गोरा बैल खरीदा। छह महीने बाद वह ब्याज लेने घोड़ी पर आता था। दो लठैत उसके पीछे पीछे होते। एक के हाथ में भाला होता। चूहड़ मल्ल पहले तो पैसे मांगता, जब उत्तर न में मिलता तो अपने लोगों को अन्दर जाने का इशारा करता। जो दस बारह मन दाने अपने खाने के लिए रखे होते उन्हें उठवा कर ले जाता। शराब निकालने वालों के घरों के कोनों को जैसे पुलिस भाले से खोद खोद कर शराब देखती है कि कहीं शराब दबा कर तो नहीं रखी हुई, उसी प्रकार कहीं घड़ों में दाने डालकर छिपाकर तो नहीं रखे हुए, वह भाले से खोद खोद कर तलाशी लेते। एक बार दो मन

दाने इस कारण बचे क्योंकि बेबे ने दो थैले तूहड़ में छिपाकर रखे हुए थे। खुश होकर कहने लगी अब सब्जियाँ बीज देंगे। दो महीने तक इन दानों से गुज़ारा हो जाएगा, तब तक सब्जियाँ आ जाएँगी। तब मौजें ही मौजें। तराजू तो घर में था परन्तु बट्टे नहीं थे। सीधा सादा हिसाब होता। न सब्जी बेचने वालो के पास पैसे होते न खरीदने वालों के पास। ग्राहक दाने लेकर आते। करेले एक बार दाने दो बार लेते। दाने एक बार कद्दू दो बार देते। अन्य सब्जियाँ दानों के बराबर।

मुझे पुलिस ने अनेक बार गरिफ्तार किया। दरबार साहिब पर हमला हुआ तब तो फौज ही पकड़ने के लिए आ गई थी। आधी रात। चारो तरफ सर्च लाइटें। पड़ोसियों की छतों पर पोजीशन लेकर बैठे सैनिक, बख्तरबंद गाड़ियाँ, ये सब देखकर मैं हैरान हो गया। मन में सोचा जितना खूंखार ये लोग मुझे समझ रहे है, अच्छा होता यदि वास्तव में मैं ऐसा ही होता। उस समय भी मुझे बिल्कुल डर नहीं लगा। जब कभी चूहड़ मल्ल की रेड याद आ जाते हैं, तब शरीर कांपने लगता है। कभी कभी मैंने स्वयं से प्रश्न भी किया कि ऐसा क्यों होता है? एक दिन माँ से पूछा हम गुरू दशमेश पिता के सिंघ, एक बनिए से क्यों डरते थे? उत्तर, “बनिए से कौन डरता है? हम तो बेटा सांप से, शेर से नहीं डरते। बनिए से नहीं, कंगाली से डरते थे। संसार में गरीबी से अधिक डरावना  न कोई जानवर है न हथियार। दुश्मन के घर भी दानों से कभी खाली न हों महाराज।”

जब वह घर में रहती तो दिन रात पर्व जैसे प्रतीत होते। पढ़ते, खेलते, पशु चराने जाते, कृषि में सहयोग देते, वानरों की तरह वृक्षों पर चढ़ते उतरते, छलांगे लगाते। नहर में छलांग लगाते फिर रेत पर लेटते फिर से नहर में छलांग। चोट, घाव कोई बीमारी आसपास भी नहीं थी। पूरा घर महकता। जब कभी रिश्तेदारों से मिलने गई और दो तीन दिन तक वापस नहीं आती तो हम सभी खामोश घर में इधर उधर घूमते रहते। आपस में बातचीत करने का मन भी न करता। पिता जी कठोर स्वभाव के थे, परन्तु वे इस बात का विशेष ध्यान रखते कि जब इनकी माँ घर में नहीं है तो इन्हें डांटना नहीं क्योंकि इनका रोना बन्द नहीं होगा। जब कभी आवश्यकता पड़ने पर हमारे लिए कपड़े या पुस्तकें आदि न खरीद पाती तो उस समय रोती जब हम स्कूल चले जाते। ऐसा अवसर आने पर वह मायके चली जाती। दोनों मामा धनी थे उनके पास पचास एकड़ ज़मीन थी। वहाँ से खाली हाथ आने का कोई मतलब ही नहीं था। दूध न देने वाली गाय को वापस ले जाते और दुधारू गाय दे जाते। घी देते। मक्खन देते, खोया देते, घोड़ी पर सवारी कराते। स्वर्ग और नरक क्या होता है भला?

पढ़ाई में मैं होशियार था। पांचवी, आठवीं, दसवीं में से बहुत अच्छे अंक लेकर पास हुआ। गांव और रिश्तेदारी में बहुत प्रशंसा मिली। बड़ा भाई गुरदयाल जो मुझसे दस वर्ष बड़ा था, बहुत ही मेहनती और बुद्धिमान् था किन्तु घर की गरीबी कारण कॉलेज जाने की अपेक्षा वायु सेना में सिपाही भर्ती हो गया, अस्सी रूपये मासिक वेतन। वहाँ उसने अंग्रेजी में एम.ए की और उसकी लिखित एवं मौखिक अंग्रेजी से मेरे विश्वविद्यालय के प्रौफेसर प्रभावित होते। दसवीं के परिणाम के पश्चात् मैंने पिता से कॉलेज में दाखिला लेने की बात की। पिता ने कहा, "घर में कोई पशु है, बताओ उसे बेच देता हूँ। तेरी बेबे के पास कोई गहना है उसे बेच दे। बनिया और कर्ज नहीं देगा। एक मैं ही बचा हूँ। मुझे बेच दे। मेरी इच्छा है कि तू आगे पढ़ाई कर, अफसर बने, बन सकता है तू, मुझे किसी किसान के पास नौकर रखवा दे, मैं तैयार हूँ।" ऐसी बातें मुझे बहुत जल्दी समझ में आती हैं। मैंने सोचा पिता के साथ कीमती समय नष्ट करने से अच्छा है ननिहाल चला जाऊँ। चलते समय माँ ने कहा अक्ल और विनम्रता से बात करना। तेरी मामी बहुत अच्छी है। उसके साथ अलग और मामा के साथ अलग बात करना। जाओ गुरू महाराज भला करे।

सामान्यतः कहा जाता है कि ननिहाल नाना-नानी के साथ होते हैं। मेरे नाना नानी तो कब के संसार से जा चुके थे। मामा-मामी फरिश्तों, परियों जैसे थे। जब पहुँच कर बताया कि दसवीं में से बहुत अच्छे अंक आए तो अनेक आशीषें मिलीं। खाने के लिए अनेक प्रकार के व्यंजन बनाए। बड़े मामा जी सोने के लिए छत पर चले गए जहाँ चार-पाँच चारपाई बिछा रखी थीं। मैंने कॉलेज में पढ़ने की बात शुरू करके पैसे मांगे। मामा ने कहा, "पैसे कहाँ है भानजे। घर में दो रूपये नहीं तू दो सौ मांग रहा है।" मैंने कहा, "मेरे पिता जी को तो उधार भी नहीं मिलते। आपको उधार तो मिल जाएँगे। बनिए से लाकर दे दो।" मामा ने कहा, "फसल की न तो ये ऋतु है न वो ऋतु (अर्थात् न तो फसल बीजने की और न ही काटने की ऋतु है; इन दोनों परिस्थितियों में ही बनिया पैसे देता है), अब उधार नहीं मिलेंगे।" मुझे गुस्सा आ गया, मैंने कहा "मैं जूआ खेलने या शराब पीने के लिए पैसे मांगने नहीं आया। बहुत नेक और बड़ा काम करने का फैसला किया है मैंने। अच्छे काम के लिए यदि पैसे नहीं देने तो ये बता मामा कि अपनी बहन का विवाह गरीब जाट से क्यों किया था।"

मामा जी रोने लगे, "भानजे जिस बात के बारे कुछ पता न हो उसे नहीं कहते। तू समझदार है, मैं तो अनपढ़ हूँ। तेरी बेबे और मासी बड़ी हैं। हम दोनों भाई छोटे हैं। हमें क्या पता था विवाह और मंगनी का। न पैसा न टका। हम बहुत छोटे थे जब तेरे नाना का देहांत हो गया। रिश्तेदार जैसे करते हैं वैसा ही किया। तेरी बेबे

और तेरी मासी का विवाह बिना पैसों के जैसा भी हो सकता था पड़ोसियों ने कर दिया। अब तू सो जा। करूँगा कुछ न कुछ यदि हो सका।"

वे नीचे चले गए। मामी के साथ धीरे धीरे बातें करते रहे। उसके बाद पता नहीं गाँव में कहाँ कहाँ, किस किसके पास गए। मैं सो गया। वे कब सोए पता नहीं। सुबह उठा तो चाय देकर मामी ने कहा, "दोहते स्नान कर ले। परौंठे तैयार हैं। तेरा मामा तुझे पटियाला छोड़ने जाएगा। मेरे मायके संगतपुरे के साथ फतहगढ़ गाँव है। वहाँ एक सरदार है जिसका नाम गुरनाम सिंघ है। वह मेरे भाई का गहरा मित्र है। उसकी कोठी पटियाला में है। स्वयं तो वह रहता नहीं पटियाला में। एक लड़का है लाली। वह बहुत पढ़ा लिखा है। वह कम ही रहता है वहाँ। कोठी खाली रहती है। तेरा मामा एक कमरा उस कोठी में तुझे दिलवा देगा। एक तो तुम्हारा किराया बच जाएगा दूसरे वे लोग हैं भी बहुत नेक।" मामी ने दो पीपे तैयार कर रखे थे। एक पीपे में आधे चावल और आधे में आटा भरा था। दूसरे में पंजीरी, घी का डिब्बा, शक्कर, आचार का डिब्बा, दस बारह परौंठे और छोटा मोटा सामान था। एक कपड़ों की गठरी थी। देते हुए कहा, "दो पगड़ियाँ है। दो कुर्ते पजामों का कपड़ा है। यहाँ से सिलवा देती, तुझे पसंद नहीं आएँगे, पटियाला से सिलवा लेना। कहते हैं वहाँ तो कपड़े में जान डाल देते हैं। हमने तो सारी उम्र बेजान कपड़ो के साथ ही गुज़ार दी," हँसते हुए किराये के लिए दस रूपये अलग दिए और फीस के दो सौ रूपये मेरी जेब में डाल दिए। फिर मामा जी से कहा, "टिकट आप लेना। ये तो टिकट का नाम लेकर वैसे ही पैसे जेब में डाले हैं घग्गू के।" मेरा गाँव घग्गा होने के कारण मेरे ननिहाल के लोग मुझे घग्गू कहते थे। पटियाला की कथा किसी अलग अध्याय में सुनाएँगे किसी अन्य प्रसंग में। अब बेबे की कहानी चलेगी। जितना वर्णन कॉलेज में दाखिल लेने का किया गया है वह अनिवार्य था क्योंकि अपने गाँव से ननिहाल के रास्ते मैंने पटियाला में दाखिला लिया, बेशक बाद में गुरदयाल सिंघ और इन्द्र सिंघ दोनों भाइयों ने बहुत सहायता की।

एक दिन बेबे ने बताया तुम्हारा नाना जवानी में हम सभी बहुत छोटे थे, छोड़ कर संसार से विदा हो गया। तुम्हारी नानी ने पहाड़ जैसी आयु एक बहादुर जरनैल की तरह व्यतीत की। घोड़ी पर सवार होकर स्वयं भैसें चराने ले जाती थी। एक दिन सुबह हल्के अंधेरे में पशुओं को चारा डालने गई। मेरा चाचा वहाँ अपनी भैंसों का दूध दोहने आया हुआ था। उसने तेरी नानी का हाथ पकड़ लिया। तेरी नानी ने कहा"अकेली हूँ। बहुत डर लगता है। मेरी इच्छा है कि तू मेरी बाँह पकड़े। यहाँ अंधेरे में नहीं। दिन में। रोशनी में। कहो तो भाईचारे की सभा बुला लूं? पकड़ोगे बाँह?" चाचा चला गया।

महीने में एक बार ननिहाल तो दूसरी बार अपने घर जाता। गाँव से जब मैं पटियाला की बस पकड़ने के लिए निकलता तो माँ की आँखे छलकतीं। मैं बहुत हँसता और पूछता, "सीमा पर कोई युद्ध लड़ने जा रहा हूँ जो रोना-धोना शुरू कर दिया?" माँ आँखे पोंछते हुए कहती, "बछड़े कट्टे सीमाओं पर शत्रुओं से युद्ध करने नहीं जाते। तुमने देखा नहीं आँखों से दूर होते समय गायें भैंसे भी रंभाने लगती हैं, रस्सी तोड़ने की कोशिश करती हैं। पशु, पक्षी तक, सभी माताएँ ये जानती हैं कि जहाँ तक बच्चे दिखाई देते हैं सब ठीक है। आँखों से दूर शत्रु की सीमा होती है, क्या पता कब क्या हो जाए? तुम्हें अभी इन बातों की समझ नहीं। हो सकता है कभी समझ भी न सको क्योंकि तेरी किस्मत में माँ होना नहीं लिखा।" इसके बाद आशीर्वाद देकर भेजती।

हज़रत मुहम्मद साहिब ने पुरुषों को आदेश दिया था "स्त्रियों का सम्मान करो, आपके बच्चों का स्वर्ग उनकी माताओं के कदमों के नीचे छिपा हुआ है।"

माँ बहुत ही अज़ीब शै होती हैं। मैंने पन्द्रह एकड़ ज़मीन सस्ती समझ कर टीले खरीदे और उन्हें समतल करने के लिए आठ ट्रैक्टर चलवा दिए। एक टिटिहरी को बहुत तेज़ी इधर उधर भागते हुए शोर मचाते देखा। मैं समझ गया कि यहाँ कहीं इसके बच्चे हैं। प्रत्येक जगह देखा कहीं दिखाई नहीं दिए। ट्रैक्टर फिर से चलने लगे। एक स्थान ऐसा आया लगा जैसे टिटिहरी उस दैत्याकार ट्रैक्टर को टक्कर मार देगी। मैंने ट्रैक्टर रोकने का इशारा किया। दो बच्चे सहमे हुए मिल गए। बच्चों के समीप लाठी गाड़ दी गई और उस पर एक कपड़ा बांध दिया। एलान हुआ कि लाठी पर बंधा कपड़ा टिटिहरी की विजय पताका है और इस आधा एकड़ ज़मीन पर ट्रैक्टर उस समय चलेगा जब ये टिटिहरी अपने बच्चों सहित किसी अन्य स्थान पर चली जाएगी। मैंने छोटे चूचों की रखवाली करती मुर्गी को कुत्तों पर हमला करते देखा है। अपनी संतान के लिए माताएँ कोई भी खतरा उठा सकती हैं। माता गुजरी* का कृत्य यही सिद्ध करता है कि समस्त मानवता की माँ होने के कारण उसने सब की रक्षा की।

कुरूक्षेत्र के मैदान में अर्जुन । वह एक महान् एवं बुद्धिमान् योद्धा था। उसे समझाने वाला कोई सामान्य व्यक्ति नहीं अपितु स्वयं भगवान् थे। तब भी बहुत समय लगा। तर्कों से प्रभावित होकर उसने पुनः अस्त्र नहीं उठाए। भगवान् श्री कृष्ण ने अपना त्रैकालिक विराट् रूप दिखाया और बताया कि ये सब मर चुके हैं। मृत लोगों को मारने से पाप नहीं होता। यहाँ सरहिन्द में जो धर्मयुद्ध हुआ उसके जरनैलों

* गुरूगोबिन्द सिंघ जी की माता जी अपने दो मासूम पौत्रों सहित सरहिंद में शहीद हुई थी।

की आयु बहुत छोटी थी और भगवान् कृष्ण की भूमिका माता गुजरी ने निभाई। गीता का उपेदश देने की आवश्यकता नहीं हुई। साहिबज़ादों के पिता ने नौ वर्ष की आयु में ही सिद्ध कर दिया था कि उन्होंने अनन्त सत्य को देख लिया है वह देश जहाँ न मृत्यु है न जन्म, वह उस देश का निवासी था। यहाँ छोटे की आयु सात वर्ष और बड़े की नौ वर्ष थी। मैं मान नहीं सकता कि माँ ने इन साहिबज़ादों को लम्बे समय तक कोई शिक्षा दी। इस माँ ने युगों तक तपस्या की थी। उस तपस्या का कुछ भाग गुरू दसम पातशाह हज़ूर के हिस्से में और शेष भाग साहिबज़ादो के हिस्से में आया। माता-पिता की संपत्ति पर बच्चों का अधिकार होता है। प्रो. पूर्ण सिंघ को एक संन्यासी ने पूछा, "स्वामी जी आप कौन सी साधना करते हो, जो आपके चेहरे पर इतना तेज है।" प्रो. पूर्ण सिंघ ने कहा, "तप, साधना, बंदगी तो क्या करनी थी मुझे तो ये नहीं पता कि ये हैं क्या। परन्तु एक बात का पता है कि बादशाह के घर जन्म लेते ही बच्चा राजकुमार होता है। तप किया था गुरू कलगीधर हज़ूर ने। उनके घर हमारा जन्म हुआ तो उनकी सम्पत्ति हमें अपने आप मिल गई।"

गुजरी माँ के बारे में बहुत कम लिखा गया है क्योंकि उनके बारे लिखने के लिए शक्ति चाहिए। उनके बारे में लिखने के लिए कोई कालिदास चाहिए। कालिदास ने मेघदूत में लिखा है, *हे मेघ, जब सृष्टि का विनाश करना हो तब शिव जी अपनी कमर के ईदगिर्द हाथी की ताज़ी लहू से लथपथ चर्म लपेट कर डमरू बजाते हैं। प्रलय आ जाती है। किसी संध्या को आकाश के एक कोने में खड़ा तू रक्त से भीगी चर्म का टुकड़ा प्रतीत होगा। उस समय गर्जना मत। गौरी माँ दहल सकती है। बड़ी आपत्तियों का संकेत अन्यों की अपेक्षा माताओं के पास पहले पहुँच जाता है हे मेघ।"*

रूहानी माँ की बातें किसी समर्थ लेखक के लिए छोड़कर हम अपनी देसी माँ के बारे में कुछ बातें करते हैं।

बड़े बेटे ने जिस दिन कम्पयूटर इंजीनियरिंग कोर्स की डिगरी पास की तो वह बेबे जी को मिठाई देने गया। आशीर्वाद देकर कहा, "परन्तु हुसनबीर सुना है कि इंजीनियर बनने के बाद तू अमेरिका चला जाएगा। तब तेरे बिना हम कैसे जीएँगे?" हुसनबीर ने कहा, "फोन किया करूँगा। चिट्ठियाँ लिखूंगा।" बेबे ने कहा, "सुखबीर भी यही कहता था (बड़े भाई का डॉक्टर बेटा) न फोन करता है न चिट्ठी लिखता है न मिलने आता है। तुम पर कैसे विश्वास करें?" हुसनबीर ने कहा, "उसका दिल और है मेरा और। मैं जो कहता हूँ वही करूँगा।" बेबे ने कहा, "तुम्हारे खानदान के लड़कों के पास एक एक नहीं अनेक दिल हैं। सभी कली करवा रखे हैं। जैसा खरीददार आया वैसा ही मन दिखा दिया। हम पुराने सीधे सादे लोग हैं

क्योंकि हमारे पास एक ही दिल है सभी को दिखाने के लिए। किसी को अच्छा लगे न लगे। हमारा क्या मुकाबला तुम्हारे साथ?"

ननिहाल के रास्ते में घग्गर है। कोई बड़ा दरिया नहीं ये, परन्तु इसके कारण ही हमारी भाषा में पत्तण, घाट, नाव, मल्लाह आदि शब्द आ गए। बेबे सामान्य यही कहतीउसने, इसने घाट घाट का पानी पीया हुआ है, उसके साथ हमारा क्या मुकाबला। ननिहाल के गाँव से कोई भी आता, वह एक प्रश्न अवश्य पूछती किस घाट से आए हो? कितना पानी है घग्गर में? यदि उत्तर मिलता घग्गर चढ़ गया है, तो पूछती, नाव लगी हुई है? मल्लाह बैठा है? इन प्रश्नों के उत्तर उसे हौसला देते कि मायके से कोई आएगा तो घग्गर उसे रोक नहीं पाएगी। मुंडेर पर कौवे बोलने और परांत में से आटा उछलने के संकेत उसके लिए कीमती थे।

मैंने कहा बेबे बातें सुनाओ पुरानी। तेरी कहानी लिखें।

कहा ये खोटा पैसा नहीं चलेगा। कोई दूसरा काम कर।

मैंने कहा खोटा पैसा चले न चले, खोटे पैसे की कहानी चल सकती है। कहानी बढ़िया बन सकती है।

मेरे ननिहाल के घर के लोग इतने सुन्दर हैं कि देखते रहने का ही मन करता है। ऊँचे लम्बे कद के गोरे लाल रंग के लोग। पुरातन यूनानियों का कारवाँ जैसे जाते जाते रूक गया हो यहाँ हरियाणा खरौदी गाँव में। धीरे धीरे चलते, सहजता से भोजन करते, विनम्रता से बात करते, धैर्य से बातें सुनते। उनकी शख्सियत में जल्दबाज़ी का संकेत भी नहीं था। वे मुझे अनेक बार कहते "तू जल्दबाज़ी क्यों करता रहता है? तू तो रोटी भी ऐसे खाता है जैसे किसी की रोटी छीनकर भाग रहा हो।" हँसते मुस्काते उनके होंठ, मेहरबानी से भरीं उनकी झुकी हुई आँखे।

बेबे बताती है तेरी छोटी मामी गुरदयाल कौर का रंग धूप जैसा था। लालिमा झलकती थी चेहरे पर। हीर थी। मेहनत से बनाया था ईश्वर ने। दीवार से उतर जैसे कोई तस्वीर चलने लगी हो। भाभी नहीं मेरी तो सहेली थी। मैंने एक दिन कहा कुड़िए ख्याल रखना मेरा। तेरी ये ननद गरीब है।

मेरे पैरों में दुपट्टा रखकर उसने कहा मैं कब हूँ इस घर की मालकिन? मैं तो सेविका हूँ तुम सभी की। सेविका रहूंगी सारी उम्र। पहले प्रसव में ही देहांत हो गया। तेरा मामा मान सिंघ कई कई सप्ताह घर नहीं आता था। बहुत हौसला देते। घर से भाग कर चोर डाकूओं के साथ मिल गया। कई वर्षों तक घर वापस नहीं आया। एक दिन नानी को उसका एक साथी अचानक मिल गया तो उसके हाथ संदेश भेजा "चोट लगने के बाद व्यक्ति चोर डाकूओं के साथ मिल जाए, हमारे खानदान की परम्परा नहीं। घायल व्यक्ति साधु बन सकता है। मान सिंघ से कहना घर नहीं

आना न आए। किसी वृक्ष के नीचे बैठकर बंदगी करे। मैं उसे अपनी सिक्ख परम्परा बदलने नहीं दूंगी।" ये संदेश सुनकर मामा लौट आया।

तेरी बड़ी मामी के दो बेटे हुए, एक के बाद एक, गुलाबों जैसे। दोनों को ईश्वर ने वापस बुला लिया। फिर बेटा न हुआ। बेटियों का जन्म हुआ। तेरी नानी को तपेदिक हो गई। उसने हमसे अनेक बार कहा, "मिलने मत आया करो, तुम्हारे बच्चे छोटे है। ये बीमारी चुड़ैल है चुड़ैल। परिवार के परिवार निगल जाती है। बहुत हो गया मिलना जुलना। अब सब्र करके अपने अपने घर बैठ जाओ।" हम कौन सी रुकने वाली थीं? माँ को न मिलने से मिलकर मरना हज़ार गुणा अच्छा है। पहले कौन सा इस घर में मृत्यु का नाम नहीं सुना कभी?

तेरी मासी को तपेदिक हो गई। पहले नानी की मौत हुई फिर तेरी मासी की। तेरा छोटा मामा और तेरा भाई गुरदयाल ऐसे हाथ छुड़वा कर भागे जैसे किसी की बातों में आ गए हों। जैसे मैंने उनके साथ कोई बहुत बेड़ी बेईमानी की हो। ईश्वर को पता नहीं क्या हो गया। एक घाव अभी न भरता दूसरा दे देता। उससे भी बड़ा। चोट पर चोट। वियोग ही वियोग, दाग ही दाग। आने वाला है मेरा भी नम्बर। पूछूंगी जाकर ईश्वर कौन सा तेरा लीचियों का बाग उजाड़ा था? क्या हक था तुझे ऐसी सज़ाएँ देने का? आमने सामने बात करने का समय आने वाला है।

संदेश मिला, " बेबे जी ने बुलाया है। अभी चले जाना।" मैं उसी समय पहुँच गया और हालचाल पूछा। माँ ने कहा, "इतने दिनों तक आया क्यों नहीं?" मैंने बताया कि नौकरी में बहुत काम हैं आपके पास तो रौनक लगी ही रहती है। बेबे ने कहा, "इन रौनकों का मैंने क्या करना है? मैं वो ताला हूँ जो किसी बड़े किले में लगा होता है। मेरे बच्चे इस ताले की चाबियाँ हैं। तुम लोगों के आने से ये ताला खुलता है रौनकों से नहीं। मैं अब मिट्टी का बहुत बड़ा और पुराना खण्डहर हूँ। इसमें तलाशने से कुछ न कुछ मिलेगा। ठीकरे मिलेंगे, हड्डियाँ मिलेंगी, बड़ा खज़ाना तो नहीं कोई सिक्का कोई गहना मिल सकता है। आखिर यहाँ कभी एक देश आबाद था अब खण्डहर हो गया है। कभी कभी आकर इसमें कुछ तलाश लिया कर।"

बेबे के कान और आँखें कमज़ोर हो गई। हमें देखकर कभी खुश हो जाती तो कभी उदास। मैंने कहा हम खुशी की बात तो बता देते हैं पर अनेक बार उदास करने वाली बात नहीं बताते। बेबे ने कहा, "मुझे पता चल जाता हैं। तुम लोगों की चाल से। बातें करते समय तुम लोगों के चेहरे देखती हूँ। बातें सुनाई नहीं देतीं। परन्तु पता चल जाता है कि तुम लोग सुखी हो या दुःखी।"

जब मैं बात शुरू करता हूँ तो उसके मन जिगर की तपिश से अनेक बार डर भी जाता हूँ। इस भट्ठी का ताप कम नहीं हुआ। बात शुरू तो करो। कभी कभी

ये भी कहती मेरा संस्कार करने के बाद कहीं तीसरे दिन फूल चुगने के लिए मत चले जाना। मेरी चिता ठण्डी होने में शताब्दियाँ लग जाएँगी।"

लाखों वर्ष बीत गए हैं। धरती के वक्ष में फौलाद और चट्टानें पानी की तरह उबल रही हैं। अभी तक।

एक दिन बेबे ने कहा, "अभी तो मैं जीवित हूँ। तुम सभी भाई बहन रिश्तेदार मुझसे मिलने आते हो तो आपस में भी मिल लेते हो। जब मैं न रही एक राजधानी टूट जाएगी। तुम लोगों ने बहुत उन्नति की है। और करोगे। तुम्हारे बच्चे तुमसे भी आगे जाएँगे... सुखी रहोगे। इस तरफ से गुज़रोगे तो धीरे से स्वयं कहोगे, यहाँ हमारी माँ रहती थी। थी तो सीधी सी परन्तु थी बहुत अच्छी। इस घर की तरफ देखते देखते तुम आगे चले जाओगे। मेरे बाद इस घर में आने का तुम लोगों का मन नहीं करेगा।"

हुसनबीर और सुखनबीर के नाना जी हमारे  पास रहते थे। उनका मन अपने पुत्रों के घर नहीं हमारे यहाँ लगता था। दो-तीन दिन के लिए बेबे गाँव से आई तो कहा, "तुम और हरमिन्द्र (मेरी पत्नी) हुसनबीर के नाना जी के साथ बातचीत क्यों नहीं करते? वह देर तक अकेले बैठे रहते हैं।" मैंने कहा, अखबार पढ़ लेते हैं। कोई विशेष नई बात तो है नहीं करने के लिए। सैर करने जाते हैं। और क्या बातें करें?" बेबे ने कहा, "तेरा छोटा बेटा दो वर्ष का है। इसके साथ सारा दिन कैसे बातें करते रहते हो? इसे बताने या पूछने के लिए कौन सी नयी बात है तुम लोगों के पास? तुम इस बच्चे के साथ बातें करते रहते हो क्योंकि तुम इससे प्यार करते हो। जिससे प्रेम करते हों उसकी हरेक बात नई प्रतीत होती है और प्यारी। नई पुरानी बातों का बहाना क्यों बनाते हो? ये कहो बापू जी से प्यार नहीं करते। मैं तो कट्टों बछड़ों से भी बातें करती रहती थी। तुम इंसानों से बात नहीं करना चाहते। गुरू महाराज अनजान देश में अनजान लोगों से बात करने गए थे उनके दुःख सुने। आप लोगों परिचितों को बुलाना नहीं चाहते। ईश्वर को तुम्हारा ये स्वभाव अच्छा नहीं लगा।"

महेन्द्रा कॉलेज में पढ़ने हेतु मैंने अपने सहपाठी अजीत को मना लिया। वह तो माना ही हुआ था। ये कहो उसके माता-पिता को मना लिया। उनके घर में भी हमारी तरह तंगी थी। बापू किसी के आरे  पर काम करते थे और माँ कपड़ों की सिलाई करती थी। महेन्द्रा कॉलेज में पढ़ते समय हमने पहली दो पोजीशनें किसी दूसरे के पास नहीं जाने दीं। वह प्रथम आता, मैं द्वितीय, मैं प्रथम आता तो वह द्वितीय। महीने बाद जब घर से वापस आता तो कुछ नोट होते और बहुत सारे खुले पैसे होते। वह बताता कि नोट बापू ने दिए है और खुले पैसे माँ ने। ये वो पैसे हैं

जब माँ सब्ज़ी वाले को नोट पकड़ाती है तो वह कुछ खुले पैसे वापस करता है। सिलाई के जो नोट मिलते वह पिता जी को दे देती है और खुले पैसे थैली में। सभी से चोरी नज़रें बचाकर आते समय ये पैसे मुझे दे देती है। यह पंजी, दसी, अठन्नी, चवन्नी सभी चोरी का माल है। ये बताते हुए अजीत की आँखे भर आतीं और कहता, "यदि अब भी हम नहीं पढ़े तो पाप लगेगा।" वह एयरफोर्स में पायलट अफसर भर्ती हुआ और अब तक दो राष्ट्रपति मैडल प्राप्त कमांडिग अफसर है। इन माताओं ने पैसे दिए, दुआएँ दी और आँसूओं से हमारे पाप धोए।

इस बात का वर्णन विक्टर हिऊगो ने 'फांसी' उपन्यास में कुछ इस प्रकार से किया है। एक युवक को फांसी की सज़ा हो चुकी है। वह सुप्रीम कोर्ट में रहम की अपील करते हुए कहता है, "जज साहिब मुझ पर तीन महिलाएँ आश्रित हैं। एक माँ, एक पत्नी तीसरी बेटी। माँ की मुझे चिन्ता नहीं क्योंकि वह बहुत वृद्ध है। जैसे ही मुझे फांसी लगने का समाचार मिलेगा उसकी सांसो की शृंखला टूट जाएगी। पत्नी जवान है। कुछ देर रोने के बाद सब्र कर लेगी। सम्भव है दोबारा विवाह भी करवा ले। उसकी भी मुझे अधिक चिन्ता नहीं है। अधिक चिन्ता मुझे अपनी बेटी की है। माता-पिता के होते हुए लड़कियाँ जितनी चाहें बुरी हों, दूध धुली होती हैं और जिनके माता-पिता न हो वे जन्म से बिगड़ीं हुई मानी जाती हैं।

बेबे को जपुजी साहिब याद था। गुरूद्वारे में गुरमुखी पढ़नी सीख ली थी जिस कारण लिख तो नहीं, पढ़ती ठीक थी। दूध दोहने, दही मथने, या चक्की पीसते समय जपुजी साहिब का पाठ करती। जपुजी के वाक्यों को सुनकर ही हमारी नींद खुलती। आवाज़ मधुर और प्रभावित करने वाली थी। विवाह के गीत साथ के पड़ोसी गाँव में सुनाई देते। *आसा दी वार* में रागी सुरजन सिंघ जी ने एक शब्द, "मिल मेरे परीतमां जीओ तुधु बिणु खरी निमाणी" गाया है। जैसी विह्वलता इन शब्दों की धुनों में हैं, उस धुन में बेबे से जपुजी साहिब पाठ सुनते सुनते हम बड़े हो गए। केशों में कंघी करते समय ये गीत गाती

मेरा वीर धनिए दा बूटा
आंदे जांदे लैण वाशना।

जिस महिला के साथ सुर न मिलता विवाह में उसके साथ मिलकर गीत नहीं गाती थी। जिसके साथ सुर मिल जाता उसके साथ मिलकर गाती और देर रात तक ये धुनें गूंजती

चंद चढ़ गया नी अडिओ किकरां दे शिखरी।
वीर फिरदा नी अड़िओं भाबो दे फिकरी।

उसने हमें कभी बेटा या पुत्र कहकर नहीं बुलाया था। वीर कहती थी। पुत्र कहते समय शर्मा जाती। कभी कभी बड़बड़ाती क्या हो गया आजकल की इन छोकरियों को? देखा? बच्चों को बुलाते समय कैसे बेटा बेटा, पुत्र पुत्र का रट्टा लगाती हैं? शर्म नहीं आती। कलजोगणा।

अल्पायु में हम कभी कभी सिक्ख इतिहास या साखियों का मज़ाक उड़ाते। एक दिन हम सभी को साथ बुलाया। बैठने के लिए कहा और कहा, "ज़रूरी बात है। माननी होगी। तुम सब को एक छूट देनी है एक पाबन्दी लगानी है। छूट ये है कि ईश्वर के बारे तुम्हारे मन में जो ऊल जलूल बातें आती हैं कहते रहो। मैं ईश्वर को नहीं जानती। क्या पता वह ऐसा ही हो जैसा तुम्हारे मन में है। गुरू साहिबान को मैं जानती हूँ। उनके बारे में छोटी बात कभी हँसी में भी कही तो मुझसे बुरा कोई नहीं होगा। सभी समझ गए?" समझ गए सब कुछ।

बड़े भाई गुरदयाल सिंघ का अपनी पत्नी के साथ झगड़ा रहता। उसका इकलौता बेटा, सुखबीर स्कूल के समय से ही तीक्ष्ण बुद्धि और मेहनती लड़का था। भाई भाभी का आपस में झगड़ा होता तो माँ कहती, "पति पत्नी के झगड़े तो होते ही रहते हैं, इस बात की मुझे चिन्ता नहीं। चिन्ता इस बात की है कि मेरा ये बड़ा बेटा अंत में अकेला रह जाएगा। इसलिए मैं रोती हूँ।" मैंने कहा, "अकेला क्यों रह जाएगा? सुखबीर है तो सही। पढ़ेगा, बड़ा होगा, उसका विवाह करेंगे, सब ठीक हो जाएगा।" बेबे ने कहा, "तुझे नहीं पता। सुखबीर बड़ा होकर जब फैसले करने योग्य हो जाएगा तब माँ का ही पक्ष लेगा।" मैंने कहा भाई बुद्धिमान् है, वैसा ही तीक्ष्ण बुद्धि सुखबीर है। उसकी अनपढ़ माँ तो है। वह अपने पिता का अपमान कैसे कर सकता है? माँ ने कहा, "तुम्हें इन बातों का नहीं पता। बछड़ा गाय की तरफ भागता है। यहाँ समझ नासमझ का कोई अर्थ नहीं। माँ, न कभी नासमझ होती है न बदशक्ल। संतान के लिए माँ से बड़ी कोई महारानी नहीं होती। देखना तुम। इस क्लेश में से अपनी माँ को निकाल कर ले जाएगा और तेरा बड़ा भाई अपने को समझदार मानता हुआ अकेला रह जाएगा, बिल्कुल अकेला। हम, जितने समय तक माता-पिता है तब तक वह हमें तुम्हें मिलने आता है। हमारे बाद उसका कोई और वह किसी का कुछ नहीं लगेगा।" ये कहते कहते रोने लगती। हम सभी हँसते हुए एक दूसरे से कहते, "बेबे के पास रोने धोने के लिए कोई बहाना न भी हो तो भी वह काल्पनिक कहानी अपने रोने के लिए बना ही लेती है।"

ये बातें 35 वर्ष पहले की हैं। वैसा ही हुआ जैसा वह कहती थी। भतीजा माँ को लेकर अमेरिका रहने चला गया और भाई को बिल्कुल भूल गया। मेरे इस भाई के पास सुख सुविधा का प्रत्येक सामान था। अकेलेपन का सदमा न सहने के

कारण दिमाग की नाड़ी फटने से उसकी मृत्यु हो गई। मैं ये दावा नहीं करता कि हमारी माताएँ भविष्यवाणी कर सकती हैं। उन्होंने जीवन को इतने करीब से देखा है कि उन्हें बोध होता रहता है, घटनाओं के दरिया किस तरफ रूख करेंगे, किसे डूबायेंगे, किसे पार लगायेंगे।

बड़े भाई की मृत्यु के पश्चात् रिश्तेदार आकर पूछते क्या हुआ, तो बेबे कहती, "होना क्या था? धोखा हो गया मेरे साथ। कैसे जीवित रहूं उसके बिना? क्यों किया उसने मेरे साथ दगा? कुछ पता नहीं। मैं उसके साथ हर समय बातें करती रहती हूँ अब भी। फर्क केवल इतना है कि मेरी जिन बातों का उत्तर उसने देना होता, वह उत्तर भी स्वयं देती हूँउसकी जगह। मुश्किल काम पकड़ा गया मुझे। उसकी जगह कब तक कैसे दूंगी उसके उत्तर?"

कई वर्ष पहले बड़ी मामी मेरे गाँव आई। बेबे के चरण छूए। कुशलता आदि पूछी। फिर कहा, "ननद तेरे पास एक काम आई हूँ। तेरा भाई दूसरा विवाह करवाना चाहता है। उसे रोक।" उसका अपनी आँखों पर वश नहीं रहा। बेबे ने कहा चलूंगी। उसकी इतनी हिम्मत? दोनों ननिहाल पहुँच गईं। मामा जी से कहा "ये काम मत करना भाई। तेरे मेरे बच्चों में क्या फर्क? ज्यादा उदास है तो अपने एक भानजे को ले आ घग्गे से, या बालद से।" वह चुपचाप खेत चला गया। बेबे कई दिनों तक ननिहाल में ही रही। एक दिन मामा जी ने कहा बेबे तेरे बच्चे तेरे बिना व्याकुल हो जाते हैं। अब तू गाँव वापस जा। बेबे ने कहा कैसे जाऊँ? तेरी न या हाँ के बाद ही जाऊँगी। नहीं तो बैठी हूँ। मामा जी ने हँसकर कहा कुछ लिखवाना है अस्टाम पर? बेबे ने कहा अस्टाम पर लिखे बयान इधर उधर गुम हो जाते हैं। हम तो जुबान के पक्के हैं। बेबे खुशी खुशी वापस गाँव आ गई। मामा जी ने दूसरे विवाह का नाम तक नहीं लिया।

मासी के बड़े बेटे का नाम लाभ सिंघ है। बस में जाते समय उसने देखा, साथ बैठा युवक कभी कभी रोने लगता है मुँह छिपाकर। लाभ सिंघ ने पूछा क्या हुआ भाई? क्यों रो रहा है? उसने कहा मैं फौजी हूँ। मुझे तार मिली कि मेरी माँ का निधन हो गया है। गाँव जा रहा हूँ। मन को कैसे हौसला दूं। लाभ सिंघ ने कहा छोटा था मेरा बापू जब उसकी माँ मर गई। दर दर भटकता पता नहीं कैसे बड़ा हो गया। मैं और मेरे भाई बहन छोटे छोटे थे जब माँ विदा हो गई। अब मेरे छोटे से बेटे को उसकी माँ छोड़कर भगवान् के पास चली गई। बेटा पहर तक दीवारों, वृक्षों के साथ खड़ा रहता है खामोश। अनेक बार कहा, "अब किसके आने के कदमों की आहट सुनोगे बेटा? तेरा जो खजाना जवानी में छिन गया हमारे सारे खानदान का

बचपन में ही छिन गया था। तब कौन सा हम मर गए? तेरे सामने आराम से बैठा बातें कर रहा हूँ या नहीं मैं? ईश्वर का नाम लो भाई।

निहंग मामा की दो बेटियाँ थीं। एक दिन किसी औरत ने कह दिया हे ईश्वर क्या हो गया तुझे? चाहे काना, लंगड़ा, अपाहिज दे देता, राम सिंघ के घर भी एक लड़का तो देता? मामा जी गुस्से में कहा क्यों? ईश्वर की दुकान में स्पेयर पार्ट खत्म हो गए? यदि देना होता सही राजकुमार दे देता वह। उसकी इच्छा नहीं तो यही ठीक है। खबरदार यदि किसी ने फिजूल की बातें कीं। मामा मामी दोनों अपनी बेटियों को देख देखकर जी रहे थे। बड़ी को घुड़सवारी सिखाई। रिवाल्वर, बंदूक चलानी सिखाई। आगे उसने दो बेटियों को जन्म दिया और बेटे के जन्म के बाद उसकी मृत्यु हो गई। छोटी बेटी तीन वर्ष की और बड़ी की आयु पाँच वर्ष थी। मामा मामी के चेहरे का अंधेरा देखकर दिल दहल जाता। लड़कियाँ प्रत्येक से पूछ रही थीं मम्मी कहाँ है? उनसे टाल-मटोल की जा रही थी। संस्कार के बाद मामी ने अपने पास बुलायीं। सामने बैठने का इशारा किया। बैठने के बाद मामी ने कहा लड़कियो तुम्हारी माँ मर चुकी है। हमने उसे जलाकर राख बना दिया है। अब वह कभी नहीं आएगी अपने घर।

लड़कियाँ रोने लगीं। एक महिला ने चुप कराते हुए कहा बेबे क्या आवश्यकता थी इन्हें अभी बताने की? अपने आप धीरे धीरे पता चल जाता। मामी ने कहा कब तक झूठ बोलूंगी? कैसे छिपाऊँ भेद को? संभल जाएँगी रो धो कर। पता चलना चाहिए इन्हें कि ज़िन्दगी क्या चीज़ होती है। बेबे ने आह भरते हुए कहा बिलखते रहेंगे बछड़े, देखती रह जाएँगी गायें।

फिर भोग पर आए लोगों से मामी ने कहा “अब आप रोटी खाओ और अपने अपने वतन को जाओ। लाओ बीर रोटी खिलाओ।” कुछ स्त्रियाँ कहने लगीं “हमने नहीं खानी रोटी। हमसे नहीं खाई जाएगी।” मामी ने कहा ठीक है। जिन्होंने होटलों में जाकर स्वादिष्ट रोटी खानी है वे जाएँ। हमारे अन्दर तो आराम से अन्न पानी चला जाएगा। हे सच्चे पातशाह तू धन्य है।”

हमारी ये बड़ी मामी अधिक बात नहीं करती थी परन्तु जब कभी बात करती तो शांति मिलती। बड़े बड़े दुःखों के बावजूद भी हँसमुख। उसे कैंसर है इस बात का पता हमें तब चला जब तीसरी स्टेज पर पहुँच चुका था। इलाज के लिए पटियाला ले आया, सभी को सख्त निर्देश दिए कि किसी ने मामी को उनकी बीमारी के बारे नहीं बताना। मामी कई कई दिन दवाईयाँ खाती रही इंजैक्शन लगवाते रहे। मुझसे पूछा क्या बताया डॉक्टर ने? मैंने कहाकोई खास बीमारी नहीं। महीने डेढ महीने में ठीक हो जाओगी मामी। हँसने लगी, कहा मुझसे चालाकी करने लगा है

तू प्रोफैसर? वैसे तो बात तेरी भी ठीक है। महीना डेढ महीना न सही, तीन चार महीने लगेंगे, सभी रोग तैयार बैठे हैं टूटने के लिए। अच्छा है अब पीछा छूटे। तेरे मामे का अधिक खर्च न करवाना। मुझे गाँव छोड़ आ।

टी.वी देखते हुए ऊँची ऊँची हँसने लगी। मैंने पूछा कौन सी बात याद आ गई मामी? उसने कहा टी.वी देख। मैं टी.वी देखने लगा। एक कुशल कलाकार नृत्य कर रही थी। मामी ने कहा इसे देखता रह। सुन्दर है, सही नाचना आता है। परन्तु बीच बीच में ऐसे करने लगती है जैसे मधुमक्खियों ने काट लिया हो।

मुझे शांति मिलती है कि इस मामी की देखभाल और संस्कार अपने हाथों से किया। हज़ारों वर्ष पूर्व लाओत्से ने कहा था अपने प्रियजनों को जब कब्रिस्तान में अपने हाथों से विदा कर वापस खाली हाथ घर आते हैं तो पता चलता है अक्ल, धन और ताकत कितनी कमज़ोर वस्तुएँ हैं।

भाई नन्द लाल ने लिखा

*हम मिले, प्यार किया और बिछुड़ कर चुपचाप बैठ गए।*

*पपीहों, बुलबुलों और कोयलों की तरह हम चिल्लाए नहीं।*

एक दिन मैंने कहा, "बेबे मैं जैसे चाहता हूँ कि बहुएँ तुम्हारा आदर करें वैसे वे करती नहीं। इसके बावजूद भी केवल बड़ी भाभी के बारे में आप चिंता करती रहती हो। बाकी बहुओं के बारे में कम ही बात करती हो। ऐसा क्यों?

बेबे ने कहा, "सास को पता होना चाहिए कि बहुएँ उसका आदर नहीं करेंगी। कौन मेरा आदर करती है कौन निरादर, इस बात की तरफ मेरा ध्यान नहीं। मैं ये देखती हूँ मेरी बहुएँ मेरे बेटों से प्रेम करती हैं या नहीं। तेरी हरमिन्दर मुझसे कई दिनों तक बात न करे तो कोई बात नहीं। मैं देख रही हूँ कि वो तुझे प्रेम करती है। तुझे आने में देर हो जाए तो वह बेचैन होकर तेरा रास्ता देखती है। और मुझे क्या चाहिए? जो तुझे प्रेम करता है वह मुझे प्रेम करता है क्योंकि तू मेरा है।"

स्कूल से घर आया तो बेबे ने कहा "कैसा ज़माना आ गया है। तेरी दयालो चाची को अपने बच्चों के पीछे भागते देखा। उनसे संतरें छीनकर खा गई। मैं डर गई।" मैंने पूछा तो क्या हुआ? बच्चे भी तो छीन लेते है माँ के हाथों से चीज़ें?"

उसने कहा बच्चे छीनें। उनका हक है। किसी माँ को देखा है बच्चों के हाथों से छीनते हुए? इस घर में कोई घटना ज़रूर होगी। ऐसे तो पशु पक्षी भी नहीं करते। मुझे डर लग रहा है। तू नदी को पर्वत पर चढ़ते हुए देखे तुझे डर नहीं लगेगा? इस घर के लक्षण किसी अनहोनी का संदेश दे रहे है। ईश्वर भला करे।

बेबे को शुभसमाचार देने गया कि बड़े निंहग मामा ने घोड़ा खरीदा है। बहुत सुन्दर है। वह बहुत खुश हुई। भाई और उसके घोड़े को आशीर्वाद दिए, "सुखी

रहें। वफा करें। प्रत्येक आपत्ति दोनों से दूर रहे।" मैंने कहा, "जल्दी हम दोनों ननिहाल जाएँगे। आपको सवारी करवायेंगे।" उसने कहा, "अब कहाँ चढ़ने की क्षमता है? कभी समय था। तेरे मामा जी घोड़ी पर बिठाकर तेरे गाँव छोड़ जाते थे। आप पैदल चलते। तेरी नानी हमेशा अकेले आती थी घोड़ी पर। एक बार मुझे मिलने के लिए वह तेरे गाँव घग्गे में घोड़े पर सवार होकर आई। गाँव के बाहर घोड़ियाँ चर रही थीं। तेरी नानी का घोड़ा बेकाबू होकर उधर दौड़ गया। गाँव के लोग छत्तों पर चढ़ गए कि इस बुढ़िया की जान जाएगी आज। तेरी नानी ने एक हाथ से लगाम पकड़ी, रकाबों पर खड़ी हो गई और दूसरे हाथ से ऐसे छड़ी चलाई कि घोड़ा काबू में आ गया। फिर वह घर नहीं आई। घोड़े को तेज़ दौड़ाकर गाँव के दो चक्कर लगवाये। पानी पानी हुआ घोड़ा खुरली पर नज़रें नीचे करके खड़ा हो गया। उतर कर घोड़े को थपथपाया, सिर सहलाया और धीरे से कान में कहा, "मार पड़ी तो क्या हुआ? अब तुझे घी भी खिलाऊँगी चने भी। शाबाश पुत्र, शेर बच्चा है तू। तेरी शान कायम रहेगी।"

रुक कर माँ ने फिर दोहराया, "हाँ भाई अब कहाँ है मेरी उम्र सवारी करने की।" मैंने कहा, "आपके बेटे आपको उठाकर चढ़ा देंगे। उसने कहा, "न। अब मैं काँच की उन चूड़ियों जैसी हो गई हूँ जो चढ़ाते चढ़ाते टूट जाती हैं।"

मैं पंजाबी विश्वविद्यालय के कैंपस में बहुत सुन्दर कोठी में रह रहा हूँ। मामा जी मिलने आए। कुशलता पूछी। पूछा, "भानजे गुरू महाराज का नाम लेते हो? मैंने कहा, "बिल्कुल लेता हूँ।" बातें करते रहे। रात हो गई। भोजन के बाद कहने लगे, "पाठ करता है?" मैंने कहा, "करता हूँ, करता हूँ।" फिर बातें करते रहे। सोने का समय हो गया तो मैं उन्हें चौबारे में ले गया, पूछा कि सुबह चाय पीनी है या दूध? कितने बजे? उन्होंने कहा, "ये सही है क्या कि तू गुरू बाबे को याद रखता है?" मैंने पूछा, "किसी ने शिकायत की है मेरी आपके पास? मामा जी ने कहा, "नहीं शिकायत किसी ने नहीं लगाई, एक पुरानी बात याद आ गई थी। 30, 35 वर्ष हो गए होंगे। क्या पता इससे भी अधिक। जब कभी बस में बैठे यहाँ से निकलते तो तेरी यूनिवर्सिटी बन रही थी, ऊँची उठती देखते। बड़ी बड़ी बिल्डिंगें। मन में आता कि देखे अन्दर है क्या। परन्तु बस में बैठे बैठे निकल जाते। एक दिन घोड़े पर सवार होकर पटियाला से राजपुरा की तरफ जा रहा था तो रास्ते में यूनिवर्सिटी आ गई। मन खुश हो गया कि आज समय भी है घोड़ा भी। आज देखकर जाऊँगा। बायीं लगाम खींची। गेट पर सिपाही खड़े थे। एक ने घोड़े की लगाम पकड़ कर कहा, "क्या काम है बाबा अन्दर? मैंने कहा कोई काम नहीं। उसने फिर पूछा, "किसे मिलने जाना है अन्दर?" मैंने कहा "किसी को नहीं। मैं तो बस देखना चाहता हूँ अन्दर जाकर,

ये है क्या।" सिपाही ने कहा, "न बाबा न। देखने की आज्ञा नहीं।" यही बात याद आ गई आज। जिन कोठियों को देखने की आज्ञा नहीं थी, उनमें रहने की आज्ञा मिल गई। बादशाहियाँ दे दी हमें गुरू महाराज ने। इसी लिए मैंने पूछा कि तू महाराज जी को याद करता है या नहीं। जिसने सोने-चांदी की वर्षा कर दी उसे भूलने से पाप लगता है।"

धीरे धीरे समझ आएगी मुझे इन बातों की। चिड़िया, जितनी चाहे प्यासी क्यों न हो, दरिया को एक घूंट में नहीं पी सकती। मैं इस बात से सन्तुष्ट हूँ कि गुरू बाबे का विद्यार्थी हूँ। हमारी कक्षा के कमरे छोटे छोटे, पीरियड घंटे घंटे के। बाबा जी का क्लास रूम समस्त ब्रह्माण्ड और पीरियड अनन्त काल तक। उसकी दयालुता ने ही हमें माथा टेकने का हक दिया है। इस हक के सम्बन्ध में हफीज़ का शेयर पठनीय है, "तू समस्त सृष्टि का मालिक है, सभी धरतियों का। तेरे दर पर जब माथा टेका तो थोड़ी सी मिट्टी हमारे माथे पर लग गई। मिट्टी का दाग हमारी बड़ी सम्पत्ति है।"

एम.ए कर रहा था। शोभा सिंघ द्वारा बनाया गया गुरू जी का वह चित्र खरीद कर लाया जो वीर रस की भावना से युक्त है एवं जिसके नीचे लिखा है, "चूं कार अज़......।" दीवार पर लटका दी। गुरू जी क्रोधित ऊपर देख रहे हैं। बेबे ने ध्यान से वो पेटिंग देखी और कहा, "ये तस्वीर कुछ ठीक नहीं है। इस तरह की दृष्टि नहीं थी महाराज की। दुश्मनों की तरफ उन्होंने कभी ऐसे नहीं देखा था क्योंकि दुश्मन तो उनका कोई है ही नहीं था। वे सभी से प्रेम करते थे। तुम देखना जितने महान् महापुरुष होगें, साधु-संत होंगे, बेशक प्रतापी राजा हो, उनकी निगाहें हमेशा नीचे झुकी हुई होंगी। पता है क्यों? वे उस रथ में सवार है जिसके पहिए चांद और सूर्य हैं। बहुत ऊँचे स्थान से देख रहे हैं हमको। उनसे ऊँचा ऊपर और कुछ नहीं। हम नीचे स्थान पर हैं। वह हमारी तरफ नीचे देख रहे हैं और रक्षा करते हैं। बाबा जी को हम नीले का सवार इसलिए कहते हैं कि आकाश उनका घोड़ा है। चांद तारे धरती सब उनसे नीचे हैं। तू स्वयं देखकर बता ठीक है ये तस्वीर?"

कृपाल सिंघ आर्टिस्ट ने शोभा सिंघ की गुरू नानक देव जी की बनाई पेंटिंग बारे टिप्पणी दी थी, "पैगम्बरों के चेहरे और शरीर कभी मोटे नहीं होते। गुरू नानक देव जी ने पैदल संसार की यात्रा की थी और आयु के अंत में हल का मुट्ठा पकड़ा। उनमें मोटापा कैसे हो सकता है?"

बापू जी के बाल झड़ चुके हैं कहीं कहीं गंजापन दिखाई देने लगा है। स्नान करने के पश्चात् वह कितनी देर तक नंगे सिर घूमते रहे। बेबे ने आवाज़ दी, "पगड़ी नहीं बांध सकते? टैगोर बने घूम रहे हो?" मैंने कहा, "बेबे जी टैगोर कोई बुरा व्यक्ति

था?" बेबे ने कहा, "अच्छे बुरे की बात नहीं। टैगोर टैगोर था। तेरा बापू तेरा बापू है। इन्हें कहो पगड़ी बांधें।"

बापू जी से कहा गर्म पानी की बाल्टी गुसलखाने में रख दो। खुद ही ठण्डा पानी मिला लूंगी। ज्यादा ठण्डा पानी मिलाकर तुम पानी की कमर तोड़ देते हो।

कुछ वर्ष पहले समदर्शी पत्रिका ने पश्चिम की कहानियों का विशेषांक प्रकाशित किया। अब कहानीकार और कहानी का नाम याद नहीं। ढूंढ कर लिखूंगा। कहानी याद है। कहानी का प्रारम्भ इस वाक्य से होता है, "शुरू शुरू में हँसने का अधिकार केवल अमीरों के पास था गरीबों के पास नहीं। गरीबों ने ईश्वर से कहा ये हक हमें भी मिलना चाहिए। ईश्वर ने गरीबों को हक दे दिया कि वे भी हँस सकते हैं।" कहानी में लेखक छोटा था तब स्कूल जाने से इसलिए मना कर दिया क्योंकि कमीज़ एक है और वह मैली है। माँ के पास साबुन खरीदने के लिए छह आन्ने नहीं। जैसे जैसे वह कोनों में ढूंढती है, वह गज़ब के कलात्मक स्पर्श हैं। साढे चार आन्ने मिल गए। डेढ आन्ना और चाहिए। वह कहाँ से आएगा? ये विचार कर रहे थे कि दरवाज़े पर भिखारी आकर खड़ा हो गया। माँ ने कहा, "बाबा जब आता है तो सामर्थ्य अनुसार कुछ न कुछ तो देते ही हैं। आज हमारे पास डेढ आन्ना कम है। आज तू नहीं दे सकता हमें ये पैसे?" भिखारी ने अपने पात्र में से डेढ आन्ना निकाल कर माँ को दे दिए और चला गया। माँ हँसने लगी। मुझे गले लगाकर हँसते हुए कहा, "हो गया न कमाल? भिखारी से भी हम पैसे ले सकते हैं।" वह हँसती रही। तभी खांसी शुरू हो गई, महसूस किया जैसे मेरी गर्दन पर कोई गर्म गर्म तरल पदार्थ गिर गया हो। मैं पीछे हुआ तो माँ हमेशा के लिए ज़मीन पर गिर गई। उसे फेफड़ों का रोग था और कंधे सहित मेरी बाँह खून से भर गई। अंत में लेखक पूछता है, "गरीबों ने ईश्वर से हँसने का अधिकार मांग कर क्या प्राप्त किया?"

इस कहानी की कुछ पंक्तियों पर मैंने पैंसिल से निशान लगाए थे। दो वर्ष बाद इस कहानी को पंजाबी ट्रिब्यून ने छापा। बेबे से मिलने गया तो अखबार उसके समीप रखा था। इस कहानी की कुछ पंक्तियाँ पढ़कर मुझे सुनाई। ये वही पंक्तियाँ थी जिन पर मैंने निशान लगाए थे। माँ ने कहा, "इस विदेशी व्यक्ति ने तेरी माँ की कहानी लिखी है प्रोफैसर। है न ईश्वर का कमाल? न तो इसने मुझे देखा, दूर बैठे ही इसने तेरी और मेरी कहानी लिख कर भेज दी।"

दशहरे से पहले कच्चे घर की लिपाई पोताई का काम शुरू हो जाता। हम सभी मिलकर काम करते। दीवारों पर पाण्डू की लिपाई और फर्श पर गारे का लेप होता। कोई गारे में पानी मिला रहा है, दूसरा कही के साथ गारे में तूहड़ और गोबर

मिला रहा है, कोई वस्तुओं को उठाकर दूसरी तरफ रख रहा है तो कोई लिपाई में सहयोग दे रहा है। कोनों तक की लिपाई की जाती, घर की छत्तें भी। पशुओं के सींगों पर तेल लगाते। चारों तरफ सुगन्ध ही सुगन्ध। दीवारों पर लटकाने के लिए बापू जी तस्वीरें लेकर आते, रामायण, महाभारत, गुरूओं कीं। बेबे हमसे कहती ये रामायण, महाभारत की तस्वीरें न लेकर आया करो। घर में क्लेश होने लगता है। तुम्हारी नानी कहती थी महाभारत अच्छा लगता है परन्तु यदि किसी दूसरे के घर में हो रहा हो तब। गुरू बाबा जी की तस्वीर लगा दो। साहिबज़ादों की तस्वीर लगा दो। महाभारत का क्लेश ठीक नहीं होता।

महाभारत के वर्णन से गांधारी की याद आ गई। कौरव वंश के सौ पुत्रों की माँ। भगवान् श्री कृष्ण ने गांधारी को सांत्वना देने का निर्णय किया। महल पहुँच कर प्रणाम करने के पश्चात् निवेदन करने लगेशाप न देना गांधारी माँ। शाप न देना। गांधारी ने कहा तू मेरे सौ पुत्रों का कातिल है। शाप से कैसे बचेगा? देख लेना। तुझे अनहोनी मौत मिलेगी। तुम युद्ध  रोक सकते थे। तुमने षड्यन्त्र रचा। क्यों किया मेरे सौ पुत्रों का कत्ल।

कृष्ण ने कहा गांधारी तुम सौ पुत्रों की माँ हो। तुझे सौ के मरने का दुःख है। परन्तु वहाँ सौ नहीं, लाखों मरे, मैं मरा हूँ लाखों बार। मेरे स्वभाव का भाग है ये कभी मैं एक से लाख हो जाता हूँ, कभी स्वयं को लाख बार मारता हूँ। बार बार यही करता हूँ।

जब मिलने जाता, माँ की इच्छा होती कोई साखी सुनाऊँ। अकसर साखी सुनाकर वापस आता। एक दिन वापस आने के लिए उठा तो बेबे ने कहा साखी सुनाए बिना कैसे जा सकता है? मैंने कहा, कोई नयी साखी तो है नहीं अब। कहापुरानी सुना दे। मैंने कहा कि सुनी हुई साखी दोबारा सुनने का क्या लाभ? उसने कहा, "चिड़िया और कौवे की फिज़ूल सी कहानी छोटे होते हुए तुमने कितनी बार सुनी मैंने कभी गिनती नहीं की। गुरूओं की साखियाँ तो अमूल्य हैं। दोनों लोकों से पार उतारती हैं। इन साखियों का पुण्य, सुनने वाले और सुनाने वाले सभी को मिलता है। ये कभी पुरानी नहीं होतीं। जब कोई तुझसे साखी सुनने की इच्छा करे उसे इंकार मत करना। तुझे ईश्वर ने विद्या दी है। विद्या ऐसी फसल है जिसके हकदार सभी हैं। जो मांगे, उसे उसका हक देना।"

बातें करते समय उपमा अलंकार उसके मुख से सहज प्रकट होते। हम दोनों बस में कहीं जा रहे थे। दोनों को अलग अलग सीट मिली। कुछ देर बाद वह अपनी सीट से उठकर मेरी सीट पर तंग होकर बैठ गई। मैंने उससे वहाँ से उठकर

आने का कारण पूछा तो कहा, “उस सीट पर जो व्यक्ति मेरे साथ बैठा था, खिड़की की तरफ, उसका मुख देख। नमकीन खाने के लिए मुँह खोलता है तो ऐसे लगता है जैसे अटैचीकेस खुल गया हो। नमकीन खाता जाता है, साथ ही बातें करता जाता है, हँस भी रहा है और नमकीन उसके मुँह से ऐसे गिरता है जैसे चावल शैलर की पाईप में से फूस बाहर गिरता है। वहाँ नहीं बैठ सकती मैं। ये तो आम भी बेर की तरह मुँह में डालता होगा, पूरा का पूरा, गुठली सहित।”

गेहूँ पकने लगती, बादल छा जाते। वैसाख मास में मूसलाधार वर्षा होती। हम कहते ये किस मौसम की वर्षा है? बेबे कहती वैसाख का महीना बताता है कि मुझमें और सावन में कोई भेद नहीं। इतना सा अन्तर है कि मेरे पीछे आ रहे जेठ और आषाढ़ धूल मिट्टी उड़ाने वाले हैं। सावन के पीछे आ रहे उसके मित्र भादो और अस्सू उसी स्वभाव वाले हैं, धूल मिट्टी उड़ाने वाले नहीं हैं। तभी सावन का महत्त्व बढ़ा। जिसे बुरे मित्र मिल जाएँ उसका तो बुरा हाल होना ही होना है।

ये भी बताया समझदार बादल को किसान की किसी हरकत पर गुस्सा आ गया। उसने निर्णय किया कि वह वर्षा नहीं करेगा। रुका रहा। एक पागल बादल गुज़र रहा था। उसने समझदार बादल से न बरसने का कारण पूछा। बादल ने कहा किसान को भूखा मारेंगे। न बरसेंगे, न बिजाई होगी, न फसल होगी, अकाल पड़ेगा। पागल बादल ने कहायदि ये बात है तो मैं बरसता हूँ। जितने दाने जाट के घर में रखे हैं वह खेतों में जाकर बिखेर देगा। यदि एक भी वर्षा न हुई तो ये दाने उसके काम आ जाएँगे। बाहर से नहीं देना तो न सही, अन्दर का अन्न निकलवाने के लिए एक बार बरसने दे।

तब से किसान भी समझदार हो गया। अब एक आधा बादल बरसने के बाद बिजाई नहीं करते।

सर्दियों में बर्फानी तूफान चलता। हम बच्चे शाम-रात को घर से निकलने लगते तो इन शब्दों से रोकती “आराम से अंदर बैठो। बाहर हवा भटक चुकी है।” ठण्डे पानी से मुँह धोते हुए कहती सर्दियों में पानी गोली की तरह लगता है। हमें बताती, घबराहट में इतनी उलझन हो जाती है कि पता नहीं चलता क्या करे। परांत गुम हो जाती है तो मैं घड़ों में ढूंढती रहती हूँ। कोई पड़ोसन व्यंग्य करती तो उसे उसका उत्तर व्यंग्य में मिलता। औरतें हँसने लगती तो अपने कंधे को थपथपाते हुए कहती शेर मारने के योग्य न सही, ये लाठी बर्तन तोड़ने के योग्य तो है अभी।

एक बार दोनों बड़ी भाभियाँ बेबे के पास जाकर कहने लगी कि हमारा कोई काम नहीं करता प्रोफैसर। जब पढ़ता था, कहता था, तुम्हारे सभी काम करूँगा। तुम्हारे बच्चों को पढ़ाऊँगा और नौकरी दिलवाऊँगा। अब बात नहीं करता। माँ ने

कहा, "उस समय ये कमज़ोर था। छोटा था। तुम बड़ी थीं। पुलिस मार से डरते व्यक्ति से जो चाहे मनवा लो। करना कराना क्या है इसने अब किसी का? डरता इकरार करता गया। अब ये किसी को कुछ नहीं समझता?"

एक दिन कहने लगी, "कितने पापी हो गए तेरे गाँव के लोग। मोरों को मार कर खा जाते हैं। मुरगाबियों को तो क्या कूंजों को नहीं छोड़ते। कोई ऊँचे स्वर में मोर की आवाज़ 'क्याको' निकाल दे तो उसी समय गोली चला देंगे। गिरझें तो रही नहीं अब। ये लोग किसी

माँ की आयु अस्सी वर्ष हो गई, पन्द्रह वर्ष की आयु में हमारे गाँव आई। अब तक मेरा गाँव उसका गाँव नहीं बना। उसका गाँव वही है जहाँ उसका जन्म हुआ। बातें करते समय हमेशा यही कहतीतेरे गाँव मैंने ये किया, ऐसे किया।

गाँव में किसी काम वश किसी के घर गई। आकर कहने लगी, "बड़ा परिवार है उनका।" मैंने पूछा, "आपने कहाँ देख लिया उनका सारा परिवार?"बेबे ने कहा, परिवार देखकर क्या करना था। करतार कौर को रोटियाँ बनाते देखा। बड़ी परांत में गूंथ कर रखा हुआ आटा ऐसे प्रतीत हो रहा था जैसे भेड़ मारकर लिटा रखी हो।

संसद के चुनाव का परिणाम आया। बेबे ने पूछा, "किसकी सरकार बनी है?" मैंने कहा, "किसी की नहीं। पूरी सहमति किसी की नहीं बनी। काम चलाऊ सरकार बनी है।" बेबे ने कहा, "इस देश में अब काम चलाऊ सरकारें बनेंगी। काम चलाऊ सरकारें उन्हें कहते हैं जिनसे काम न चल सकता हो।"

नौवीं कक्षा में पढ़ते समय एक दिन मैंने कहा, "बेबे मुझे लगता है मेरा कद और नहीं बढ़ेगा जितना बढ़ना था बढ़ गया।" उसने कहा, "यदि साधुओं जैसा मन रखेगा तो और भी बढ़ेगा। साधुओं जैसा स्वभाव बना अपना।"

एक दिन कहने लगी, "तुम सभी भाई बहन पढ़ाई में होशियार निकले। तुम्हारी तरक्की देखकर एक बार तो गाँव के लड़कों ने पशु चराने वाली लाठियाँ और लड़कियों ने गोबर उठाने वाले टोकरे फेंक कर किताबें उठा ली थीं, परन्तु पाँच पाँच चार चार वर्ष लगा कर जब देखा कि कोई बात बन नहीं रही तो फिर से लाठियाँ हाथों में और टोकरे सिरों पर टिक गए।"

पता चलता कि किसी पड़ोसी ने अपनी पत्नी को पीटा है तो उलाहना देने उसके घर जाती। कहती अरे औरत को पीटा तो मानो धरती को पीटा। इसमें कौन सी बहादुरी है? कोई शर्म हया है तुझे? डूबो देगी तुझे इस गाय की आह। रोटी पकती बुरी लगने लगी है तुझे? बेशर्म।

रूमाले में पाँच ग्रन्थी पेटी में और गुटका रूमाल में लपेट कर ऊँचे आले में रखती। किसी की हिम्मत नहीं कि हाथ धोए बिना उसे छू सके। पजामा खराब

न हो, कोई अखबार  या किसी पत्रिका को नीचे रख कर बैठ जाते तो डांट पड़तीअक्ल मारी गई? विद्या को  नीचे रखते हैं कहीं? हम हँसते क्या हो गया माँ। ये कौन सी बाणी है। फालतू कागज़ हैं। वह कहती अक्षर से बड़ा कोई ध्‍ ान नहीं, पता है? गुरूओं ने तपस्या की तो ईश्वर ने उनकी झोली अक्षरों से भर दी। अक्ल से काम लो अक्ल से।

चचेरा भाई गुरतेज बहुत शराब पीने लगा, समझाने पर भी नहीं रुका और उसकी मृत्यु हो गई, बेबे को समाचार मिला तो आह भरते हुए कहा, "लोगों को पता नहीं चलता संसार एक तेज आग की तरह है। इसमें घास फूस लकड़ी आदि सब कुछ जल कर भस्म हो जाता है, परन्तु सोना आग में भस्म होने की बजाय और निखर जाता है।"

कोई बड़ा काम शुरू करने से पहले हम जब माँ से आने वाले खतरों की बात करते तो कहती, "मक्खियों के दंश से डरकर इंसान ने शहद खाना बंद नहीं किया। गायों द्वारा लात मारने पर क्या दूध दोहना छोड़ देते हैं? कभी कहा है किसी ने कि इतने भूसे में से कौन दाने निकालेगा? खेत में हल इस कारण नहीं चलाएँगे क्योंकि कांटे बहुत हैं? किले की दीवार जैसी सख्त ज़मीन जोत कर रोटी पका कर खाई है हमने। तुम छोटे से खतरे से घबरा गए? जवानी में इतनी ताकत होती थी, इतना हौसला कि प्यास लगी है तो क्या हुआ  यदि पानी नहीं। कुआँ खोदो और पानी पीओ। कुछ मुश्किल नहीं यदि ईश्वर साथ  दे? विश्वास रखो गुरू तुम्हारे अंग संग है।"

छोटे बेटे का नाम सुखनबीर है। वह चार वर्ष का था जब साथ लेकर गाँव गया। उसे बेबे के पास छोड़कर मैं कोई काम करने निकल गया और सुबह का गया शाम को वापस आया। बेबे  ने बताया, "आज तेरे बेटे को मैंने मौके पर पकड़ लिया। मुझे गालियाँ दे रहा था अकेला बैठा। मेरे आने का इसे पता नहीं चला, मेरी तरफ पीठ थी।  मैंने पूछा, "अरे गालियाँ क्यों निकाल रहा है मुझे?" उसने कहा, "आपको नहीं मैं तो दीवार को गालियाँ निकाल रहा था।" मैंने पूछा, "दीवार को गालियाँ क्यों निकाल रहा था।" इसने कहा, "मुझे भूख लगी थी। दीवार ने रोटी नहीं दी। और क्या करता? गालियाँ देने लगा।" मैं सुखनबीर को डांटने ही वाला था कि माँ ने मुझसे कहा, "सुनो। तेरी पीठ पीछे कोई गालियाँ निकाले तो ध्यान मत देना। लोग ईश्वर को नहीं छोड़ते तुम क्या चीज़ हो। क्या पता गालियाँ निकालने वाला सच्चा हो। यदि वो कहे, तुझे नहीं, वृक्ष को गाली दी है तो इसी बात को सच मानना कि वृक्ष को ही गाली दी है मुझे नहीं।"

मैंने पूछा, ये सब मुझे क्यों समझाया जा रहा है? तो उसने कहा, "इस कारण कि तुम सभी बहन भाइयों पर गुरू दयावान है। तुम सभी तरक्की कर रहे हो। कौन सी ताकत और शान है जो तुम्हें नहीं मिली? अभी और मिलेगी। जो इस ताकत से रहित हैं, दुःखी हैं, अच्छा बुरा बोलने का हक उन्हें है तुम्हें नहीं।"

ऐसी ही बात बापू जी ने कही थी जब मैं कॉलेज में पढ़ता था। मैं एक दिन बहुत गुस्से में घर आया। कोई बात ही ऐसी हो गई थी। चाचा ने सोच समझकर कोई नुकसान किया था जिस कारण मुझे गुस्सा आ रहा था। बापू जी कहने लगे, "गर्म नहीं होते।" मैंने कहा, क्यों नहीं होते गर्म? जिसे गुस्सा नहीं आता वह कोई इंसान है? व्यक्ति को गुस्सा आएगा और आना चाहिए।" बापू जी ने कहा, "तू मेरे साथ लुहार की दुकान पर जाता रहता है। तूने देखा होगा कि लोहा गर्म होता है और लुहार ठण्डा, तो लुहार की मर्ज़ी चलती है। यदि लोहा ठण्डा और लुहार गर्म हो तो लोहे की मर्ज़ी चलेगी। गर्म न हुआ कर। यदि राज्य करना है तो गुस्से में मत आना। गुलामी करनी है तो तेरी इच्छा। गुरू कलगीधर बाबा जी युद्ध के मैदान में शांत रहते थे और शांति बांटते थे।"

हज़रत मुहम्मद साहिब अपने उस प्यारे जवान के घर गए जिसके माता पिता का देहांत हो गया था। उस युवक ने देखा कि सांत्वना देने आए पैगम्बर उदास हैं। युवक ने कहा, "मैं साधारण व्यक्ति हूँ। मेरे माता-पिता नहीं रहे मेरा दुःखी होना उचित है। आप महान् हो। आप क्यों उदास हुए?" पैगम्बर ने कहा, "माता-पिता लगातार अल्लाह के दरबार में फरियाद करते हैं कि हमारी संतान सुखी रहे। वे हमेशा कहते हैं"या खुदा, हमारा बच्चा अभी छोटा है। इसे समझ नहीं। इसके गुनाह बख्श। इसके गुनाहों की सज़ा हमे दे दे बेशक, इस मासूम पर दया करना। तेरी बंदगी करते हैं पिता तो इसका फल इन बच्चों को मिले।" माता-पिता की खुशी कायम रहे, इसलिए अल्लाह उनके बच्चों को क्षमा करता रहता है। तेरे गुनाह अपने सिर लेने के लिए अब कोई नहीं। माता-पिता के बिना कोई दूसरा नहीं जो दुआएँ देकर बलाएँ अपने सिर पर ले ले। तेरा एक मज़बूत किला टूट गया है। अब तेरा कठिन समय शुरू हो गया है। अब तुझे बहुत नेक बनना होगा। अपने कामों का उत्तरदायी तू स्वयं होगा। अनाथ बच्चों को देखकर मैं इसलिए उदास हो जाता हूँ कि क्या ये अपने जीवन का भार स्वयं उठा लेंगे? परन्तु अल्लाह दयालु है। वह अपने बच्चों के सिर पर इतना बोझ नहीं रखता कि वे उठा न सकें। अल्लाह ताकतवर है, वह तुझे शक्ति देगा। हौसला रख। तुझे नेकी करनी होगी। बंदगी करनी होगी।"

मेरी कुलीग प्रोफैसर भास्वती सिन्हा की माता का देहांत कई वर्ष पहले हो गया था, पिता जी का निधन अब हुआ। हम उनके घर अफसोस करने गए तो उन्होंने

कहा, "पन्नू भाई, अब हम अनाथ हो गए हैं। समझते हो इस शब्द का अर्थ? माता-पिता होते हैं तो हमारे नाक में नथ होती है, वे उसे खींच कर हमें ठीक रास्ते पर ले आते हैं। हम भटकते नहीं क्योंकि नथ उनके हाथ में होती है। दिशाहीन भटकेंगे हम इधर उधर। अब अपना रास्ता स्वयं ढूंढना होगा। अनाथ हो गए हम अब।"

छोटे भाई जसविन्द्र और भाभी चरणजीत ने वृद्ध माता-पिता की सेवा बंदगी की तरह की। प्रत्येक खुशी, दुःख या त्योहार के अवसर पर हम सभी उसके घर पहुँचते। रौनकें, खुशियों और मिलाप का मेला लग जाता। इस मेले में से विदा होकर जब हम अपने अपने घर जाने लगते तो जसविन्द्र धीरे से पूछता, "जब बेबे बापू न रहे, तब भी ऐसे ही आया करोगे जैसे अब?"

जिन बच्चों को माँ का प्यार कभी नसीब नहीं हुआ वे कैसे होंगे? पाठको जीन जैको रूसो की आपबीती (कनफैशनज़) पढ़ो। जन्म देने के बाद उसकी माँ की मौत हो गई। लिखता है पिता जी बताते थे, पड़ोसने भी, मेरी माँ बहुत सुन्दर थी। पिता जी से इतना प्रेम करती थी कि गरीबी होने के बावजूद भी उन्हें विदेश में अच्छी नौकरी करने से रोक दिया। पिता दुकान पर घड़ियों की मुरम्मत करता था। चार पाँच वर्ष का मैं उसके पास बैठा बातें सुनता। पिता कहता मैं तेरी माँ की बात मानकर दूर नहीं गया था। पर वह क्यों चली गई? हम दोनों रोने लगते। किसी दिन फिर पिता मुझसे कहतारूसो, तेरी मम्मी की बातें करें? मैं उत्तर देता नहीं पापा। मम्मी की बातें नहीं करनी। हम फिर से रोने लगेंगे। मेरी इतनी सी बात हम दोनों को देर तक रुलाने के लिए काफी होती।

नागसैन ने मुझसे पूछा *क्या कभी ऐसी माँ भी देखी है जिसने विदाई के समय बेटी को शिक्षा दी, "महलों में रहना बेशक परन्तु एक कोना ऐसा रखना जो तेरा हो। जहाँ अकेली बैठकर तू आराम से रो सके और कोई देखे न। पलकों में आंसू और आँचल में दूध छिपाकर रखना।"*

टैगोर *वर्षा की बूंदों ने धरती को चूमा और धीरे से कहाहम तुझसे बिछुड़ी हुई तेरी बच्चियाँ है और स्वर्ग से वापस आई हैं। हमें अपनी गोद मे समा ले माँ।*

इस कथा का अंत कैसे करें? सिक्ख धर्म की बातें कर लीं। पुराण का कोई मन्त्र ठीक रहेगा या कोई बौद्धवाक्य? दोनों ठीक हैं। देख लेना, जैसे पुरुष धर्मों के नाम पर झगड़े करते हैं, स्त्रियाँ नहीं करतीं। माताओं के आँचल इतने बड़े हैं कि उनमें सभी धर्म टिककर सो जाते हैं आराम से।

लो अब ऋषि वाक्य    *तू जिस मर्ज़ी देश में जा। किसी भी युग में छिपने का प्रयास कर। तेरे कर्म तुझे मिलेंगे। हज़ार गायों में बछड़ा जैसे अपनी माँ को ढूंढ लेता है, तेरे कर्म तुझे ढूंढ लेंगे।*

कभी मिर्चे तोड़ती घूमती खेत में, कभी कपास चुगती। कहीं बछड़ों के चेहरे सहलाती तो कहीं भैसों को थपथपाती। फटे पुराने पैबन्द लगे खादी के वस्त्र पहने, धूल- मिट्टी में लथपथ वह कभी झाड़ू देती दिखाई देती तो कभी उपले बनाती। अनिरूद्ध ने ये बौद्धवाक्य ढाई हज़ार वर्ष पूर्व लिखा, *"सत्य ने जब प्रकट होने का फैसला किया तब धूल मिट्टी और कीचड़ में लथपथ हो कर उसने इतनी रौशनी फैलाई की सारा संसार जगमगाने लगे। ब्रह्माण्ड ने प्रकाश की बाढ़ में स्नान किया।"*

# सतनाम सिंह खुमार

उर्दू जगत् में डॉ. सतनाम सिंघ खुमार (जन्म 3 नवम्बर 1934) का नाम उन गणनीय लोगों की श्रेणी में आता है जिनका शायरी हृदय में प्राण डाल देती है। जिन लोगों ने उसे पढ़ा या सुना उन्हें सहज ही ये अनुभव हो जाता है कि उसकी क्षमता नीले आकाश से पार तक की है। साधारण शब्दों में नवीनतम अर्थों को रंगने की होली उसने सारी उम्र खेली।

पहली बार 1988 में मैंने उसे पटियाला में एक मुशायरे में सुना। वह प्रत्येक शायर को मात दे रहा था, बार बार उसे ही सुनने की फरमाईश की जा रही थी। पूछने पर पता चला कि पंजाबी यूनिवर्सिटी में मनोविज्ञान का प्रोफैसर है वह। मैं उससे मिलना चाहता था। उसके परिचितों और मित्रों से गुजारिश की कि खुमार से मिला दें। प्रत्येक कहताहाँ चलेंगे, मिलेंगे . . .। इसी तरह पाँच महीने बीत गए। एक दिन बिना किसी को अपने साथ लिए मैं उनसे मिलने गया मिलकर पहले अपना नाम बताया, फिर नज़राने के रूप में उनके शेयर और गज़लें उनको सुनाईं। वह बहुत खुश हुआ और पूछा, "कितने समय से मैं इस यूनिवर्सिटी में आया हुआ हूँ, पहले क्यों नहीं मिला?" मैंने बताया कि अनेक मित्रों के माध्यम से मिलने का प्रयास किया परन्तु कोई लेकर ही नहीं आया। खुमार ने कहा तो तुम भी दुनिया के रास्ते से आने का प्रयास करते रहे, दिल का रास्ता तो बहुत सीधा था। पहले दिन खुमार को उसकी गज़ल के मैंने ये दो शेयर सुनाए

इस जगह को इस नक्शे से न समझा जाएगा।
रास्ता खो जाओगे तो शहर देखा जाएगा।
तू यूहीं इल्जाम देता है किसी को देखना।
चोर तेरा तेरे ही अंदर से पकड़ा जाएगा।

एक दिन बाई नम्बर फाटक पटियाला शहर में घूमते हुए मिला और कहने लगा "ये पटियाला शहर है? जिससे भी पूछो कहाँ रहता है, वह बताता है कि 21 नम्बर फाटक, 20 नम्बर फाटक, कोई 22 नम्बर फाटक। पटियाला फाटकों में बंद

हो गया है। मैं इसे इन फाटकों से बाहर निकालूंगा।" मैंने पूछा कहाँ जा रहे हो? खुमार ने कहा कहाँ जा रहा हूँ .. कहाँ से आ रहा हूँ, क्या पता

हवा के दोश पर बादल के टुकड़े की तरह हम हैं
किसी झोंके से पूछोगे कि हमको है किधर जाना।

मैंने पूछादोश का क्या अर्थ है? कहने लगा दोश मतलब कंधा। खानाबदोश में खाना का अर्थ घर, दोश, कंधा। वे लोग जिन्होंने अपना घर कंधे पर उठा रखा है।

एक दिन कॉफी हाऊस में बैठे बातें कर रहे थे तभी वहाँ मेरा एक मित्र आया जिससे मैं खफा था। आकर कहा अब खत्म कर झगड़ा। बहुत हो गया। सब कुछ खत्म करके नए सिरे से शुरू करते हैं। मैंने कहा कोई लाभ नहीं। अपने मित्रों का जो हाज़री रजिस्टर मैंने लगाया हुआ है उसमें से तेरा नाम काट दिया है। अब तुम जाओ। वह चला गया तो खुमार कहने लगा तू उन लोगों को मूर्ख बना सकता है जो पहले से मूर्ख हैं। ये व्यक्ति तेरी बात को सच मानकर कि तुमने नाम काट दिया हैचला गया। तू बता, जिसका नाम एक बार लिखा गया वह हमारी इच्छा से कट सकता है? यदि ऐसा हो सकता तो जीवन कितना सरल होता। कैटालॉग से कार्ड निकाल कर फेंके जा सकते हैं, रैक में से नापसंद किताबें बाहर रखी जा सकती हैं परन्तु यादें, स्थान, घटनाएँ, अच्छी हों या बुरी, इसी प्रकार आराम से बैठी रहेंगी। तेरी मर्ज़ी से ये कहीं नहीं जाएँगी।

मैंने पूछा खुमार साहिब उर्दू, लुप्त होती जा रही है। नई पीढ़ी गज़ल को तो पसंद करती है परन्तु अर्थों के संचार की समस्या है। आप प्रत्येक मुशाअरे में बहुत जोश से अपनी गज़ल प्रस्तुत करते हो। क्या आपको कभी ये अनुभव नहीं होता कि आपकी बात पूरी तरह समझ में नहीं आ रही?

उसने कहा मैं पहले दो चार शेयर कहता हूँ, श्रोताओं को देखता हूँ। भीड़ में कोई न कोई व्यक्ति ऐसा दिखाई दे जाता है जिसकी आँखों में चमक आ जाती है और वह दाद दे रहा होता है, जो मेरे साथ एकसुर होता है। तब दूसरों की तरफ मैं ध्यान नहीं देता। उस अकेले व्यक्ति को ही कलाम सुनाकर आ जाता हूँ क्योंकि उसके लिए ही लिखा था। किसी अकेले के लिए होती है रम्ज़ की बात, भीड़ के लिए नहीं।

एक शायर के घर में पंजाबी कवि दरबार था। मैंने खुमार से कहाचलें? उसने कहा हमें किसी ने निमंत्रण तो दिया नहीं। मैंने कहा, मैं ये कहकर भीतर जाऊँगा, मैं शायर नहीं, श्रोता हूँ। श्रोता के बिना आप क्या करोगे? खुमार ने कहा

ठीक है। मैं ये कहूंगा कि पंजाबी कवि कैसे फैसला करेंगे अपने कलाम का यदि वे किसी दूसरी भाषा के शायर को कुछ सुनाते नहीं, कुछ सुनते नहीं। हम दोनों गए। अच्छी गज़लें और कविताएँ थीं। फिर खुमार से कहा वह भी कुछ सुनाए। उसने गा कर गज़ल सुनाई :

मेरे जौक-ए- तजस्सुस के उजालो।
मुझे पत्थर की दुनिया से निकालो।
मुझे रहने दो बनके सिर्फ खुशबू,
अभी फूलों के सांचे में न ढालो।
तुम्हारा शहर है शोलों की ज़द में,
बचाओ इसको या खुद को बचा लो।

सभी को बहुत अच्छी लगी और पूछा पंजाबी शायरी बारे आपका क्या विचार है? खुमार ने कहाकुछ शायरों में कल्पना की विशेषता है परन्तु संगीत नहीं। लगता है पंजाबी शायर को अभी तक खुद पर विश्वास नहीं हुआ कि कोई बड़ा संगीतकार उसे गाएगा भी। मुझे मेरे कलाम के बारे में पता है कि गायक इसे गायेंगे और श्रोता झूमेंगे। एक कवि ने पूछाक्या आप अपनी शायरी को संगीत में रंगने के लिए विशेष प्रयास करते हो? उसने कहाबिल्कुल नहीं, जो पिता, खूबसूरत ख्याल भेजता है उसे कहा संगीत भी भेज दिया कर। जब आप संगीत मांगोगे, आपको भी देगा।

वह महान् शायर उस्ताद शमीम करहानी का शार्गिद था। मुशायरे में जिन गज़लों को सुनकर प्रशंसा की बाढ़ आती, उन गज़लों को शमीम साहिब के पास उनकी राय जानने के लिए लेकर जाता, कहते सप्ताह बाद आ जाना। जब फिर से उनके पास जाता तो कहते मेहनत करता रह, आ जाएगा तुझे भी लिखना एक दिन। वाह वाह के पीछे मत चलना। जिनके पाँव अधिक कोमल हैं, रेगिस्तान का रास्ता उन्हें जल्दी पकड़ना चाहिए। रेगिस्तान में नंगे पाँव चलना, मैंने देखा है तेरे पाँव कोमल हैं। ये तपती रेत को ठण्डक देने के काम आएँगे।

एक दिन कहने लगाइतनी तेज़ी और खतरनाक चाल से समय भाग रहा है कि कोई ट्रैफिक वाला इसका चलान नहीं काटता। इसी प्रकार ख्याल हैं आकाश में से निकलते हैं तो कोई रंग, मेरे पास पहुँचते हैं तो कोई अन्य रंग, कलम के द्वारा निकलते समय और ही रंग होते हैं। मैं लिखता हूँ और हैरान होता हूँ ये कैसे हो रहा है और क्या हो रहा है। शब्दों का दरिया बहता जा रहा है, ये तो मुझे पता है, परन्तु कहाँ ले जाएगा और वहाँ क्या करेगा, पता नहीं चलता।

वह आता तो जैसे एकान्त में मेला लग जाता। आराम से घंटों टांगे सीध
ी करके बैठा रहता। उसमें उतावलापन नहीं था कोई। वह न तेज़ चलता, न तेज़ बात करता, आराम से बातें करता रहता ... सारा सारा दिन ... आधी आधी रात तक। उसकी पत्नी उसकी नवाबी आदतों से चिढ़ती नहीं थी। उसने बताया, जब विवाह से पहले खुमार साहिब मुझे देखने मिलने आए तो इन्होंने कहा सब ठीक है। घर परिवार... तू ... तेरी पढ़ाई लिखाई ... ठीक है सब। परन्तु मेरी शर्त है एक। इसे मानोगी तभी विवाह होगा। शर्त ये है कि रोटी तभी खाऊँगा जब भूख लगेगी ... ये नहीं कि भोजन तैयार है। खा लो। स्नान तब करूँगा जब मन करेगा, ये नहीं कि गर्म पानी तैयार जाओ नहा लो। तभी सोऊँगा जब नींद आएगीये नहीं कि आधी रात बीत गई दिन निकलने वाला है... सो जाओ।

मुझसे कहता तेरे स्वभाव में उतावलापन है। अच्छी भली बातें करता करता तू अचानक दौड़ने लगता है। कोई सुन्दर पल, जो स्वयं चलकर आए, वह रुक सकता है यदि आदरपूर्वक उसे रोकने वाला मिले कोई। मेरे पास तो कोई कोई पल महीनों मेहमान के रूप में रह लेता है। वे मेरे साथ मैं उनके साथ देर तक नशे में रहते हैं।

उसके लिए जीवन की प्रत्येक घटना शेयर थी। सफ़र में लेट हो गए, जिस गाँव में जाना था वहाँ जाने वाली आखिरी बस जा चुकी थी। इधर उधर से पूछा अब क्या करें? एक दुकानदार ने कहाउधर बाईपास पर चले जाओ। वहाँ गन्नों से लदे ट्रक जाते हैं, मिल जाते हैं ... सवारियों को बिठा लेते हैं अकसर, आपको गाँव पहुँचा देंगे। बाईपास पर खड़े हम ट्रक का इंतजार कर रहे थे तो खुमार ने कहा अब हम यहाँ खड़े उस ट्रक का इंतजार कर रहे हैं जिसके बारे ये भी नहीं पता कि वो वहाँ से निकला भी या नहीं। सारी ज़िन्दगी ऐसा ही अनजान सिलसिला है।

मित्रों को मिलते रहना, दूर उनके घरों में जाना, यही उसका स्वभाव था। अपने पुराने मित्र से मिलने उसके गाँव चला गया। आकर मुझे बतायासभी भाई बहन अच्छे कारोबार में व्यस्त हैं। गाँव की हवेली में बुजुर्ग पिता अकेला बैठा था। उसे प्रणाम करके पूछा ... कहाँ हैं परिवार के बाकी सदस्य बापू जी? कब आते हैं घर में? बापू ने कहाघर? कौन सा घर? ये कोठी कोई घर है ...? कबूतरखाना है, कबूतरखाना ... पता नहीं कबूतर कहाँ से आते हैं ... कुछ देर बैठकर पता नहीं कहाँ उड़ जाते हैं। दायें बायें, बायें दायें .... उडानें हैं केवल ... केवल उडानें। ये अब घर नहीं रहा बेटा।

एक बार बीमार हो गया। मैं अस्पताल हाल चाल पूछने गया। मुझसे कहा वो आखिरी बिस्तार के नज़दीक कुर्सी पर जो बुजुर्ग बैठा है उसे देख। सुबह

मेरे पास आया। पूछा सतनाम ही है तू? मैंने हाँ में सिर हिलाया। मैंने उसे नहीं पहचाना था किन्तु जब उसने बताया तो पहचान लिया। हमारे पड़ोसी गाँवों में से था। कहने लगा परसो मुझे तुझे देखकर लगा सतनाम ही है ये। फिर मैंने नर्स से पूछा। नर्स ने बताया कि तू प्रोफैसर हैं, यानि कि अफसर, सोचा, प्रोफैसर है . .. शहर में रहता है हाल चाल पूछ लेते हैं ... कई बार कोई काम ही पड़ जाता है। खुमार ने पूछा, कैसा है आपका बेटा? -ठीक है, बुजुर्ग ने कहाचार चार सेब खा जाता है अब हर रोज़। मौजें मना रहा है। दिलवाता हूँ इसे छुट्टी।

स्वामी नित्य चैतन्य यति उसका प्रिय मित्र अकसर खुमार को ख़त लिखता। प्रत्येक ख़त खुमार मुझे पढ़ने के लिए देता। अंग्रेज़ी में लिखा स्वामी का एक ख़त मेरे सामने रखा है। लिखा हैबहुत समय हो गया खुमार तुझे देखे हुए। एक बार आ जा। तू कहेगा ऊटी दूर दक्षिण की सीमा पर है, कौन इतनी दूर जाएगा? अरे भाई कोई कठिनाई नहीं। जादू के कालीन अभी मिलते हैं बिछाओ, और बैठकर आँखें बंद करो। मेरे पास पहुँच जाआगे। मैं तो कितनी बार तेरे पास ऐसे पहुँच जाता हूँ। तू आएगा तो देखेगा, ये रथ जिस पर मैं आठ दशकों से सवारी कर रहा हूँ, पुराना हो गया है... इसके पेच ढीले हो गए हैं, पहिए डगमगाने लगे हैं...। तू आधुनिक शायर हैं। हम बूढ़ों की ये शब्दावली... रथ, पेच, पहिए.... तुझे अच्छी नहीं लगेगी ... पुराना ढंग है ये बात करने का ... अच्छा तेरी शैली में बाते करते हैं, आधुनिक शायर की शैली में बताता हूँ, जिस गधे पर मैं बैठा घूम रहा हूँ वह बूढ़ा हो गया है।

एक दिन इसे कहा कि तुझे छोड़कर अब चले जाना है मैंने। गधे ने कहा मुझे अकेले छोड़ जाएगा स्वामी? मुझे साथ लेकर जा मालिक। मैंने अस्सी वर्ष तक तेरा भार उठाया, खुशी से दौड़ता रहा तुझे अपने उपर बिठाकर। अब तू छोड़ जाएगा। मैंने कहाकोई इकरारनामा तो नहीं लिखा किसी अस्टाम पेपर पर कि यदि तू मुझे उठाकर घूमेगा तो मैं तुझे अपने साथ लेकर जाऊँगा। मैं तुझे साथ लेकर नहीं जाऊँगा। डांटकर पीछे किया इसे। मूर्ख गधे के आँसू रेत में गिरते देखे।

जल्दी जल्दी अस्पताल नहीं जाता था वह। एक बार नकसीर की समस्या अधिक बढ़ गई और अस्पताल में दाखिल होना पड़ा। डॉक्टर ने कहा आप्रेशन करना होगा, खुमार ने कहा नहीं करवाना। डॉक्टर ने कहाछोटा सा आप्रेशन है बेहोश कर देंगे और आप्रेशन हो जाएगा। हमने पूछा क्यों जिद्द कर रहे हो? कोई तकलीफ नहीं होगी। उसने कहा बेहोश कर देंगे। परन्तु यदि होश ही नहीं आई तो क्या करूँगा? इनके कहने से अज़ल तक मैंने बेहोश नहीं होना।

इंटरव्यू देने गया। वाईसचांसलर साहिब ने किसी दूसरे का चयन करना था, इधर उधर के प्रश्न पूछे, तब खुमार ने कहा मेरा विषय मनोविज्ञान है इसके

बारे में प्रश्न पूछो। वाईस चांसलर ने कह दिया यू आर कनफियूज़क पर्सन खुमार। खुमार ने कहा पीपल आर कनफियूजड एबाऊट देयर क्लैरिटी ऑफ माईड, आई एम वैरी मच क्लीयर इन माई कनफियूजनज सर। ये कहकर वह आ गया।

उसने न घर बनाया न ही प्लाट खरीदा। कार थी, जहाँ भी जाता कार में जाता। मैंने एक दिन कहा घर बना लेना चाहिए। कभी अक्ल की बात भी करनी है या नहीं। उसने कहासंसार जो थोड़ा बहुत सुन्दर प्रतीत होता है न, मूर्खों के कारण सुन्दर है। बुद्धिमानों ने इसे कुरूप बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। मैं मूर्ख ठीक हूँ। मुझे गर्व है कि मैं बुद्धिमान् नहीं हूँ।

एक दिन शहर में मिला, पूछा क्या कर रहे हो? उसने कहा अपने जैसा एक और ढूंढ रहा हूँ ... सफलता नहीं मिल रही क्योंकि बेमिसाल हूँ मैं ... बता कौन है मेरे जैसा इस संसार में।

उसके पास बहुत पुराने मॉडल की फिएट कार थी जिसके दरवाज़े विपरीत दिशा में खुलते थे अर्थात् दरवाज़े का हैंडल आगे होता और कबज़ा पीछे की तरफ। एक दिन मेरे घर आया तो देखा कार का आधा फर्श टूटकर नीचे की तरफ लटक रहा है। मुझे पूछा घर में कोई रस्सा या रस्सी है? मैंने रस्सी दे दी, स्वयं तो कार में बैठ गया, कहा जैसे भूसे की बोरी को बांधते है, कार को इसी तरह बांध दे, वर्कशाप तक पहुँच सके। रस्से के साथ उसकी खिड़कियाँ भी बंध गई। मैंने पूछा उतरोगे कैसे? कहावर्कशाप में मिस्त्री रस्सा खोलेगा तब मैं बाहर आ जाऊँगा। मैंने कहा नई अच्छी कार नहीं खरीद सकते? उत्तर मिला गोलगप्पे वाले दस दस लाख की कारें लेकर घूमते हैं। जब कार में से उतरता है, कोई पूछता हैकौन ये? तो उत्तर मिलता हैगोलगप्पों वाला है। मैं पुरानी फिएट में से जब बाहर उतरता हूँ तो लोग कहते हैंसरदार खुमार आया है। शायर खुमार आया है।

गलफ से एक धनी शेख, खुमार का मित्र कश्मीर देखने आया। खुमार से कहा कि अच्छी टैक्सी का प्रबन्ध करे, ड्राईवर को अंग्रेजी का ज्ञान हो, खुमार साथ जाएगा। वापस आकर, खुमार ने बताया जम्मू जा रहे थे तभी अचानक एक मुर्गी सड़क पर आ गई। कार से टकरा कर मर गई। ड्राईवर कार भगाने लगा तो शेख ने रोकने के लिए कहा। ड्राईवर ने कहा गुस्से वाले लोग हैं। झगड़ा हो जाएगा। शेख ने कहा नहीं झगड़ेंगे। वापस चल। वापस आ गए, पाँच सात स्त्रियाँ पुरुष आस-पास खड़े हो गए। शेख नीचे उतरा। सभी से क्षमा मांगते हुए दो सौ रूपये मालिक को दिए और कार में बैठ गए। ड्राईवर ने कहा पचास रूपये की भी नहीं थी मुर्गी। दो सौ रूपये दे आए। पूछ तो लेते। शेख सुनता रहा। ड्राईवर बड़बड़ाने लगा मूर्खता, दो सौ रूपये दे आया। साथ ही मुर्गी भी वो लोग खाएँगे। वह भी उनको दे

दी। है न मूर्खता? शेख ने कहाअल्लाह मूर्खता पंसद करता है इसी कारण मूर्खों को दौलत देता है और बुद्धिमानों से गाड़ी चलवाता है।

पिता का नाम सुरजन सिंघ था। उसने मिंटगुमरी ज़िले में गाँव बनाया जिसका नाम चक्क सुरजन सिंघ वाला है। कहने लगा मैं बड़े रईस सरदार का बेटा हूँ। माँ वृद्ध है पता नहीं कब साथ छोड़ दे। मैं माँ के संस्कार की ऐसी रस्में निभाऊँगा, लोग देखेंगे कि ये चक्क सुरजन सिंघ की सरदारनी का देहांत था।

23 मार्च, 1997 को माँ की दवाई लेने घर से निकला तो सुबह दस बजे ट्रक की चपेट में आ गया। मौके पर ही संसार से कूच कर गया। उसकी लाश सड़क पर पड़ी थी ... समीप ही ट्रैफिक तेज़ी से चल रहा था ... काल का पहिया धीमा नहीं होता। काल के पास रुकने की फुर्सत नहीं। समाचार सुनते ही दोपहर को माँ भी उसके साथ चली गई।

मेरी रफ्तार पर कितना सितम ढाते हैं चौराहे।
मैं जब भी तेज़ चलता हूँ तो आ जाते हैं चौराहे।।
जुदा होती हैं रूहें ख्वाब चकनाचूर होते हैं
बड़े पुरदर्द मंज़र सामने लाते हैं चौराहे।।

हवा के झोंकों से पूछा, उसे कहाँ ले गए, उत्तर नहीं मिला। वर्षों से उसके घर के बाहर नाम-तख्ती लटक रही थी। अंतिम संस्कार के अगले दिन बच्चे गली में खेल रहे थे। गेंद तेज़ी से आई तख़्ती पर लगी और उसे चकनाचूर कर दिया। नासिर नकवी ने खुमार का ये शेयर सुनाया

ज़िन्दगी उठ जाएगी खाली मकां रह जाएगा।
नाम की तख़्ती पे धुंधला सा निशां रह जाएगा।

नकवी ने कहा धुंधला नहीं, कुदरत उसका साफ निशान छोड़ेगी, मेरा ये दावा है।

बुखारी पूंझ लै अखां, दिलां नू भिओण दी गल कर
ओए दर्दा मेरे लूं लूं विच समा जा, रात भिज गई ए।
खलो जा जांदिआ वक्ता, खलो के बात सुनदा जा
मिले किधरे तां आखीं सू चला जा, रात भिज गई ए।

...

उसके कुछ शेयर प्रस्तुत कर रहा हूँ। चार दीवान प्रकाशित हो चुके हैं। मैंने उनमें से चुनावित गज़लों को गुरमुखी लिपि में लिख लिया है। प्रकाशक की तलाश है।

गिरेगा, क्योंकि तू जिन पर खड़ा है,

किसी के पाँव हैं तेरे नहीं हैं।।
खिलौने अब भी रोकर मांगते हैं
मगर कहते हैं हम बच्चे नहीं हैं।।

...

वो मुझसे कदावर है उसे ऐसा लगा था।।
शायद वो किसी छत्त से मुझे देख रहा था।
किस बात पर, अब याद नहीं, बनकर मुस्कान
चुपके से मैं होंठो पर तेरे फैल गया था।।

...

फिर से जब अपने मकानों को बनाना लोगो।
घर की दीवार को घर में ही गिराना लोगो।।

खुद ले आई है शमशीर की ज़द तक दुनिया
और अब ढूंढे है मरने का बहाना लोगो।

# जी. एस. रिआल

पूरा  नाम गुरबचन सिंघ रिआल, बर्तानिया का नागरिक जिसकी इच्छा पंजाब में रहने की थी। इस कामल फकीर का मैं दस वर्ष तक मुरीद रहा। सामान्य बातचीत हो, या मंच पर सेमिनार में बोलते समय तीन व्यक्ति मैंने ऐसे देखे जो शब्दों का शृंगार नहीं करते, एक गण्डा सिंघ, दूसरे हरकीरत सिंघ तीसरे रिआल साहिब। आभूषण नहीं बनाए न सही, सोने की ईंट का कौन सा मूल्य कम होता है।

मैंने कहारिआड़ तो सुने थे रिआल नहीं सुने। हँसते हुए कहा कोई बताता था कि चाहल और राहल दो भाई थे जिनके आगे ये वंश हैं। राहल से पहले राअल बना फिर रिआल। किन्तु हमें इससे क्या लेना देना। तुम ये बताओ कि कैनन क्या होती है। मैंने कहा जी मेरे विषय में कैनन उस विधान को कहते है जिसके अन्तर्गत धर्मग्रन्थ को सटीक रूप दिया गया। आप बताओ। कहा ठीक है, कान्ना शब्द है जो पंजाबी का उसे अंग्रेजी में केन कहते हैं, इसी से गन्ना बना, इसी से कांड। प्राचीन समय में बांस की सीधी पतली छड़ियों के गज़ बनाते थे। इसलिए कान्ना या कैनन का अर्थ हुआ स्टैंडर्ड, रूल, पैमाना। कैनाल शब्द की उत्पत्ति भी यहीं से हुई। पंजाबी में क उड़ गया, रह गया शब्द नाल, यहाँ से नाली, नड़ा, नाड़ी, नाड़, नाड़ूआ आदि शब्दों का निर्माण हुआ। बच्चों, लोगों को सबक सिखाने के लिए मास्टर और पुलिस केन (बैंत) रखते थे। गन्ने के लिए अंग्रेजी शब्द शुगरकेन है, अर्थात् चीनी का काना, केन के लिए सपेनी में कण, फ्रांसीसी भाषा में कन्ना, पंजाबी में कानी है; कानी शब्द का प्रयोग कलम और बाण दोनों के लिए किया जाता है। यूनानी में जो कैनन था फारसी में उसका शब्दा कानून बन गया। पंजाबी में खानदान के लिए बंस (वंश) शब्द भी बांस की नीचे से ऊपर तक पीढ़ियों की तरफ इशारा करता है।

सुकरात और रिआल जैसे लोगों को क्लास रूम और ब्लैकबोर्ड की आवश्यकता नहीं होती। जहाँ वे खड़े या बैठे होते हैं वहाँ विद्या के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं होता। कभी कभी कहते हैंअनपढ़ लोग शिक्षितों को पढ़ा रहे हैं। इनको क्या पता शब्द की जड़ क्या होती है। ये बात हुई जंगल में मोर नाचता किसने

देखा। आँखों वाले खामोश हैं और अंधे गा रहे हैं मैंने देखा... मैंने देखा... मैंने देखा. ..। एक नेत्रहीन शायर अपने नेत्रयुक्त मित्र से कहने लगा शेयर की पहली पंक्ति तो लिख ली किन्तु दूसरी क्या लिखूं समझ में नहीं आ रहा। आप सहायता करो। पंक्ति सुनाईः

उस जुल्फ की फबती शबि जैदूर की सूझी।

(उस जुल्फ की उपमा काली मूक रात से देने के बारे में सोचा है)

नेत्रयुक्त व्यक्ति ने कहा दूसरी पंक्ति ये बनती हैः

अंधे को अंधेरे में बड़ी दूर की सूझी।

कहने लगा अनेक धातुएँ विस्मयजनक हैं। पंजाबी में जिसे बातचीत आदि कहते हैं अंग्रेजी में वह कनवर्सेशन है। कौन मानेगा दोनों की जड़ एक है। 'बात' संस्कृति के 'वार्ता' शब्द का पंजाबी रूप है। यूनानी शब्द है वर्ट, उससे निर्मित हुआ वरस - कनवरस - कनवर्सेशन। जब बातें करते हैं तो ये एक चक्र है विचारों का जो स्वयं ही प्रवाहित हो रहा हैपरिवर्तित हो रहा है। अंग्रेजी का परवर्ट शब्द भी वरट से बना और वृत्त (चक्र) भी। परवर्शन (अंग्रेजी) और परिवर्तन (संस्कृत) की जड़ एक है।

रिआल ने एक सामूहिक स्रोत में से उत्पन्न अनेक भारोपीय मूलक भाषाओं (पंजाबी, संस्कृत, फारसी, अंग्रेजी, लातीनी, यूनानी, रूसी, करोशियन) की शब्दावली का चिरकालिक गहन अध्ययन किया है। ये सामूहिक तथ्यों की भ्रान्ति समानताओं के विपरीत शब्दों की ध्वनि, रूप और उसके अर्थ सम्बन्धी कुछ नियमों पर आधारित है, जिसे निरुक्त (etymology) कहा जाता है। इसी परम्परा में पंजाबी यूनिवर्सिटी के पंजाबी विकास विभाग की तरफ से उसकी पुस्तक *Croatian and Sanskrit: A Common Heritage of Words* (पंजाबी भाषा के विशेष विवरणों सहित) प्रकाशित की गई। इसके एक अध्याय में रूसी, चैक्क, बुलगारियन आदि समीपवर्ती सलावक भाषा करोशियन और संस्कृत के लगभग पाँच सौ सजातीय शब्द शामिल हैं। इससे पूर्णतः सिद्ध होता है कि करोशियन का संस्कृत-पंजाबी के साथ सम्बन्ध हज़ारों वर्ष पुराना है और इसका मूल, प्रारम्भ सभ्यता के पूर्वज एक ही हैं।

खुशी खुशी एक कापी मुझे देने आया। मैंने कहा हम ये पुस्तक करोशियन दूतघर में क्यों न भेज दें? मैंने पुस्तक को राजदूत, ऐम्बैसी ऑफ करोशिया, नई दिल्ली भेज दिया। राजूदत का फोन आया, कहा प्रोफैसर साहिब मैंने इस पुस्तक को एक सिटिंग में पढ़ा है। मुझे इसकी सौ प्रतियाँ और चाहिए। क्या करें? मित्रों को देने के लिए इससे अधिक अच्छा उपहार अन्य कोई नहीं। मैंने बताया कि

दिल्ली में विश्व पुस्तक मेले में हमारे विश्वविद्यालय की बस आ रही है पुस्तकों लेकर। आप वहाँ से खरीद लेना।

फिर राजदूत ने पूछा मैं उनसे मिलना चाहता हूँ, मुझे समय निश्चित करके बता दीजिए? मैंने कहा समय तय कर मैं आपको सूचना दे दूंगा। अब समय केवल रिआल साहिब से नहीं लेना था, बड़ा विदेशी मेहमान आ रहा था जिस कारण वह वाईस चांसलर की मेहमान नवाज़ी का हकदार था। विभाग की तरफ से ये मामला वाईस चांसलर सरदार स्वर्ण सिंघ बोपराय के नोटिस में लाया गया और उनके दफ्तर ने राजदूत से सम्पर्क स्थापित कर उन्हें 28-11-2006 को पटियाला आने का निमंत्रण दिया। राजदूत अपने सचिव सहित 27 नवम्बर की शाम को पहुँच गए। विश्वविद्यालय द्वारा उनका भव्य स्वागत किया गया। अगले दिन कॉनफ्रेंस हॉल में सभा का आयोजन किया गया।

विचार-विमर्श दौरान उन्होंने बताया कि वे हिन्दी सीख रहे हैं, जो उन्हें कठिन लगती है। रिआल की पुस्तक पढ़ने के बाद वे इस परिणाम पर पहुँचे कि संस्कृत की करोशियन से इतनी समानता है कि हिन्दी से सरल प्रतीत होती है। मैंने खुशी खुशी श्रोताओं को बताया कि पंजाबी विश्वविद्यालय के प्रकाशन विभाग के इतिहास में पहली बार ये हुआ है कि एक ही व्यक्ति ने किसी पुस्तक की सौ प्रतियाँ एक साथ खरीदी हों। राजूदत ने उठकर कहा वे सौ प्रतियाँ तो मैंने भेज दीं। अब और सौ खरीदना चाहता हूँ। मंगवा दो।

विश्वविद्यालय ने कुल तीन सौ प्रतियाँ प्रकाशित की थीं, कि बिकेंगी तो नहीं। दो सौ प्रतियाँ करोशिया पहुँच गई।

राजदूत ने अपने भाषण में कहा अकेला इंसान यदि ताकतवर हो तो दो देशों को मिला सकता है जैसा रिआल साहिब ने किया है, मैं अपने देश में से दो भाषा वैज्ञानिक इस विश्वविद्यालय में भेजूंगा। वे रिआल साहिब से करोशियन सीखेंगे।

वाईस चांसलर ने कहा रिआल साहिब अकेले हैं आजकल, दबेलजे साहिब, एक मैडम भेजो।

रिआल ने पुस्तक की भूमिका बताते हुए कहा कि सलावक भाषाएँ, विशेषतः करोशियन के दो पक्ष महत्त्वपूर्ण है। एक तो ये कि अर्थ विकास की दृष्टि से इस भाषा से एक क्लासिक भाषा की झलक मिलती है, दूसरे इसकी शब्दावली का प्रारम्भिक रूप अभी तक कायम है, जिससे ये भाषा पंजाबी, हिन्दी आदि की समानता, जो मातृ भाषा के सामान्यतः विकसित रूप हैं, संस्कृत भाषा से अत्यधिक

समानता रखती है। कुछ सजातीय शब्दों के उदाहरण मूजब करोशियन bogovan, prevrat, oko, nov, Ijubavan, Kadi, Kad, dva (मूल संस्कृत) क्रमशः पंजाबी में भागवान् परिवर्तन, अक्खीं, नवां, लुभाऊना, कदे कदे,, दो पारस्परिक सम्बन्धी हैं। इसके अतिरिक्त कुछ परिस्थितियों में करोशियन के भाषाई अध्ययन से संस्कृत के निरुक्त अध्ययन को भी बल मिलता है, जैसे वेदों के निरुक्तकार यास्क मुनि अनुसार संस्कृत तस, चोर (जैसे तस्करी) का मौलिक रूप तत्त्व है जो कि tat रूप में सुरक्षित है। इसी प्रकार आर एल टर्नर जैसे विद्वान् मूजब संस्कृत 'कर्पट' (चीथड़ा, इसके लिए पंजाबी में 'कपड़ा' अभारोपीय में 'कापड़ी' शब्द चीथड़ेधारी साधु के लिए प्रयुक्त होता है।)

वाईस चांसल ने प्रधानगी भाषण में कहा हमें गर्व है कि एक पंजाबी विद्वान् करोशियन भाषा सम्बन्धी करोशिया के विद्वानों को बहुत कुछ दे सकता है। उन्होंने ये भी कहा कि पंजाबी विश्वविद्यालय विद्वानों के आदान-प्रदान के लिए तत्पर है। मैंने कहा रिआल साहिब आपके कोशों की जिल्दें फट गई हैं, ठीक करवा दें? उन्होंने कहा नहीं। कोशों की अनुपस्थिति में मैं कैसे जीवित रहूंगा? जिल्द बांधने वाले कई सप्ताह तक वापस नहीं करते। मैंने कहा ऐसे करते हैं कि दो दो कोश ले जाया करूंगा, इस प्रकार सारे कोशों की मुरम्मत हो जाएगी। वे मान गए, मुझसे पूछा- जिल्द का क्या अर्थ है? मैंने कहा पुस्तक की सुरक्षा हेतु बांधा गया कवर। उन्होंने बताया जिल्द का अर्थ खाल (चर्म) होता है। इसी से जल्लाद शब्द का निर्माण हुआ, जल्लाद अर्थात् खाल उतारने वाला।

विभाग में आए, मुझसे पूछा विडो ( widow) का क्या अर्थ है? मैंने कहा मैं क्या बताऊँ? आपने जो बताना है बता दीजिए। बताया संस्कृत की ध ाातु है विद्, जिसका अर्थ है वियोग, बिछड़ना, इसी से विधवा शब्द की उत्पत्ति हुई जो फारसी में बेवा बन गया और अंग्रेजी में इसे विडो कहते हैं। अंग्रेजी के वैज (Wedge) शब्द की उत्पत्ति भी यहीं से हुई क्योंकि कुल्हाड़ा भी एक के दो भाग करता है।

मेजर गुरमुख सिंघ काम तो सिक्ख विश्वकोष में करते थे परन्तु साथ ही साथ उन्होंने अंग्रेजी पंजाबी कोश भी तैयार किया। उनका ये काम बहुत शानदार है। इस कोश के सात संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। मैं रिआल साहिब के साथ भवन से बाहर आ रहा था तभी मेजर साहिब को भवन की तरफ आते देखा। मिलते ही रिआल ने मेजर से कहामेरे पास न आपका फोन न कोई पता। आपने देखा होगा आपकी डिक्शनरी पर चोरों ने अपने नाम छपवा लिए हैं। काम आपका, नाम दूसरों के। मेजर ने कहा हाँ मैंने देखा है, गलत काम है इन्होंने। रिआल ने कहा थाने

में इनके विरुद्ध मुकद्दमा दायर हो सकता है। मेजर खामोश हो गया। रिआल ने कहा आओ हम वाईस चांसलर के पास तो शिकायत करें। मैं आपके साथ चलता हूँ। मेजर ने कहा रहने दो रिआल साहिब। मैंने अपना काम करना था, कर दिया, इन्होंने अपनी कढ़ी घोल दी, हमें इससे क्या लेना देना। जो होना था हो गया। सुनकर रिआल ने गुस्से में कहा अब तक तो मुझे उन चोरों के विरुद्ध रोष था कि उन्होंने आपकी जगह अपना नाम छपवा लिया किन्तु अब मुझे पाकिस्तानी फौजों के विरुद्ध गुस्सा आ रहा है जो आप जैसे लोगों से पराजित हो जाती हैं।

मुझे बताया टी.वी पर रामदेव बता रहा था कि कद्दू का रस बहुत गुणकारी है। स्वस्थ रखता है। मैंने सोचा कद्दू का रस पीकर जीवित रहने से तो मरना अच्छा है ?

धनवंत कौर ने कहा रिआल साहिब, वाईस चांसलर की इच्छा है कि आक्सफोर्ड जैसी विशाल डिक्शनरी पंजाबी की तैयार की जाए। आपकी सहायता की आवश्यकता होगी। रिआल ने हँसते हुए कहा कहाँ आक्सफोर्ड कहाँ पंजाबी। आज अंग्रेजी सारी दुनिया की भाषा बन चुकी है, इसके भंडार से किसी अन्य भाषा की तुलना नहीं हो सकती। आप केवल एक the शब्द की व्याख्या ही पढ़ लें, तसल्ली हो जाएगी। फिर  that पढ़कर देखो। धनवंत ने कहा जो भी है हम अधिक से अधिक काम करेंगे, पंजाबी का सम्पूर्ण शब्द भण्डार संग्रहित करेंगे। रिआल ने पूछा संपादक मण्डल में कौन कौन होंगे? जो नाम धनवंत ने बताए, रिआल उन्हें अनपढ़ कहता था। हँसकर कहा जहाँ इनका नाम होगा वहाँ मैंने अपना नाम छपने ही नहीं देना। ऐसा करते हैं, कामरेड सरकार में शामिल होने की बजाए जैसे कह देते हैं कि बाह्य समर्थन देंगे, इसी प्रकार मैं संपादकीय मण्डल को बाह्य समर्थन दूंगा, इसमें शामिल नहीं होऊँगा।

रिआल को पंजाब सरकार ने शिरोमणि आलोचक का स्टेट सम्मान दिया था। ऐसे निर्विवाद और लग्न से काम करने वाले विद्वान् को सम्मानित करने से संस्थाओं और सरकारों की प्रतिष्ठा बढ़ती है।

सम्मान देने की घोषणा के पश्चात् पता चला कि दलीप कौर टिवाणा के कहने से सम्मान मिला। सम्मान लेकर आ गए। मैंने एक दिन कहारिआल साहिब चलो मैडम टिवाणा के घर चलें। कहा क्यों? धन्यवाद करने? मुझ पर कोई अहसान किया है क्या? मैं नहीं जाऊँगा।

मैं नहीं माना, एक बार, दो बार, तीसरी बार ये कहकर उन्हें मना लिया कि धन्यवाद तो क्या, हम सम्मान की बात भी नहीं करेंगे। केवल मिलने जा रहे हैं। चाय पीकर आ जाएँगे। मान गए। सम्मान का कोई जिक्र नहीं किया। मैडम टिवाणा

ने खुद की बात शुरू कर दी रिआल साहिब, मैंने जब आपका ज़िक्र किया तो अनेक सदस्य तो आपका नाम भी नहीं जानते थे। आपकी पुस्तकें ले गई थी, आपके काम की गम्भीरता और सार्थकता के बारे में समझाया, मुश्किल से माने।

रिआल ने कहा एक व्यक्ति सुकरात के पास आकर उसका गुणगान करने लगा। सुकरात रोने लगा। व्यक्ति ने पूछा क्या हुआ हज़ूर? मेरे द्वारा की गई प्रशंसा का बुरा क्यों माना? सुकरात ने कहा मैं तुझे बहुत अच्छी तरह से जानता हूँ। तू बिल्कुल मूर्ख हैं। अक्ल की कोई बात तुझे समझ नहीं आ सकती, तूने मुझमें अवश्य ही कोई मूर्खता देखी है जो तुझे अच्छी लगी।

डॉ. अतर सिंघ आपसे खफा हो गए थे, क्यों? मैंने पूछा देखो, पन्नू साहिब, अतर सिंघ बुद्धिमान् व्यक्ति था परन्तु कोशकारी का उसे ज्ञान नहीं था। स्टाफ भी कुछ ऐसा ही था। इनके द्वारा तैयार डिक्शनरी मैंने देखी तो अनेक गलत शब्द देखने को मिले। एक तो क्लासीकल था। मैंने इन गलतियों का लेख छपवा दिया जिसका शीर्षक था धोबी की स्त्री। मैं अंग्रेजी शब्द Iron के अर्थ पढ़ने लगा। अन्य अर्थों के साथ साथ इसका एक अर्थ धोबी की स्त्री भी पढ़ा। मैं हैरान हो गया सोचने लगाइन्होंने ये अर्थ किस प्रकार लिया। अनेक कोश देखे, खोजा, तो पकड़ लिया। अंग्रेजी हिन्दी कोश में एक अर्थ *धोबी की इस्तरी* दिया हुआ था। वहाँ स्त्री शब्द छोटी 'इ' के साथ 'स' शब्द के साथ लिखा था। आधे 'स' के साथ लिखे शब्द का अर्थ औरत होता है परन्तु इ और स के साथ लिखे शब्द का अर्थ होता है प्रैस करना, कपड़े प्रैस करने वाला यन्त्र। इन कोशकारों ने *धोबी की इस्तिरी को धोबी की औरत* लिख दिया। मेरे इस लेख के कारण अतर सिंघ जी नाराज़ हो गए।

मेरे विभाग के अध्यापकों के साथ चाय पीते समय कहने लगा स्त्री के मुकाबले में पुरुष अधिक ताकतवर होने के कारण ज्यादतियाँ तो अधिक करता ही रहा है, भाषा में भी कीं। चोर, डाकू, मूर्ख आदि शब्द पुलिंग हैं। इनका स्त्रीलिंग रूप है ही नहीं। मेरी कुलीग मैडम ने कहा ये तो बहुत अन्याय है। शब्दों के निर्माण में ज्यादती। इन शब्दों का स्त्रीलिंग रूप होना चाहिए। रिआल ने हँसते हुए कहा मैडम ये किस प्रकार की सम्पत्ति में से हक मांग रही हो? अच्छा है चोर, डाकू और मूर्ख शब्द केवल पुरुष के लिए ही रहें। अच्छी चीज़ में से हक मांगना चाहिए।

पंजाबी विकास विभाग की दो वर्षीय सीनियर फैलोशिप की अवधि समाप्त होने के पश्चात् रिआल मेरे विभाग (धर्म अध्ययन विभाग) में बतौर विज़िटिंग प्रोफैसर काम करता रहा।

व्यक्ति के मन में भाषा निर्माण का विचार कैसे आया? हम जब कुछ सोचते है तो किसी भाषा में ही सोचते हैं। भाषा जब थी ही नहीं तब उसे इजाद करने का विचार कैसे आया? विचार वे शब्द हैं जो होंठो से बाहर आए ही नहीं।

जिसे समझ में आ गया, वह बड़ा व्यक्ति है। जिसने समझाने में सफलता प्राप्त की, वह तो कामल उस्ताद हुआ। भाषा का प्रारम्भ, यही पड़ाव हैं। जब हम कोई बात मानकर सोचने लगते हैं कि तब किसी भाषा को आधार बनाकर ही सोचते हैं। भाषा के बिना विचारों का क्रम चल ही नहीं सकता। कोई बात सोची, जब होंठो में से शब्द बाहर निकला, ये तो वो है ही नहीं जो सोचा था। सोच रेशम जैसी थी, वाणी द्वारा वह लकड़ियाँ बन गईं। इन शब्दों ने तीसरा पड़ाव तय करके सुनने वाले के कानों के माध्यम से उसके मन तक पहुँचना है। मैंने कहा कुछ था उसने सुना कुछ और ही।

कहना चाहूं तो मेरी जुबान पर पहरे हैं।
कहने लगूं तो मेरे सामिअन बहरे हैं।
कह चुका तो सिलासिल हैं कटहरे हैं।
(मेरे शब्दों पर पाबन्दी है। मेरे श्रोता गूंगे हैं। बात कर चुका तो फिर कानून की किताब है, कचहरियाँ हैं)

बुजुर्गों ने बताया कि जिस भाषा का कोई शब्द गुम हो गया, खत्म हो गया, समझो एक सभ्यता की मृत्यु हो गई। शब्द का निर्माण हुआ था, फिर शताब्दियाँ उसे समझने तराशने में लग गईं। शब्द जो साधारण प्रतीत होता है इसका शताब्दियों का इतिहास है जिसके बारे में मानव को ज्ञान नहीं। है न करामात? शब्द, मानव का इतिहास बता सकता है, मानव को शब्द के इतिहास सम्बन्धी ज्ञान नहीं। ये तो हुई एक शब्द की बात। यदि कोई भाषा मर जाती है, खत्म हो जाती है, समझो सभ्यता की हज़ारों नदियाँ सूख कर रेगिस्तान बन गईं।

अपने बच्चों को सिक्ख सभ्याचार के शब्द सीखाने का मेरा निरन्तर प्रयास रहा। मैंने बताया "रोटी खानी है, ये नहीं कहना, प्रसादा छकना है ये कहना है। पानी पीने की बजाए जल छकना कहना है। पीने और खाने की जगह छकना शब्द का प्रयोग करो।" मेरे बेटे ने पूछा, "जूते खाने को भी जूते छकना कहा करें।"

बच्चों को लगता था कि कामचोर उसे कहा जाता है जो चोरी काम करे, अर्थात् काम करे, काम करने का दिखावा नहीं। जब कभी मैं कहता, "वे व्यक्ति तो आज बाल बाल बच गया" तो मुझसे पूछते, "उसके केवल बाल ही बचे हैं? बाकी सारा चटनी बन गया?

अंग्रेजी में मुहावरा है “आऊट ऑफ साईट, आऊट ऑफ माईंड। अर्थात् आँखों से दूर तो मन से भी दूर। बच्चे सें इसका अर्थ पूछा। उसने बताया, “आऊट ऑफ साईट का मतलब बलाईंड (अंधा) आऊट ऑफ माईंड का भाव फूल (मूर्ख)।” इसलिए आऊट ऑफ साईट, आऊट ऑफ माईंड का मतलब बलाईंड फूल।” सड़क पर निर्देशित बोर्ड पर लिखा था ‘डैड स्लो’ बच्चे को अर्थ पूछा तो उसने कहा, “धीरे धीरे मरो।” ठीक ही तो है मरना है तो जल्दी किस बात की।

मुझे जब कोई मित्र दुःखी होकर कहता कि वह आत्महत्या करना चाहता है तो मैं कहता जब मरना निश्चित कर लो तो मरने के लिए दूर का शहर चुनना, कलकत्ता, मुम्बई, यदि मरने का इरादा हो तो टिकट लेने की क्या आवश्यकता? पहुँचने में जितना समय लगेगा तब तक मरने का विचार मन से निकल जाएगा क्योंकि टी.टी के आने का डर मृत्यु के भय से अधिक भयंकर होगा। यदि पकड़े गए, दस दिन जेल में रहना पड़ेगा। मरने का निर्णय बदलने के लिए ये समय काफी है।

हम बातें कर रहे थे भाषा की। शायर कल्पना करता है वह बात जिसका समस्त प्रसंग में कहीं वर्णन नहीं था, यही बात उसे सबसे अधिक कड़वी प्रतीत हुई। होता भी यही है। शत्रु वही पढ़ता है जो लिखा नहीं होता। मनसूर से उसके मुरीदों ने शिकवा किया “आपके बारे में अफवाहें फैलाई जा रही हैं।” फकीर ने कहा, “देखी अपनी ज़ाहरा करामात? अर्थात् गंवार लोग हमारे कारण कहानीकार बन गए, है न हममें बड़ी ताकत?”

पूर्ण सिंघ को अंग्रेजी संसार के बड़े दानिशवरों में गिना जाता है परन्तु पंजाबी के पैंतीस अक्षर उसे सारी उम्र याद नहीं हो सके। उसकी पत्नी ने केवल पंजाबी पढ़नी-लिखनी सीखी। वह पूर्ण सिंघ के शब्द-जोड़ ठीक कर देती थी। लगभग सौ पृष्ठों में उसने पूर्ण सिंघ की जीवनी लिखी। ये काम महिन्द्र सिंघ रंधावा ने करवाया। इस पुस्तक के अध्ययन के पश्चात् पाठक इस परिणाम पर पहुँचेंगे कि इससे अधिक गहराई पंजाबी में तो क्या, अन्य भाषा में कम ही मिलेगी। विशाल दरिया की संगति से अनेक रेगिस्तान तृप्त हुए। बड़ी शख्सियत के विषय में जितनी प्रशंसा होती है, उतनी ही निन्दा भी होती है। पंजाबी आलोचकों के एक पक्ष ने घोषणा की कि पूर्ण सिंघ की कविता गद्य है। दूसरे पक्ष ने कहा, ध्यान से पढ़ो। उसका गद्य भी कविता है। कल एक मित्र ने पूछा, “दर्दमंद का मतलब दुःखी व्यक्ति है या वह जो दुःख दूर करे?” एक बार तो मैं उलझ गया। व्याकरण नियमानुसार अकलमंद बुद्धिमान्, गरज़मंद जिसे ज़रूरत हो, अरज़मंद जो आश्रित हो, निवेदन करे। इस अनुसार दर्दमंद वह जो दुःखी हो। यहाँ आकर थोड़ा अन्तर दिखाई दिया। दर्दमंद शायद वह व्यक्ति है जो मुझे दुःखी देखकर स्वयं दुःख अनुभव करे, सांत्वना दे, दुःख

बांटे। फिकर तौंसवी इस बात से दुःखी है कि एक ही मौसम में उत्पन्न होने वाले दो फल एक जैसे हैं तरबूज़ और खरबूजा। भाषा के उस्तादों ने ये क्या किया? या तो तरबूज को भी तरबूज़ा लिखते, यदि तरबूज़ लिखना था तो खरबूजे को खरबूज लिखते। तौंसवी ने फलों पर कविता लिखना चाहता था परन्तु लिख नहीं पाया। तरबूज के साथ खरबूजे की लय जुड़ती नहीं।

जिसने कभी लाहौर रेडियो से पंजाबी दरबार कार्यक्रम सुना है, वह काइमदीन की पंजाबी को भूल नहीं सकता। ताकत, मधुरता, अपनत्व और आत्मविश्वास। पंजाबी भाषा से परिचित करवाने के लिए एक विद्वान् को रेडियो स्टेशन पर आमंत्रित किया था जो इसकी बारीकियों के बारे में जानकारी दे रहा था। काइमदीन खामोश सुनता रहा, कहीं कहीं वाह वाह की, केवल। चौधरी ने पूछा काइमदीन जी आप खामोश बैठे रहे, हमें लगता था आप भाषा के विद्वान् हो, आप बताओ कुछ हमें। काइमदीन ने कहा, "हमें कहाँ आती है ये मीठी भाषा। मेरा तो मन करता है कि गर्मियों में रावी दरिया के ठण्डे जल में इस भाषा को घोलकर एक घूंट में पी जाऊँ। क्या करूँ? हाथ नहीं आती।"

जिनके हाथ में होती है, वे इससे इंकारी होते हैं। मेरे जैसे, जिन्हें कुछ पता नहीं बहुत पटाखे चलाते हैं।

86 वर्ष की आयु में रिआल सैर करता, ठहाका मार कर हँसता, छेड़छाड़ करता और करवाता हुआ इस संसार को अलविदा कह गया। वह प्रत्येक शब्द की रम्ज़ पकड़ता, उसकी पृष्ठभूमि जानने का जिज्ञासु होता और फिर विश्व की भाषाओं में उसके रस रंग ढूंढता रहता। मुझसे कहा पन्नू मैं गाँव गया था। उसके कपड़ों से पता चल रहा था, एक बुजुर्ग औरत किसी रिश्तेदारी में मिलने मिलाने जाती होगी। गाँव के बुजुर्ग ने पलंग पर बैठे बैठे उस औरत से पूछा फौजों ने किस तरफ चढ़ाई की है आज? औरत को सम्बोधित करते समय 'फौजें' शब्द का प्रयोग करना गुरू गोबिन्द सिंघ जी का चमत्कार है।

उसने खाने पीने में कभी कोई परहेज़ नहीं किया। पाँच वर्ष पहले पत्नी का निधन हो गया, अकेला रह गया, परन्तु घर की वस्तुओं की सफाई देखने योग्य होती। मज़ाक करना उसका सहज स्वभाव था। पंजाबी ट्रिब्यून में मेरी एक रचना छपी थीदो जोशी। पढ़ने के बाद मुझसे कहा दो लच्छियाँ तां सुनीआं सन, इक पिंड दो लच्छियाँ छोटी लच्छी ने पुआड़ा पाया। एह दो जोशी नहीं सुने कदी।

रिआल कहता पंजाब के विश्वविद्यालय के वाईस-चांसलर और रजिस्ट्रार मुझे जानते हैं। बस में सफ़र करते समय यदि मैं देखता, कंडक्टर ड्राईवर मुझे जानते हैं, तो भी टिकट लेता। मैंने विश्वविद्यालयों से लिया बहुत कम, उन्हें दिया बहुत अधिक।

एक बार शाम को मुझसे कहा मेरी विद्या खतरनाक विष है। सूई की नोक पर लगा जितना विष इंसान को मार देता है, उसके जैसा। किन्तु मैं इसे बहुत पतला कर देता हूँ, फिर शक्कर में लपेट कर आपके आगे रखता हूँ। अभी भी ये अनेक लोगों को कठिन प्रतीत होती है।

एक परिचित आकर कहने लगा आपका विवाह करवा दें रिआल साहिब? रिआल हँसने लगाा। उस व्यक्ति ने कहा आप इंग्लैंड के नागरिक हो। लड़की के साथ पेपर मैरिज ही करनी है और क्या? वह दस लाख देने के लिए तैयार हैं। रिआल ने कहा किसी अन्य को तो पता भी नहीं चलेगा। तू ही चाकू दिखाकर मुझसे दस लाख छीनकर ले जाएगा।

मैं, रिआल और जोध सिंघ बैठे थे। मैंने कहा मेरी पत्नी कहती रहती है कि पुस्तकों का ये कबाड़ मैं अपने विभाग में ले जाऊँ, यहाँ जगह रोक रखी है, क्या करूँ? जोध सिंघ ने कहा जल्दी कर नहीं तो पछताएँगा। जब मैं अर्बन अस्टेट से अपने शहर के घर में गया तो पाँच बोरियाँ भर कर किताबें भेजीं। नए घर में केवल दो बोरियाँ पहुँची। आज तक कोई सुराग नहीं मिला कि तीन बोरियाँ कहाँ गईं। तू जल्दी कर। रिआल ने कहा अनेक बार मेरे साथ हुआ ऐसा ही। परन्तु जब हमारी मृत्यु होगी तो श्रद्धांजलि देने आए लोग भाषण में कहेंगे इसकी सफलता में इसकी पत्नी का हाथ था।

उसकी प्रकाशित पुस्तकें हैं : पंजाबी निरुक्ति (1973), शब्दों की यात्रा (1984), हमारी धरती हमारे शब्द (1989), शब्दों की मूर्तियाँ (2002), अंग्रेजी में कंसोनैंटल चेंजज़ इन इंडियन एण्ड रोमनी लैगुएज़ (1969), इंग्लिश एण्ड संस्कृतः ए कॉमन हैरीटेज ऑफ वर्डज़ (1996), करोशियन संस्कृत डिक्शनरी (2005)।

प्रकाशन के समय प्रूफ रीडरों द्वारा गुरू ग्रन्थ साहिब के शब्द जोड़ों में कुछ न्यूनताएँ आ गईं। उनका संशोधन अनिवार्य है। उसकी संशोधन की इच्छा पूरी न हो सकी। केवल रिआल ही इस काम को करने में सक्षम था अन्य कोई दिखाई नहीं देता अभी। गाँव बसी जलाल (होशियारपुर) में रिआल की आत्मा की शांति हेतु 23 नवम्बर 2008 को अरदास हुई।

जसविन्द्र का शेयर है :

दफन होके वी ओ बेचैन है लोकां विच आ बैंहदा।
अजे सत्थां विच लग दी हाज़री उस गैरहाज़िर की।

# दूर से देखा संत जरनैल सिंह

प्रिय पाठको, इस लेख में न इतिहास है न दर्शन। इन कुछ पृष्ठों को लिखते समय किसी निश्चित क्रम का भी ध्यान नहीं रखा गया। कुछ घटनाओं का क्रम टूट गया है। जो कुछ आँखों से देखा हू बू हू वही लिख दिया। पहले से ही मन में किसी निश्चित उद्देश्य की बजाए तथ्यों को प्राथमिकता दी जबकि मुझे भली भांति पता है कि उद्देश्य की गैरहाज़री में तथ्य, बिल्कुल बेकार रास्तें में बिखरे ईंट, पत्थर होते हैं जो लाभदायक होने की अपेक्षा यात्रियों के सफ़र में बाधा डालते हैं।

मुझे ऐसा प्रतीत होता जैसे संत जरनैल सिंघ मेरा मित्र है। वह किसी का मित्र नहीं था, साधु था। साधु का न कोई दुश्मन होता है न मित्र। मैं उसे अच्छा सिक्ख मानता था जो अकाली दल में बहुत यश प्राप्त कर रहा था। इस प्रसिद्धि का कोई राजनैतिक लाभ प्राप्त कर सकूंगा शायद, मेरा संत जरनैल सिंघ से इस कारण सम्पर्क स्थापित हुआ।

एक तरफ दरबार साहिब को ध्वंस किया गया, दूसरी तरफ लोगों ने लगातार सिक्खों की सहायता करनी शुरू कर दी, यहाँ तक कि हिन्दुओं, कम्यूनिस्टों और कांग्रेसी जनता को मैंने इस आघात के कारण रोते देखा। डॉ. गण्डा सिंघ और स. खुशवंत सिंघ ने प्राप्त मान-सम्मान वापस कर दिए। महाराज अमरिन्द्र सिंघ ने लोक सभा और कांग्रेस पार्टी से अस्तीफा दे दिया। इस महाराज ने जेल में जिन लोगों

की आर्थिक और कानूनी सहायता की थी मैं उनका गवाह हूँ क्योंकि ज़रूरतमंदों को सहायता मेरे द्वारा भी दी गई। इसी प्रकार सिक्ख विरोधी हमलों में उजड़े परिवारों की भी महाराजा ने खबर ली थी। किन्तु इन सब का विस्तृत वर्णन पृथक् जगह किया जाएगा। यहाँ केवल संत जरनैल सिंघ का ज़िक्र किया जाना है। उसे *दूर से देखा* इसलिए लिखा है क्योंकि मुझे ऐसा नहीं लगता मैं उसके समीप जा पाया। कहावत है बिल्ली ऊँटनी का दूध नहीं पी सकती।

दरबार साहिब पर हमला सिक्खों के लिए इस शताब्दी की सबसे दुःखदायी घटना थी। सिंघ सभा लहर की उत्पत्ति, शिरोमणि अकाली दल का जन्म, दो विश्व युद्ध और 1947 का देश विभाजन, आम घटनाएँ नहीं हैं, परन्तु इन घटनाओं और 1984 में दरबार साहिब पर हुए आक्रमण में अन्तर है। ये अन्तर बहुत बड़ा है। मुसलमानों के साथ सिक्खों की टक्कर तो अरदास की परम्परा में उतर चुकी है, इस कारण देश विभाजन के समय मुसलमानों के हाथों कत्लेआम होना कोई अद्‌भुत घटना नहीं थी। साथ ही इसके प्रतिकार में सिक्खों ने भी मुसलमानों पर कम कहर नहीं ढाए। अपितु सिक्खों ने भी ऐसे शर्मनाक काम किए जो अठाहरवीं शताब्दी में नहीं हुए थे। गुरू जी का रूहानी सदाचार-शास्त्र कभी भी बच्चों और स्त्रियों पर अत्याचार करने की आज्ञा नहीं देता। गुरू जी के इस आदर्श को सिक्खों ने भुला दिया तभी उन्होंने मुसलमानों पर दरिंदगी की।

दो विश्व युद्ध संसार के दूसरे देशों के लिए किसी अन्य तथ्यों के कारण बहुत बड़ी घटनाएँ थीं। सिक्खों ने भी इनमें सहयोग दिया परन्तु खालसा पंथ के लिए इनका कोई महत्त्व नहीं था। केवल इतना ही था कि कुछ हज़ार सिक्ख लड़ते हुए मारे गए तो कुछेक को बहादुरी के कारण विक्टोरिया क्रॉस मिले। 84 के आप्रेशन ब्लूस्टार जैसा घाव सिक्खों ने इस शताब्दी में कभी देखा सुना नहीं था। ध्यान रहे कि मुगलों और पठानों ने जो कुछ दरबार साहिब के लिए किया ये कृत्य उससे बिल्कुल भिन्न था क्योंकि तत्कालीन मुसलमान हुकुमतों का विरोधी व्यवहार सिक्खों के जीवन ढंग का कुदरती भाग बन गया था। अर्थात् मुसलमानों द्वारा किसी गुरूद्वारे का निरादर करने को अनहोनी नहीं कहा जाता था क्योंकि उनका व्यवहार सिक्ख जीवन में बतौर ऐतिहासिक युद्ध समझा जाता था जिस कारण ये साधारण प्रतीत होता था।

इसके विपरीत खालसा पंथ ने हिन्दुओं की रक्षा हेतु अपना सर्वस्व दांव पर लगा दिया था। गुरू तेग बहादुर का बलिदान सिक्ख जाति का ध्रुव तारा है जिसे *सिक्ख कभी भूल भी जाएँ किन्तु हिन्दुस्तान कभी नहीं भूलेगा,* पंथ के अवचेतन में घर बना चुका था। इस प्रसंग में ये कहना उचित है कि हिन्दुओं के अविकसित तत्त्व को गुरू साहिबान की दिव्य शख्सियत पर पूर्णतः विश्वास हो चुका था जिसके

परिणामस्वरूप हिन्दु युवक अमृत छक कर लगातार खालसा पंथ में शामिल हो रहे थे। इस प्रकार ये दरिया दोनों तरफ बह रहा था अर्थात् यदि सिक्ख कुर्बानियाँ दे रहे थे तो असंख्य हिन्दु भी निशान साहिब की शरण में आकर इस दरिया को ताकतवर बना रहे थे। पंजाबी द्वारा किए गए कत्लेआम से इनकी संख्या बढ़ती गई।

हिन्दु विद्वान् ये दावा करते रहे हैं कि खालसा पंथ की स्थापना हिन्दुस्तान और हिन्दु धर्म की रक्षा हेतु हुई। सिक्ख चिन्तक इस कथन को रद्द कर कहते हैं कि नवीन धर्म का प्रकाश किसी विशेष वर्ग के लोगों या किसी विशेष भूगौलिक क्षेत्र की रक्षा या विनाश हेतु कदापि नहीं होता। यदि ये मान लिया जाए कि हिन्दुओं की रक्षा के लिए एक सेना अलग से बना ली गई थी तब ये भी मानना पड़ेगा कि इस सेना का मुख्य और एकमात्र उद्देश्य था मुसलमानों का नाश और इसलाम धर्म को नुकसान पहुँचाना। जैसे ये दूसरा तथ्य किसी प्रकार से स्वीकार करने योग्य नहीं है उसी प्रकार पहला रद्द करने योग्य है। परन्तु जो तथ्य सही है और सर्व प्रमाणित भी वो ये है कि खालसा पंथ के उदय होने से निस्सन्देह हिन्दु धर्म की रक्षा हुई, हिन्दुस्तान सुरक्षित हुआ, पठानों को हमेशा के लिए काबुल धकेल दिया गया और उनके आक्रमण और अत्याचार विगत समय की कथा कहानियाँ बन कर रह गए। सिक्खों और हिन्दुओं की सामाजिक सहभागिता और दुःख सुख क्योंकि शताब्दियों तक सांझे रहे इस कारण मास्टर तारा सिंघ ने 1947 में पाकिस्तान की अपेक्षा हिन्दुस्तान में रहने को प्रमुखता दी। इस विषय पर बहुत कुछ लिखा और सुना गया है कि मास्टर तारा सिंघ ने इतनी बड़ी ऐतिहासिक भूल क्यों की? मेरा मानना है कि सिक्खों के लिए उस संवैधानिक सुरक्षा की कोई गारंटी लेनी चाहिए थी परन्तु मास्टर तारा सिंघ जी ने हिन्दुस्तान के साथ रहने का निर्णय पुरानी सभ्याचारक सांझ के कारण किया था। मास्टर जी के राजनैतिक कद को मापने हेतु प्रत्येक व्यक्ति का अधिकार है कि वह अपने हाथ में फीता पकड़ ले, किन्तु मास्टर निस्सन्देह पंथ का हमदर्द और ईमानदार नेता था और दी गई विषयवस्तु में उसने जो भी निर्णय किए वह नेक और ईमानदारी से किए, इसके बारे में मुझे कभी संदेह या भ्रम नहीं हुआ।

उक्त कुछ बातों के वर्णन के बिना आप्रेशन ब्लूस्टार की घटना का सही निपटारा सम्भव नहीं था। सिक्खों ने अपनी राजनैतिक गतिविधियाँ जारी रखते हुए शिरोमणि अकाली दल की कमान नीचे अनेक मोर्चे लगाए। पंथ की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु राजनैतिक संघर्ष करना और सामूहिक रूप से अपनी शक्ति को केन्द्रित रखना प्रत्येक राजनैतिक पार्टी के समान सिक्खों का हक हैं। किन्तु पता नहीं जवाहरलाल नेहरू और उनके उत्तराधिकारियों के मन में ऐसी क्या बात थी कि सिक्खों को चिढ़ाना ही उन्होंने उत्तम राजनीति मान लिया था। छोटी मोटी राजनैतिक

मांगे, जैसे भाषा आधारित पंजाबी क्षेत्र न देना, पंजाब को चण्डीगढ़ बतौर राजधानी न देना, षड्यन्त्र अधीन पंजाबी बोलने वाले प्रदेश पंजाब से बाहर रखने, दरियाओं के पानी के विभाजन के समय अन्तर्राष्ट्रीय कानूनों को अनदेखा करके पंजाब के पानी को लूटना, पंजाब के हैड-वर्कस पंजाब से बाहर रख कर उनके नियंत्रण को पंजाब से छीनना, पंजाब से बाहर पंजाबी बोले जाने वाले राज्यों में पंजाबी को दूसरा दर्जा भी न देना आदि कुछ ऐसे विषय थे जिनके विरूद्ध सिक्ख आवाज़ उठाते तो उन्हें देश द्रोही और पाकिस्तान के एजंट दूत होने का खिताब मिलता। 1982 में ऐशियन खेलों के समय बसों गाड़ियों में जैसे सिक्ख यात्रियों का अपमान सोच समझ कर भारतीय स्टेट ने किया वह नवम्बर 1984 के दिल्ली दंगों की केवल एक भूमिका मात्र थी। भारत ने सिक्खों को याद रखने योग्य सबक सीखाना था। इससे बड़ा सदमा क्या हो सकता है कि फांसी मिलने वाले व्यक्ति को मरने तक अपने दोष का पता न हो।

सारे संसार में किसी सिक्ख को ये विश्वास नहीं हुआ कि इन्दिरा गांधी दरबार साहिब पर आक्रमण करवाकर तबाही मचा सकती है। संत जरनैल सिंघ को इस बारे में पता था। जब भी संत जरनैल सिंघ फौजी आक्रमण की बातें करता तो मेरा दिमाग मुझसे कहता नेता लोग ऐसी ही बातें किया करते हैं। इससे हमदर्दी का वातावरण उत्पन्न होता है, संगठन शक्तिशाली बनता है और सियासत में इन सबकी आवश्यकता होती है। कभी पंथ को खतरा, कभी दरबार साहिब खतरे में ये सब सुनने सुनाने की बातें हैं, ऐसा कुछ होने वाला नहीं। अब मैं इस परिणाम पर पहुँचा हूँ कि हिन्दुस्तान में एक प्रधान मन्त्री इन्दिरा गांधी को पता था कि आक्रमण करना है, एक संत जरनैल सिंघ को पता था आक्रमण होगा और वह जान देगा। अन्य लोग अलग अलग अनुमान लगाते थे। प्रधान मन्त्री और संत जी में ये अन्तर है कि संतों को अपनी मृत्यु का पता था, इन्दिरा गांधी को अपनी होनी का पता नहीं था। किस किस दल नेता को कितना पता था, इसका वर्णन बाद में करेंगे।

1968 में जब मैं हाई स्कूल घग्गा स्कूल की दसवीं कक्षा का विद्यार्थी था तब अपने एक सहपाठी गुरतेज सिंघ से दमदमी टकसाल का पहली बार नाम सुना। इस लड़के के माता-पिता संत गुरबचन सिंघ भिंडरांवालियाँ के श्रद्धालु थे और इनका टकसाल के साथ सिक्खी के कारण सम्बन्ध था। बाद में भाई अमरीक सिंघ के साथ इनकी रिश्तेदारी बनी। मेरे सहपाठी की बुआ की बेटी बीबी हरमीत कौर का विवाह भाई साहिब से हुआ। मुझे सिक्खी के बारे में कुछ विशेष ज्ञान नहीं था परन्तु मेरे लिए ये विवाह इसलिए आदर्शक था क्योंकि बिना दहेज के साधारण रस्मों से सम्पन्न

हुआ। अन्य सहपाठियों के समान महिन्द्रा कॉलेज पटियाला में पढ़ते समय सिक्खी अच्छी अवश्य लगती थी परन्तु रहत मर्यादा के बारे में कुछ पता नहीं था।

कभी कभी भाई अमरीक सिंघ मिलने आता। वह हमारा मित्र था। हँसमुख और सुन्दर सिक्ख था, रहत को मानने वाला। ठोडी पर थोड़ी सी दाढ़ी थी। हम उससे मज़ाक करते "दाढ़ी नहीं, तेरी ठोडी पर परमात्मा ने अंगूठा लगाया है। इससे सिद्ध होता है कि परमात्मा अंगूठा छाप है।" वह हँसता रहता उसने कभी भी हमारी इन बातों का न बुरा माना और न ही भी सिक्खी का काढ़ा पिलाया। जैसा कि अकसर होता है कि दाढ़ी मूंडने वालो को 'ज्ञानी' लोग थोड़ा खटकते हैं। इस प्रकार अमरीक सिंघ कभी किसी को खटका नहीं था।

उसकी पत्नी में गम्भीरता, मधुरता और दूर द्रष्टा जैसे गुणों को मैंने बहुत समीप से देखा। जितना सिक्ख इतिहास बारे थोड़ा बहुत जानता हूँ, ये लड़की मुझे गुरू काल की आदर्श सिक्ख बहनों जैसी लगी। छुट्टियों में कभी कभी हम चौक मेहता या अमृतसर भाई अमरीक सिंघ को मिलने जाते। उसके पिता संत करतार सिंघ टकसाल के अध्यक्ष थे। उनका बहुत प्रभाव था तथा दूर तक उसका सम्मान करती थी। जैसे अन्य लोगों को मैं उनके सामने सहमा सहमा देखता वैसी घबराहट मेरे मन में कभी उत्पन्न नहीं हुई। संत करतार सिंघ जी की शख्सियत में जो सिक्खी झलकती थी वह बोझिल किस्म की नहीं थी। 'प्रवचन' या 'वचन विलास' करने की अपेक्षा वह बातें किया करते थे। प्रवचन एक पक्षीय प्रवाह होता है जो सत्यवचन कहकर, मानना पड़ता है।

वहाँ भाई जरनैल सिंघ भी दिखाई देते। वह किसी के काम में दखल नहीं देते थे। अत्यधिक समय पाठ करने में व्यतीत करते। कभी संगत को लंगर छकाते कभी कोई दूसरी सेवा ले लेते। वे बस दिखाई देते थे, उनमें कभी कोई ऐसी विशेषता दिखाई नहीं दी जिसे याद रख सकें या जिसका कोई विवरण दिया जा सके। जरनैल सिंघ का हमारी बातों या हमारी हरकतों की तरफ कोई ध्यान नहीं होता था। वे स्वयं में मस्त रहते परन्तु हम अकसर एक दूसरे के पास टिप्पणी करते, "अधिक पाठ करने से वह नॉर्मल नहीं रहा।।

संत करतार सिंघ उनकी तरफ ध्यान देते। टकसाल के किसी व्यक्ति ने संत करतार सिंघ जी को एक बार बताया कि जरनैल सिंघ कई कई दिनों तक लंगर नहीं छकता, पाठ करता रहता है। आँख बचाकर जेठ आषाढ़ की धूप में सराय की ऊपरी छत्त पर बैठकर सारा सारा दिन पाठ करता रहता है। संत जी ने जरनैल सिंघ को एक दिन बुलाकर कर इसके बारे पूछा तो उसने हाँ कहने के लिए केवल सिर हिलाया। संत करतार सिंघ नाराज़ हो गए। उन्होंने ने कहा, "गुरू जी ने हमें लाखों

खुशियों और पातशाहियों का वरदान दिया है। तू ये पाखण्ड क्यों करता है? पंथ की ये परम्परा नहीं है जरनैल सिंघ।" जरनैल सिंघ ने हाथ जोड़ कर कहा, "पिता जी कभी कभी मैं सोचता हूँ कि यदि कठिन समय आ जाए तो संकट का सामना करने की तैयारी होनी चाहिए। मैं मुक्ति की इच्छा से तप नहीं करता। मुक्त तो तभी हो गया था जब अमृत छका था। ये तो शारीरिक साधना है जिसकी कभी आवश्यकता पड़ सकती है।"

संत करतार सिंघ ने हँसकर कहा, "कोई आवश्यकता नहीं। छोटे साहिबज़ादों ने क्या कोई हठ तप का अभ्यास किया था? राजकुमारों के समान उनकी परवरिश हुई थी। जब समय आया तो उन्होंने कैसी विलक्षण प्रीत निभाई थी। जितना गुरू दसम पातशाह हजूर साहिबज़ादों से करते थे, उससे अधिक तुझे प्रेम करते हैं जरनैल सिंघ। उन पर विश्वास रख। कठिन समय में सिक्ख पर कभी कष्ट नहीं आने देते महाराज।" उसके बाद जरनैल सिंघ सहज स्वभाव में रहने लगा। परन्तु भूख, प्यास और नींद को उसने काबू में कर लिया था, कम बात करता। घमण्डी है, ऐसा प्रभाव भी नहीं था उसका। वह नहीं, हमारा मित्र अमरीक सिंघ था। अमरीक सिंघ खुलकर बातें करता, हँसता, छेड़ता, हमारी तरह मूर्खता भरी बातें पसंद करता, तभी तो प्यारा लगता। जरनैल सिंघ के बारे में हमारा ख्याल था कि इसके दिमाग में कोई नाड़ी कम या अधिक है। उसे हम अधिक नोटिस में नहीं लेते थे। कभी कभी उसके विरुद्ध टिप्पणी करते तब हमें मना करने वाला भी वहाँ कोई न कोई उपस्थित होता, "वह अच्छा सिक्ख है। उसके बारे में अनुचित बोलना ठीक नहीं।" हम हँसते, "सिक्ख तो हम भी हैं। कड़ाह प्रसाद तो कड़ाह प्रसाद ही होता है परन्तु यदि उसमें देसी घी अधिक डाल दो तो मुश्किल हो जाती है। उसकी सिक्खी में देसी घी कुछ अधिक पड़ गया है ऐसा प्रतीत होता है।"

हम जैसे भी थे, संत करतार सिंघ को पसंद थे। संत करतार सिंघ के जीवन और वाणी में कोई ऐसी साधना मिली हुई थी कि सभी उनका सम्मान तो करते ही थे उनके बड़प्पन से भयभीत नहीं होते थे। शोक, भय, निराशा, चिन्ता का अनुभव उन्हें खुद तो कहाँ होना था हमें भी उनकी उपस्थिति में कभी ऐसा अनुभव नहीं हुआ। पौरुषत्व का प्रचण्ड रूप यदि मुझे कहीं दिखाई दिया तो वे सरदार करतार सिंघ और सरदार कपूर सिंघ आई.सी.एस. में। बड़प्पन उसे कहते हैं जो अपने सम्पर्क में आने वालों के मन में हीनता की भावना उत्पन्न न करे। बड़प्पन के कारण आस-पास का प्रत्येक व्यक्ति बड़ा, सम्पूर्ण और आत्मविश्वास जैसे गुणों से अभिषिक्त हो जाता है।

1975-77 दो वर्ष मैं गुरमति कॉलेज पटियाला में विद्यार्थी था। हमें खबर मिली कि संत करतार सिंघ पटियाला आ रहे हैं। गुरूद्वारा दुखनिवारण साहिब में

ठहरेंगे। ये बात मार्च 1977 की है। वर्ष और महीना इस कारण याद है क्योंकि उन दिनों में हम परीक्षा की तैयारी में पुस्तकों का रट्टा लगाने में लगे हुए थे। शाम को मिलने गए तो सराय की छत्त पर बैठे थे। दरियाँ बिछा रखी थीं। हमें देखकर संत जी ने कहा, "लो जी खालिस्तानी आ गए। वाहेगुरू जी का खालसा वाहेगुरू जी की फतह।" हम बैठ गए उन्होंने कहा, "गज दो गज जगह मुझे भी घर बनाने के लिए खालिस्तान में दे दोगे या अकेले ही रहोगे उसमे आप?" हमें उनके प्रश्न समझ में नहीं आए। आसपास बैठे सिंघ हँसते रहे। बाद में पता चला कि प्रिंसीपल साहिब ने हमारी शिकायत संतो की थी। वास्तव में बात ये थी कि हम स्वतन्त्र भारत में सिक्खों के अधिकारों के बारे में, उनकी होनी के बारे में, उनके साथ हो रहे विश्वासघातों और जत्थेदारों की मूर्खता सम्बन्धी बातों के बारे अकसर चर्चा करते, पेपर और भाषण तैयार करते। प्रिंसीपल को ये सब पसंद नहीं था, उनका आदेश था, "ये राजनीति है। बंद करो।" हम कहते, "सिक्खों का धर्म और राजनीति अलग अलग नहीं है।" वह कहते, "भक्ति और शक्ति साथ साथ चलती हैं। तुम भक्ति करो। शक्ति स्वयं ही आ जाएगी।" हम कहते, "सारी उम्र बीत गई आपको भक्ति करते हुए हमें तो आप में कहीं थोड़ी सी भी शक्ति दिखाई नहीं देती। यदि आप थोड़ी थोड़ी शक्ति की बात करोगे तो हम कुछ भक्ति किया करेंगे। यदि आप केवल भक्ति करोगे तो हम केवल शक्ति की बात करेंगे। इस प्रकार संतुलन बना रहेगा।"

हमने संतों से कहा कि प्रिंसीपल हमारे विरुद्ध आपको झूठ कहकर गए हैं। वह अधिक पाठ करते हैं तो इसका मतलब ये नहीं कि उन्हें झूठ बोलने की आज्ञा मिल गई। संतों ने कहा, "तुम सब पढ़ने लिखने वाले हो और साथ ही लगता है कि सिक्ख भी अच्छे हो। यदि तुम्हारे विरूद्ध कोई निन्दा चुगली करता है तो तुम्हारी प्रशंसा करने वाले लोग भी हैं। हमारा कर्त्तव्य सिक्ख बनना है, ऐसे सिक्ख जो गुरू महाराज के प्रिय हों। मुझे तुम्हारी आवश्यकता है। अनेक काम अधूरे हैं जिन्हें हमने मिलकर पूरा करना है। सबसे अधिक दुर्दशा तो विद्या की है। मुझे तुम लोगों में से पाँच जवान चाहिएँ। मैं अधिकतर दौरे पर रहता हूँ। तुम चौक मेहता में रहा करोगे। जितना वेतन और सुविधाएँ कॉलेज के लैक्चरार को सरकार की तरफ से मिलती है, वह देंगे।" हम खामोश सुनते रहे। हँस कर कहा, "कहीं ये तो नहीं सोच रहे कि ग्रन्थी बन गए तो हमारा विवाह कौन करेगा? वह भी मैं ही करवाऊँगा। तुम्हारे जितनी पढ़ी लिखी सुन्दर सिक्ख लड़कियों से मैं तुम्हारा विवाह करवाऊँगा। दहेज को छोड़कर अन्य किसी वस्तु की कोई कमी नहीं रहेगी।" कुछ देर रुककर फिर से कहा, "हमारे संगठन का अनुशासन कुछ सख्त है। किन्तु तुम पर लागू नहीं होगा। टकसाल के सिंघ तो चाय को भी नशा समझकर नहीं पीते किन्तु तुम्हें चाय पीने

से कोई नहीं रोकेगा। तब तो ठीक है?" हमने उनसे हमारे कॉलेज में आने की प्रार्थना की। 'हम कलास-रूम में आपको सुनना चाहते हैं।' उन्होंने हमारा आमंत्रण स्वीकार कर लिया।

एक घंटा क्लास रूम हम उनसे गुरमति की बातें सुनते रहे। उनके भीतर निर्मल अनुभव का दरिया था और बिना प्रयास के इसकी लहरें ऊँचे किनारों से बाहर आकर आसपास के घास-फूस को धो देती थीं। वहीं ये निश्चित हो गया कि हरभजन सिंघ, गुरनेक सिंघ, जसबीर सिंघ, सुरजीत सिंघ और हरपाल सिंघ एम.ए. की परीक्षा के पश्चात् चौक मेहता पहुँच जाएँगे। इसके बाद उन्होंने विश्वविद्यालय में जाना था जहाँ डॉ. तारन सिंघ ने सैनेट हाल में उनके भाषण का प्रबन्ध किया हुआ था। उनके साथ उनकी गाड़ियों में बैठकर हम विश्वविद्यालय पहुँच गए। उन्होंने डॉ. तारन सिंघ के चरण छूए तो तारण सिंघ ने नाराज़ होते हुए कहा, "ऐसा करना आपको शोभा नहीं देता। आपकी बड़ी कमाई है। संत ने कहा, "आप हमारे अध्यापक थे। मैं कैसे भूल सकता हूँ कि मैं आपका विद्यार्थी था।" बीबी इंदरजीत कौर संधू वाईस-चांसलर थीं। उन्हें देखकर संत जी ने कहा, "रहत बहुत बड़ी चीज़ है। इसमें कोई भाग्यवान् ही पूरा उतरेगा। परन्तु शक्ल सूरत तो सिक्ख की सिक्ख जैसी होनी चाहिए न। बहुत मेहनत करनी पड़ती है आपको शक्ल बिगाड़ने के लिए बीबी जी थके नहीं अभी?"

हमारा परिणाम आ गया। सभी ने अच्छे अंक प्राप्त किए। मैं प्रथम आया और पिछला रिकार्ड तोड़ा। हम चौक मेहता जाने की तैयारियाँ कर रहे थें। समाचार पत्र में पढ़ा कि एक्सीडैंड में संत करतार सिंघ की मृत्यु हो गई। इस बात का दुःख था कि दूर द्रष्टा और खरा ईमान रखने वाले सिक्ख से खालसा पंथ वंचित हो गया। सहज पाठ के भोग पर जाना था किन्तु मुझे पहले पहुँचने का संदेश मिला। अब संत करतार सिंघ का उत्तराधिकारी कौन होगा, इस सम्बन्धी चर्चा होने लगी। दूर से देखने वालों को कुछ पता नहीं था न ही उनकी इसमें कोई दिलचस्पी थी परन्तु अन्दर ही अन्दर सभी अपना अपना प्रयास कर रहे थे। एक दल अमरीक सिंघ को उनका उत्तराधिकारी नियुक्त करना चाहता था तो दूसरा जरनैल सिंघ के पक्ष में था। मैं उस दल में शामिल हो गया जो अमरीक सिंघ के पक्ष में था। मेरा मानना था कि दोनों में कोई मुकाबला ही नहीं। भाई अमरीक सिंघ पढ़ा लिखा जवान और जरनैल सिंघ अनपढ़ और सीधा-सादा व्यक्ति। आज के युग में ऐसे व्यक्ति का कोई गुज़ारा नहीं। अब मैं सोचता हूँ कि भाई अमरीक सिंघ के पक्ष में जाने का कारण था कि मैं उन्हें जानता था, उसका मित्र था, इसमें मेरा स्वार्थ निहित था, उस स्वार्थ को तब मैं देख नहीं सका। जरनैल सिंघ उसके मुकाबले में कुछ नहीं था क्योंकि उसके बारे अधिक जानते नहीं थे, जानने की कभी कोशिश भी नहीं की। भविष्य की अपेक्षा हमें भूतकाल

अधिक अच्छा लगता है बेशक वह बुरा क्यों न हो क्योंकि भूतकाल को हम जानते हैं, भविष्य से अनजान होते हैं। हमारा मित्र अमरीक सिंघ एक बड़ी और शक्तिशाली संस्था का अध्यक्ष बने, इसमें हमारी भी शान थी।

किन्तु धीरे धीरे मैदान हमारे पाँव के नीचे से खिसकने लगा। टकसाल के जिम्मेवार और पुराने सदस्य बेशक अमरीक सिंघ से भी प्रेम करते थे परन्तु ये प्रेम वास्तव में संत करतार सिंघ की संतान की तरफ निभाया जाने वाला एक कर्त्तव्य था। धीरे धीरे जरनैल सिंघ के हक में हवा चलने लगी। भाई अमरीक सिंघ अपनी तरफ से पूरी ताकत लगा रहा था जबकि जरनैल सिंघ में कोई बेचैनी या व्याकुलता दिखाई नहीं दी। वह प्रत्येक की हाँ में हाँ मिला देता था। संतों के भोग से दो दिन पहले पूरी टकसाल संत जरनैल सिंघ के हक में हो गई बेशक मेरी जानकारी में ऐसा कोई तथ्य नहीं कि संत करतार सिंघ ने अपने उत्तराधिकारी के बारे में कुछ कहा हो। संत गुरबचन सिंघ के देहान्त के पश्चात् भी टकसाल दो दलों में विभाजित हो गई थी और ये दोनों दल आज भिन्न भिन्न स्थानों पर कार्यशील हैं और दोनों का नाम भिंडरावाली टकसाल ही है।

हमने हथियार फेंक दिए। फैसला हो गया कि सत्ता जरनैल सिंघ के हाथ में दी जी जाएगी। हम में से कुछ व्यक्ति इस कारण दस्तारबंदी की रस्म देखने के लिए रुक गए कि आने वाली संगत का धन्यवाद करना होगा और अनेक संस्थाएँ और संगठन दस्तार भेंट करने आएँगी। इन सबका धन्यवाद करने और संत करतार सिंघ को श्रद्धांजलि देने के रूप में जरनैल सिंघ को कुछ शब्द  कहने होंगे। बोलना उसे आता नहीं था। स्टेज पर वह कभी नहीं बोला था, अभ्यास के बिना क्या करेगा? यह देखने के लिए कि क्या तमाशा होगा, हम कुछ मित्र लम्बा सफ़र तय करके चौक मेहता इस कारण भी आए।

ट्रक, टरालियों, जीपों, बसों, कारों द्वारा एक दिन पहले ही संगत पहुँचने लगी। जिस दिन भोग था, शायद अगस्त 1977 का कोई दिन, इतने लोग, इतनी भीड़ मैंने पहले कभी नहीं देखी थी। बेशक पार्किंग का उचित प्रबन्ध था तथापि लोग गाड़ियों से उतर कर पैदल आ रहे थे क्योंकि पैदल चलने वालों की संख्या अधिक थी और गाड़ियों की रफ्तार धीमी। मैं मंच के समीप बैठा था। सिरोपाव और दस्तार भेंट करने की रस्म प्रारम्भ हुई। सिंघ-सभाओं, अनेक टकसालों, डेरों और मठों के अध यक्ष पहुँचे, हिन्दु, मुस्लिम धार्मिक संस्थाओं द्वारा दस्तारें आईं ये दृश्य अलौकिक था। उस समय पंजाब में अकाली सरकार थी। ऐमरजैंसी के पश्चात् इन्दिरा गांधी की पराजय हुई और केन्द्र में जनता पार्टी की सरकार बन गई। सरदार प्रकाश सिंघ बादल मुख्य मन्त्री सहित समस्त पंजाब कैबनिट उपस्थित थी। बादल साहिब ने संत

जी को श्रद्धांजलि देते हुए कहा, "मेरे मन में टकसाल के प्रति बहुत सम्मान है। ये तो चलती फिरती यूनिवर्सिटी है। इस समय संत जरनैल सिंघ पर एक विशाल संस्था को संभालने का उत्तरदायित्व है। वे इस ज़िम्मेवारी को सफलतापूर्वक निभाएँगे। टकसाल की प्रत्येक मांग को सरकार पूरा करेगी। संत करतार सिंघ के नाम पर यूनिवर्सिटी में चेयर स्थापित करनी हो या जैसे कि संत करतार सिंघ शुद्ध कीर्तन को अत्यधिक महत्त्व देते थे, कोई संगीत विद्यालय स्थापित करना हो संत जरनैल सिंघ कहें, मैं स्वीकृति दूंगा। जो कुछ मांगना है, अभी मांगो, मैं उसकी पूर्ति की घोषणा यहीं करूँगा। अभी।" ये दस मिनट की श्रद्धांजलि होगी। मुझे इतने ही शब्द याद हैं।

अंत में जरनैल सिंघ ने उठकर महाराज के आगे माथा टेका और माईक पर आ गए। हाथ जोड़कर संगत को प्रणाम किया, धन्यवाद किया .... संगत की आशीषों की कामना की। एक एक शब्द नुपुरों की झनकार के समान स्पष्ट एवं साध ारण था। किसी वाक्य की बनावट बिगड़ी नहीं, कोई भी वाक्य दोहराया नहीं गया, हाथ में कोई कागज़ नहीं जिसका सहारा लेकर प्रत्येक मामले, प्रत्येक व्यक्ति, प्रत्येक संस्था के बारे कुछ कहा जा सके किन्तु कोई संस्था ऐसी नहीं थी जिसका धन्यवाद न किया गया हो। अंत में ज़िक्र हुआ पंजाब सरकार का। मुख्य मन्त्री का धन्यवाद करते हुए कहा, "बादल साहिब ने कहा है कि टकसाल जो मांगेगी देंगे। इस बारे में मेरा कहना है कि दमदमी टकसाल भिखारियों की संस्था नहीं है। ये तो गुरू दशमेश पिता जी की टकसाल है जिसकी सेवा करने हेतु हमारे जैसे अनेक आएँ है आते रहेंगे। हमारा दाता वही है और एक ही है। हमें महाराज ने इतना कुछ दिया है कि शब्दों में बता नहीं सकते। हमारे पिता ने कुछ मुश्किलें, कुछ संकट तो हम पर से टाल दिए है, अनन्त शानों का स्वामी बनाया है हमें। बादल साहिब को किसी भी वस्तु की आवश्यकता हो, वे इस टकसाल से मांगे, मैं अभी पूर्ण करने की घोषणा करूँगा।"

संगत में जैसे कोई लहर चलने लगी, पत्रकारों की पैंसिलें तेजी से चलने लगीं और कैमरों ने पोजीशने संभाली। अरदास उपरान्त लंगर प्रसाद छकते समय सभी सिक्खों को अनुभव हुआ कि जरनैल सिंघ नामक कोई सामान्य व्यक्ति नहीं है। दो विशाल शक्तियों, एक सरकार दूसरी टकसाल में होने वाला तत्कालिक संवाद कहीं कोई कशमकश तो पैदा नहीं करेगा? चारों तरफ यही बातें हो रही थीं। शाम को ये भी पता चला कि बादल साहिब अकेले जरनैल सिंघ से मिलना चाहते थे परन्तु संतों ने ये कहकर टाल दिया कि शिक्षा मन्त्री सुखजिन्द्र सिंघ को मिलने का समय तय है इसलिए आज वक्त नहीं है। एक मन्त्री को समय देना है और मुख्य मन्त्री के

लिए समय नहीं, ऐसा क्यों हो रहा है। कुछ पता नहीं चल रहा था। कुछ लोग कह रहे थें कि संगत के लिए बादल साहिब को कुछ बसों का प्रबन्ध करने के लिए कहा गया था किन्तु उन्होंने मना कर दिया। कोई पक्की खबर नहीं मिल रही थी। सरदार सुखजिन्द्र सिंघ, टोहड़ा साहिब के दल के मन्त्री थे, और टोहड़ा साहिब की बादल से अधिक बनती नहीं थी, हम सभी ये जानते थे परन्तु संत जी को इससे क्या लेना देना? उनके लिए टोहड़ा और बादल एक जैसे होने चाहिए, वह भी विशेष रूप से उस दिन से, वो पहला दिन जब उन्होंने टकसाल का अध्यक्ष होने का उत्तरदायित्व संभाला। पिछले समय में टकसाल का सुर कभी बादल सरकार से न मिल सका हो, मुझे या मेरे जानकारों को कोई पता नहीं था। 1978 को वैसाखी के दिन घटित भयानक निरंकारी कत्लेआम अग्रिम वर्ष में घटित हुआ जिसका दोष पंजाब सरकार पर लगा कि निरंकारी अध्यक्ष गुरबचन सिंघ को गरिफ्तार करने की अपेक्षा सरकारी गाड़ी में सुरक्षित दिल्ली पहुँचाया गया। क्या संत जरनैल सिंघ के पास कोई ऐसी शक्ति थी जिससे संभावित घटनाओं की जानकारी पहले से हो जाती थी, या अन्य कोई कारण था, इसके बारे मुझे कुछ पता नहीं। इस बात का पता है कि दस्तारबंदी से लेकर आप्रेश्न ब्लूस्टार के समय शहादत तक, बादल सरकार से वे दूर होते गए और टोहड़ा साहिब का ग्रुप समीप आता गया।

भाई अमरीक सिंघ को इस बात का रोष था कि पिता जी का उत्तराधिकारी जरनैल सिंघ को क्यों बनाया गया। रह तो दोनो रहे थे गुरूद्वारा गुरदर्शन प्रकाश के चौक मेहता में ही, परन्तु पारस्परिक कशमकश बढ़ रही थी। भाई अमरीक सिंघ टकसाल की गाड़ियाँ लेकर धर्म प्रचार के लिए निकल जाते और अमृत प्रचार करते। संतों की कम ही परवाह करते। यदि संत जरनैल सिंघ का सत्कार टकसाल का अध्यक्ष होने कारण बढ़ रहा था तो संत करतार सिंघ का बेटा होने के कारण संगत भाई साहिब का भी उतना ही सम्मान करती। किन्तु दोनों मे परस्पर स्नेह कम होता जा रहा था।

इसी तरह करीब छह मास बीत गए कि एक दिन संत जी ने भाई साहिब को अपने पास बुलाया। सम्मान पूर्वक बिठाते हुए कहा, "आप भाई साहिब अकेले ही दौरों पर चले जाते हों, यदि हम दोनों एक साथ जाएँगे तो क्या हर्ज़?" भाई अमरीक सिंघ ने कहा, "कोई गलत काम करने तो जाता नहीं। अच्छे काम पर जाने की भी मनाही है?" संत जी ने कहा, "अच्छे काम करते हो ये मुझे पता है। इसी कारण तो कह रहा हूँ इक्ट्ठे जाएँगे। बुरे काम अकेले छिप छिपाकर किये जाते हैं। धर्म का काम तो मिलकर करना चाहिए।" भाई अमरीक सिंघ खामोश हो गए। फिर संत जी ने कहा, "पिता जी (संत करतार सिंघ को जरनैल सिंघ भी पिता ही कहते थे) मुझे भी

उतना ही प्रेम करते थे जितना आपसे। ये तो संगत का निर्णय था कि मुझ जैसे साधारण व्यक्ति के सिर पर दस्तार बांध दी। मैंने कब मांगी थी? परन्तु ये निर्णय तो हो चुका अब। यदि आप अकेले गाड़ियाँ लेकर जाना चाहते हो तो आपकी इच्छा। टकसाल के पास जितना भी धन है सब आपका है उसे भी ले जाओ। कहो तो किसी और जगह पर मैं आपको ज़मीन खरीद कर दे देता हूँ। आप स्वेच्छा से वहाँ बैठकर पंथ की सेवा करते रहना। मैं यहीं रहकर जो हो सका करता रहूंगा।" तभी संत जी ने उठकर भाई अमरीक सिंघ को गले लगाया और भीगी आँखों से कहने लगे, "मेरी तुझसे एक प्रार्थना है। मुझसे कभी अलग मत होना। तेरे बिना मेरी शान आधी रह जाएगी। मेरा तुझ पर कोई हक नहीं कि तुझे जबरदस्ती रोक सकूं। मैं तो प्रार्थना ही कर सकता हूँ। हमको साथ देखकर पिता जी की आत्मा प्रसन्न होगी। उन्होंने मुझमें और तुझमें कभी कोई भेद नहीं किया था।"

भाई अमरीक सिंघ की आँखों से आँसू बहने लगे। कुछ देर तक उन्होंने कुछ नहीं कहा। धीरे से संत जरनैल सिंघ के चरण छुए और कहा, "आप मुझसे बड़े स्थान पर हो। आगे से कोई शिकायत नहीं मिलेगीं। हम साथ रहेंगे और मैं आपसे पूछे बिना कोई काम नहीं करूँगा।" दोनों फिर से गले मिले, ये मिलाप शहादत तक निभाया गया। तत्पश्चात् भाई अमरीक सिंघ ने उनका मन से आदर सत्कार किया। फिर घटनाओं का वेग तेज हवाओं की तरह बहने गला। प्रारम्भ में दो बड़ी घटनाएँ घटीं। एक वैसाखी 1978 में निरंकारियों द्वारा अमृतसर साहिब में सिक्खों का कत्लेआम और तदुपरान्त भाई रणजीत सिंघ द्वारा निरंकारी महंत गुरबचन सिंघ का कत्ल। इन घटनाओं ने पंजाब की धरती को हिला कर रख दिया। अकालियों की सरकार हो और तेरह सिक्खों का दिन दिहाड़े कत्ल करके गुरबचन सिंघ सरकारी सुरक्षा लेकर दिल्ली पहुँच जाए, सिक्खों के मन में अभी ये रोष खत्म नहीं हुआ था कि कत्ल केस अमृतसर में चलाने की बजाए करनाल की अदालत में बदलकर सभी निरंकारी हत्यारों को बाइज्ज़त छोड़ दिया गया। भारत सरकार की शह पर इस प्रकार का अन्याय न होता तब सम्भव है कि सिक्ख इतने क्रोधित न होते कि गुरबचन सिंघ का कत्ल करने की सोचते। परन्तु होनी शंतरज की चालें बहुत गम्भीरता से चल रही थी।

दिल्ली में इन्दिरा गांधी समस्त घटनाक्रम का अवलोकन सहजता से कर रही थी, अपितु ये कहना संगत है कि उसका राजनैतिक लाभ ये था कि वह दरबार साहिब कम्पलैक्स में बड़ी मात्रा में हथियार संग्रहित होते रहें और अंत में एक दिन सब खत्म करके हिन्दुस्तान की रक्षा करने वाली प्रचण्ड देवी माता की उपाधि प्राप्त करे। पंजाब के अकाली दल को उसने कभी अधिक महत्त्व नहीं दिया था। उस समय

अकाली दल में बादल, लौंगोवाल, बरनाला, टोहड़ा, तलवण्डी और बलंवत सिंघ का प्रभाव था, उसे इस बात का बोध था कि इस समय इनके साथ किया गया कोई भी सौदा या समझौता लाभकारी होगा। ये थोड़ी बहुत फेस सेविंग के इच्छुक हैं, पंथ की किसी को कोई चिन्ता नहीं। इनमें से तलवण्डी की संत जरनैल सिंघ के साथ थोड़ी बहुत बनती थी क्योंकि तलवण्डी का अकाली दल बहुत छोटा था और दिल्ली में उसका लगाया मोर्चा असफल रहा। टोहड़ा साहिब का संत के पास इसलिए आना-जाना अधिक था क्योंकि संत स्वयं एक मज़बूत व्यक्तित्व का मालिक था। उसकी बहुत प्रतिष्ठा थी और इस लाठी से बादल को पीटा जा सकता था। मेरे एक नहीं अनेक अनुभव है कि टोहड़ा साहिब का एक मात्र उद्देश्य बादल को मुँह के बल गिरा, अकाली दल का प्रधान बनकर मुख्य मन्त्री की कुर्सी प्राप्त करना था।

अब अकालियों की राजनीति का अवलोकन करें। निरंकारी महंत का कत्ल हो गया तब भाई रणजीत सिंघ को छिपने के लिए शरण चाहिए थी। दमदमी टकसाल की निरंकारियों के विरुद्ध टक्कर का प्रारम्भ संत करतार सिंघ ने कर दिया था उससे अधिक सुरक्षित स्थान अन्य कौन सा हो सकता था? संत जरनैल सिंघ ने भाई साहिब को सुरक्षा प्रदान की। मंचों पर उसकी बहुत प्रशंसा की। जब दरबारा सिंघ की सरकार ने भाई रणजीत सिंघ भगौड़ा सिद्ध कर उसके सिर का मूल्य तय कर दिया और घोषणा की रणजीत सिंघ का पता बताने वाले को भारी ईनाम दिया जाएगा, तब संत जरनैल सिंघ ने ऐलान किया, "यदि कोई मेरे पास लेकर आता है तो मैं भाई साहिब के वज़न जितना सोना उसे पुरस्कार में दूंगा।" पत्रकार पूछने लगे, "बाबा जी आपके पास इतना सोना है?" संत ने कहा, "आप अपनी बात करो। बताओ आपके पास भाई रणजीत सिंघ है?"

मैं बात कर रहा था अकालियों की। व्यक्ति जेल में हो या अण्डर ग्राऊंड रह रहा हो उसका स्वभाव संदेही और चिड़चिड़ा हो जाता है। ऐसी परिस्थितियों में व्यक्ति को डराया भी जा सकता है या चुगलियों द्वारा किसी के विरुद्ध भी किया जा सकता है क्योंकि निजी संचार की सुविधा कम होती है। संत हरचन्द सिंघ लौंगोवाल प्रत्येक समय इसी ताक में रहते थे कि संत भिंडरावाले की प्रसिद्धि को चोट पहुँचे। उन्हें पता चल गया था कि भाई रणजीत सिंघ, संत जरनैल सिंघ से नाराज़ हो गए हैं। ऐसी सामान्य बातें जिन्हें मानना किसी व्यक्ति के लिए सम्भव नहीं, बड़ी बन जाती हैं। भाई रणजीत सिंघ अलग कमरे में रहते थे और अपनी इच्छानुसार दाल-सब्जी को छौंक लगाते थे। एक दिन प्याज खत्म हो गए। उन्होंने संत जी को संदेश भेजा कि प्याज भेज दें। हुआ ये कि कई दिन निकल गए इस बात को, भाई रणजीत सिंघ ने शिकवा करते हुए सिंघों से कह दिया, "ये संत बातें तो करता है

मुझे सोने में तोलने की, तोलता प्याजों के बराबर भी नहीं। पारस्परिक रंजिश का कारण प्याज हो, यह अमाननीय है परन्तु इससे ज्ञात होता है कि दोनों के सम्बन्ध ों में फर्क आ चुका था।

संत लौंगोवाल ने अपने लोगों को लगातार भाई रणजीत सिंघ के पास भेजना शुरू कर दिया। भाई रणजीत सिंघ को लगा कि काम तो मैंने बड़ा किया है परन्तु यश जरनैल सिंघ को मिल रहा है। लौंगोवाले ने ये कहना शुरू कर दियारणजीत सिंघ ये संत भिंडरावाला तो कायर है। यदि दिलेर होता तो उस दल के साथ न जाता जो निरंकारियों को समझाने गया और वैसाखी के दिन मारा गया था? अब हमारी बात मान। तुम्हें पेश कर देते हैं। जल्दी जमानत हो जाएगी। अब तू छिप कर रह रहा है, फिर पंथ में खुलेआम घूमोगे तो लोग भिंडरावाले को भूल जाएँगे और तेरी जै जैकार करेंगे। इस संत से पीछा छूटेगा। भाई साहिब को ये बातें अच्छी लगीं। सरदार सुरजीत सिंघ बरनाला की निगरानी में भाई साहिब को सी.बी.आई के डायरैक्टर बावा जी के समक्ष आत्मसमर्पण करवाया गया। समर्पण के समय ये विश्वास दिलाया गया था कि भाई साहिब पर जुल्म नहीं किया जाएगा।

मेरे मन में दो जत्थेदारों के प्रति सदैव सम्मान रहेगा। एक जत्थेदार हरचरण सिंघ महालों जत्थेदार तख़्त केसरगढ़ साहिब और दूसरे जत्थेदार अकाल तख़्त भाई गुरदयाल सिंघ अजनोहा। रहत मर्यादा और पंथक परम्पराओं का सम्मान और सुरक्षा इन दोनों ने निस्वार्थ रह कर की। दोनों जत्थेदार ईमान के पक्के थे। इन दोनों की संत जरनैल सिंघ के साथ बहुत बनती थी। हमनें देखा वहाँ दरबार साहिब में जत्थेदार अजनोहा आकर संतों के पास बैठते और कहते, "बाबा जी हम भी गाँव में अखण्ड पाठ करवाना चाहते हैं। तभी करवायेंगे जब आप भोग पर पहुँचेंगे। संत मना कर रहे थे क्योंकि सरकार का, पुलिस का कोई भरोसा नहीं कब गरिफ्तार कर ले। अजनोहा साहिब हठ करने लगे तो संत जी ने पूछा, मेरे वहाँ आने न आने से क्या फर्क पड़ता है? मेरे लिए यहीं देग ले आओ। या बताओ मेरा जाना क्यों ज़रूरी है।' जत्थेदार ने कहा, "आपका जाना अनिवार्य है क्योंकि मैं गाँव के लोगों को बताना चाहता हूँ कि जरनैल सिंघ मेरा मित्र है। इससे अधिक शान और किस बात में हो सकती है? संत मान गए, दिन निश्चित हो गया।

पाठक सरदार दलबीर सिंघ की पुस्तक पढ़ चुके हैं कि जत्थेदार जी ने महाराज के समक्ष अरदास करते हुए कहा, 'सच्चे पातशाह भाई जरनैल सिंघ मुझसे अधिक कीमती है। इस पर अपना हाथ रखना इसकी जगह मुझे बुला लेना।' संत जी ने प्रसाद लिया, कहा सिंघ साहिब को अरदास में ऐसा नहीं कहना चाहिए था,

खामोश, उदास वापस आ गए। जत्थेदार अजनोहा ने कहा, "मैं कल आऊँगा, आज रात गाँव में ही रुकूंगा। इसी रात को अजनोहा साहिब का देहान्त हो गया।

ज्ञानी जैल सिंघ केन्द्रीय गृहमन्त्री थे। उन्होंने अपने नाती का आनन्द कारज तख़्त श्री केसगढ़ साहिब आनन्दपुर में करवाने का निर्णय किया। जत्थेदार मुहालों को सचिव ने आनन्द कारज की रस्म निभाने का संदेश दिया। जत्थेदार ने कहा, "तख़्त साहिब में आनन्दकारज करने की कोई मर्यादा नहीं है और फिर लड़का क्लीन शेव है। उसके आनन्दकारज मैं करवाऊँ, ऐसा सम्भव नहीं है।'

निश्चित दिन जत्थेदार को पुलिस ने उनके घर में नजरबन्द कर लिया ताकि कोई विघ्न उत्पन्न न हो। आनन्दकारज की रस्म भाई अरदम्मन सिंघ बागड़ियां ने निभाई। गुरमति कॉलेज के प्रिंसीपल ने अरदम्मन सिंघ को कॉलेज में लैक्चर देने के लिए आमंत्रित किया तब विद्यार्थियों ने उनसे प्रश्न किया, "आपने वहाँ आनन्दकारज क्यों करवाये जबकि वहाँ ऐसी कोई मर्यादा नहीं थी। "भाई बागड़ियां ने कहा, "मर्यादा क्यों नहीं है? हो सकते हैं वहाँ आनन्दकारज।" विद्यार्थियों ने कहा, 'तख़्त साहिब की मर्यादा के बारे में तख़्त साहिब के जत्थेदार को अधिक पता है या आपको? जिस जिम्मेवारी को निभाने से तख़्त-जत्थेदार ने मना कर दिया उसे निभाने का हक आपको कैसे मिला? आप जानते थे कि सिंघ साहिब को पुलिस ने नजरबन्द कर रखा है।' भाई साहिब के पास कोई उत्तर नहीं था। सभी विद्यार्थियों ने भाषण में यही कहकर वाक आऊट किया जब तक आपके इस कृत्य को सिंघ साहिब क्षमा नहीं कर देते आपको गुरमति कॉलेज में प्रवेश की आज्ञा नहीं है। प्रिंसीपल साहिब बहुत नाराज़ हुए। होते रहें।

इस समय ये बात भी चली कि निरंकारियों से समझौता कर लिया जाए। दरबार साहिब संत जी ने हमें संदेश भेजा अमृतसर पहुँचो। हम पहुँच गए। उन्होंने बताया कि एक निरंकारी महंत हरदेव सिंघ का संदेश आया है कि हम समझौता करने के अभिलाषी हैं। अवतार-बाणी में से आप जिन एतराज योग्य पृष्ठों को निकालने के लिए कहोगे निकाल देंगे। वहाँ जत्थेदार अजनोहा भी बैठे थे। मैंने प्रार्थना की श्री अकाल तख़्त साहिब क्षमा करने का और शरणार्थी पर दया करने का स्थान तो है, इससे समझौता नहीं हो सकता। पंथ के लिए ये तख़्त सुप्रीम कोर्ट है। आप निरंकारियों को क्षमा करना चाहते हो आपकी इच्छा किन्तु समझौता शब्द का प्रयोग मत करो।

'ठीक है', जत्थेदार ने कहा, "वे आकर क्षमायाचना करें और आपत्तिजनक पृष्ठों को निकालने की बात करें, निकाल देते हैं, तब क्या करना चाहिए?' मैंने कहा, 'मेरे विचार से ऐसा करना उचित नहीं होगा। यदि श्री अकाल साहिब के

आदेशानुसार कुछ हिस्से काट दिए जाएँगे तो ये समझा जाएगा कि बाकी बची हुई अवतारबाणी अकाल तख़्त द्वारा प्रमाणित है। इस पुस्तक में क्या गलत है क्या ठीक उनको पता है, अपनी अवतारबाणी के साथ कैसे निपटना है वह निपट लें हमें कुछ लेना देना नहीं इस मामले में।' इस बात को मान लिया गया।

कैप्टन अमरिन्दर सिंघ उन दिनों में कभी कभी दरबार साहिब में आते थे। वे इन्दिरा गांधी के दूत के रूप में आते थे। कभी किसी ने उनका निरादर किया ऐसा नहीं, जबकि इन्दिरा गांधी के विरुद्ध सिक्खों के मन में रोष था। एक बार जत्थेदार अजनोहा ने इतना अवश्य कहा था, 'कैप्टन साहिब हम आपको अपना महाराजा मानते हैं और आपने स्वयं को इन्दिरा गांधी का डाकिया बना लिया। आपको ये उचित प्रतीत होता है? कैप्टन साहिब हँसने लगे। उन्होंने भी इस बात का बुरा नहीं माना।

हमने एक पाँच सदस्य सलाहकार कमेटी की स्थापना की जो जत्थेदार अकाल तख़्त और संत जरनैल सिंघ के साथ सैद्धान्तिक मामलों पर विचार-विमर्श कर सके, परन्तु वास्तव में सच्चाई ये है कि जत्थेदार और संत को इस कमेटी की कभी अधिक आवश्यकता नहीं पड़ी। कारण, दोनों शख्सियतें ईमानदार और दूर द्रष्टा थीं। ईमानदार व्यक्ति किसी संगठन पर आश्रित नहीं होता। संत जी ने हुक्म दिया, "आपके साथ बातें करने की इच्छा होती है। मन तो करता है कि दो बार मिलने आ जाया करो किन्तु सफ़र आदि मुश्किल हो तो महीने में एक बार तो अवश्य मिलना है। क्या पता कब तक सांसें चलेंगी। ये कहकर संत खामोश हो जाते और हम बाहर आकर सोचते कि मरने मारने की व्यर्थ बातें करता है बाबा। दरबार साहिब पर आक्रमण करने की मूर्खता कौन करेगा?

1981 में जर्मन से एक स्कालर पंजाब आई। उसका नाम ऐंजला डीथरिश था। वह सिक्ख धर्म पर पीएच.डी. कर रही थी। हमारे विभाग गुरू गोबिन्द सिंघ भवन में आई। अनेक लोगों से मिलकर नोटस लिए। विचार-विमर्श किया। एक दिन मुझसे कहा मैंने पत्र-पत्रिकाओं में संत जरनैल सिंघ का नाम सुना है। क्या मैं उनका इंटरव्यू ले सकती हूँ? मैं उसे मिलाने के लिए चौक मेहता ले गया। संत जी के साथ उसकी मीटिंग हुई। अनेक प्रश्न किए, सन्तुष्ट हुई। संत जी के कमरे में गुरू गोबिन्द सिंघ जी की तस्वीर लगी हुई थी। कहा मैंने सुना है कि सिक्ख मूर्ति-पूजक नहीं। तब आपने से तस्वीर क्यों लगा रखी है? संत जी ने कहा मैं इस तस्वीर की पूजा नहीं करता। केवल इसका सम्मान करता हूँ। उसने पूछा कृपया बताएँ सत्कार की सीमा कहाँ से शुरू और कहाँ खत्म होती है और फिर पूजा कहाँ

से शुरू हो जाती है?" संत जी ने हँसते हुए कहा लड़को अपने इन मेहमानों के लिए खान-पान और रहने का प्रबन्ध करो। दूर से आए हैं। कोई कमी न रहे।

रात हो गई। भोजन के पश्चात् हमें सराय में कमरा दे दिया। गर्मी की ऋतु थी। अन्दर पंखा चल रहा था मैं अपनी चारपाई खींच कर बाहर वरांडे में ले जाने लगा तो लड़की ने कहा, बाहर गर्मी है। वहाँ पंखा नहीं। तू यहीं क्यों नहीं सो जाता। मैंने कहानहीं, मैं बाहर सोऊँगा। हम दोनों का एक कमरे में सोना उचित नहीं। वह गुस्से हो गई। झगड़ती रही। कहा इसका मतलब ये कि तू पाखण्डी है। मैं तुझे खा नहीं जाऊँगी। किन्तु तुझे स्वयं पर विश्वास नहीं। कैसे सिक्ख हो तुम? उसने मेरे विरुद्ध मेरे सामने जिन अंग्रेजी विशेषणों का प्रयोग किया उनमें से अनेक के अर्थ मुझे नहीं पता था। बाद में मैंने न तो किसी से उनके अर्थ पूछे न ही कोई डिक्शनरी देखी। गालियों का अर्थ क्यों देखूं? गूंगा बनकर अपनी चारपाई बाहर ले आया और बाहर से दरवाजा बंद कर गर्मी में सो गया। मैं धन्यवाद किया कि टकसाल के लोगों ने उसकी बातें नहीं सुनीं, नहीं तो उन्होंने इसका अर्थ यही लेना था कि मैंने उसे छेड़ा है। अंग्रेजी किसी को नहीं आती थी वहाँ।

एक दिन कहने लगी मैंने सुना है समाना में बड़े बड़े पुराने टीले हैं। बाबा बंदा सिंघ ने जब समाना तबाह किया था उस समय के। तू मुझे दिखाने ले चल।। हम चले गए। सभी स्थान देखे। गर्मी का मौसम था। थोड़ा आराम करने के लिए एक खोखे में बैठ गए। वहाँ 12-13 वर्ष का एक लड़का था। उसे चाय लाने के लिए कहा, चाय आ गई। अभी एक घूंट ही पीया था कि साईकल पर सवार एक व्यक्ति आया और धीरे से इस लड़के के कान में कुछ कहकर चला गया। ये लड़का, जो बनिया जाति का लगता था, धीरे धीरे रोता रहा और सामान उठाकर अन्दर रखने लगा। थोड़ा ही सामान था भीतर रख दिया और खड़ा होकर हमारी चाय खत्म होने का इंतजार करने लगा। नज़रें नीचे करके खड़े उस खामोश लड़के को देखकर चाय नहीं पी गई, हमने चाय वहीं रखी और उसे उसके पैसे देकर बाहर आ गए। उसने हमारे कप धोए, दुकान को बंद किया और भाग गया। ये जानने के लिए कि साईकल सवार क्या संदेश देकर गया था जिस कारण लड़का रोने लगा, मैंने पड़ोसी दुकानदार से पूछा। उसने बताया कि चार पाँच महीने से इसका पिता बीमार था। साईकल वाला ये बताकर गया था कि तेरे पिता का निधन हो गया, तू घर चला जा।

ये बात सुनकर ऐंजला ने कहा ये लड़का मुझे गुरू गोबिन्द सिंघ जी का सच्चा सिक्ख प्रतीत होता है। मैंने पूछा वह कैसे? कहा देखो, छोटी आयु के इस लड़के ने दुःखदायी समाचार सुना। वो दुकान छोड़कर भाग सकता था। पड़ोसी खुद बंद कर देते। इस लड़के ने तो हमसे भी नहीं कहा कि जाओ दुकान बंद करनी है।

गुरू जी ने सिक्खों को यही तो सिखाया है कि कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी अपनी जिम्मेवारी नहीं भूलनी। बड़ी चोट खाकर भी वह लड़का दुकान और ग्राहक प्रति अपनी जिम्मेवारी नहीं भूला। यही तो है आर्नलड तायन्बी का *चैलैंज एण्ड रिस्पांस* सिद्धान्त। तायन्बी का कहना है, किसी समाज को परखना हो, राष्ट्र को, चाहे व्यक्ति को, ये देखो उसे चैलेंज कैसा मिला और चैलेंज स्वीकार करके उसने कैसा व्यवहार किया। समझे तुम?

पता चला कि संत पटियाला आ गए हैं। दुःखनिवारण में ठहरे हुए हैं। शाम को कथा करते। इतनी संगत होती कि बैठने के लिए जगह न मिलती। मेरे मित्र रशपाल सिंघ गिल्ल जहाँ परिक्रमा में बैठे थे मैं भी उनके समीप बैठकर कथा सुनने लगा। समाप्त होने पर संत जी सराय की तरफ जाने लगे। अनेक लोगों की तरह मैं और गिल्ल भी उनके पीछे पीछे चलने लगे। सामने से एक स्त्री शीघ्रता से आई और संत जी के चरण छूने चाहे। संत जी रुक गए। आसपास के लोगों से कहा खालसा जी थोड़ा रुको और थोड़ा दूर हट जाओ। फिर उस स्त्री से कहा
बीबी आराम से मेरे पैरों को छू। जल्दी मत कर। यहाँ से जो कुछ लेकर जाओगी वो मुझे भी दिखा देना। ये आसपास खड़े लोग भी देख लेंगे कि कौन सी दुर्लभ वस्तु ले जा रही हो। स्त्री ने क्षमा मांगी और चली गई। मेरे साथ खड़े गिल्ल ने हँसकर कहा, कभी कभी ऐसा लगता है ये संत लोगों के साथ ज्यादती कर रहा है। तू स्वयं देख इसके सामने अकड़ कर खड़ा रहने का किसका मन करता है? ऐसा नहीं लगता इसके सामने झुकने में ही इज्ज़त है?

परन्तु वे पैर छूने के विरुद्ध थे और इसकी उल्लंघना करने वालों को शब्दों के बाण सहने पड़ते। मैं जिद्दी स्वभाव का व्यक्ति हूँ। जब पटियाला से अमृतसर जाता तो फतह बुलाता और घुटनों को छूता और बैठ जाता। कुछ न कहते। एक दिन मैंने पूछा बाबा जी आप तो पैर छूने के सख़्त विरोधी हो। मैं अब आपका घुटना पकड़कर बैठा हूँ मुझे कुछ क्यों नहीं कहते आप। कहा तू कौन सा श्रद्धावश ऐसा करता है? तू तो मुझे छेड़ना चाहता है। मैंने तुझसे न छिड़ने का फैसला कर रखा है। घुटने छूने की बात छोड़ तू चाहे तो टांगें दबा दिया कर।

सुखजिन्द्र सिंघ (उस समय अकाली सरकार में शिक्षा मन्त्री), कई बार संत जी से मिलने आता और देर तक बैठा बातें करता, सुनता। किसी ने संत जी से कहा ये व्यक्ति अच्छा नहीं। इससे अधिक मेलजोल मत बढाओ। संत जी ने कहा, आते जाते समय कुछ देकर ही जाता है, हमसे क्या ले जाता है? जब कुछ लेकर जाने लगा तब बात करना।

संगत आती और पैसे भेंट करती। फसल के समय अधिक पैसे आते। वे पकड़कर थैले में डाल लेते। मैंने कहा बाबा जी सीज़न शुरू हो गया है। डेढ डेढ गज के थैलों से काम चलेगा। कहा मैंने कौन से साथ लेकर जाने हैं ये नोट? आपकी ही सेवा करता हूँ लंगर प्रशादे की। लाओ भाई, रशपाल सिंघ इन सिंघों को खीर खिलाओ।

रशपाल सिंघ जो बी.एससी करके उनकी सेवा में बतौर पी.ए. उपस्थित हो गया था, खीर के कटोरे भरकर ले आया। ठण्डी खीर में अंगूर डाले हुए थे। खीर की प्रशंसा की तो संत जी ने कहा जो जो इस खीर का आनन्द ले रहे हैं उन्हें कभी न कभी पुलिस की मार पड़ेगी। मार खाते समय सोचते खीर न खाते तो अच्छा होता। खूब हँसे।

1982 में उन्होंने विद्वानों की एक सभा बुलाई। मेरे पास निमंत्रण पत्रों का पैकट भेजकर कहा कि पटियाला और चण्डीगढ़ के मित्रों को ये पत्र देकर पहुँचने की प्रार्थना करना। निमंत्रण पत्र बांट दिए गए। संत जी ने पूछा सभी आएँगे? मैंने कहा जी सभी ने हाँ की है। एक गुरदर्शन सिंघ गरेवाल (बाद में एडवोकेट जनरल पंजाब बने) ने कहा है कि वे नहीं आ सकते क्योंकि अदालत के कामों में उलझे हुए हैं। संत जी ने कहा गरेवाल समझदार होते हैं। समझदार व्यक्ति मेरे पास आना नहीं आएँगे क्योंकि उन्हें पता है कि इस साधु के कारण कोई पंगा होगा ही होगा। जो मुझसे दूर रहेंगे वे सुखी रहेंगे।

पंजाब में दो सौ के आसपास प्रोफैसर, वकील और पत्रकार पहुँच गए। प्रत्येक के मन में यही भाव था कि केन्द्र सरकार को सिक्खों के साथ अन्याय नहीं करना चाहिए। सतुलज-यमुना लिंक नहर द्वारा पंजाब का पानी हरियाणा को देने हेतु इन्दिरा गांधी कपूरी गाँव में नहर का उद्घाटन कर गई थीं और बाकी का काम क्रेनों द्वारा होने लगा। इसके विरोध में अकालियों द्वारा लगाया गया मोर्चा दम तोड़ रहा था। अब क्या किया जाए? सभी अपने अपने विचार प्रकट कर रहे थे। मुझे अधि
ाक तो याद नहीं किन्तु इतना याद है कि सरदार गुरतेज सिंघ सिद्धु आई.ए.एस. भी आए हुए थे उन्होंने 9 इंच की कृपाण कमीज़ के ऊपर पहन रखी थी। कृपाण की म्यान जो पीत्तल की थी बहुत चमक रही थी। वह जितने समय तक बोले, कृपाण संभालने में ही उलझे रहे। कभी उसे आगे कर लेते तो कभी पीछे कर देते फिर कमर में बराबर कर लेते। कभी दोनों हाथों में पकड़ लेते। मेरे साथ बैठे वकील ने कहा कभी कभी पंगा लेने का यही परिणाम होता है। पहनने की आदत नहीं, तो अक्ल नहीं, अब भाई से न भाषण संभल रहा है न कृपाण।

1982-83 के इन दो वर्षों में संत जहाँ भी जाते भीड़ इक्ट्ठी हो जाती। लाखों की संख्या में युवकों ने अमृतपान किया। दाढ़ी मूँछ और दस्तार बांधकर रखना एक फैशन बन गया था। सिक्खों के साथ हुए अन्याय का संत लम्बे समय तक वर्णन करते रहे। चण्डीगढ़ में मैंने उनका दो घण्टे का भाषण सुना। अपने भाषण में वे एक पंक्ति का गायन अकसर करते। कह भी देते कि संगत जी ये कच्ची बाणी है इसलिए क्षमा मांगता हूँ, किन्तु इसे मिलकर गाते हैं।

साडा ता निमाणियां दा तू ही हैं
और कोई आसरा नहीं।
और कोई आसरा नहीं। जी और कोई आसरा नहीं।

उसकी वाणी की वेदना, उसके शब्दों में सिक्खी के लिए गम्भीर और प्रिय दुःख देखकर एक दो बार मैंने अपने मित्रों से कहा, "कहीं ये साधु मर तो नहीं जाएगा? मेरे मित्र कहते "व्यर्थ की बातें मत किया कर। इसकी लम्बी आयु की बात किया कर। ऐसे योद्धा बाज़ारों में नहीं बिकते।"

बाबा ठारा सिंघ तथा भाई अमरीक सिंघ को बन्दी बना लिया गया। सिक्ख स्टूडैंटस फैडरेशन का जनरल सचिव हरमिन्द्र सिंघ संधू, राजिन्द्र सिंघ मेहता और अमरजीत सिंघ चावला अनेक बार गरिफ्तार हुए। संत भिंडरावाले के इर्द-गिर्द अदृष्ट सर्प फन फैला रहा था जो हमको दिखाई नहीं दे रहा था किन्तु संत जी उसे देख रहे थे।

जत्थेदारों ने निर्णय किया कि अकाली एक स्थान अमृतसर से ही मोर्चा शुरू करें, अलग अलग डफली बजाने से हानि होती है। तलवण्डी का आनन्दपुरी प्रस्ताव का मोर्चा दिल्ली में चल रहा था और प्रतिदिन पाँच सिक्ख गरिफ्तार होने के लिए मुश्किलें आ रही थीं। लौंगोवाल के कपूरी मोर्चे का प्रारम्भ कामरेडों के कारण शुरू न हो पाया। हुआ ये कि कम्यूनिस्टों का सतुलज यमुना लिंक नहर विरुद्ध एक बयान समाचारपत्र में प्रकाशित हुआ जिसमें उन्होंने धर्म युद्ध मोर्चों को निरर्थक बताया। पंजाब की आर्थिकता नष्ट हो रही थी। यदि अकाली आर्थिक पक्ष को मुख्य रखकर एस.वाई.एल विरुद्ध मोर्चा लगाते हैं तो इस मामले में हम उनका साथ देंगे। अकालियों ने ये बात मान ली। लाल और केसरी रंग के झण्डें एक साथ फहराए गए ... साथ साथ चले ... बोले सो निहाल और इंकलाब जिन्दाबाद के नारे लगे, कहा पंजाब का पानी बाहर नहीं जाने देंगे और ये फौजें कपूरी की तरफ बढ़ने लगीं। यद्यपि अकालियों और कामरेडों का मोर्चा शान्तिपूर्ण था परन्तु पुलिस ने बहुत बुरी तरह से लाठीचार्ज किया। अश्रु गैस, पानी की बौछारें और लाठियाँ ... सभी कामरेड लाठीचार्ज से पहले ही लाल झण्डे फेंक कर भाग गए और अकालियों को भूट्टे भूनने की तरह

पीटा गया। तो भी अकाली मोर्चा छोड़कर भागे नहीं। बंदी बना लिए गए। फिर कभी कामरेडों ने अकालियों के साथ मोर्चा नहीं लगाया और न ही अकालियों ने उनके लाल झण्डे पर विश्वास किया।

जिस दिन सभी अकाली दलों ने सामूहिक रूप से मोर्चे का प्रारम्भ दरबार साहिब से करना था मैं वहाँ उपस्थित था। भाषण हुए। क्योंकि मोर्चे की शक्ति का केन्द्र संत जरनैल सिंघ बनते जा रहे थे इस कारण नेताओं के भाषण उनकी तरफ सेधित थे। जत्थेदार गुरचरण सिंघ टोहड़ा प्रधान शिरोमणि गुरूद्वारा प्रबन्धक कमेटी ने कहा, "संत जी मोर्चा तभी सफल होगा यदि प्रत्येक सिक्ख के घर से एक एक व्यक्ति इस मोर्चे में शामिल होगा, गरिफ्तार होगा। बीबी राजिन्द्र कौर ने कहा संत जी मोर्चा कुर्बानी मांगता है। यदि एक एक करके नेता कुर्बानी देंगे, तभी मोर्चा सफल होगा। मौखिक कार्य कभी पूरे नहीं होते। अन्य नेताओं ने बहुत कुछ कहा किन्तु इतना ही याद है कि संत जी ने सबसे अंत में कहा टोहड़ा साहिब ने कहा कि प्रत्येक घर में से एक एक व्यक्ति मोर्चे में शामिल होकर गरिफ्तारी दे। एक एक नहीं, एक तो कहना पड़ेगा कि तू घर पर रह, सभी आएँगें, जेल जाने के लिए नहीं, मरने के लिए भी। किन्तु ठगी नहीं चल सकती। रही बात बीबी राजिन्द्र कौर जी की, उनका कहना सही है कि मोर्चा नेता की कुर्बानी मांगता हे। मैं नेता तो नहीं हूँ। मैं तो मेहता चौक का साधु हूँ। नेता यहाँ बादल साहिब, तलवण्डी साहिब, टोहड़ा साहिब, बरनाला साहिब और लौंगोवाल साहिब बैठे हैं। ये देंगे समय आने पर कुर्बानियाँ। प्राण दे दूंगा पंथ की सेवा हेतु ऐसा दावा करने में मैं संकोच करता हूँ कि । गुरू ग्रन्थ साहिब का प्रकाश है, गुरू रूपी संगत है यहाँ। मैं झूठ नहीं बोल सकता खालसा जी। मरना कोई सरल बात नहीं। कुछ लोग मुझसे कहते हैं कि आनन्दपुर प्रस्ताव की प्राप्ति हेतु जत्थेदारों ने जो सौगन्धें उठाई थीं उनको सब भूल जाएँगे। भाइयों ये नेता यदि पीठ दिखा देंगे तो तुम लोगों से भागकर कहाँ जाएँगे? ये हैं कितने? पाँच, सात, और आप? करोड़ों। क्यों भागने दोगे इनको? कहाँ जाएँगे ये भागकर? जिन लोगों को तुम ने राजगद्दियों पर बिठाया वे गुरू के समक्ष उठाई सौगन्ध कैसे तोड़ देंगे?

ये बातें सुनकर करमजीत सिंघ ने कहासुना कुछ? पाक साफ व्यक्ति ऐसे बोलता है। मान लो ऐसा समय आ जाता है कि मौत सामने है तब ये अकेला संत उसका सामना करेगा अन्य सभी भाग जाएँगे।

मानावाला गाँव के समीप पुलिस ने घात लगाकर जीप में सवार भिंडरावाले के सिक्खों को रात में मार दिया। पंजाब केसरी समाचारपत्र ने तेज मिर्च मसाला लगाकर इस खबर को छापा साथियों के मरने की खबर को सुनकर भिंडरावाला जोर

जोर से रोया। खबर पढ़कर संत ने कहा जिस व्यक्ति के साथ आपने शाम को भोजन किया सुबह उसकी मृत्यु के बारे में सुना किसे दुःख नहीं होगा? जगत् नारायण को ऐसी सुर में मृत्यु और मृत्यु के दुःख की खबरें नहीं छापनी चाहिए। जब सिक्ख स्टूडैंटस ने अमृतसर को पवित्र शहर का दर्जा दिलवाने के लिए जुलूस निकाला और सरकार से मांग की कि शहर में बनारस की तर्ज़ पर मीट, शराब और तम्बाकू की बिक्री पर पाबन्दी होनी चाहिए, तब इस जूलूस की खबर को लाला जगत् नारायण समाचारपत्र समूह ने ऐसे छापा अमृतसर शहर में भिंडरावाले के गुण्डों का नंगा नाच। वैसे इस शीर्षक के अधीन खबर में लिखा था कि जुलूस ने तो किसी से जबरदस्ती कोई दुकान बंद करवाई न कोई हिंसक व्यवहार किया।

दरबारा सिंघ सरकार ने भिंडरावाले जत्थे के हथियारों के लाईसैंस खारिज करने का हुक्म दिया और कहा, अपने हथियार पुलिसथाने में जमा करवा दो। संत ने उत्तर भेजा हमारा जत्था मीट मांस के पास से नहीं निकलता। इंसान तो क्या, हम चिड़िया को मारना पाप मानते है। परन्तु हमारे पास पंजाब पुलिस के हिंसक होने के प्रमाण हैं और झूठे पुलिस केस बनाकर बन्दी सिक्खों का कत्ल करती है। पुलिस को चाहिए कि वह अपने हथियार हमारे पास चौक मेहता में जमा करवा दे। हम उनका हरगिज़ दुरूपयोग नहीं होने देंगे।

बदनाम करने के लिए ऐसी अफवाहें उड़ाई गईं कि उन्होंने एक घड़ा रखा हुआ है जिस जिस व्यक्ति को मारना होता है उसके नाम की पर्ची बनाकर इस घड़े में डाल देता है। फिर जो पर्ची हाथ में आती है वह किल्लरस्कुएड को दे देता है। एक एक सिक्ख द्वारा 35, 35 हिन्दुओं के मारे जाने की खबर को मीडिया ने संसार के प्रत्येक कोने में पहुँचाया। वे खबर छिपा ली गई जिसके प्रतिकर्म में भिंडरावाले ने उक्त बयान दिया था। हुआ ये था कि बाल ठाकरे ने बयान दिया था यदि पंजाब के हिन्दुओं को हानि पहुँचाने का प्रयास किया गया तो पंजाब के बाहर रहने वाले किसी सिक्ख को जीवित नहीं रहने देंगे। तब भी, कई लोगों ने मिलकर संत जी को कहा कि ऐसे बयान हमें शोभा नहीं देते। ऐसे बयान सिक्खों के लिए अधिक हानिकारक हो सकते हैं। संत जी ने कहा आप भाई अमरीक सिंघ और हरमिन्द्र सिंघ संधू से बात करो। जब मैं पढ़े लिखे लोगों की सलाह लेकर बयान देता हूँ तब मुझे उलाहने मिलते हैं।

पत्रकारों ने एक दिन पूछा संत जी अकाली नेता आप पर कांग्रेस के साथ सम्बन्ध होने का दोष लगाते हैं। उदाहरण के तौर पर जत्थेदार संतोष सिंघ का नाम लेते हैं। "इन्हें मुझ पर संदेह है कि कांग्रेस पार्टी के साथ मेरी कोई सांझ है किन्तु मुझे जत्थेदारों पर संदेह नहीं विश्वास है कि उनकी भारतीय जनता पार्टी के साथ सांझ

है। ये बी.जे.पी पंथ की जितनी सेवा लाला जगत नारायण के माध्यम से कर रही है आपको भी उसका पता है। ये साम्प्रदायिक कट्टर हिन्दुओं के साथ दिन रात सांझेदारी रखें, परन्तु यदि मैं एक अमृतधारी सिक्ख जत्थेदार संतोष सिंघ के साथ सम्बन्ध रखता हूँ तो मैं बुरा हूँ और कांग्रेस पार्टी का एजंट बन गया।"

बैठे बैठे एक दिन हमसे कहने लगे प्रोफैसर साहिब आप लोग नित्यनेम करते हो कि नहीं? मैंने कहा चार बाणियाँ याद हैं तो कर लेता हूँ किन्तु जापु साहिब याद नहीं होता। गुटका उठाओ, बैठो पाठ करो। अनेक बार ऐसा होता है कि जापु साहिब का पाठ भूल जाता हूँ। कहने लगे जो नित्यनेम नहीं करते उनसे मैं उठक-बैठक करवाया करता हूँ। मैंने कहाये तो आसान काम हो गया फिर। आया करेंगें, उठक-बैठक करके जाया करेंगे। नित्यनेम से तो मुक्ति मिलेगी बाबा जी? हँसकर कहामेरे कहने का तुमने अपनी सुविधानुसार अन्य अर्थ निकाल लिया। पत्नी, बीबी प्रीतम कौर, बच्चों सहित जब मिलने आती, तो संगत में ही मिलतीं, अकेली नहीं। इसी तरह पिता जोगिन्दर सिंघ और भाई मिलते। एक वीर सिंघ को छोड़कर अन्य भाइयों का व्यवहार पसंद नहीं करते थे।

दसमग्रन्थ के बारे में उन्होंने कहा गुरू ग्रन्थ साहिब सिक्खी का महल है जिसके इर्दगिर्द श्री दसमग्रन्थ का दुर्ग निर्मित किया गया। दसम ग्रन्थ शूरवीरों, संग्रामियों की वाणी है। दसम ग्रन्थ के प्रत्येक अंक में आपको परस्पर टकराती तलवारों की झंकारें, हाथियों की चिंघाड़ें, शेर की गर्जना और तेज़ भागते घोड़ों की टापें सुनाई देंगी। कायर व्यक्ति तो इसका पाठ भी नहीं कर सकता। उनकी इस टिप्पणी को प्रोफैसर प्यारा सिंघ पद्म ने नोट कर लिया उनसे आज्ञा लेकर *दसम ग्रन्थ दर्शन* पुस्तक की भूमिका में प्रकाशित किया।

मानसा अपने ससुराल मैं मिलने गया तो वहाँ दीवारों पर विज्ञापन लगे देखे कि गुरूद्वारा में संत जरनैल सिंघ कथावाचक के रूप में आ रहे हैं। ये 1982 की बात है। अपनी पत्नी से कहा चलो कथा सुन कर आते हैं और साथ ही संत जी को फतह बुला लेंगे। कथा सुनकर सत् श्री अकाल कहने गए। मेरी पत्नी ने एक वर्षीय बेटे को गोद में उठा रखा था। कहने लगी बाबा जी बेटे को आशीर्वाद दो। संत जी ने उसके सिर पर दो तीन बार बाण से हल्का सा प्रहार किया तो लड़का हँसने लगा। संत जी ने भी हँसते हुए कहा- इसकी घण्टी में मनका देखना था है या नहीं। अच्छी बजती है ये घण्टी। अनेक घण्टियाँ मनके के बिना ही होती हैं।

वर्ष 1984 मार्च में सिक्ख स्टूडैंटस फैडरेशन पर पाबन्दी लगा दी गई और मुझे बन्दी बना लिया। जेल में खुफिया विभाग के अफसर आए तो सुपरडैंट के कमरे में बुलाया गया। कहा प्रोफैसर साहिब आप लिख कर दे दो कि आप सिक्ख

स्टूडैंटस फैडरेशन के सदस्य नहीं हो, आपको रिहा कर देते हैं। मैंने कहा मैं स्टूडैंट हूँ ही नहीं। हाँ अध्यापक समूह का सदस्य अवश्य हूँ। विद्यार्थी समूह का सदस्य होने का प्रश्न ही नहीं उठता। उन्होंने कहा आप पर यही दोष लगा है। मैंने कहा दोष आपने लगाया है आप ही जानो मुझे इसके बारे में क्या पता? जब रिहा हुआ तो दरबार साहिब गया।

माहौल तनावपूर्ण था, गर्मी भी बहुत था। हम अनेक लोग संत जी के आसपास बैठे बातें कर और सुन रहे थे। दो दर्जन वर्दीधारी सिक्ख फौजी आए। फतह बुलाकर बैठ गए। संत जी ने पूछा कैसे आए हो? सूबेदार ने बताया हमारी बटालियन अमृतसर आई हुई है। दरबार साहिब माथा टेकने आए थे इनमें से कुछेक ने कहा संत जी के भी दर्शन कर लेते हैं। आपके बारे में अखबारों में पढ़ा है। संत जी ने पूछा मुझसे मिलने की इच्छा क्यों हुई? एक फौजी ने कहा जी आप हमें अच्छे लगते हो। इस फौजी के अतिरिक्त अनेक की दाढ़ी नहीं थी। संत जी ने कहा जो अच्छा लगे उस जैसा बनने की इच्छा होती है। मुझे गुरू गोबिन्द सिंघ जी अच्छे लगते हैं। उनके जैसे तो हम बन नहीं सकते परन्तु उन जैसी शक्ल धारण करने में कोई कठिनाई नहीं होती। मेरी आप सबसे प्रार्थना है कि अपने केशों का निरादर मत करो। कुछ देर संत जी खामोश रहे। फिर कहा कुछ समय बाद आप मुझ पर आक्रमण करने आओगे। सम्भव है हमारा आमना-सामना हो जाए। फौजी कहने लगे नहीं बाबा जी। ये आप क्या कह रहे हो? ये कैसे हो सकता है? आप पर आक्रमण दरबार साहिब पर आक्रमण है। ये क्या कह रहे हो आप? संत जी ने कहा आपके वश में कुछ नहीं, न ही मेरे वश में है। जिनके वश में है वही करते है ये फैसले। चलो जो होगा देखा जाएगा। गुरू जो करेगा भला करेगा। आक्रमण के समय आप सब महाराज को अवश्य याद रखना।

फौजी चले गए। एक यात्री ने कहा बाबा जी मेरी उम्र आपको लग जाए। संत जी ने हँसकर कहा क्यों भाई तुम्हारी उम्र मुझे क्यों लगे? यदि गुरू बाबा जी मुझसे प्रेम करते हैं तो वो मुझे अपने पास पहले बुलायेंगे। यदि तेरी आवश्यकता होगी तो तुझे ले जाएँगे। किन्तु हम अपनी इच्छा से एक दूसरे का स्थान बदल नहीं सकते। मैंने कहा बाबा जी दरबार साहिब की जगह किसी दूसरे स्थान पर चले जाओ ठीक रहेगा। उन्होंने कहा मैं घिर चुका हूँ। बाहर कहीं भी जा सकता हूँ, कोई मुश्किल नहीं, किन्तु जाऊँगा नहीं। इस दरबार साहिब से बड़ा आश्रय मुझे कहाँ मिलेगा? बताओ दूसरा कौन सा स्थान मेरे लिए बचा है। मैंने कहा होगा ये कि एक जहाज आपके ऊपर बंब गिरा देगा। इन्दिरा गांधी ऐलान करेगी कि पाकिस्तान ने ये काम किया है। इसलिए कह रहे हैं कि कहीं चले जाओ। संत जी ने कहा

मेरे और इन्दिरा बीबी जी के सम्बन्ध इतने साफ हैं कि यदि इस समय पाकिस्तान बंब गिरा दे तो सिक्ख कहेंगे कि इन्दिरा गांधी की करतूत है। हमारे बारे किसी को कोई गलतफहमी नहीं अब।

जब कोई दूत इन्दिरा गांधी से मिलने का संदेश लेकर आता तो उत्तर देते, यहाँ अमृतसर से जितनी दूर दिल्ली है उतना ही दूर दिल्ली से अमृतसर है। बीबी यहीं दरबार साहिब में आ जाए? उन्हें पता था कि प्रधान मन्त्री के मन में क्या है, बिल्कुल उसी प्रकार जैसे गुरू तेग बहादुर जी को पता था औंरगज़ेब के मन में क्या है। राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय पत्रकार आते, राजनेता आते, संत जी से प्रश्न करते, उत्तर देते समय कभी दुविधाग्रस्त न होते, गलत बात न करते और बयान देने के पश्चात् कभी बेचैन नहीं हुए।

नागसेन ने एक दिन बताया था कि कातिल और मरने वाले में, क्रूर और मासूम में, सरकार और उससे शहीद होने वाले व्यक्ति में एक गुप्त समझौता होता है। इस समझौते के बारे किसी को कुछ पता नहीं होता, मारने और मरने वाले को पता होता है। कातिल समझता है जिसका मैं कत्ल करने वाला हूँ उसके कत्ल उपरान्त मुझे बहुत लाभ होगा। कत्ल होने वाले को विश्वास होता है कि मेरी और मेरे सम्बन्धियों की भलाई मेरी मृत्यु में है। ये बातें सामान्य कत्लों के बारें नहीं हैं। जिस व्यक्ति को शहीद कहा जाता है, उसके बारे में हैं। शहीद ईश्वर के अस्तित्व को प्रमाणित करने हेतु अपनी कुर्बानी देता है। कत्ल होने से पहले मनसूर का कथन सही है। वह बगदाद के खलीफे और अदालत के काजी को बार बार कहता था कि मेरे या तुम्हारे वश में कुछ भी नहीं है। अल्लाह के दरबार में मेरी मौत फांसी से लिखी जा चुकी है। कौन रोक सकता है इसे? खलीफा की बेगम जेल में मनसूर से मिलने गई। चरण छूकर कहा बगदाद को शाप मत देना साईं। यही प्रार्थना करने आई हूँ। मनसूर ने कहा फकीर शाप देने धरती पर नहीं आते। शाप देना शैतान का काम है साधु का नहीं। मैं शाप नहीं दूंगा किन्तु सच कह रहा हूँ बगदाद की तबाही निश्चित है। पहले मैं खत्म होऊँगा, फिर बगदाद। बस पहले और बाद का अन्तर है। बरबादी निश्चित है। मनसूर का कत्ल कर दिया गया। आग दहक उठी और बगदाद शहर की जगह राख का ढेर बचा।

जरनैल सुबेग सिंघ की निगरानी में मोर्चाबन्दी होने लगी तब मुझे डर लगने लगा, कहीं कोई गड़बड़ तो नहीं होगी? युवकों का कहना था हम अपनी और दरबार साहिब की रक्षा करेंगे। यदि सरकार ने फौज से आक्रमण करवा दिया तो हमारा कृत्य देखने योग्य होगा। माई (भाव इन्दिरा गांधी) याद रखेगी। देख लेना। जब कभी कोई ऐसी बात मुझे भयभीत करती तो मैं स्वयं से कहताँ हो ही नहीं सकता। दरबार

साहिब पर आक्रमण होना सम्भव नहीं, साधु और इन्दिरा गांधी दोनों नाटक कर रहे हैं, इनका विचार है कि ऐसा करने से जनता प्रभावित हो जाएगी।

अकाल तख़्त का जत्थेदार नियुक्त करना था। पन्द्रह बीस प्रोफैसर इक्ट्ठे होकर दुःखनिवारण साहिब टौहड़ा साहिब से मिले और मैंने कहा कि संत भिंडरावाले को सिंघ साहिब नियुक्त किया जाए। वह पहले खामोश हो गए, फिर कहा देख लो। हमने अपनी बात दोहराई तो प्रधान जी ने कहा अकाल तख़्त बहुत महान् संस्था है। डेरे के साधु को वहाँ नियुक्त कर दोगे तो नुकसान होगा। वह डेरे की मर्यादा को पंथ पर लागू करना चाहेगा नहीं कर सकेगा। पंथक मर्यादा की जगह यदि टकसाल की मर्यादा लागू करेगा तो पंथ नाराज़ होगा, नहीं करेगा तो टकसाल नाराज़ होगी। अनेक प्रोफैसर प्रधान जी के विचार से सहमत हो गए। टौहड़ा साहिब की बात सही नहीं थी। संत जी को टकसाल की मर्यादा और तख़्त साहिब की मर्यादा की विभिन्नता का पूर्ण बोध था। उन्होंने कभी ये नहीं कहा कि टकसाल की मर्यादा अधिक सही है। वे तो तख़्त जत्थेदार का आदेश मानते थे। अर्थात् मित्रों के बीच बैठकर कह देते थेसिंघ साहिब ने कोई निर्णय गुरमति सिद्धान्तों अनुसार नहीं सुनाया, स्वीकार तो करना ही होगा। मुझसे आयु में बड़े प्रोफैसर मेरे साथ थे और उनकी संख्या भी अधिक थी, मेरी बात से सहमत होने वाला वहाँ कोई नहीं था, बात आई गई हो गई।

शिरोमणि अकाली दल ने साबक सैनिकों की एक कॉनफ्रैंस बुलाई गई। सिपाही से लेकर जरनैल तक लगभग पचास हज़ार साबक सैनिक पहुँचे। जनरल सुबेग सिंघ तो वहीं के रहने वाले थे। सैनिकों ने अपनी इस कॉनफ्रैंस में संत जरनैल सिंघ को श्री अकाल तख़्त का सिंघ साहिब नियुक्त करने का प्रस्ताव पेश किया। जैकारे की गूंज में प्रस्ताव पास हो गया। बादल साहिब, टौहड़ा साहिब और लौंगोवाल साहिब सहित सभी लीडर वहाँ थे। पत्रकारों ने जरनैल सुबेग सिंघ से पूछा यदि सेना ने दरबार साहिब पर आक्रमण कर दिया तब आप क्या करोगे? उन्होंने कहा प्रत्युत्तर देंगे। मुकाबला करेंगे। पत्रकार ने फिर पूछा कमिशन्ड अफसर की शपथ लेते समय आपने प्रण किया था कि भारतीय सेना के वफादार रहोगे, क्या आपने गुरू ग्रन्थ साहिब की सौगन्ध नहीं ली? सौगन्ध तोड़ दोगे? जरनैल ने कहा जिस भारत की वफादारी निभाने हेतु गुरू ग्रन्थ साहिब की सौगन्ध उठाई, वह गुरू देश से बड़ा है। जिसकी सौगन्ध उठाते है वह उससे बड़ा होता है जिसके लिए सौगन्ध उठाते हैं। यदि भारतीय सेना गुरू बाबा जी के विरुद्ध हथियार उठायेगी तो मैं सेना के विरुद्ध हथियार उठाऊँगा।

अकाली दल ने फिर से विद्वानों की सभा का आयोजन किया। इसे भी अत्यधिक प्रोत्साहन मिला। पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला का सिक्ख बुद्धिजीवी फोर्म 100 प्रोफैसरों की दो बसें लेकर गया। वहाँ पहुँचकर जब टौहड़ा साहिब और लौंगोवाल से मिलने गए तो मैंने अपनी बात दोहराई, विद्वानों को भी प्रस्ताव पेश करना चाहिए कि संत भिंडरावाले को सिंघ साहिब नियुक्त किया जाए। मेरी बात माननी तो दूर मुझे मीटिंग से बाहर कर दिया गया। 100 प्रोफैसरों में से केवल एक प्रोफैसर हरकीरत सिंघ मुझसे सहमत था। डॉक्टर साहिब के बारे ये टिप्पणी सुनने को मिली ये फौजी है। दिमाग काम नहीं करता। सभी हँसने लगे। मैं और हरकिरत सिंघ सराय की तरफ, अन्य प्रोफैसर टौहड़ा साहिब को मिलने चले गए। हम संत जरनैल सिंघ से मिले। कुशलता पूछी और अपने साथ उसी समय घटित दुगर्ति के बारे में बताया, हँसकर कहा तुम्हारे और मेरे साथ ऐसा ही होना चाहिए। कभी कभी हम स्वयं को शहंशाह समझने लगते है। तब पंथ हमे हमारी हैसियत समझा देता है। लंगर प्रसादा छको। बातें फिर करेंगे।

अकाल तख़्त के जत्थेदार ज्ञानी कृपाल सिंघ ने नोटिस जारी किया दरबार साहिब में जो भी माथा टेकने आएगा, हथियारों से रहित आएगा। ये आदेश संत जरनैल सिंघ के लिए ही था। सम्भव है टौहड़ा साहिब पर सरकार का दबाव पड़ा हो। जब संत माथा टेकने जाते तब 10-15 युवकों का हथियारबन्द समूह अत्याध ुनिक हथियारों से लैस होकर साथ जाता था और संत जी स्वयं भी रिवाल्वर रखते थे। ये समूह आम लोगों की तरह धीमी चाल से परिक्रमा नहीं करता था अपितु तेज कदमों से परिक्रमा करते थे। मैंने देखा अनेक स्त्री पुरुष इनको देखने के लिए परिक्रमा में देर तक खड़े रहते। पत्रकारों ने पूछा संत जी, सिंघ साहिब ने हथियारों सहित माथा टेकने पर जो पाबन्दी लगाई है, क्या वह उचित है? संत जी ने कहा मैं ये हुक्म मानूंगा। पत्रकार ने फिर से पूछा परन्तु क्या उनका ये हुक्म सही है?
- अकाल तख़्त के जत्थेदार का हुक्म मेरे लिए सही है क्योंकि मैं सिक्ख हूँ। वापस गुरू नानक निवास में आकर बैठ गए, इस नोटिस के बारे में चर्चा होने लगी। संत जी ने कहा ऐसे हुक्मनामे प्राप्त हैं जिनमें गुरू महाराज ने कहा है कि दर्शनाभिलाषी संगत हथियारबंद, घोड़ों पर सवार होकर आएगी तो हमारा हृदय अधिक प्रसन्न होगा। ये बताओ क्या कृपाण हथियार नहीं? ये कृपाण हमारी पाँच ककारी रहत का अटूट भाग है। क्या कृपाण उतार कर माथा टेकने जाएँ? परन्तु वे सिंघ साहिब हैं। इसलिए उनका हुक्म तो मानना पड़ेगा। जत्थेदार के हुक्म को मानने का उन्होंने ये ढंग निकाला कि सराय की तरफ से परिक्रमा तक ले जाने वाले रास्ते से जाते, जहाँ दरबार

साहिब के दर्शन होते उसी दहलीज पर माथा टेक कर वापस आ जाते, तेज कदमों से चलते हुए।

हम चार पाँच प्रोफैसर अमृतसर गए देखा संत जी अपने कमरे में नहीं थे। पता चला कि अकाल तख़्त साहिब चले गए हैं। वहाँ गए तो देखा कि पहली मंजिल से दूसरी मंजिल की तरफ जाती सीढ़ियों पर 20-22 वर्षीय दो युवक हथियारों से सुसज्जित, बतौर पहरेदार खड़े थे। उन्होंने रोक लिया। हमने कहा हम दूर पटियाला से संत जी को मिलने आए हैं। हमें ऊपर जाने दो। एक ने कहा जी वे अज्ञातवास चले गए हैं। किसी से नहीं मिलते। बंदगी करते रहते हैं केवल। मैंने कहा भाई हम कौन सा आपसे लड़ने आए हैं। आप भाई रशपाल सिंघ जी को मेरा नाम बता दो। मिलने से इंकार कर दिया तो हम वापस चले जाएँगे। उनमें से एक वहीं खड़ा रहा दूसरा ऊपर चला गया। कुछ समय बाद आकर कहा, जाओ जी ऊपर चले जाओ।

सीढ़ियाँ चढ़ कर ऊपर गए। दस पन्द्रह सिंघ और बैठे थे। कोई पाठ कर रहा था, कोई एक तरफ बैठा कीर्तन का अभ्यास कर रहा था और दो तीन बंदूकों की बैरलें साफ कर रहे थे। संत जी पाठ कर रहे थे। बोल कर नहीं, हाथ जोड़कर सभी को फतह कहा। उन्होंने भी खामोश ही हाथ जोड़कर सिर झुकाया और बैठने का इशारा किया। दस मिनट के बाद संत जी ने गुटके को माथे से लगा कर कपड़े में लपेटा और हमसे कुशलता आदि पूछी। कहने लगे मैंने अनेक बैरियर लगा रखे हैं। आप हिम्मत वाले थे जो आ गए। अनेकों को नीचे से ही वापस भेज दिया जाता है। व्यक्ति को व्यक्ति से अधिक मोह नहीं करना चाहिए। महाराज के साथ किया प्रेम ही सफल होता है, व्यक्ति के साथ किया प्रेम नहीं। अपने घुटने पर अंगुलि रखकर कहा ये मांस बिल्कुल व्यर्थ है। तभी तो हमारे पूर्वज, मांस को मिट्टी कहते थे। कहीं आप भी मांस को देखने के लिए नहीं तो आते? हमने कहा सिक्खी के दर्शन के लिए आपके पास और गुरू जी के दर्शन हेतु दरबार साहिब में माथा टेकने आते हैं। उन्होंने कहा सब कुछ वहीं है, दरबार साहिब में ही सब कुछ। सिक्खी हमें गुरू में ही मिलेगी सिक्ख में नहीं। गुरू को हम इसलिए पूर्ण कहते हैं क्योंकि वे संसार की प्रत्येक वस्तु में विद्यमान है। संत पिता जी कहते थे, जो सम्बन्ध, शब्द का अर्थ से, वही गुरू का सिक्ख से है, दोनों एक दूसरे के बिना अपूर्ण हैं। जिन बालकों को नींव में चिना गया था, उन मासूमों में क्या ताकत थी? गुरू स्वयं उनमें प्रवेश कर गए थे। जल्लादों ने बताया कि वे आखिरी सांस तक फूलों की तरह महकते रहे थे? यदि वे अकेले होते तो उन्हें दुःख दर्द का अनुभव होता। दुःख और दर्द दोनों स्वाभाविक हैं, परन्तु किसी भाग्यशाली सिक्ख का दुःख स्वयं सहने हेतु गुरू पहुँचते

हैं। सिक्ख ने गुरू जी के समक्ष आत्मसमर्पण करना है। यदि आत्म समर्पण कर दिया तो फिर सिक्ख कहाँ रहा? वह तो गुरू में अभेद हो गया। जिन्होंने लिखा था वाहु वाहु गोबिन्द सिंघ आपे गुर चेला, उन्हें इस बात का बोध था। इसलिए आदि और अंत गुरू ही गुरू है भाइयो अन्य कुछ नहीं। बुरे व्यक्ति को कुत्ता मुहल्ले से निकलने नहीं देता, जंगलों में तप कर रहे निहत्थे साधुओं के पास से शेर, पूँछ और सिर झुका कर बिना आवाज़ किए गुज़र जाते हैं। गुरू जी की आज्ञा मान कर आग, पानी, हवा, धरती और आकाश सभी अपना स्वभाव परिवर्तित कर लेते हैं। मैंने ये सब अपनी आँखों से देखा है। सम्भव है आप भी कभी देखो। बाबा जी ने बाणी में ऐसे ही तो नहीं लिख दी ये बातें।

थोड़ा रुके ... फिर कहाअरे मैं भी पागल ही हूँ बस। न लंगर न पानी। कथा शुरू कर दी बिना मतलब, वह भी प्रोफैसरों के सामने। हम साधुओं की उपदेश देने की आदत बन जाती है। आपको इन सब बातों का पहले से पता है। ये बताओं परिवार में सब कुशल मंगल तो हैं? कोई बात करनी है तो निस्संकोच कहो।

अब मैं कभी कभी सोचता हूँ कि मैंने ये बात वहाँ क्यों की, इसका बुरा भी मान सकते थे परन्तु कुछ समय पश्चात् वातावरण स्वाभाविक ही ऐसा बन गया कि उसमें से मेरे वाक्य का जन्म हुआ बाबा जी आप अपना उत्तराधिकारी नियुक्त कर दो। हँस कर कहा पहले भी एक दो लोगों ने कहा है। मेरे मन को ये बात अच्छी नहीं लगी। संत करतार सिंघ ने मुझे उत्तराधिकारी नहीं बनाया था, संगत ने निर्णय किया था। मैं भी और अन्य सदस्य भी संत जी के अचानक चले जाने पर सोचने लगे कि उनका स्थान लेने योग्य अन्य कोई नहीं। ऐसा होता ही है। कोई किसी जैसा कैसे हो सकता है? किन्तु मुझसे कहा गया कि तुम कुछ उद्यम करो। मैंने हौसला रखा। गुरू जी से मुरादें मांगी। मेरे कर्म अच्छे थे, मुझमें अहंकार नहीं, संगत का विचार है कि संत करतार सिंघ जी की सेवा को मैंने आगे बढ़ाया है, पीछे नहीं। शहादत मेरे भाग्य में लिखी हुई है। मैं उत्तराधिकारी हरगिज़ नहीं दूंगा। मेरे बाद संगत, टकसाल का ऐसा अध्यक्ष चुनेगी कि आप जरनैल सिंघ को भूल जाओगे।

उनके पास एक कटोरे में बादाम और मखानों का मिश्रण रखा था। हम सभी को एक एक मुट्ठी दे दिया और ये कहकर विदा किया कि संकट आने पर घबराना मत। किसी को पता है ये धरती कहाँ से आई है? कोई जानता है मैं और आप कहाँ से आए हो? क्यों आए हैं? और कहाँ जाएँगे? सारा संसार अनुमान लगाता है केवल। केवल महाराज जी ये सब जानते हैं क्योंकि वे ही कर्त्ता हैं। जब आप कर्त्ता तक पहुँच जाओगे तब जानोगे कि कारण और कर्त्ता वही है। कर्त्ता और कर्म वही है। गुरू और सिक्ख में भेद नहीं है। जब कोई दरबार साहिब पर आक्रमण करता

है तो करोड़ों हृदयों में दरबार साहिब की सृजना हो जाती है उसी समय। ये मैं या आप कर सकते हो? अब आप जाओ। महाराज अंग संग हैं। भोजन किए बिना नहीं जाना। वाहेगुरू जी का खालसा वाहेगुरू जी की फतह।

ये बातचीत 1984 मई के प्रथम सप्ताह की हैं। मेरी उनसे ये आखिरी मुलाकात थी। जून के पहले सप्ताह भारतीय सेना ने योजनापूर्वक 1से7 तिथि तक गोलाबारी की। हैलीकॉप्टरों के साये में टैंक परिक्रमा तक पहुँचे। लैफटीनैंट जनरल कुलदीप सिंघ बराड़ ने घोषणा की जवानो, दुश्मन दरबार साहिब में है, हमने उसे खत्म करना है।

*दुश्मन* दरबार साहिब के भीतर दरबार साहिब की रक्षा कर रहा था और *मित्र* दरबार साहिब पर गोलों की वर्षा कर रहा था। बिजली बंद। पानी बंद। आग उगलने वाला जून का महीना। बराड़ की पुस्तक में पढ़ा है कि अंगारों की तरह तप रहे पीत्तल के खाली खोलों पर पैर रखकर सेना लाशों तक पहुँची जो फर्श पर एक एक फुट की ऊँचाई तक बिछे हुए थे।

पुलिस अफसरों ने लाशों की शिनाख्त अपने तौर पर कर ली किन्तु विशेष जहाज द्वारा सूबेदार हरचरण सिंघ को दरबार साहिब में लाया गया और संत जरनैल सिंघ की लाश की पहचान करवाई गई। सूबेदार संत जी के भाई थे जो बाद में आनरेरी कैप्टन के रूप में पैनशन आए और कहते रहे कि संत सही सलामत हैं।

क्फर्यू लगा हुआ था किन्तु तब भी समाचार मिल रहा था कि 42 अन्य गुरूद्वारों पर सेना ने एक ही समय आक्रमण किया। हिन्दु और सिक्ख अलग अलग समूह बनाकर घूम रहे थे। शहर पूरा बंद था किन्तु अर्बन अस्टेट पटियाला शहर से दूर और जनसंख्या कम होने के कारण, सड़कों पर घूम सकते थे। घर में कोई ही बैठा होगा। तेज धूप में हम सभी सड़कों पर चल रहे थे, धूप लग ही नहीं रही थी। सुखदयाल 8 जून को सुबह 6 बजे मेरे घर आया। उसके कथित दो तीन वाक्य हू ब हू याद हैं पकड़ ले पूँछ अब संत जरनैल सिंघ की। सारे सदस्यों को साथ लेकर मर गया। अक्ल देख लो उसकी। अपमानित कर दिया सभी को।

किसी ने उसकी बातों का न तो नोटिस लिया न ही कोई उत्तर दिया। जैसे किसी ने कुछ सुना ही नहीं। जैसे टी.वी पर कोई अश्लील गाना सुनकर परिवार के सदस्य ऐसा व्यवहार करते हैं जैसे किसी को कुछ सुनाई नहीं दे रहा।

पंजाबी विश्वविद्यालय का कुलदीप सिंघ नामक एक रिसर्च स्कालर मेरा मित्र था। होस्टल से भागकर अर्बन अस्टेट आ गया। कहने लगाकहीं भाग चलें, पुलिस और सेना उन लोगों को पकड़ कर रही है जिनके बारे में पता चला है कि वे कभी संत जी से मिलते थे। मुझे उसकी बात सही लगी। दोनों पैदल घर से चल

पड़े। खेतों की पगडण्डियों पर चल रहे थे कि धीरे धीरे कुलदीप सिंघ ने कहा तेज चलो प्रोफैसर साहिब। मैंने कहा बिना ये जाने कि कहाँ पहुँचना है सिक्ख बहुत तेज़ चलते हैं। वह हँसने लगा। जहाँ कहीं जाते, घर में अफरातफरी मच जाती, खुसर फुसर शुरू होने लगती। जैसे कोई प्रेतात्मा घर में आ गई हो और उसे भगाने का कोई मन्त्र नहीं मिल रहा। हम जल्दी से घर बदलते। कुछ लोग खेतों में बैठे इस घटना बारे बातें कर रहे थे। एक ने कहा साधु स्वयं तो मर ही गया सिक्खों को भी मरवा गया। सुनकर सामने वाले ने कहा आज यही लग रहा है जो तू कह रहा है। कल को शायद लोग ये कहेंगे एक साधु था जरनैल सिंघ। केवल वही बचा और उसने सिक्खों को बचाया।

एक दिन तो मज़ा आ गया। एक मित्र का घर खेत में था। सोचा उसके पास कुछ दिन रह लेते हैं। घर में अन्य सदस्य भी मौजूद थे। किसी ने सत् श्री अकाल का उत्तर नहीं दिया। मेरे मित्र ने न तो बैठने के लिए कहा न ही जाने के लिए। खामोश, सुन्न सा खड़ा रहा। प्यास लगी हुई थी मैंने कहा माता जी पानी पिला दो। माता जी पानी लेने गई तो मैंने दीवार के पास खड़ी चारपाई को नीम के वृक्ष की छाया के नीचे सीधा किया और बैठ गए। माता ने पानी पिलाया। हम दोनों घर से बाथरूम चप्पल पहनकर आए थे। गर्मी के कारण पसीने में खेतों की धूल गिरने से पैरों में कीचड़ पैदा हो गया था, ग्लानि आ रही थी। मैंने कहा माता जी यदि पानी मिल जाए तो हम पैर धो लें। माता जल्दी जल्दी आधी बाल्टी पानी लेकर आई और जैसे माँ बच्चों के पैर धोती हैं, तुरंत पैर धोकर चप्पलें हमारे पैरों में डालकर कहा चले जाओ अब यहाँ से। हमारे यहाँ बहुत खतरा है।

इस माता को लगा कि हम बहाने बनाकर उनके घर में अधिक समय बिताने का प्रयास कर रहे हैं जो मेज़बान को पसन्द नहीं था। मैं और कुलदीप दूर खेतों में जाकर खूब हँसे। एक टयूबवैल चलता देखा। सोचा स्नान कर लें। वहाँ पहुँचे। एक युवक चारपाई पर लेटा हुआ था। हमें देखकर उठ गया और बैठने के लिए कहा। पूछा बुरे दिन हैं। आप इस समय कहाँ जा रहे हो? घूमने फिरने में बहुत खतरा है। मैंने कहा उस घर में मेरा मित्र गिल्ल रहता है। उसके पास गए थे। बहुत ज़रूरी काम था। किन्तु वह घर पर नहीं है इस कारण वापस आ गए। लड़का हँस कर कहने लगा अभी कुछ समय पहले ही गिल्ल यहाँ से घर गया है। झूठ क्यों बोलते हो? हम खामोश हो गए। उसे सही बात बता दी। उसने कहामेरे इस खेत में कोई खतरा नहीं है। मोटर वाले कमरे में आराम से रहो। वह गाय का दूध ले आया। तब तक हमने स्नान किया और फिर दूध पिया। फिर अंधेरा होने पर वह घर से रोटी ले आया। हम लोग कई दिन तक वहाँ रहे। मेरे मित्र ने धीरे

से मेरे कान में कहा जिस प्रकार से लड़का हमारी सेवा कर रहा है जेल में अवश्य जाएगा। हम हँसने लगे। मैंने पूछा तुम बताओगे पुलिस को कि हम इसके पास ठहरे थे? कुलदीप ने कहा मैं या आप नहीं बताओगे। सिक्खों की सेवा करने का अंत में यही परिणाम निकलता है इस देश में।

दो सप्ताह इधर उधर घूमकर मैं थक गया। निर्णय किया, जो होगा देखा जाएगा। हमने कौन सा किसी का कत्ल किया है जो छिप रहे हैं? पकड़ लेंगे तो पकड़ लें। मेरे मित्र ने कहा मैं घर नहीं जाऊँगा। कोई घर है ही नहीं तो जाएँगे कहाँ। आपने जाना है तो जाओ। वह मुझसे गले मिला। अलग दिशा में चला गया। फिर नहीं मिला। मैं घर आ गया। पत्नी ने बताया पुलिस बहुत बार पूछकर गई है। एक दिन सुखदयाल आया था। कहा ज़रूरी बात करनी है कोई। मैं सुखदयाल से मिला तो उसने बताया फौजी घर से पकड़कर उसे ले गए थे तीन चार घंटे तक पूछताछ की फिर छोड़ दिया। तू भी कहीं जाना मत। मैं तेरे बारे, बात करके आया हूँ। वे कह रहे हैं प्रो. पन्नू को पेश कर दो, कुछ नहीं कहेंगे। जो पूछेंगे बता देना। अपने पास कौन सा कोई रहस्य है? उसने बताया कि दुःखनिवारण के समीप एक स्कूल है। उसमें ब्रिगेडियर चौधरी का कैम्प है। चौधरी पटियाला ज़िले का कमांडर है। उसे मिलने जा। कहना सुखदयाल ने भेजा है।

बहुत सख़्त पहरे थे और अन्दर उसका दफ्तर था। मैं चला गया। पूछताछ, तलाशी आदि के बाद अन्दर ले गए और सिपाहियों ने कहा जब तक बात कर रहें है हाथ पीछे रखना। चौधरी ने संक्षेप में जीवन परिचय नोट किया और कहा जाओ। घर में ही रहना। यदि फिर पूछताछ की आवश्यकता हुई तो बुला लेंगे। बहाना मत बनाना। मैं घर आ गया और बेचैनी कम हुई। आराम से सो गए। आधी रात को जोर जोर से दरवाज़े पर दस्तक हुई। घण्टी भी बजाई और दरवाजा भी ठक ठक। मैं और मेरी पत्नी उठ गए। सर्च लाईटों की रोशनी में आँखे चौंधिया गईं। चार टैंक घर के चारों तरफ तैनात थे। लोहे के टोप पहने फौजी, कार्बायनो, स्टेनगनों सहित पड़ोसियों की छत्त पर लेटे हुए थे। मैंने दरवाज़ा खोला। चार जवान तेज़ी से आगे आए और मेरी दोनों भुजाओं को कसकर पीछे बांध दिया। अनिर्दिष्ट स्थान पर ले गए। वहाँ क्या क्या ज़ुल्म कैसे कैसे किया गया इसके बारे विवरण की आवश्यकता नहीं है। उसका अलग से वर्णन करूँगा। किसी अन्य प्रसंग में। फौजियों को मुझमें कोई अपराध नहीं मिल रहा था किन्तु वे इसलिए अमानवीय व्यवहार कर रहे थे, कि पकड़ा गया आतंकवादी पक्का मुजरिम है जिसने इतनी यातनाएँ सहन करके बताया कुछ नहीं था। दूसरा कारण ये था कि दरबार साहिब पर हुए आक्रमण में सेना का बहुत नुकसान हुआ था। सैंकड़ों में नहीं हज़ारों की संख्या में सैनिक मारे गए थे।

उनका प्रतिकार हमसे लिया जा रहा था। दो महीनों की इंटैरोगेशन के बाद हम 40 व्यक्तियों को अधमरा करके सुरक्षा जेल नाभा में भेज दिया गया।

कौन सी ऐसी भद्दी गाली थी जो उन्होंने भिंडरावाले को न दी हो। कोई घायल दुःखी व्यक्ति कभी वाहेगुरू कह देता तो बंदूकों की नोक से उसकी हड्डियाँ तोड़ देते। चार पाँच महीनों बाद केन्द्रीय जेल पटियाला में भेज दिया जहाँ अनेक सिक्ख युवक और जत्थेदार नज़रबंद थे। ये अफवाह बहुत तेज़ी से फैल रही थी कि संत जरनैल सिंघ भाग गए हैं, नौ बर नौ हैं। इस खबर को फैलाने में सरकार का पूरा हाथ था क्योंकि इंटैरोगेशन करते सैनिक और जेल कर्मचारी अकसर कहते कि संत बचकर निकल गया है। ऐसा करने में सरकार का क्या लाभ था, पता नहीं। फरीदकोट के सीनियर वकील और बुद्धिमान् बुजुर्ग इन्द्रजीत सिंघ सेखो ने कहा मुझे आप्रेशन ब्लूस्टार के एक महीने बाद पकड़ा था। इस अफवाह को सुनकर मैं प्रत्येक उस व्यक्ति के पास पहुँचता जो बताता कि संत ठीक हैं। जब पूछता कि आपने देखा है? वह आगे किसी और का नाम लेता और तीसरा किसी और का नाम लेता। एक भी ऐसा व्यक्ति नहीं मिला जो सही जानता हो। अंत में मैंने संत जी के भाई कैप्टन हरचरण सिंघ जी से पूछा आप पहचान करके आए थे संत जी की। उनका चेहरा देखा था? कैप्टन ने कहा वो मेरा भाई था। मैं तो पीठ देखकर बता सकता थस कि लाश मेरे भाई की है। किन्तु मैंने तो ध्यानपूर्वक चेहरा और शरीर देखा है। कुछ समय पश्चात् कैप्टन साहिब भी लोगों से कहने लगे कि संत सही सलामत हैं। पिता जोगिन्द्र सिंघ, परिवार के सभी सदस्य और दमदमी टकसाल लगातार यही कहते रहे। ऐसा क्यों कर रहे थे पता नहीं।

जेल में समाचारपत्र मिलने लगे। इन्दिरा गांधी की जै जैकार हो रही थी। जै जैकार करने वालों में कम्यूनिस्ट और बी.जे.पी के नेता किसी से कम नहीं थे। ये काम तो (दरबार साहिब पर आक्रमण) बहुत पहले करना चाहिए था। बधाई के संदेश। विजयी तारें और लेख। उसे दुर्गा माता कहा गया।

सरकार ने सरदार बूटा सिंघ और बाबा संता सिंघ की निगरानी में अकाल तख़्त और दरबार साहिब का निर्माण करवाया। सिक्खों को ये कबूल नहीं था। उन्होंने सरकार द्वारा बनाए तख़्त को ध्वंस कर फिर से बनाना शुरू किया। दरबार साहिब के बाहर दुकानों में संत जरनैल सिंघ, भाई अमरीक सिंघ और जरनैल सुबेग सिंघ की अनगिनत तस्वीरें बिक रही थीं। एक ग्रामीण अपने साथी से पूछने लगा, "यहाँ

---

* एक मुगल अफसर जो अठाहरवीं सदी में सरकार ने दरबार साहिब में सिक्खों को मारकर बैठा दिया था। वह वहाँ हुक्का पीता और लड़कियाँ नचाता। भाई सुक्खा सिंघ और माहताब सिंघ ने उस का सिर काट कर जत्थेदार कपूर सिंघ के सुपुर्द किया।

संत लौंगोवाल, टौहड़ा साहिब और बादल साहिब की भी तस्वीरें रखी हुई हैं कोई इन्हें क्यों नहीं खरीदता?" उत्तर मिला, "जो स्वयं बिक जाते है, उनकी तस्वीर नहीं बिकती।" तबाही देखकर एक ने कहा, "समझो अंत हो गया।" दूसरे ने ये सुनकर कहा, "अंत अनन्त है।"

शहीद सुबेग सिंघ की 90 वर्षीय वृद्ध माता दरबार साहिब में सेवा करने आई। मलबे की मुट्ठी तसले में डालती और चल पड़ती। किसी पत्रकार ने पहचान ली और कहा, "माता जी बहुत सुन्दर होता था दरबार साहिब। क्या से क्या हो गया। माता ने कहा, "नहीं अभी भी सुन्दर है। ये वैसा ही है। जब मस्सा रंघड़* यहाँ बैठकर पाप करता था तब भी दरबार साहिब हमें सुन्दर लगता था। युगों से सुन्दर है। अपमानित करने वाले नहीं रहे। ये सदैव रहेगा।"

मैं पेशी पर जाने के लिए तैयार होने लगा क्योंकि संदेश मिला कि पुलिस पहुँच गई है। एक सिक्ख मेरे पास एक कागज़ लेकर आया। कहा आपको अदालत में मेरी पत्नी मिलेगी। उसे ये खत दे देना। आपको स्वयं ही पहचान लेगी और खत मांगेगी।

किसी का खत पढ़ना गुनाह है किन्तु कहीं कोई मुसीबत न आ जाए... क्या पता क्या लिखा हो ... पुलिस पूरी तलाशी लेकर हथकड़ी बांधती है, देख लेना चाहिए कि क्या लिखा है। मैंने कागज़ खोला। लिखा था, "गुरजीत कौर मैं ठीक हूँ। दुःखनिवारण साहिब के लंगर विभाग में एक सेवक है करनैल सिंघ। उसके पास ये चिट्ठी लेकर चले जाना। वह मेरा परिचित है। प्रतिदिन वहाँ भोजन करने चली जाना। एक तो तुझे रोटी खिला देगा साथ ही बच्चों के लिए भी पाँच सात रोटियाँ दे दिया करेगा। चिट्ठी ज़रूर दिखाना उसे नहीं तो भगा देते है प्रतिदिन मुफ्त की रोटी खाने वालों को गमदूर सिंघ।" ये गरीब मज़दूर पंचम पातशाह के शहीदी पर्व पर माथा टेकने आया, फौज ने पकड़ लिया। घर में खाने के लिए रोटी तक नहीं।

मैं देखता, एक ग्रामीण सिक्ख, खद्दर का कुर्ता पजामा पहने अधिकतर अकेला बैरक में घूमता रहता। जेल वाले चने दे जाते। जेब चने से भर लेता। चलता फिरता एक दो दाने चने के चबाता रहता और साथ की धीरे धीरे कुछ बोलता रहता। मैं सोचता पाठ कर रहा होगा। चलो ठीक है। किन्तु एक दिन ये जानने के लिए कि ये कौन सा पाठ करता है, किस परमात्मा का नाम लेता है, मैं नंगे पाँव बिना आवाज़ किए, उसका अनुकरण करता हुआ उसका पाठ सुनने लगा। वह धीरे धीरे कह रहा था, "मरेगी। हर हालत में मरेगी। नहीं बचेगी। मरेगी। मरेगी ही मरेगी।" ये था उसका सिमरन। मैंने उसके सामने आकर पूछा, "कौन मरेगी भाई?" कहा, "वही मरेगी और कौन? वही मरेगी जिसने बाबा जी का घर नष्ट किया है। मरेगी।" मैंने

पूछा, "कौन मारेगा उसे?" "महाराज। महाराज मारेगा। तुम देखना। महाराज छिपकर, घात लगाकर किसी को नहीं मारता? खुलेआम मारता है पापियों को।" मैं हँसने लगा। वह गुस्से में था किन्तु मुझे हँसते देख खामोश रहा। फिर कहने लगा, "तू पढ़ा लिखा है। जो पढ़े लिखे लोग होते हैं उन्हें महाराज का पता नहीं होता। मैं भी यही हूँ। तू भी यहीं है। तू देखना। संसार की कोई सेना उसे बचा नहीं पाएगी।" मैं सोचने लगा सिक्खों का दिमाग पूरा खराब हो गया है, सोचते हैं शाप देते रहो। शाप जैसे एटम बंब हों। दरबार साहिब गिरना था गिर गया। अब सब्र करो।

मिलटरी टॉर्चर में एक लड़के को इतना पीटा गया कि वह हमारे पास आकर रोने लगा। कहा"जब इस नरक में से (फौजी इंटैरोगेशन) से बाहर गए तो गुरूद्वारे में जाकर महाराज से पूछेंगे कि बता हमारा क्या दोष था।" दूसरे ने कहा, "ऐसी बातें मत कर, न ही सोच। पंचम पातशाह, नौवें पातशाह और साहिबज़ादे दोषी थे? महाराज का शुक्रिया अदा करना चाहिए मूर्ख। शिकायतें नहीं करते।"

जेल में बैठे या तो पढ़ते रहते या बातें करते। सिक्ख युवक ताश खेलते, सुबह शाम वॉलीबाल, इसी तरह दिन बीत रहे थे। जेल में दो नज़रबंद भाई बहुत तेज़ थे। जेल में बंद होने के बावजूद उनसे संसार की कोई भी ताज़ा खबर सुन लो। नज़रबन्दों को इक्ट्ठा करके हमनें दोनों को सतीश जैकब और मार्क टल्ली की पदवियाँ दीं। जैकब और टल्ली बी.बी.सी. लंदन के बहुत कुशल पत्रकार थे। हम कुछ व्यक्ति (सरदार रणधीर सिंघ चीमा, इन्द्रजीत सिंघ सेखो, प्रेम सिंघ चंदूमाजरा और शेर सिंघ डूमछेड़ी आदि) बैठे बातें कर रहे थे कि मार्क टल्ली भागता हुआ आया और कहने लगा, "इन्दिरा गांधी का कत्ल हो गया है।" हमने पूछा कैसे और किसने किया? उसने कहा, अभी तक यही पता चला है। शीघ्र ही बाकी की जानकारी भी मिल जाएगी। प्रो. चंदूमाजरा ने कहा, "तमिलों का एक्शन होगा यदि खबर सच हुई तो।" किसी लड़के ने कहा, "सिक्खों के अतिरिक्त ये काम अन्य कोई नहीं कर सकता।" चंदूमाजरा ने हँसकर कहा, "देखते रहो स्वप्न पुरानी शूरवीरता के। अरे अब सिक्खों में वो साहस नहीं रहा।" वह लड़का क्रोधित हो गया कि सिक्खों को कायर क्यों कहा। इस तरह बैठे अभी दस मिनट ही हुए थे कि सतीश जैकब भागता आया और कहा सिक्खों ने इन्दिरा गांधी को मार दिया।

अनेक लोगों के पास रेडियो थे। सभी ने कान से लगा रखे थे। यदि एक ने आल इण्डिया रेडियो लगा रखा था तो दूसरे ने लाहौर लगा दिया और तीसरे ने बी.बी.सी और चौथे ने वॉयस ऑफ अमेरिका। दोनों भाइयों ने जब हमें खबर दी तब से लेकर दो घण्टे तक भारतीय रेडियो पर कोई खबर नहीं आई किन्तु लाहौर से इन्दिरा गांधी के घायल होने की खबर मिली। फिर भारतीय रेडियो ने घायल होने की खबर

सुनाई। बी.बी.सी ने सबसे पहले मृत्यु की खबर दी। लाहौर से निरन्तर प्रसारित हो रहा था कि ये आक्रमण सिक्खों ने किया है। कौन से सिक्खों ने, कैसे, इसके बारे में कुछ पता नहीं चल रहा था। शाम तक सब कुछ स्पष्ट हो गया।

हम तीन चार व्यक्तियों को ड्योढ़ी पहुँचने का संदेश मिला। वहाँ गए। पटियाला जेल के डिप्टी सुपरडैंट सरदार इकत्तर सिंघ सिधू थे। उन्होंने कहा, "प्रधान मन्त्री का कत्ल हो गया है। यहाँ हमारे केन्द्रिय जेल के सुपरडैंट एन.एस. ठाकुर थे, वह परिवार सहित अनजान स्थान पर चले गए है क्योंकि उन्हें यहाँ खतरे का अनुभव हो रहा था। मुझे वे चार्ज दे गए हैं। अनुशासन बनाये रखने में आप मेरी सहायता करो। मैं आपका सिक्ख भाई हूँ। यदि कहो तो दिखा देता हूँ, जेल की चारदीवारी पर चार तोपें लगा दी गई हैं। फौज को ये शक है कि आज रात को कुछ लड़के जेल तोड़ने का प्रयास करेंगे। आप मेरी सहायता करो।" सरपंच सवर्ण सिंघ ने कहा, "डिप्टी साहिब हम आपका साथ तभी देंगे यदि आप हमारा कहा मानोगे। लड़के बहुत जोश में हैं। तो भी वे जेल नहीं तोड़ेंगे। ये हमारी जिम्मेवारी होगी। परन्तु यदि वे बाहर से कुछ खाने पीने के लिए मंगवाते हैं तो ड्योढ़ीदार से कहो, रूकावट न बने।" ये फैसला लिया गया कि जेल में जैसे चाहे रहो इच्छानुसार खाओ पीओ परन्तु बाहरी दीवारों के पास जाने की मनाही है। ये सरपंच ज़िमीदार था। इसने कैदियों और हवालातियों में जाकर ऐलान किया मित्रो आज जिसने जो खाना पीना है, हुक्म करो। आज रात की सेवा मेरी जिम्मेवारी है।

इखलाकी कैदियों को तालों से बाहर निकाला गया ताकि वे भी दावत में शामिल हो सकें। मिठाई, पनीर, चिकन, मछली और विस्की कितनी मात्रा में आई, कुछ पता नहीं। किसी पर कोई बन्धन नहीं। जिसकी जो इच्छा वो खाए। सतीश जैकब और मार्क टल्ली ने कहा दीपमाला करनी है। दीवाली मनाएँगे। दीये कहाँ से आएं, न मोमबत्तियाँ थीं। उन्होंने कहा अभी प्रबन्ध हो जाएगा। एक रजाई को फाड़ दिया गया और कैदियों से कहा बत्तियाँ बनाओ। एक बोरी आटा लाकर कहा सख्त आटा गूंथो। दीये बनाओ। स्टोर में से तेल के पीपे लाए गए। कितने हज़ार दीप जले कोई गणना नहीं। इन्दिरा गांधी के विरुद्ध सिक्खों के हृदयों से क्रोध का दरिया प्रवाहित हुआ।

अगले दिन एक कैदी मेरे पास आया और पूछा, "जी अब आगे क्या होगा? अब कौन सा मोर्चा लगेगा?" मुझे उसका प्रश्न समझ में नहीं आया। उसने फिर से कहा, "जब जेल के लिए क्विंटलों में झाड़ू खरीदे जाते हैं तो हम समझते हैं कि अकालियों का मोर्चा लगने वाला है। बहुत झाड़ू आए हैं। मुझे किसी बात का कुछ पता नहीं था। शाम को पता चला जब सैंकड़ों की संख्या में जेल में नज़रबन्द लोगों

का प्रवेश हुआ। ये सब कौन थे? तफतीश की तो पता चला कि कल शाम को जिस जिस को मिठाई और विस्की खरीदते देखा पुलिस ने उन्हें पकड़ लिया था। अनेक स्थानों पर हिन्दुओं और सिक्खों में विस्फोटक वातावरण की उत्पत्ति की सम्भावना बन गई थी। जेल में आने वाले लोगों में अधिकतर विद्यार्थी थे। थापर इंजीनियरिंग कॉलेज और सरकारी मैडीकल कॉलेज के विद्यार्थियों की संख्या अधिक थी और इनमें हिन्दु विद्यार्थी भी थे। एक सीनियर डॉक्टर था। मैंने इस डॉक्टर से कहा कोई बात नहीं। फायदा ही हुआ है। आपको पता लगेगा कि जेल का जीवन कैसा है। जानकारी में वृद्धि लाभदायक होगी। उसने कहा, "मुझे जेल के जीवन के बारे में बहुत पता है। मैं फिरोज़पुर जेल में मैडिकल अफसर हूँ। पापिन के मरने की खबर सुनकर कुछ ज्यादा पी ली, इन्होंने पकड़ लिया। किसी को कोई हानि तो नहीं पहुँचाई। अपनी जेब में से खर्च किए थे पैसे।" वो लड़का जिसने हमें टयूबवैल पर रखा और खाना खिलाया था जेल में घूमता दिखाई दिया। मैंने उसके पास जाकर कहा तू जेल जाएगा, हमने भविष्यवाणी कर दी थी। क्यों पकड़ा है तुझे? उसने कहा मैंने हलवाई से कहा कि बची हुई सारी मिठाई मेरी है। दूसरे किसी को मत देना। पुलिस ने खींच कर गाड़ी में फेंका और यहाँ बंद कर दिया।

हमारे पास कोई निश्चित प्रमाण तो नहीं थे केवल अनुमान के आधार पर ही परिणाम निकालते। एक दिन आठ दस लोग बैरक में बैठे थे। चर्चा हो रही थी, क्या अकालियों को इस बात का पता था कि दरबार साहिब पर आक्रमण होगा? इन्द्रजीत सिंघ सेखों ने कहा, "जब दरबार साहिब पर आक्रमण का समाचार सुना तो कुछ ही समय में सैंकड़ों लोगों ने एकत्रित होकर निर्णय किया दरबार साहिब जाकर मरा जाए। अभी संत जरनैल सिंघ की मृत्यु की खबर नहीं आई थी। अभी शुरूआत ही हुई थी। गोलाबारी दोनों तरफ से हो रही थी। कुछ समझदार लोगों ने कहा, "क्फर्यू लगा हुआ है, हमें बादल साहिब को अपने साथ लेकर जाना चाहिए। नेता की बात कुछ और ही होती है। उबड़-खाबड़ रास्तों से होता हुआ ये काफिला बादल गाँव में पहुँच गया। कोठी में से पता चला कि बादल साहिब खेत गए हुए हैं। लोगों का समूह खेत जा पहुँचा। बादल साहिब खरबूज़े खा रहे थे। पूछा बताओ कैसे आना हुआ। हमने कहा दरबार साहिब जाने के लिए। वहाँ सेना बहुत नुकसान कर सकती है। बादल साहिब हँसने लगे। कहा अपने अपने घरों में वापस जाओ। आपने घेरा डालने की ही बात सुनी है। अभी तो बहुत कुछ होना है। वापस चले जाओ।

ये बात बताकर सेखों ने कहा सभी वापस आ गए। बाद में खबरें मिलीं कि संत सहित हज़ारों लोग मारे गए। सेना ने दरबार साहिब पर अधिकार कर लिया है। बादल साहिब ने चण्डीगढ़ जाकर प्रैस कॉनफ्रैंस को सम्बोधित करते हुए सैनिकों

को बगावत करने के लिए कहा खालिस्तान बनने से अब कोई रोक नहीं सकता.
.. आदि बातें करके फिर से गाँव आ गए। बाद में गिरफ्तारी हुई। इन सबसे ज्ञात होता है कि बादल साहिब की सरकार के साथ सांझेदारी थी नहीं तो क्फर्यू में वो चण्डीगढ़ से गाँव और गाँव से चण्डीगढ़ कैसे पहुँच जाते? ऐसा प्रतीत होता है कि टौहड़ा साहिब और लौंगोवाल संत को इस सबका पता नहीं था शायद, नहीं तो वे आक्रमण से पहले ही दरबार साहिब से बाहर आ जाते और सिक्खों की लाशों पर चलकर निकल जाने के दोष से उनका बचाव हो जाता। बादल साहिब इस बदनामी से बचने में सफल रहे।

दर्शन सिंघ ईसापुर (उस समय सीनियर वाईस प्रैजीडैंट गुरूद्वारा प्रबन्धक कमेटी) ने कहा, "बात मई महीने की है। मैं दरबार साहिब की परिक्रमा कर रहा था। मैंने देखा, तेज़ कदमों से चलते हुए टौहड़ा साहिब आ रहे हैं। पाँच चार व्यक्ति दाएँ बाएँ हैं। मैंने फतह बुलाई। रुके बगैर सिर झुकाकर फतह स्वीकार की। शीघ्रता से अकाल तख़्त की सीढ़ियाँ चढ़ गए। मैंने ड्राईवर से पूछा कहाँ से आ रहे हो? उसने बताया चण्डीगढ़ राजभवन से। मैं कुछ समय के लिए वहीं परिक्रमा में घूमता रहा। दस मिनट बाद प्रधान जी तख़्त साहिब की इमारत से बाहर आए। थके से धीरे चल रहे थे। आते समय की तेज़ी गायब थी। मैं समीप गया। उनके चेहरे पर निराशा एवं उदासी के भाव स्पष्ट दिखाई दे रहे थे। मैंने आगे बढ़कर पूछा, प्रधान जी कुशल मंगल तो है? उन्होंने कहा इस संत को समझा दो यदि समझा सकते हो स्वयं तो मरेगा ही दूसरों को भी मरवायेगा। इसके अतिरिक्त कोई और बात प्रधान जी ने नहीं की। मैं जानने के लिए उत्सुक था। प्रधान जी चण्डीगढ़ वापस चले गए। खबर मिली कि केन्द्र सरकार ने गवर्नर पंजाब श्री पाण्डे द्वारा अकालियों को पंजाब में सरकार बनाने का प्रस्ताव दिया था और कांग्रेस ने इसमें अपना समर्थन देना था। टौहड़ा साहिब ने बादल साहिब को इस बात के लिए मना लिया कि मुख्य मन्त्री टौहड़ा साहिब बनेंगे। पर इस बात के लिए संत जरनैल सिंघ की सहमति अनिवार्य है। संत नहीं माने, टौहड़ा साहिब की इच्छा पूरी नहीं हुई इसी कारण वह निराश चण्डीगढ़ लौट गए और गवर्नर से कहा कि भिंडरावाला संत हमारी कोई बात नहीं मानता इस कारण वह और सरकार ही जाने। जो इच्छा वो करो।

मैंने पूछा, ईसापुर जी ये कैसे सम्भव हो सकता है कि टौहड़ा साहिब को मुख्य मन्त्री बनाने के लिए बादल साहिब मान जाएँ? ईसापुर ने कहा बादल साहिब मान गए क्योंकि ये औपचारिक प्रबन्ध था। कुछ देर पश्चात् विधान सभा का समय समाप्त हो जाना था और पुनः असैम्बली चुनाव होने थे। कांग्रेस की सहायता लेकर टौहड़ा साहिब मुख्य मन्त्री बनते तो टौहड़ा साहिब की राजनीतिक

शान को धक्का पहुँचता। आवश्यकता पड़ने पर टौहड़ा साहिब पर कांग्रेस का ऐजंट होने का दोष लगता। इसलिए बादल साहिब को ये ठीक लगा। जब इस योजना को संत ने असफल कर दिया तो प्रधान जी कहआए जो करना है करो। इस प्रकार मेरा मानना है कि टौहड़ा साहिब को परिणामों का बोध था।"

अब रह गए संत हरचन्द सिंघ लौंगोवाल। मैं इस संत से अनेक बार मिला इसके प्रवचन सुने, कथा कीर्तन भी। वह पूर्णतः खोखला व्यक्ति था। उसे न तो सिक्ख सिद्धान्त का ज्ञान था न ही सिक्खों के सुखी भविष्य के प्रति ईमानदार था। बादल साहिब, बरनाला साहिब और बलवंत सिंघ उसे जैसे चलने के लिए कहते वो चलता। अकालियों में उसके लिए ये मुहावरा प्रसिद्ध था कि संत लौंगोवाल थ्रीव्हीलर है (बादल बरनाला बलवंत सिंघ)। लौंगोवाल साहिब को ये तो पता था कि आक्रमण होगा परन्तु उसे विश्वास था कि पहले उसे गिरफ्तार करने के बाद ही आक्रमण होगा। सरकार के साथ तालमेल होने के कारण उसे ऐसा लगता था कि इन्दिरा गांधी उसका लिहाज़ करेगी। परन्तु हुआ इसके विपरीत। जत्थेदार भी इंदिरा ने बदनाम कर दिए। ऐसा समझ लो गायों की हत्या की। ये बेचारे किसी का क्या बिगाड़ते थे?

मैं जेल में था कि पंजाब में फिर से हिंसक घटनाएँ होने लगीं और पुलिस युवकों को पर घटनाओं से सम्बन्धित झूठे केस बनाकर उन्हें पुलिस मुकाबलों में मारने लगी। मेरे लिए ये सब बहुत दुःखदायी था। मुझे प्रतीत हो रहा था यदि ये वारदातें होती रहीं तो सिक्ख जवानी तबाह हो जाएगी। मैंने एक दिन सभी बन्दी युवकों को बुलाया। उन्हें एक कहानी सुनाई। कहानी ये थी।

एक राजा ने घोषणा की कि अपनी इकलौती बेटी का हाथ और राजपाट उस युवक को देगा जो वृक्ष पर ऊँचे बंधे कंगन में से बाण निकाल सकेगा। जो मुकाबले में शामिल होगा और बाण नहीं निकाल सका उसका वध कर दिया जाएगा। गरीब विधवा माँ के जवान बेटे ने माँ को मुकाबले में जाने की सूचना दी। माँ बहुत रोई। बहुत रोका तू कौन सा कोई धनुर्धारी है। स्वयं भी मरेगा और मुझे भी बरबाद करेगा। लड़के ने कहा ऐसे जीवन से तो मरना अच्छा है। धनुषबाण उठाकर महल में चला गया। ईश्वर का ध्यान करके बाण चला दिया। हुआ ये कि बाण कंगन में से निकल गया। जै जैकार हुई। विवाह की रस्में शुरू हो गईं। राज्याभिषेक के समय उस युवक ने कहा, "मैं खानदान की एक रस्म निभाना चाहता हूँ। रस्म है कि मैं अपना धनुषबाण अग्नि को भेंट करता हूँ।" पूछा ऐसा क्यों करना चाहते हो, तब उसने कहा, "भविष्य में कभी धनुषबाण के मुकाबले में भाग नहीं लूंगा क्योंकि सबसे बड़ा मुकाबला मैं जीत चूका हूँ। अब छोटों को अवसर मिलना चाहिए।"

मैंने कहा मित्रो, यदि इन्दिरा गांधी ने दरबार साहिब का अपमान किया तो उसे उसका मूल्य देना पड़ा। ये बेअंत सिंघ या सतवंत सिंघ की गोली से होने वाला कत्ल नहीं गुरू गोबिन्द सिंघ जी द्वारा आकाश में से धरती की तरफ निशाना लगाया गया बाण था, जिससे उसका अंत हुआ। कभी पहले पाँच सौ वर्ष के इतिहास में ऐसा नहीं हुआ था कि दिल्ली के बादशाह को सिक्खों ने ऐसी सज़ा दी हो? अब इतनी बड़ी घटना के पश्चात् इन छोटे मोटे अफसरों आदि को क्यों मार रहे हो। इसमें तुम्हारी कौन सी शान बढ़ेगी। अब हमें शांत रहना चाहिए और संसार के समक्ष फरियाद करें कि हमारी रक्षा करो। हिन्दुस्तान हमारा नामो-निशान मिटाना चाहता है। हम जीवित रहना चाहते हैं। हे! विश्व के राष्ट्रो, एक छोटी सी अल्प संख्यक जाति को खत्म होने से बचाओ। अब एक भी गोली चलनी नहीं चाहिए।

किसी ने मेरी बातों की तरफ ध्यान नहीं दिया। मुझे इस बात का कोई दुःख नहीं कि मेरी सलाहों को खारिज किया गया। मैं कोई ईश्वर तो हूँ नहीं जो मेरी बात मानी जाए। किन्तु पंजाब की बुद्धिमान् और समझदार जवानी को गोलियों से जिस प्रकार भूना गया वह दुःख अवर्णनीय है। जो कभी वापस नहीं आएँगे वे बहुत मूल्यवान थे। बचे हुए लोगों में कोई मोती होगा? शायद।

जेल में समाचारपत्र में पढ़ा कि अकाली नेताओं को रिहा कर दिया गया है। संत हरचन्द सिंघ ने रिहाई के बाद पहली प्रैस कॉनफ्रेंस दिल्ली में बुलाई जिस में संत जरनैल सिंघ को सिक्खी परम्पराओं का पहरेदार अमर शहीद बताया। कहाहम उसके द्वारा बताए आदर्शों के अनुयायी हैं। मैंने इन्द्रजीत सेखों से कहा, "सेखों साहिब, ये अजीब खबर है। शिरोमणि अकाली दल कर प्रधान संत जरनैल सिंघ की उपमा कर रहा है।" सेखो ने कहा, "खबरें पढ़कर अख़बार फेंक दिया करो। मुम्बई में कुछ ऐसे लोग हैं प्रोफैसर साहिब जो सौ रूपये अस्पताल में देकर लावारिस लाश खरीद लेते हैं। उसे चौराहे में लिटाकर रोने पीटने लगते हैं कि हमारा जीवन निर्वाह करने वाला सदस्य मर गया किन्तु दफनाने के लिए पैसे नहीं है। बहुत से दानी लोग घूम रहे होते हैं। शाम तक चार पाँच हज़ार के आसपास पैसे इक्ट्ठे हो जाते हैं। फिर वे लाश उठाते हैं शमशान घाट में फेंक आते हैं। शमशान घाट वाले तो संस्कार करेंगे ही करेंगे। अब नहीं, आगे भी ऐसा ही हुआ करेगा। जब सिक्खों की वोटों की आवश्यकता होगी तब अकाली जत्थेदार इस लावारिस लाश को चौराहों में रखकर भीख मांगा करेंगे। सिक्ख उदारचित्त हैं। यश गायक साहिबज़ादों की वार गाकर पैसों से जेबें भरकर नहीं ले जाते? जत्थेदार, संत जरनैल सिंघ का नाम लिया करेंगे जब कभी वोटों की आवश्यकता होगी। अब पंजाब में इनकी असैम्बली बन जाएगी।"

मैंने पूछा, "आपने लावारिस क्यों कहा संत जी को? सेखों ने कहा बाबा जोगिन्द्र सिंघ पिता, सभी भाई और दमदमी टकसाल उसे शहीद मानने से इंकारी हैं। आपको पता है जो संत को शहीद कहते हैं उन्हें जान से मारने की धमकी मिल जाती है? इन सभी के होंठो पर शब्द हैं, संत जी नौ बर नौ हैं। इस समस्त घटना को प्रत्यक्ष देखता हुआ खालसा पंथ खामोश है। अब और क्या कहूं मैं संत को? रिहा होते ही मैं बाबा जोगिन्द्र सिंघ जी के पास जाकर उन्हें समझाऊँगा।

लोगों ने संत जरनैल सिंघ के पिता और भाइयों को "शहीदों का परिवार ... शहीदों का परिवार" कहकर सिर पर बिठाने का प्रयास किया। मैं प्रारम्भ से ही "शहीदों का परिवार" नामक उपाधि को स्वीकार नहीं करता। शहीद उस व्यक्ति को कहा जाता है जो पारिवारिक बन्धनों, मोह, स्नेह आदि से ऊपर उठकर सारे संसार को अपना परिवार माने। धीरमल्ल और रामराय गुरू अर्जुन देव जी की शहादत के कारण क्या शहीदों के परिवार हो गए? मैं शहीद नहीं हुआ था, केवल जेल में नज़रबन्द हुआ था। इन्हीं परिस्थितियों का लाभ उठाकर मेरे चाचा ने मेरी ज़मीन पर कब्ज़ा कर लिया। सेना मुझे मार देती तो मेरा चाचा शहीदों का परिवार कहलाता और सम्मानित होता। वास्तव में अकालियों ने अपने वोट बैंक पक्के करने हेतु कुछ शहीदों के परिवारों को टिकटें देकर सम्मानित करना था। ये सब एक राजनैतिक षड्यन्त्र था और कुछ नहीं। सेखो को मैंने टैगोर की कविता का एक छन्द भेजते हुए कहा शहीदों का परिवार कैसा होता है सुनो :

राख धरती पर गिर कर
और धुआँ आकाश में ऊँचा उड़कर
शेखी मारते हैं हम भी आग के बहन भाई हैं।

रिहा होने के पश्चात् मुझे नागसेन ने बताया कि लाल सिंघ दरबार साहिब जाने से इंकार कर रहा है। संत जरनैल सिंघ के समय वह दरबार साहिब जाता था। कारण पूछा गया तो उसने बहाना बना दिया। एक दिन उसने करतार सिंघ बलग्गण की पुरानी गज़ल का शेयर सुनाया :

हीर नाल बस ओहदिआ महलां दी रौनक सी
भला चूचक दे हुण खाली चौबारे कौन वेहंदा है।

वही। अब समझ आई कहानी। तब उसे समझाया कि इस चूचक की हवेली में से हीर कहीं नहीं जाती। केवल लाल सिंघ ही नहीं, इस आक्रमण के पश्चात् अनेक सिक्ख गुरू महाराज से खफा देखे गए हैं। लाल सिंघ ने पूछा, "ईश्वर को किस ढंग से भुलाया जा सकता है? मैंने कहा, "जिसे भुलाना हो उसे जाकर मिलना चाहिए। तुम दरबार साहिब जाओ।"

मैंने बाबा बंदा सिंघ की जीवनी को एक बार नहीं अनेक बार पढ़ा। जिन्होंने बाबा जी का इतिहास पढ़ा है और संत जरनैल सिंघ जी के व्यवहार को देखा है उन्हें दोनों में अनेक समानताएँ मिलेंगी। दोनों में बादशाही, फकीरी, दरिया दिली और श्रद्धा, जीवन-मृत्यु के विषय में एक ही दृष्टिकोण स्पष्ट दिखाई देंगे। प्रियजनों से स्नेह और शत्रुओं विरुद्ध युद्ध करने में कभी हिसाब किताब नहीं लगाया। शत्रु लाखों की संख्या मे होता बेशक, निर्भय होकर युद्ध किया बाबा बंदा सिंघ ने। तत्त्व खालसा ने कहा कि हम मुगलों के साथ अब और युद्ध नहीं करेंगे। बाबा जी ने बिना गुस्सा किए उन्हें जाने के लिए कहा। जब सेना ने गोलाबारी करने से पहले कहा कि जो आत्मसमर्पण करना चाहते हैं हाथ उठाकर बाहर आ जाएँ तब संत जरनैल सिंघ ने सभी को इक्ट्ठा करके कहा, "जो जाएँगे वो पंथ की सेवा करेंगे। किसी को किसी के प्रति कोई रोष नहीं, संकोच नहीं करना खालसा जी। जिन्होंने जाना है चले जाएँ। हम यहीं रहेंगे। आप जाकर हमारे लिए गुरू महाराज जी के समक्ष अरदास अवश्य करना। वाहेगुरू भला करेगा।" अनेक सिक्खों ने आत्मसमर्पण कर दिया। जरनैल सुबेग सिंघ और भाई अमरीक सिंघ सहित सैंकड़ों सिक्ख शहादत के लिए रूक गए। जब बाबा बंदा सिंघ सरहंद पर विजय प्राप्त की तब सिक्ख सेना सोना-चांदी, हीरे-जवाहारात लूटने लगी। तब बाबा जी ने भाई आली सिंघ से कहा, "ये जो कर रहे है करने दो। भाई साहिब आप मुझे उन ईंटों के दर्शन करवा दो जिन्होंने साहिबज़ादों के अंगों का स्पर्श किया था।" भाई आली सिंघ ईंटों के ढेर के पास ले गए और घुटनों के बल बैठकर बाबा बंदा सिंघ जी ने आँसुओं से ईंटों को स्नान करवाया। संत जरनैल सिंघ का सिक्ख परम्परा से ऐसा ही स्नेह था।

तत्त्व खालसा यदि बाबा बंदा सिंघ का साथ देता रहता तो उसे कोई गिरफ्तार नहीं कर सकता था। वह युद्ध में पराजित नहीं हुआ था। फरुखसियर ने राजनीति से उसे पराजित किया था। अकालियों ने हमेशा ही राजनीति को प्रमुखता दी। राजनीति संत को नहीं आती थी। वह स्वयं कहते थे कि मुझे धर्म का थोड़ा सा ज्ञान है राजनीति का बिल्कुल नहीं। किसी श्रोता ने पूछा, परन्तु आप तो कहते हो धर्म और राजनीति इक्ट्ठे होते हैं। संत मैंने ये कहा था कि दोनों इक्ट्ठे हैं किन्तु मुझे राजनीति नहीं आती। आनी चाहिए किन्तु क्या करूँ नहीं आई। मैंने अपनी कमी को ही प्रकट किया है आपके समक्ष। सत्य बोलना कोई पाप तो नहीं।" यदि अकालियों में थोड़ा सा धर्म होता तो इस साधु को कोई मार न सकता। यदि संत जरनैल सिंघ में थोड़ी सी भी राजनीति होती तो वह बच जाता। फांसी का फंदा देखकर मनूसर ने कहा, "खुदावंद करीम, मेहरबान होकर तुमने मुझे जो दिया था वही इन

लोगों को भी दिया होता तो आज जो मेरे साथ हो रहा है वह न होता और जिस वस्तु से तूने इन्हें वंचित रखा है यदि मुझे भी वंचित रखता तब भी ये सब न होता। परन्तु तुमने जो दिया वही अच्छा। जहाँ तू रखे वहीं भला। आमीन।"

जब मुझसे कोई पूछता कि संत बचकर निकल गया है जैसा कि सुनने में आया है, मैं अकसर इस बात का कोई उत्तर न देता। व्यर्थ वार्तालाप से बचना ही ठीक। उसका मन और उसका शरीर एकरूप थे और उसकी शख्सियत बचने वालों जैसी नहीं थी। भाई नंद लाल जी का शेयर है :

मनसूर का नाम लेना है तो रस्सा अपने साथ रखना हमेशा।

कहीं जल्लाद टाल-मटोल करे कि उसके पास फांसी देने के लिए रस्सा नहीं है,

तू रस्सा हर समय अपने पास रखना।"

एक दिन मैंने नागसेन से पूछा, "नागसेन क्या सिक्ख उसे जान गए कि वह क्या कहकर गया है?

नागसेन ने कहा, "कुछ जानते हैं, अधिक नहीं जानते। जो उसे जानते हैं वह भी दरबार साहिब पर हमला होने की तो कभी कभी बात कर लेंगे किन्तु इस संत की बात कोई नहीं करेगा क्योंकि वे भयभीत हैं। सिक्ख लगातार यही कहते आ रहे हैं कि वे बहादुर हैं। जो बार बार बहादुरी का दावा करे वह किसी से भयभीत अवश्य होता है। अधिक लोग उसे नहीं जानते या जानना नहीं चाहते। पुरातन यूनानी दार्शनिक हेराक्लाईटस ने कहा था, "आँख, यदि सूर्य जैसी न होती, सूर्य को देख न पाती।"

शायर सतनाम सिंघ खुमार के साथ घंटों बातें होतीं। एक दिन उन्होंने कहा, "जिस राष्ट्र ने बहुत दुःख देखे हों, पुरस्कार के रूप में ईश्वर उसे श्रेष्ठ साहित्य और श्रेष्ठ संगीत का वरदान देता है। इस दृष्टि से ईश्वर ने सिक्खों के साथ अन्याय किया। दुःख दिए और बदले में न तो साहित्य मिला और संगीत।" मैंने पूछा, "क्या भविष्य में ऐसा होने की सम्भावना है?" उसने कहा, "जितनी सुन्दर किसी की हीर होगी उतने ही सुन्दर बांसुरी के सुर होंगे। क्या कभी किसी ने इस बात की बहस की कि रांझा सांसारिक था या वैरागी? वह एक समय दोनों ही था, और दोनों नहीं भी था। हीर और रांझा धरती से बहुत दूर सूक्ष्म और सुन्दर स्वप्न हैं। हो सकता है

सिक्ख जवानी कभी बीसवीं शताब्दी के रांझे को याद करे। रही बात भविष्य की। क्या पता महान् कलाकार हमारे खजाने भरने के लिए आएँ। मोमिन का शेयर हैः

फिर बहार आएगी वही दशतनवर्दी होगी
फिर वही पांव वही खारि-मुगिलां होंगे।

(फिर बसंत आएगी। फिर से जंगलों में आवारगी के लिए कोई निकलेगा। फिर वही पैर, फिर वही तीखे कांटे होंगे।)

## *संतोख सिंघ धीर*

समाजवाद ने मुझे कभी प्रभावित नहीं किया, तब भी नहीं जब पंजाब में ये चरम सीमा पर था अर्थात् छठे दशक में, यद्यपि उस समय कम उम्र होने के कारण मैं इससे प्रेरित तो क्या इस में भाग लेकर मर भी सकता था। मेरे अनेक साथी इस नक्सली लहर में भाग लेकर कभी घर नहीं लौटे। मुझे इस लहर में कोई रंग क्यों नहीं दिखाई दिया, जबकिगरीबों की बांह पकड़ने हेतु इसका जन्म हुआ था? अब मुझे इसके कुछ कारणों का पता चला है जिनका वर्णन बाद में करूँगा।

विचित्र बात ये है कि कामरेडी का स्वाद मेरे लिए सदैव नीरस रहा किन्तु कुछ कामरेड अवश्य अच्छे लगते थे। तासकी, गोर्की और संतोख सिंघ धीर की रचनाएँ एवं इन कामरेडो का स्वभाव मेरे लिए प्रेरणा स्रोत बने। मैं सोचता यदि क्यूनिज़म इन दानिश्वरों जैसा होता तो सफलता मिल सकती थी। तासकी और संतोख सिंघ धीर संसार को बताते रहे कि समाजवाद गलत दिशा की तरफ बढ़ रहा है। रूसी स्टेट के नष्ट होने के पश्चात् सभी ने किन्तु परन्तु कहना शुरू कर दिया किन्तु तासकी 1920 से 1940 तक सूचित करता रहा कि समाजवाद के भेष में एक नवीन अफसरशाही स्टालिन के निर्देश अधीन कायम

हो गइ है जो मज़दूर, किसान की उतनी ही दुश्मन और तानाशाह है जितनी ज़ारशाही। बाद में ये भी सिद्ध हे गया था कि स्टालिन ने टकसाली कम्यूनिस्ट, अदालत प्रक्रिया के अभाव में अगणनीय कत्ल और जलावतन किए कि ज़ार के अत्याचार कम दिखाई देने लगे। ये कोई विस्मयजनक बात नहीं कि पंजाब के ट्रेड यूनियन लीडर और बायीं पक्षीय लेखक, संतोख सिंघ धीर के सदैव विरुद्ध रहे। धीर ने न कभी कोई साजिश की न ही कभी पीठ पीछे निन्दा, चुगली की। उसकी लेखनी अख़बारों और पत्रिकाओं के माध्यम से सतत प्रकाशित होती रही।

गंडा सिंघ, साहिब सिंघ, हरकीरत सिंघ और संतोख सिंघ धीर को मंच पर सुनते या पढ़ते समय इनकी भाषा में आपको श्रृंगार, अलंकार आदि सामग्री नहीं मिलेगी। चार हज़ार लोगों के समूह में शामिल होकर जब मैं हसन अब्दाल पहुँचा तब दो पठान मुझसे गले मिले। अब्दुल्ले ने पूछाआपके उधर पंजाब की स्त्रियाँ कितनी सुन्दर हैं? मैंने कहा ये साथ ही तो जा रही है, तू खुद ही देख ले, मुझसे क्यों पूछ रहे हो? उसने कहा नहीं सरदार ऐसे नहीं। ये तो कई कई घण्टे शीशे के आगे बैठकर यहाँ आई हैं। तू मेरे साथ आ। सड़कों पर पत्थर तोड़ती और खेतों में काम करती स्त्रियों को देख। मिट्टी से लथपथ यदि वे तुम्हें परियाँ लगें तब कहना ये सुन्दर हैं। शहरों की सुन्दरता तो छल है भाई, पल दो पल का भ्रम। हमारी गायें और भैंसे इतनी सुन्दर हैं कि बड़े छोटे सभी उनके गले लगते हैं। वे कौन सा हार-श्रृंगार करती हैं? छल का नाम सुन्दरता नहीं।

इस दृष्टि से गुरबख्श सिंघ प्रीतलड़ी की रचना अनेक बार उदासीन कर देती है। उसका गद्य कॉस्मैटिक पर निर्भर है। तो भी, प्रीतलड़ी अपने पाठकों को प्रभावित करता है, उनके हृदय में अपनी बात का संचार करने में सफल है। हमारे अधिकतर समकालिक आलोचक, वृत्तांतकार इतने उलझे हुए हैं कि उन्हें स्वयं नहीं पता कि रोग क्या है और इससे मुक्त कैसे होना है। लेखक धूल-मिट्टी का कितना विशाल पर्वत खड़ा कर सकता है, देखना हो तो इसका टकसाली दृष्टान्त हरिन्द्र सिंघ महबूब का *सहिजे रचिओ खालसा* ग्रन्थ है। अमेरिकी गुरूद्वारा प्रबन्धक कमेटी के कार्यकर्त्ता मुझे अरविन्द्र पाल सिंघ मंडेर, जो यूनिवर्सिटी ऑफ हाफस्टरा में सिक्ख स्टडीज़ के अध्यापक हैं, घर न्यूयार्क में ले गए। उसकी पुस्तकों में महबूब की उक्त पुस्तक रखी हुई थी। मैंने पूछाये पुस्तक पढ़ी है? मंडेर ने कहाएक भी पृष्ठ ऐसा नहीं जो इस रैक में रखा हो और न पढ़ा गया हो। मैंने कहाइस पुस्तक सम्बन्धी आपकी राय? उसने कहाइट इज़ बैड प्रोज़।

संतोख सिंघ धीर की कविता पढ़ो या कहानी, समकालीन लोगों के व्यवहार सम्बन्धी जीवनी पढ़ो या उसकी आत्मकथा, आपको अपने साथ लेकर चलता है। कविता बहुत तेज़ चाल से चलती है किन्तु अशिक्षित ग्रामीण लोगों के मन में भी शीघ्रता से उतरती है। धीर को चाहे असाहित्यिक संगोष्ठियों में सुनो या यूनिवर्सिटी के प्लेटफार्म पर, तुमको प्रभावित करेगा। मिर्ज़ा गालिब ने लिखा थामुश्किल शेयर कहना बहुत सरल है, कठिन है सरल शेयर कहना।

मेरी और धीर की आयु में बस इतना अन्तर है कि उसका बेटा मेरी आयु का

है। अनेक वर्षों से हमारी मुलाकात सेमिनारों, पत्रों और फोन के माध्यम से होती रही परन्तु साहित्यिक सांझ के अतिरिक्त एक निजी सम्बन्ध भी बन गया। उसकी बेटी का विवाह मेरे गाँव के बलजीत सिंघ पन्नू से हुआ था जो नया ज़माना अख़बार का संपादक था। हमारे घरों में कामरेडों को अच्छज्ञ नहीं माना जाता था। धीर का सम्धी/कुड़म जगमेल सिंघ यदि कभी जालंधर किसी विशेष काम के कारण अपने बेटे बलजीत से मिलने जाता तो रात को उसके पास ही रुकता कहीं कामरेड देर तक बातें करते रहे और वह प्रभावित न हो जाए। सामान्यतः वह बलजीत से मिलने का इच्छुक था ही नहीं। पन्नू जाति ने इस अंतर्जातीय विवाह को स्वीकार ही नहीं किया था। कार दुर्घटना में बलजीत की मृत्यु हो गई, दुर्घटना के बाद मज़बूरी में धीर के नातियों को पन्नूओं ने पौत्रों के रूप में स्वीकार किया। हम दोनों का विषय कभी कभी बलजीत बनता। बलजीत भी पन्नू था किन्तु वो सरदारों का लड़का था मैं जाट । इन दोनों में क्या अन्तर होता है ये फिर कभी बतायेंगे, अनेक पाठकों को पता नहीं।

धीर मुझ पर इतना दयालु हुआ कि अपनी आत्मकथा *बृहस्पति* सहित पाँच पुस्तकों का एक पैकट मुझे पटियाला देकर गया जिसमें *मेरी कलम, चार वर्ष और वे दिन* उसके जीवन वृत्तात थे और *संतोख सिंघ धीर की 51 कहानियाँ* उसकी उत्तम कथाएँ। पहले मैंने बिखरे धीर को देखा था, एक कहानी कहीं पढ़ी थी तो दूसरी कहीं बहुत समय बाद। इन पाँचों पुस्तकों को मैंने बिना समयान्तराल के पढ़ा। इनको पढ़ते समय मैंने दूसरी पुस्तकें न पढ़ने का निर्णय किया। पढ़ते समय नोटस लेता रहा। यद्यपि पढ़ने के बाद लिखने में थोड़ा बहुत समय का अन्तर रहा परन्तु जो नोटस ले रखे थे उनके कारण सतत विघ्न उत्पन्न नहीं हो सका। पुनः भारत में आई जर्मन लड़की ऐंजला डीतरिश को मैंने वो बातें सुनाईं जो वे दस वर्ष पहले करके गई थी। उसने माथे पर हाथ मारते हुए कहाटी.वी और कम्पूयटर ने हमारा बुरा हाल करके रख दिया है। आगे से तुझसे सोच समझ कर बात करूँगी, वे भी तब जब आवश्यकता होगी। तुझे तो व्यर्थ की बातें भी अब तक याद हैं।

*वे दिन* पुस्तक उस समय का वर्णन है जब उसके जीवन की प्रारम्भिक विधिावत् यात्रा आरम्भ हुई। प्रथम अध्याय में वर्णित है कि डेरा बाबा जस्सा सिंघ के समीप सूलर रोड पर पटियाला प्रीतम सिंघ की कोठी थी। ये मानसा के समीप बगलियां वाली (नरेन्द्रपुरा) गांव का सरदार था। विचित्र बात ये है कि सरदार प्रीतम सिंघ जी मेरी पत्नी के चाचा थे। धीर के जीवन से सम्बद्ध एक अन्य धारा से मेरा सम्बन्ध बन गया। इस सरदार ने *जीवन-प्रीती* नामक एक मासिक पत्र निकाला हुआ था जिसमें धीर को सहायक संपादक नियुक्त किया गया। ये धीर की प्रसिद्धि के रंगीन दिन थे। सामान्यतः आप देखते हो कि कामरेड जागीरदारों की बहुत आलोचना करते हैं क्योंकि वही इंकलाब की राह में बाधा बनते हैं। धीर का दिमाग भटका नहीं। जीवन के अंतिम दिनों में पुरानी यादों का वर्णन करते हुए वह सरदार की प्रशंसा करता है, वह और उसका परिवार बासलीका पुर-वकार, प्रत्येक आने जाने वाले का सम्मान आदर, सरदार शराब सहित प्रत्येक मानवीय

न्यूनता से स्वतन्त्र। लेखक के लिए मन में इतना सम्मान और आदर है कि रेलवे स्टेशन से लेकर आने, छोड़ने तक सरदार अपनी गाड़ी में लेकर जाता, धीर की प्रत्येक आवश्यकता का ध्यान रखता।

वहाँ रहते समय एक दूसरे कर्मचारी की सुन्दर पत्नी से धीर को इश्क हो गया यद्यपि दोनों विवाहित एवं संतान युक्त थे। कामोत्तेजना व्यक्ति को किस निम्न स्तर तक ले जाती है, ये पुस्तक उसी का विवरण है। स्वयं का न तो लिहाज़ करता है न क्षमा करता है। वह लिखता है"मैं आँखों में सूरमा लगाता हूँ। सुरमे के कारण मेरी आँख झपकनी बंद हो जाती थी।" धीरे धीरे सरदार की नज़रों से गिरता गया और एक दिन नौकरी से हटा दिया गया। ये सब अचानक नहीं हुआ लगभग एक वर्ष के समय दौरान हुआ। अपनी पत्नी और बच्चों के साथ उसका व्यवहार अभद्र होता गया। यही होना था। खुद के बुरे कर्मों के कारण जब उसके परिवार को कष्ट उठाना पड़ता है, उन पलों का वर्णन करते समय धीर स्वयं के विरुद्ध कलम उठाता है तब आपको उसके लेखन में रूसो के *कनफैक्शनज़* की झलक मिलेगी। जिसने अंततः उसे नौकरी से निकाल दिया उसके बारे में धीर लिखता है"इस सरदार जैसा स्वभाव मैंने किसी मालिक का नहीं देखा। सेवा निवृत्त करते समय न तो अपमानित किया, न ही अहसास होने दिया कि उसे मेरी काली करतूत का पता है।"

चहल सरदार की शख्यित में धीर ने न तो कोई वृद्धि की न ही कमी, जैसा वो था उसी रूप में प्रस्तुत किया। ये बात मैंने इस कारण लिखी है क्योंकि इस सरदार को मैंने अत्यधिक समीप से देखा जाना है। इन दिनों के बारे धीर लिखता है ये मेरे लिए सुनहरी दिन थे। जैसे चन्द्रगुप्त का समय हिन्दुओं के स्वर्णकाल था।

सरदार की दो बेटियाँ थीं, धीर की बेटी की हमउम्र। धीर लिखता है मेरी बेटी भी सुन्दर थी किन्तु सरदार की बेटियाँ मक्खन के उन लड्डओं जैसी थीं जो केसर और गुलाब की पत्तियों से गूंथे होते हैं। उसकी बेटियों जैसी मेरी बेटी नहीं थी।

अपनी पत्नी के विषय में लिखता है उसे मुझे पर संदेह था। मुझे उसने कभी कुछ नहीं कहा। वो इतनी अच्छी थी कि मेरी बुरी बातों का उस पर कोई प्रभाव न पड़ता। उसका मानना था इसमें मेरा अपना नुकसान है, उसका नहीं।

लिखता है बाज़ार में एक दिन एक खानाबदोश आदमी ने अपनी पत्नी को चप्पलों से पीटा वह खामोश, नज़रें नीचे किए मार खाती रही। फिर जिस तरफ पति गया उसी तरफ चली गई। मैं उस पति से अधिक खतरनाक हूँ। वह तो गंवार था। सब कुछ सबके सामने कर रहा था। मैं पढ़ा लिखा एक उन्नत शहर का निवासी उससे अधिक ज़ालिम और वहशी था। सोने की हसीन छूरी।

स्कूल की किताबों में बच्चें पढ़ते हैं कि हिन्दु और मुसलमान एक साथ प्रेमपूर्वक रहते थे, अंग्रेजों ने उनमे फूट उत्पन्न की और 1947 का संग्राम हुआ। धीर जैसे अनुभवी व्यक्ति द्वारा ऐसा लिखा जाना अजीब है। अंग्रेज़ ने कहा लड़े, तो एक दूसरे का गला काट दिया, क्या ये इतनी सरल थ्योरम है? अंग्रेज़ देश विभाजन के विरुद्ध थे। वास्तव

में अंग्रेज़ों को कत्लेआम का पता था वे बहाना बनाकर उसे टाल रहे थे। नेहरू और जिनाह ने देश विभाजन का निर्णय किया, दोनों ने कहा था कि बहाने बनाकर अंग्रेज़ स्वतन्त्रता को टाल रहा है।

कुछ वर्ष पूर्व लाहौर की बार कौंसल चण्डीगढ़ की बार से मिलने आई। स्टेज पर बोलते समय भारतीय पंजाब की बार के प्रधान ने भावुक होकर कहा हम तो एक थे, प्रेमपूर्वक रहते थे। अंग्रेज़ हमें आपस में लड़ा गए। अंग्रेज़ ने फूट पैदा की। उसके बाद लाहौर बार के प्रधान ने कहा उचित कहा भाई। अंग्रेज़ ने कहा लड़ो, हम लोगों ने दात्रे उठाकर एक दूसरे को काटना शुरू कर दिया। आज अंग्रेज़ ने कहा खबरदार यदि लड़े। एक साथ बैठकर भोजन करो। हम एक साथ भोजन करने के लिए आ गए। हमारे अपने वश में तो कुछ भी नहीं।

गाँव, कैसे एक दूसरे के कुशल मंगल की कामना करता है, धीर बताता है कि जब चेचक निकल आई, तो परसिन्नी माई, एक पड़ोसिन ने तीन महीने तक लाठी हाथ में लेकर डयूटी दी कि किसी को ऊँचा नहीं बोलने देना। वह दूर मोड़ पर जाकर भिखारी को वहीं से वापस भेज देती, कहती एक बच्चा इधर बहुत बीमार है, आगे जाकर आवाज़ देना। भिखारी वहीं से वापस चला जाता। मेरी माँ को मेरी आँखों की रोशनी की चिन्ता थी। एक दिन मन को मज़बूत करके कहा बेशक आँखें चली जाएँ किन्तु मेरे बेटे के प्राण बच जाएँ। चौगाठ बचनी चाहिए रस्सी बहुत है। दया करना माता रानी।

मृत्यु को सामने देखकर इंसान क्या क्या सोचता है, जानना हो तो पाठको एक तो विक्टर हिऊगो की पुस्तक *फांसी* पढ़ो। मिच्च ऐलबम द्वारा रचित अभी एक नई पुस्तक *टयूज़डेज़ विध मोरी* आई है। प्रोफैसर मोरी शवार्ज़ की अपने पुराने विद्यार्थियों के साथ हुई बातचीत दुःखदायी होते हुए भी सांत्वना देती है। स्वयं तो मृत्यु से मिलने के लिए तैयार है साथ ही दूसरों को भी तैयार कर रहा है कि इस कर्म क्षेत्र में किस प्रकार युद्ध करना है।

दिल्ली में धीर अपने मामा के पास सिलाई का काम इस आशा से सीखने चला गया कि ये काम करने वाले लोग पैसे में खेलते हैं। किन्तु वहाँ जाकर कैसे पल पल अपमानित होता, इसका वर्णन अनेक अध्यायों में किया गया है। गालियाँ, चप्पलें, मुक्के और घटिया खाना। लिखता है मामा के पास रहना, कसाईयों का दर्द सहने के समान था। माँ हौसला देती। जब मैं निराश में होता तो वह गीता की तरह उपदेश देती और मेरे चारो तरफ प्रकाश फैल जाता।

मुझे एक जापानी हाइकु याद आ गया हैबिजली चमक रही है। बादल गरज रहा है। दो छोटे भयभीत बच्चे रात को घोंसले में चिड़िया की छाती के नीचे दुबके बैठे हैं। एक ने कहाआज बच जाएँगे माँ? चिड़िया ने कहामैं हूँ तो यहाँ। कौन तुम्हारा कुछ बिगाड़ सकता है? ये सुनकर दोनों बच्चे गहरी नींद सो जाते हैं।

धीर कविता लिखने लगा तो पता चला कि जिस काम को सरल समझता था, वह बहुत ही गड़बड़ वाला है। "मैं ऐसे ही निरर्थक तुकान्त बनाता रहता। टैगोर और

इकबाल जिस स्तर पर पहुँचे उसके पीछे बहुत महान् साधना और परिश्रम होता है। श्री गुरू गोबिन्द सिंघ जी की *मित्र प्यारे नू हाल मुरीदों दा कहना* कितनी सरल है, केवल गुरू जी की लेखनी ही ये लिखने में सक्षम थी। दिल के रक्त में भीगी लेखनी। संघर्ष करती और विजयी लेखनी, जिसके पीछे बहुत बड़ी शक्ति और सन्तुष्टता हो।"

अब बताता हूँ पाठको मुझे कामरेडों का दर्शन अच्छा क्यों नहीं लगा। जिन संस्कारों में मेरी परवरिश हुई, वहाँ गुरू साहिबान के दरबार की बहुत शान थी। बेशक माँ-बाप निर्धन थे, कहते थे कि हम गुरू गोबिन्द सिंघ जी के बच्चे हैं इस कारण हमसे अधिक धनी इस संसार में अन्य कोई नहीं हो सकता। कामरेड अपने जुलूसों में ईश्वर का मज़ाक उड़ाते, धर्म का अपमान करते। बेशक मंच पर गुरूओं के लिए अपमानजनक शब्दों का प्रयोग करने का कभी साहस नहीं हुआ किन्तु ईश्वर और धर्म का अपमान हो गया तो सिक्ख इतिहास सुरक्षित कैसे रहा? इन बातों से सम्बन्धित कारणों का बोध अब होता है, उस समय केवल मन प्रभावित होता था, कुछ अच्छा लगता, कुछ बुरा। मेरे गाँव के सरपंच कामरेड हरपाल सिंघ घग्घा ने मुझे पटियाला में दसवीं उत्तीर्ण करने के बाद एक कमरा, रसोई गुसलखाना और मुफ्त खाने पीने के साथ कॉलेज की फीस भरने का प्रस्ताव दिया तो मैं बहुत खुश हुआ। पटियाला में कमरा देखा तो सी.पी.आई का दफ्तर था और चौबारे पर लाल झण्डा लहरा रहा थ। वहाँ से मैं इस तरह भाग कर आया जैसे कोई उम्र कैदी जेल तोड़कर भाग जाता है। वहाँ मैंने चाय तक नहीं पी। ये तो अब पता चलता है कि इसमें डरने वाली क्या बात थी, आखिर वो मेरे हमदर्द ही थे। किन्तु यकीनन मैं डर गया था। मैं अपने ऐतिहासिक नायकों से अलग नहीं होना चाहता था। कामरेडों के अनुसार इस दृष्टि से मैं पीछे खींचने वाला हूँ। अभी भी हूँ। उन्होंने स्वयं के लिए स्वयं ही एक शब्द *अग्रिम बढ़ने वाला* का निर्माण कर लिया। भाषा कितनी सुन्दर और कपटी कला है और इस छल में लाखों लोग फंसकर घर से बेघर हो जाते हैं ये दृश्य दर्शनीय है। चलो, धीर मुझे अच्छा लगा, इसका एक कारण ये भी है मेरी तरह उसके प्रेरणा स्रोत नायक पंजाब की संस्कृति, सभ्यता में, सिक्ख इतिहास में वर्णित हैं।

गायक बनने की पहली शर्त ये है कि मधुर कंठ बाद में देखा जाएगा पहले कान ठीक होने चाहिएँ जो सुर पहचानते हो। यही स्थिति शायर की है। बड़ा शायर बड़े कवियों को पढ़ने सुनने के बाद कुछ लिखता है। अपनी बहनों के विवाह में धीर को ये पंक्तियाँ हमेशा याद रहतीं

धीआं गऊआं कामियां दा जोर की ए सदारामा
जदो चित्त चाहे घरों दीजिए निकाल जी।
(बेटियों, गायों, श्रमिकों का क्या जोर जब चाहे घर से निकाल दो।)

वह अपने एक मित्र दर्जी का वर्णन करते हुए कहता कि उसकी गर्दन टेढी थी और आँख में नुक्स होने के कारण लोग उसे टेढ़ा कहते थे। उसमें इतने गुण थे कि उसकी सूरत की तरफ ध्यान ही नहीं जाता था किसी का। धीर की ये बात पढ़कर मुझे महाराज

रणजीत सिंघ के विषय में दी गई आसबर्न की टिप्पणी याद आ गई। वह महाराज से मिलने गया तो पहली मुलाकात के बारें में लिखता है मेरे मन को आघात पहुँचा। काना, काला रंग, चेचक के दाग, मध्यम कद। ये है सिक्खों का राजा? मुलाकात के समय महाराजा ने पूछा मेरा पंजाब देखा? आसबर्न ने इंकार में सिर हिलाया। महाराज ने कहा पहले मेरा पंजाब देख कर आ। चला गया। लिखता है लोग अत्यधिक सम्मान करते हैं अपने महाराजा का। जब भी पूछते हैं कोई दुःख तकलीफ? उत्तर देते हैं दोनों लोकों में दुःख नहीं। इस लोक में हमारा राजा अच्छा, परलोक में हमारे गुरू अच्छे। हमारे जैसा कौन सुखी है यहाँ?

आसबर्न फिर लिखता है अमृतसर, लाहौर और दिल्ली, जिसे ब्रश चलाना आ गया, लकड़ी या पत्थर तराशना आ गया, समझों वह मालामाल हो गया। महाराजा की तस्वीरें और मूर्तियाँ धड़ाधड़ बिक रही थीं। महाराजा जो सुन्दर नहीं, महलों से लेकर झोपड़ियों तक पहुँच चुका है। सब उसकी तस्वीरें खरीद रहे हैं।

दूसरी बार महाराजा से मिला तो पूछा कैसा लगा पंजाब? आसबर्न ने कहा लोग परिश्रमी हैं, आपका बहुत सम्मान करते हैं, धरती उपजाऊ है। महाराजा ने कहा फटे पुराने चीथड़े मिले थे मुझे। सिलाई करके, जोड़कर बहुत मुश्किल से ये कालीन तैयार किया। देखने वाले को सुन्दर लगता है, चलने वाले पैरों को आराम देता है। तू भी अपने ईश्वर से प्रार्थना करना कि ये दोबारा चीथड़ों में न बंट जाए।

अपने जीवन में धीर ने मूर्खता के कारण इतनी हानि सही कि कुलौंदी का इटालियन उपन्यास *पिनाकीओ* याद आ जाता है। पिनाकीओ गलती करता है, बहुत पछताता है, स्वयं से वायदे करता है कि अब ध्यान रखेगा, अब गलती नहीं करेगा, फिर से गलती हो जाती। धीर के दिमाग में ये कैसे आ गया कि नौकरी करने से लेखक नहीं बन सकेगा? वह स्कूल में ज्ञानी मास्टर लगने के प्रस्ताव को स्वीकार नहीं करता। भूखमरी के खतरनाक परिणाम परिवार सहता है।

उसे नवतेज के कथन पर पूरा विश्वास था कि इंकलाब आएगा ही आएगा। फिर लेखकों को लिखने के लिए अच्छी राशि मिला करेगी। इसी उम्मीद में उसने सारी उम्र बिता दी। पंजाबी में लेखन पर निर्भर लेखकों का जो परिणाम होता है, धीर उसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। इन परिस्थितियों में इस प्रकार के शेयर लिख रहा है :

टूटणा आशक के दिल दा<br>
है महाप्रलय दा चिह्न<br>
आ की मिट जान बचाइए<br>
इस विचारे जग नू।

किस्मत धीर पर लगातार आक्रमक प्रहार कर रही है, ये देखकर हैरानी नहीं होती, अपितु ऐसा लगता है ये तो होना ही था, हैरानी इस बात की कि मानसिक और शारीरिक आघातों के बावजूद भी वह कैसे बचता रहा। बचपन में माता-पिता के साथ कहीं पैदल जा रहा था, साथ ही एक घुड़सवार भी कहीं जा रहा था। पिता ने उस घुड़सवार

से कहा इस बच्चे को बिठा लो। उसने अपनी बाँह को आगे बढ़ाया ताकि बच्चे को पकड़ सके। पिता ने बच्चा उसे पकड़ा दिया। किन्तु घुड़सवार उसे अच्छी तरह पकड़ नहीं पाया और बच्चा घोड़ी के पैरों के आगे गिर गया। घोड़ी ने बच्चे पर पैर तो रखा किन्तु उस पर कोई भार नहीं डाला। घोड़ी आगे चली गई और वह बच गया। ऐसा समस्त जीवन उसके साथ होता रहा। सोलजेनितसिन का कथन है स्टालिन द्वारा इतनी सजाएँ देने के बावजूद भी बचने पर मैं समझ गया कि होनी मेरा कुछ बिगाड़ नहीं सकती।

पुराने पात्र उसके साथ चल रहे हैं। मामदीन ललारी इलाके में इतना प्रसिद्ध था कि मिथक बन गया था। लोग कहते थे मामदीन पगड़ी के एक तरफ कोई रंग तो दूसरी तरफ दूसरा रंग कर देता है। उसे याद करते हुए धीर लिखता है, मैंने कहा मेरी पगड़ी को रंग दोगे मामदीन?

- हाँ और किस काम के लिए बैठा हूँ?
- कितने पैसे?
- जितने पैसे मामदीन लेता है। न अधिक न कम।
- तो फिर रंग दे?
- अरे सिर से तो उतार या बंधी बंधाई ही रंग दूँ?

उसकी कविता विधाता सिंघ तीर, करतार सिंघ बलग्गण और बावा बलवंत से सामान्य साधारण किन्तु रहस्यपूर्ण है जो गम्भीरता और ख्याल दोनों से मुक्त नहीं होती

कन्न, कंदा के ने हुंदे की कहां,
सैनतां ने जाणकारां वास्ते।।
इक गल्ल हुंदी किसे इको लई
इक गल्ल हुंदी हज़ारा वास्ते।

उसकी शायरी में लोक गीतों की धुनें द्रष्ट्व्य हैं

इक तेरे दम नाल कि साजन,
मैं दरिया मैं सागर सां।
अज्ज थाली के पानी वांगू
इक तरे बिन डोलां मैं।

बहुत हिम्मती होते हुए भी ये कलाकार अनेक बार निम्न जाति के अहसास का शिकार होता है, इसका उदाहरण घटनाएँ सुना कर देता है कि कहाँ कहाँ उसे 'कमीना' आदि शब्द भी सुनने पड़े। ऊँच-नीच, जाति-पाति का अहसास सभ्यक बस्तियों में है, पिछड़े इलाकों में ये कहीं नहीं मिलता। पाठकों के समक्ष मेरा अनुरोध है कि गोपी नाथ महंती का उपन्यास *'अमृत संतान'* अवश्य पढ़ें। अत्यन्त निर्धन गंवार लोगों की कथा का वर्णन 600 पृष्ठों में किसी महान् गायक द्वारा शास्त्रीय राग सुनाने के समान किया है जिसे सुनकर श्रोता थकावट का अनुभव नहीं करते। कंध कबीलों का सरदार कमज़ोर सा है, केवल लंगोटी पहने, हाथ में लाठी और एक कुत्ता, यही है उसकी सम्पत्ति जैसे अन्य लोग, वैसा

ही सरदार। लेखक पूछता है न इसके पास हवेली, न धन, न घोड़ी, तो ये तुम लोगों का सरदार कैसे हुआ? सरदार इस तरह गरीब नहीं होते? कंध कबीले के लोग कहते इसका हुक्म चलता है। दौलत क्या चीज़ है? हुक्म ही सब कुछ है। बसंत के त्योहार में किस व्यक्ति ने किस पशु की बलि देनी है, किसी को कुछ पता नहीं। ये जिस पशु की तरफ इशारा करेगा, मालिक खामोशी से वह पशु उसके हवाले कर देगा। यदि सरदार किसी जवान लड़के की तरफ इशारा कर दे तो उसकी बलि दी जाएगी। कोई कुछ नहीं कहेगा। सभी को पता है, सरदार किसी व्यक्ति की तरफ अंगुलि नहीं करेगा। वो ऐसा है ही नहीं। किन्तु सभी को ये पता है ऐसा करने का उसे हक है। कबीला वासियों की अधिक गरीबी को देखते हुए कई बार सरदार कह देता है बलि ही देनी है तो इस वर्ष चूहे की दे दो। देवता सब कुछ जानते हैं।

जातिपाति के ये कष्ट न तो उच्च श्रेणियों में इतने घातक है न ही निम्न श्रेणियों में। मध्यवर्ग अनेक बीमारियों और विरोधाभास का शिकार बन कर स्वयं नष्ट होता जा रहा है। मध्यवर्ग में जो कुछ बुरा समझा या सोचा जा सकता है धीर के साथ वह सब कुछ हुआ। उसका जगह जगह अपमान हुआ जिसे पढ़ते समय दुःख होता है परन्तु ये सोचकर हौसला मिलता है जो उसके साथ हुआ वह हज़ारों लोगों के साथ हुआ, हो रहा है, केवल धीर है जो इसका वर्णन वारिस शाह के समान सहजावस्था में रहकर कर सकता था, इसी कारण परमात्मा ने उसे बहुत ही भयंकर भट्ठियों में से निकाला।

उसकी रचनाओं में कहीं कहीं तथ्यों की गल्तियाँ मिलती हैं। कुछेक का केवल संकेत मात्र करूँगा जो मुझे दिखाई दीं; जैसे, लिखा है इब्राहिम इस्लाम के लिए संघर्ष करने वाला व्यक्ति था (हज़रत इब्राहिम वास्तव में यहूदियों का पैगम्बर था जब इस्लाम का जन्म भी नहीं हुआ था), उसका विचार है कि एडविन आर्नलड ने महात्मा बुद्ध पर *लाईट ऑफ ऐशिया* पुस्तक लिखने हेतु संस्कृत का अध्ययन किया (जबकि बौद्ध *त्रिपिटिक,* बौद्ध साहित्य पालि भाषा में है), लिखा है लोगों को कहा जाता है कम्यूनिस्ट नास्तिक हैं, मन्दिरों मस्जिदों को सहन नहीं करेंगे, किसानों से ज़मीन छीन लेंगे। किसान उनके बहकावें में आ जाते हैं (किन्तु रूस में ऐसा हो चुका है, पादरियों का कत्ल किया गया और जब ज़मीन का अधिकार छीन लिया गया, लाखों की संख्या में किसान मरे, मरने वाले किसान शत्रु नहीं थे, बोलश्विक इंकलाबियों का साथ देने वाले हमदर्द थे)।

लिखा जपुजी में राजाओं को शेर और अफसरों को गुरू नानक देव जी ने कुत्ते कहा है। ये पंक्तियाँ जपुजी की नहीं मल्हार की वार की हैं।

चोर, धीर के बन रहे मकान की चौगाठें उतार कर ले गए तो उसने लिखा गरीब के घर चोरी की। अमीर कम हैं, उनके घरों में चोरी करते? इन चोरों में जमाती चेतना नहीं है। गधे हैं।

प्रिय धीर, जिनके पास जमाती चेतना होती है वह अमीरों के घरों में भी चोरी नहीं करते। संघर्ष करना अन्य बात है चोरी करना दूसरी। शेख साअदी गुलिस्तां में लिखता है चोरी के इरादे से घर में घुसने वाला चोर यदि भूख से व्याकुल है तो रसोई में रखा

खाना इस कारण नहीं खाएगा क्योंकि रोज़े के दिन हैं?

धीर का ऐलान है कि कम्यूनिस्ट विचारधारा के बिना अन्य सभी विचारधाराएँ व्यर्थ है *वे इस तरह है जैसे सूर्य उदित होने पर तारे छिप जाते हैं, मार्क्सी विचारधारा आज का उदित सूर्य है।*

धीर को इस बात की हैरानी होती है कि अनेक विद्वान्, हिन्दु या सिक्ख होने में गर्व अनुभव करते हैं। वह भूल जाता है कि उसे यदि स्वयं पर कम्यूनिस्ट होने का गर्व है तो एक सिक्ख को सिक्ख या हिन्दु को हिन्दु होने का गर्व क्यों न हो? मार्क्सी विचाराध ारा के अतिरिक्त उसे प्रत्येक दर्शन निरर्थक प्रतीत होता है, कामरेडों के अतिरिक्त सभी नकारा हैं। उसकी रेलगाड़ी एक ही दिशा में अंधाधुंध भाग रही है कि वह देखता है ज्योति बासू के मामले में कामरेड, कामरेडों की पीठ पर चाकू से प्रहार कर रहे हैं तो लिखता है क्या ये कम्यूनिस्ट व्यवहार है? ये जागीरदारी सोच है। धीर साहिब, जागीरदार तो जागीरदारों का पूर्ण पक्ष लेते हैं, कम्यूनिस्टों को उनसे यह गुण ग्रहण करना चाहिए।

धीर ने इन्दिरा गांधी और संत हरचन्द सिंघ लौंगोवाल पर कविताएँ लिखीं। पता नहीं उसने इन दोनों में क्या देखा जिससे वह प्रभावित हो गया? भारतीय राजनीति में भ्रष्टाचार और गुण्डागर्दी ने इन्दिराकाल में प्रवेश किया। इन्दिरा गांधी स्वार्थपूर्ति हेतु कुछ भी करने में समर्थ थी। दरबार साहिब पर उसके द्वारा करवाया गया आक्रमण इसका उदाहरण है जो उसके लिए आत्मघातक सिद्ध हुआ परन्तु वह इसके खतरों से अनजान थी। संत लौंगोवाल सामान्य न अधिक न ही कम बुद्धि का ऐसा नेता था जिसमें नेतृत्व की बिल्कुल क्षमता नहीं थी। अकाली-दल प्रधान इस कारण अधिक समय तक बना रहा क्योंकि ये गरीब किसी का क्या बिगाड़ सकता है, की भावना व्यापक थी। ये दोनों धीर की कविता का स्रोत इस कारण बने क्योंकि इन्हें आतंकवादियों ने मारा था। कभी ऐसा भी होता है कि पकड़े जाने की स्थिति में जेब-कतरे को इतना मारा-पीटा जाए कि उसे देखकर जिसकी जेब काटी गयी है वह रहम करता हुआ कहेछोड़ो इस बेचारों को। अध‍ि ाक पीटे जाने पर रहम की भावना तो समझ में आती है, जेब-कतरों पर कविताएँ लिखने की बात समझ में नहीं आती।

संत जी ने पंजाब-समझौतें पर हस्ताक्षर क्यों किए? धीर या अन्य कोई बताए कि इस दस्तावेज़ से पंजाब को या हिन्दुस्तान को क्या मिला? और कुछ न होता, यदि इस समझौते से पंजाब में शांति वापस आ जाती तो भी इसे प्रभावी मानते, किन्तु पंजाब में गोलाबारी बेअंत सिंघ की सरकार के समय में तेज़ हुई। इन्दिरा और लौंगोवाल पर लिखी गई कविताएँ राजनीति हैं, कला नहीं। कभी कभी राजनीति कला भी बन जाती है, यहाँ नहीं बनी। सी.पी.आई पंजाब के जनरल सचिव को ऐमरजैंसी के दिनों में बीस नुकाती प्रोग्राम को ऐसे प्रसारित करते देखा है जैसे पहाड़ी लोग तम्बू लगाकर शिलाजीत ताकत बढ़ाने वाली दवाइयाँ बेचते हैं। कम्यूनिस्ट पार्टी ऑफ इण्डिया, इन्दिरा गांधी का लोक सम्पर्क विभाग बना रहा। इस बहाव में धीर का बहना आश्चर्यजनक बात नहीं।

धीर लिखता है "मेरी इच्छा है कि धरती पर बैठा होऊँ और मेरी रचना

आकाश को छू रही हो।" उसकी रचनाओं में उसकी ये इच्छा अनेक स्थानों पर पूर्ण होती दिखाई देती है किन्तु उक्त राजनैतिक कविताएँ पृथ्वी के स्तर के अनुरूप नहीं प्रतीत होतीं। यह आवश्यक नहीं कि लेखक की प्रत्येक पंक्ति अद्‌भुत हो। इन दों व्यक्तियों का वर्णन इसलिए किया गया है क्योंकि धीर इनकी कविताओं के हक में मज़बूत वकालत करता है। जो व्यक्ति अकाल तख़्त के ध्वंस होने पर दुःख अभिव्यक्त करते हैं धीर उन्हें पूर्णतः मूर्ख मानता है। इन्हीं मूर्खों में एक इन पंक्तियों का लेखक भी है जो दरबार साहिब पर हुए आक्रमण को अराजकता, वहशीपन और अनैतिक कार्यवाही की उपज मानता है परन्तु संतोख सिंघ धीर का प्रशंसक है।

जिस व्यक्ति को कामरेडों की बात व्यर्थ प्रतीत होती है, मैंने देखा वह उसके लिए दकियानूसी शब्द का प्रयोग करता है। मुझे और मेरे साथियों को इस शब्द के अर्थों का कोई ज्ञान नहीं था, यदि कभी पगड़ी ठीक ढंग से न बंधी होती, हम कहते कैसी दकियानूस पगड़ी है, बेस्वाद सब्ज़ी से लेकर घटिया व्यक्ति तक, हमारे लिए ये दकियानूसी थे, यहाँ तक कि दूध निकालते समय लात मारकर दूध गिरा देती तो हम भैंस को भी दकियानूसी की उपाधि देते। हम बचपन में जो करते थे, धीर अब तक वही कर रहा है।

तथ्यमूलक गल्तियों का संशोधन अग्रिम संस्करण में हो जाएगा किन्तु धीर का केवल एक ही विचारधारा को सर्वोत्तम मानना और अन्य सभी को निम्न मानना संतुलित विचार नहीं। मैं मार्क्सवादी विचारधारा का प्रशंसक तो नहीं किन्तु जानता हूँ कि इसने समाज के बड़े वर्ग को प्रभावित किया और करेगी। किन्तु मार्क्सवाद सांसारिक दुःखों के उपचार हेतु प्रथम और अंतिम दवा नहीं है। हज़ारों दर्शनों में एक ये भी है और ये भी स्वविरोधों से मुक्त नहीं है। स्टालिन के विषय में भारतीय कम्यूनिस्ट पूर्णत मौन हैं।

वैसे धीर को कम्यूनिज़म सम्बन्धी अपनी कमी का बोध है। वह लिखता हैमुझे अपनी आँखों पर से अंधविश्वास के पर्दे हटाने चाहिए थे। श्रद्धा अच्छी चीज़ है किन्तु अंधी श्रद्धा अच्छी नहीं। मैं बुरा व्यक्ति नहीं, किन्तु समझदार नहीं।

अनेक गुण अवगुण पारस्परिक रूप से हमारे इस प्रिय लेखक को संतोख सिंघ धीर बनाते हैं। मेरी आर्थिक पृष्ठभूमि धीर से किसी प्रकार नहीं परन्तु हम दोनों में सांसारिक दृष्टि से यही अन्तर है कि तंगी के दिनों में जो भी काम, नौकरी, अच्छी या बुरी मिली, मैं उसे करता रहा जबकि धीर को अच्छी अच्छी नौकरियों के प्रस्ताव आते रहे, वह इंकार करता रहा, ये सोचकर उसने लेखक बनना है। उसे सारी उम्र पता नहीं चला कि दोनों एक दूसरे के विरोधी नहीं, पूरक हैं। जब इस भूल का अनुभव हुआ तब उम्र बीत गई।

धीर को पुनर्जन्म में विश्वास नहीं। मान लो उसे एक और जन्म मिल जाए तो क्या वह इस जीवन में की गलतियों से मुक्त रहेगा? मुल्ला जी नसीरूद्दीन से ये बात पूछी गई। मुल्ला जी ने उत्तर दिया इतने गुनाह किए हैं, पुनः मानवीय शरीर नहीं मिलेगा। जिज्ञासु ने कहा मान लो मिल जाए?

नसीरूद्दीन ने कहा यदि मानवीय जीवन फिर से मिल जाए तो मैं शीघ्रता से

गुनाह करने शुरू कर दूंगा। इस जन्म में मैं डरता रहा, इसी कारण पवित्र रहा। इस गलती को अगले जन्म में नहीं दोहराऊँगा।

हमारे प्रिय स्वर्गीय शायर सतनाम सिंघ खुमार को एक प्रोफैसर ने कहा तुम उलझे हुए व्यक्ति हो। खुमार ने कहा सही कहा मित्र। किन्तु मुझे पता है कि मैं कहाँ से उलझा हुआ हूँ, कैसे उलझा। मेरा उपचार सम्भव है। तुम्हारा उपचार कौन करेगा? तुम जो स्वयं को सुलझा हुआ मानते हो, तुम्हारी स्थिति अधिक जटिल, अधिक चिंताजनक है भाई।

धीर जैसा सरल व्यक्ति कहाँ मिलेगा? उसकी फिक्शन में वर्णित सरलता अत्यधिक साधना के बाद मिलती है। जैसे शास्त्रीय संगीत में निपुण गायक हमें राग के बारे में अज्ञानी समझकर हमारे पसंदीदा लोक गीतों के शब्द, लोक धुन में सुना दे।

पाँच वर्ष पहले धीर के बारें में लिखा ये लेख उसे भेजा। पसंद नहीं आया। नाराज़ हुआ। ये बात उसे अधिक बुरी लगी कि उसके साथ तासकी का नाम क्यों लिखा। धीर अनुसार तासकी रिएक्शनरी दकियानूसी आदि आदि ... था। किया हुआ परिश्रम और समय क्या व्यर्थ गया? हो सकता है पाठकों को सही लगे। हाँ जिस नाक के लिए नथ बनवाई उसे ठीक नहीं लगी।

## प्रोफैसर गुलवंत सिंघ

बीस नवम्बर 2000 की शाम को मैं घर के बाहर समीप में ही गया हुआ था तभी घर से पत्नी का फोन पर संदेश मिला प्रो. गुलवंत सिंघ जी आए हुए हैं। जल्दी घर आओ। उसी समय, लगभग साढे आठ का समय, मैं घर की तरफ चल पड़ा। प्रतिदिन की तरह, अकसर मिलते किन्तु घर कभी नहीं आए थे। ....आऊँगा कभी।... लगाऊँगा किसी दिन चक्कर ... बस इतना सुनकर हम खामोश रह जाते। उनके साथ बहस करने की हिम्मत किसी में नहीं थी। खुशी हुई कि वो मेरे घर आए। जब घर पहुँचा, देखा बच्चों से बातें कर रहे थे। मुझे देखकर कहा खाने पीने के प्रबन्ध में व्यर्थ समय नष्ट नहीं करना। ज़रूरी काम है। आपके करने योग्य है। करना पड़ेगा जैसे भी हो।"

मैं सुनता रहा, उन्होंने कहा कब तक चलेंगी ये सांसे, कुछ पता नहीं। किन्तु संसार त्यागने से पहले एक ज़रूरी काम करने की इच्छा है। पूरा कर पाऊँगा कि नहीं, पता नहीं... अच्छी तरह से कर पाऊँगा कि नहीं, पता नहीं। श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी के अनुवाद फारसी भाषा में करने का विचार मन में बार बार आ रहा है। वाईस-चांसलर साहिब से मिलकर ये प्रोजैक्ट मुझे दिलवाएँ। जपुजी साहिब और सुखमनी साहिब का अनुवाद कर चुका हूँ और ये विश्वविद्यालय से प्रकाशित हैं। अरबी और फारसी के विद्वानों

के अच्छे विचार प्राप्त हुए है। इन बाणियों की एक एक पंक्ति का अनुवाद करने के पश्चात् मैं अनुवादित पंक्ति को बार बार ऐसे पढ़ता था जैसे जवान सिक्ख लड़का दस्तार बांधने के बाद बार बार शीशा देखता है कि ये ठीक भी है या नहीं।

मैंने कहा, "जल्दी ही वाईस चांसलर साहिब से मिलूंगा और प्रत्येक सम्भव प्रयास करूँगा प्रोफैसर साहिब ये प्रोजैक्ट आपको मिले परन्तु यदि सफलता न मिली तो बुरा मत मानना। वाईस चांसलरों को किसी बात के लिए मनाना कोई सरल नहीं, किन्तु उन्होंने अपनी बात जारी रखी, "मैं बहुत अच्छा काम कर पाऊँगा, कोई दावा नहीं है। श्री गुरू महाराज जी की जितनी भी मेहरबानियाँ प्राप्त होंगी दिखाई दे जाएँगी। पौराणिक कथा है। श्री रामचन्द्र जी लंका तक पहुँचने के लिए पुल बनाने लगे तो एक गिलहरी समुद्र में छलांग लगाती, फिर रेत पर लोटने लगती। फिर समुद्र में, फिर रेत पर लोटती। किसी ने पूछा, "ये कौन सा खेल है? गिलहरी ने कहा, "खेल नहीं, सागर को सुखा रही हूँ ताकि पुल बनने में कम समय लगे।" दर्शक ने हँसते हुए पूछा"क्या इस प्रकार सुखा पाओगी समुद्र को?" गिलहरी ने कहा, "समुद्र को अवश्य सुखा दूंगी, ये दावा तो नहीं किया। पुल बनने तक कोशिश करूँगी। जितनी ताकत ईश्वर ने दी है, लगा दूंगी।"

धीरे धीरे उठे छड़ी संभाली और वापस जाते हुए कहा, "अरबी, फारसी, संस्कृत और अंग्रेजी जानने वाले बहुत मिलेंगे। किन्तु ये सिक्ख, गुलवंत सिंघ नहीं मिलेगा फिर आपको?"

कहने को मैं बिस्तर पर लेट गया था किन्तु देर रात तक नींद नहीं आई। कई बार आँख खुली और प्रोफैसर गुलवंत सिंघ के यही वाक्य बार बार गूंजते ... कभी एकान्त में से खतरनाक आवाज़ें सुनाई देने लगीं, कभी ऐसा लगता जैसे सुन्दर बागों में चहकते पक्षियों के गीत हों। सुबह जल्दी उठकर स्नान किया, ईश्वर का नाम लेकर वाईस चांसलर को इस कार्य का महत्त्व बताते हुए, प्रोफैसर साहिब को ये प्रोजैक्ट देने के लिए प्रार्थना पत्र लिखा और 21 नवम्बर को सुबह 6 बजे कोठी के दरबान को पकड़ाकर वापस घर आ गया। इसके बारें किसी से कोई बात नहीं की।

अगले दिन अर्थात् 22 नवम्बर के सुबह 7 बजे सेवादार मुझे ये पत्र वापस दे गया जिस पर वाईस चांसलर ने लिखा था बहुत बहुत धन्यवाद। प्रोजैक्ट स्वीकार है। जहाँ जहाँ, जैसे जैसे प्रोफैसर साहिब की इच्छा होगी उनकी सहायता आपने करनी है हस्ताक्षर। जसबीर सिंघ आहलूवालिया वाईस चासंलर 21.11.2000.

खुशी खुशी ये ख़बर प्रोफैसर साहिब को देने गया उनके पैर छूने लगा तो इंकार करते हुए गले लगाकर कहा, "सिक्खी में कोई बड़ा या छोटा नहीं है। सभी बराबर हैं।" मैंने कहा, "प्रोफैसर साहिब मुझे ऊँच-नीच में बहुत विश्वास है और सिक्खी में ऊँच-नीच की एक परम्परा है। हाँ जन्म से कोई ऊँच-नीच नहीं होता। गुरमति में अच्छे बुरे कर्मों के कारण ऐसा है। इसमें कोई संदेह नहीं कि आप एक महान् विद्वान् हो और मैं आपका पाठक, श्रोता और विद्यार्थी हूँ। आप मुझे मेरे सम्मान करने के अधिकार से वंचित कैसे

कर सकते हो?"

दो तीन दिन बाद डॉ. शमशेर सिंघ मुझे मिले उन्होंने बताया, "अनुवाद का ये कार्य मिलने से प्रोफैसर साहिब बहुत खुश हैं उनकी इच्छा पूरी हो गई। आज सुबह मुझे जाते हुए आवाज़ देकर बुलाया और कहा, "अनुवाद का ये कार्य मैं इतनी मेहनत से करूँगा कि सिक्ख मुझे शायद 'भाई' की उपाधि दे ही दें। हर तरह की प्रसिद्धि, शौहरत सम्मान प्राप्त कर चुका हूँ परन्तु गुरू खालसा पंथ द्वारा प्रदान किया गया 'भाई; का सम्मान सर्वोत्तम है।"

2009, चण्डीगढ़ में फारसी अध्यापकों ने अन्तर्राष्ट्रीय संगठन में उन्हें बाबा-ए-फारसी की उपाधि से सम्मानित किया था। 7 दिसम्बर 2000 शाम को 6 बजे इस संसार से विदा हो गए। उनका विदायगी का ये दिन सामान्य दिनों जैसा था। सुबह उठे। चाय बनाई। वस्त्र धोए। फिर फ़र्श धोया। अकेले रहे सारी उम्र। बगीचे में काम कर रहे माली को बुलाया और कहा "कुर्सी वहाँ धूप में रख दो।" धूप का आनन्द लेने लगे। दोपहर को भीतर आराम किया और दो बजे फिर  नौकर से कहा उधर वहाँ बैंच पर बैठना है सड़क पर। रौनक देखनी है। बैंच पर बैठे लड़के लड़कियों को नौकर ने उठा दिया और प्रोफैसर साहिब लगभग एक घंटा आते जाते लोगों को देखते रहे। फिर साढे तीन बजे प्रो. राजिन्द्र सिंघ लांबा को बुलाया और कहा"मैं तैयार हो रहा हूँ। आप एम्बुलैंस ले आओ। तबीयत कुछ ठीक नहीं लग रही।"

लांबा साहिब के एम्बुलैंस लाने से पहले बैग में तोलिया, कुर्ता, पजामा, कटोरी, गिलास रखकर तैयार खड़े थे। एम्बुलैंस में बैठते समय कहा, "डॉक्टर को दिखाने के बाद, अस्पताल से आजाद नगर में मेरी भतीजी रहती है, वहाँ छोड़ देना।" ऐसा ही हुआ। अस्पताल में डॉक्टर ने कहा, दोबारा फिर किसी दिन आकर चैकअप करवा जाना, अभी ठीक हैं। आज़ाद नगर पहुँचकर दूध पीया। चारपाई पर लेट गए और  शाम 6 बजे आराम से अनन्त शांति में समा गए। उफ तक नहीं की। थोड़ी भी तकलीफ नहीं हुई। मैंने किसी ब्रह्मज्ञानी के दर्शन नहीं किए। प्रोफैसर गुलवंत सिंघ से कैसे भिन्न होगा कोई ब्रह्मज्ञानी?

उनके बारे बहुत कुछ लिखा जा सकता है किन्तु आज यादों के चित्रपट पर कुछ ही दृश्य अंकित हुए हैं। गरीब श्रमिक रामगढ़िया परिवार में 13 जुलाई 1920 ई. में दौलतपुरा गाँव, तहसील जीरा में जन्म हुआ। जीरे में ही दसवीं पास की। तीसरी कक्षा में पढ़ते थे जब अमृत छकने के लिए तैयार हो गए। हुक्मनामा लिया गया तो 'ग' वर्ण निकला। ग्रन्थी साहिब ने कहायदि 'क' वर्ण होता तो कुलवंत सिंघ नाम रख देते। अब क्या रखें? छोटे से बालक ने कहा जी गुलवंत सिंघ रख दो। गुलवंत सिंघ नाम रखा गया। बताते थे कि जापु साहिब, अकाल उस्तत और अनेक बाणियों में दसम पातशाह ने भाषा विज्ञान और व्याकरण से सम्बन्धित रोचक तजुर्बे किए हैं। उन्होंने उपसर्ग फारसी और अरबी के शब्दों के साथ प्रत्यय संस्कृत के और अनेक उपसर्ग संस्कृत के साथ अरबी फारसी के प्रत्ययों का प्रयोग करके जो समास बनाए वह प्रथम प्रयोग था। उनसे पहले भाषाओं का ऐसा खेल किसी ने नहीं खेला था। इसी प्रकार गुलवंत सिंघ नाम है। गुल

उपसर्ग फारसी का शब्द है, वंत प्रत्यय संस्कृत का।

एम.ए फारसी सरकारी कॉलेज लाहौर से की परन्तु स्कूल की एक घटना उनकी स्मृति में सदैव कायम रही। नौंवी में पढ़ते थे कि स्कूल के निरीक्षण हेतु इंस्पैक्टर आया। गुलवंत सिंघ के सिर पर खद्दर का परना, खद्दर का कुर्ता, खद्दर का कछहरा और मिट्टी से लथपथ नंगी टांगें। घर से स्कूल तक पैदल आना जाना पड़ता था। देखकर इंस्पैक्टर ने कहा मास्टर जी, ऐसे लोगों को स्कूल में क्यों दाखिल करते हो? मास्टर जी ने कहा जी जैसे भी मिलते हैं उन्हें दाखिल करना पड़ता है। परन्तु इससे कुछ पूछ कर तो देखो। इंस्पैक्टर ने फारसी, अंग्रेज़ी, गणित जो भी प्रश्न पूछे, गुलवंत ने सही उत्तर दिया। एक भी उत्तर गलत नहीं था। तब इंस्पैक्टर ने कहा, “विद्यार्थी नहीं, इस जैसे तो अध्यापक होने चाहिए।”

फारसी में 67 प्रतिशत अंक लेकर गोल्ड मैडल तो जीता ही, अपने से पहले एम.एम का रिकार्ड भी तोड़ा। खालसा कॉलेज अमृतसर में फारसी लैक्चरार की खाली पदवी की इंटरव्यू पर गए। प्रिंसीपल डॉ. भाई जोध सिंघ थे। गुलवंत सिंघ ने एम.ए फारसी में अपनी शानदार प्राप्ति का जिक्र किया। प्रिंसीपल ने कहा बहुत मिल जाएँगे भाषाओं के गोल्ड-मैडलिस्ट। हमें तो सिक्ख चाहिए। सिक्खी के बारें में बता। जो प्रश्न पूछा उत्तर दिए। फिर उन बाणियों के नाम पूछे जो मौखिक याद थीं। सुनाईं तो प्रिंसीपल ने पूछाबाणियाँ कब याद कीं? उत्तर दिया “पता नहीं। माता-पिता जी पाठ करते थे। बाबा जी पाठ करते थे। पड़दादा जी पाठ करते थे। पता नहीं कब याद हो गईं? फारसी भाषा के बारे में एक भी प्रश्न नहीं किया और लैक्चरार इन पर्शियन नियुक्त हो गए।

प्रोफैसर साहिब मुझसे पहले उस पीढ़ी के विद्वान् थे जिस पीढ़ी के प्राण विद्या में थे। मेरी पीढ़ी क्रोधित और अभिमानी है। क्रोध गुलवंत सिंघ जी भी करते थे, किन्तु उन्हें तो क्रोध करने का हक था। उन्हें देखकर मैं अकसर अपने क्रोध और अहंकार को ये सोचकर काबू में करता हूँ कि मैंने अभी वो कमाई करनी है जिसको पा लेने के बाद क्रोध करने का हक होता है। अभी मुझे अहंकार करने का अधिकार नहीं है।

उनके साथ चलने फिरने से अपने पर विश्वास बना रहता था। इस बात का अहसास होता कि अरबी, फारसी, संस्कृत, अंग्रेज़ी साहित्य या इस्लाम से सम्बन्धित कोई भी अकादमिक समस्या या उलझन आई तो प्रोफैसर गुलवंत सिंघ यहीं हैं। पूछ लेंगे। बेशक महीने महीने कोई बात न होती, तो भी प्रो. गुलवंत सिंघ हैं यहाँ, चिन्ता नहीं। साफ मन थे इस कारण बेलिहाज़ थे। एक दिन डॉ. केहर सिंघ अपने कुछ मित्रों के साथ खड़े थे कि प्रोफैसर साहिब आ गए। खुशी से केहर सिंघ (पूर्व चेयरमेन पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड) ने परिचय करवाते हुए कहा “मित्रो मिलिए प्रोफैसर गुलवंत सिंघ जी से। ये मेरे गाँव दौलतपुर के हैं।” प्रोफैसर साहिब ने कहा “केहर सिंघ के गाँव का हूँ मैं? इस रिफयूजी केहर सिंघ के गाँव का है ये गुलवंत सिंघ?” वास्तव में गुलवंत सिंघ का ये जद्दी गाँव था जबकि केहर सिंघ देश विभाजन के समय यहाँ शरणार्थी रूप में आकर रहने लगे। केहर

सिंघ ने क्षमा मांगते हुए कहा“सही है भाइयो, मैं प्रो. गुलवत सिंघ के गाँव का हूँ।”

एक दिन मैं कहीं जा रहा था, इशारे से बुलाया और कहा “दिल्ली से ये पत्र आया है किसी मित्र का। पढ़ो। जवाब लिख दिया है, उसे भी पढ़ो।” दिल्ली निवासी किसी सिक्ख ने पूछा था कि दसम ग्रन्थ में वर्णित सारी बाणी दसम पातशाह की है? कुछ बाणियाँ पढ़ने के बाद ऐसा लगता है जैसे गुरू द्वारा रचित नहीं हैं। प्रोफैसर साहिब ने उत्तर में लिखा था शताब्दियों से होता आ रहा है कि गुरू जी की बाणी का पाठ करके सिक्ख लाभ प्राप्त करते रहें हैं। आपके पत्र से पता चला है कि गुरू जी ने सिक्खों की पसंद अनुसार बाणी की रचना नहीं की। गुरू महाराज जी को सिक्खों की पसंद या नापसंद का कुछ ध्यान रखना चाहिए था। वे अपनी मन मर्ज़ी करते गए भाई साहिब।

जब बोलते, जिस भाषा में भी बोलते, फौलादी शब्दों की वर्षा होती। एक भाषा का शब्द दूसरी में दखल नहीं दे सकता था। फारसी, संस्कृत और अंग्रेजी तीनों भाषाएँ तीव्र गति से प्रवाहित होती थीं। कोई कोई कामल उस्ताद ऐसा होता है जो गायन के समय राग की शुद्धता को कायम रखते हुए किसी अन्य सुर का मिश्रण उसमें न करे। ऐसे लासानी उस्ताद की छाया का सुख हमने लम्बे समय तक प्राप्त किया।

कभी कभी ऐसे प्रश्न अचानक ही कर देते लंदन का बरसिंघम पैलेस कभी देखा है? तस्वीर तो देखी होगी? इस महल का डिज़ाईन आपको पता है एक सरदार ने बनाया था? जब बर्तानिया समस्त दुनिया पर शासन करता था, तब एक सिक्ख का डिज़ाईन पसंद किया गया था। कौन था वह सिक्ख और कहाँ का रहने वाला था? आज इतना ही बताऊँगा फगवाड़ा का था वो। किसी और दिन मिलते, बताते, उसका नाम राम सिंघ था।

एक विद्वान् की रचना में अपने लेखन के कुछ अंश देखे। जब वह विद्वान् सज्जन मिले तो प्रो. साहिब ने कहा जो आप लिखते हो और जो मैं लिखता हूँ, वह वाक्य है और वाक्यों में वर्णित सभी शब्द कोषों में उपलब्ध है, आपके भी और मेरे द्वारा प्रयुक्त शब्द सभी के सभी। जो कोषों में उपलब्ध नहीं है वही है शब्दों की तरतीब। शब्दों की वाक्यों में वर्णित तरतीब मेरी अलग है आपकी अलग। किन्तु आपकी रचना में वर्णित कुछ वाक्यों के शब्दों की तरतीब बिल्कुल वैसी कैसे है और क्यों है जैसी मेरी वाक्यों में है?

जिस फ्लैट में सबसे नीचे रहते थे उसकी ऊपरी मंजिल में रहने वाले अध्यापक ने मुडेंर पर गमलों की पंक्ति बना रखी थी। एक बच्चा पत्ता तोड़ने लगा तो गमला नीचे उस स्थान पर समीप गिरा जहाँ वे कुर्सी पर बैठे पढ़ रहे थे। ऊँची आवाज़ में ऊपर की तरफ मुँह करके कहा शोक सभा करने की क्या बहुत जल्दी है आपको?

इसी तरह एक दिन ऊपरी मंजिल के अध्यापक के रूम-कूलर में से पानी अधिक होने के कारण नीचे गिरने लगा तो प्रो. साहिब ने कहा, “अपने घर में क्या छतरी लेकर घूमना पड़ेगा?”

शब्दों के उच्चारण प्रति अत्यधिक सजग थे। दिल्ली जाने वाली जिस बस की प्रतीक्षा में सुबह जल्दी पटियाला बस स्टैंड पहुँच गए वह बस पहले आधा घंटा... फिर एक घंटा देरी से न आई तो प्रो. साहिब ने कहा "वापस जाना चाहिए अब तो। क्या पता बस आएगी भी या नहीं।" एक युवक ने कहा "प्रो. साहिब वैटर यही होगा कि कुछ देर बेट कर लें।" सुनकर एकदम गुस्से से कहा कुछ इलाकों के लोग ऐसे है जो, व या ब ध्वनि का उच्चारण नहीं कर सकते। इसका कारण पारिवारिक परम्परा भी हो सकता है और स्थान भी इसे प्रभावित करता हे। किन्तु लड़के तेरे वाक्य में मैंने देख लिया है कि तुझे ऐसी कोई समस्या नहीं है। तू व और ब वर्ण का सही उच्चारण कर सकता है किन्तु गलत जगह पर क्यों कर रहा है, वह भी मेरे सामने? मैं दूसरों को माफ़ कर सकता हूँ किन्तु तुझे नहीं करूँगा। तेरी गलती क्षमा करने के योग्य नहीं है।

मैंने उन्हें निवेदन करते हुए लिखा कि एम.ए के विद्यार्थियों के लिए इस्लाम, क़ुरान और सूफ़ीमत पर तीन लेख लिख दें। मान गए। दो महीने, चार महीने, छह महीने, याद करवाता रहा किन्तु उत्तर मिलता "लिख रहा हूँ। दे दूंगा।" सैशन पूरा हो गया। मई 1990 का महीना था। मैंने फिर से कहा जी लेख लिखने थे आपने? कहा नहीं लिखूंगा। याद करवाने की आवश्यकता नहीं। नहीं लिखूंगा।" मैंने कहा, "जी हमसे कोई गुस्ताखी हो गई है क्या?" कहा"नहीं। कोई और बात है। पत्र आया है यूनिवर्सिटी का मेरे पास कि जिसमें रह रहे हो उस फ्लैट को खाली करो। नियमानुसार हम इसमें रह नहीं सकते। पन्नू साहिब उम्र अधिक हो गई है मेरी। अकेला हूँ। मेरा कोई ठिकाना नहीं। जब से ये पत्र मिला है रेखाएँ खींच रहा हूँ। नक्शे बना रहा हूँ ... कहाँ रहूंगा, कैसे रहूंगा, किसके पास रहूंगा, कब तक रहूंगा....। इन नक्शों को मिटाकर फिर से नए नक्शे बनाता हूँ उन्हें मिटा देता हूँ। आपके साथ बात करने का मेरा ये अभिप्राय नहीं है कि मेरी मुश्किलों का आप कोई समाधान करें। यदि आज गर्मी है तो इतना तो मुझे हक है  कह सकूं कि मुझे गर्मी लग रही है। आपसे गर्मी दूर करने का उपाय तो नहीं मांगा। पिछले समय में भी देखा जाए तो मई जून के महीने में बर्फ कब पड़ी थी।"

मैंने उसी दिन वाईस-चांसलर को ख़त लिखकर निवेदन किया कि प्रो. साहिब को सारी उम्र के लिए रिहायश दी जाए। अपने इस ख़त के अंत में ये पंक्तियाँ लिखीं वाईस चांसलर साहिब, प्रो. गुलवंत सिंघ जी को सारी उम्र के लिए मकान देने की सिफारिश से मेरा अभिप्राय ये बिल्कुल नहीं है ये विश्वविद्यालय अपाहिजों, निराश्रयों, बीमारों, लाचारों और वृद्धों को आश्रय देने वाला कोई अनाथाश्रम है। मेरा कहने का मनोरथ ये है कि प्रो. गुलवंत सिंघ जैसे अध्यापक की अनुपस्थिति में ये विश्वविद्यालय अनाथ हो जाएगा।" उनको हमेशा के लिए फ्लैट मिल गया।

उक्त बातें लिखने का अर्थ ये नहीं लेना कि मैं किसी को कोठी या प्रॉजैक्ट दिलवा सकता हूँ। ये तो प्रो. गुलवंत सिंघ साहिब ही ऐसे थे कि उनके विद्यार्थी से लेकर वाईस-चासंलर तक स्वयं उनका काम करने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं।

मुझे पंजाबी विश्वविद्यालय पर गर्व है कि यहाँ प्रो. गुलवंत सिंघ को बहुत सम्मान मिला। इस विश्वविद्यालय में घूमते, टहलते, छेड़छाड़ करते और करवाते, यहाँ के वातावरण को सुगन्धित करते हुए वे अंतिम समय तक यहीं रहे। उनकी अंतिम इच्छा, गुरू महाराज का अनुवाद फारसी में करने का प्रोजैक्ट मिले, पूरी हुई। प्रॉजैक्ट नहीं पूरा हुआ तो क्या? सभी को पता था कि प्रो. साहिब लम्बे समय तक हमारे साथ नहीं रहेंगे।
सम्माननीय रागी बुजुर्ग भाई बलबीर सिंघ बहुत ही ऊँचे किन्तु मधुर स्वरों में दसमपातशाह जी की बाणी का कीर्तन करते हैं। डॉक्टर ने उन्हें कहा कि आपका स्वास्थ्य इस बात की आज्ञा नहीं देता कि आप उच्च स्वर में गायन करें।

भाई बलबीर सिंघ ने कहाइस आदत को मैं हटा नहीं सकता। मुझे किसी सलाह की आवश्यकता नहीं। ये अधिक अच्छा न होगा कि गाते गाते ही मैं दसमेश पिता के दरबार में पहुँच जाऊँ? क्या पता ऊपर का सुर ऊपर ही रह जाए?" इतना कहकर संगत से कहाजैकारा बुलाओ। संगत ने जैकारा नहीं बुलाया।

इसी रास्ते पर प्रो. गुलवंत चलते रहे। दलीप कौर टिवाणा ने ठीक ही कहा उनको आवाज़ें नहीं देनी पड़ीं। ईश्वर का पहला निमंत्रण मिलते ही खुशी खुशी, आराम से चल पड़े।

जब उनका विवाह हुआ तो पहली शाम को अनुभव किया कि ये लड़की यहाँ मेरे घर में आकर खुश नहीं है। उससे पूछा तो लड़की ने कहा, मेरी इच्छा यहाँ आने की नहीं थी। किसी दूसरे लड़के से विवाह करवाना चाहती थी। प्रो. साहिब इस नवविवाहिता लड़की को, दहेज के सामान सहित, वहाँ छोड़ आए जहाँ वह जाना चाहती थी। दोबारा उन्होंने विवाह नहीं करवाया। एक अविवाहित व्यक्ति के बारें में अफवाहें फैलाना बहुत आसान काम है किन्तु ये सरल काम कोई नहीं कर सका।

उनकी अंतिम अरदास के समय 17 दिसम्बर 2000 को ग्रन्थी सिंघ ने जब लावां का पाठ किया तो कोई आँख ऐसी नहीं थी जो सूखी हो। अंतिम अरदास के समय मैंने पहले कभी लावां* का पाठ नहीं सुना था किन्तु ऐसे संन्यासी के आनन्दकारज ऐसे ही होते हैं आखिर।

प्रिय प्रो.गुलवंत सिंघ, आपने कहा था मई जून के महीने में कभी बर्फ नहीं पड़ी। हमने उस समय दिसम्बर के महीने में लू चलती देखी, जब श्मशानघाट में आपकी चिता सजा रहे थे। मानो जेठ आषाढ़ के मास में बर्फ पड़ सकती है और पोह माघ के मास में लू झुलसा सकती हैं। गुरबाणी में ऐसे विवरण हैं कि कुदरत की शक्तियाँ अपना स्वभाव बदल लेती हैं। ऐसा परिवर्तन देखकर हैरानी नहीं होती।

## सरदार कपूर सिंह

कपूर सिंघ आई.सी.एस, जिसने पच्चीस वर्ष तक अकाली दल को प्रभावित किया, स्वयं में दृष्टान्त था। एक अन्य विद्वान् ने उनके मार्ग पर चलने का प्रयास किया परन्तु शीघ्र ही छाया में बैठ गया। मैंने लिखा है, उसने अकाली दल को प्रभावित किया, अकाली दल को चलाया नहीं। ये भी उसने नहीं किया कि यदि पार्टी प्रधान, शिरोमणि कमेटी प्रधान या अकाली मुख्य मन्त्री के साथ उसका सुर नहीं मिला, जो कभी भी नहीं मिला, तो कोई अलग अकाली दल बना लिया हो। अकाली दल ने उसे एसैम्बली की टिकट दी और उसे संसद में भी भेजा। किन्तु इतना सब कुछ होते हुए भी वह बड़े से बड़े अकाली नेता, गवर्नर हो या मुख्य मन्त्री, झिड़क देता था और उसके सामने नेता ऊँची आवाज़ में बात नहीं करते थे ऐसा इस कारण था वह विद्वान् होने के साथ साथ ईमानदार भी था। जत्थेदार गुरचरण सिंघ टौहड़ा, सरदार प्रकाश सिंघ बादल, सरदार सुरजीत सिंघ बरनाला जो बड़े नेता थे उन्होंने उनके कड़वें शब्दों को सहनशीलता से सुना। अनेक बार मैंने उन्हें गरजते हुए देखा परन्तु सामने

बैठे, खड़े लोग यही समझते कि ये गर्जना ठण्डे पानी की बूंदे हैं जो तृप्ति देने वाली हैं। कुछ समय बाद यही होता।

सेमिनारों या कॉनफ्रैंसों में उससे मिलना होता रहता। 1977-78 दो वर्ष मैं तकरीबन हर रोज़ चण्डीगढ़ उनकी कोठी जाता। शाम को 6 से 8 बजे तक चाय पीते और सैर करते। कोई कोठी में मिलने आ रहा है, कोई मिलकर जा रहा है तो परछाई की तरह मैं उनके साथ-साथ होता। कभी धोबी न आता तो कुर्ता पजामा इस्तरी कर देता। आए हुए मेहमानों को चाय पानी पिलाता, उनसे कुछ दूरी पर बैठकर बातें सुनता। कामरेड आते, कांग्रेसी आते, दूर से समीप से, देश-विदेश से विद्वान् आते और वह जाते समय सरदार कपूर सिंघ से कुछ लेकर जाते या नहीं, पता नहीं, किन्तु मुझे बहुत कुछ मिलता।

मैं पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ के होस्टल में रहकर पीएच.डी कर रहा था। एक दिन बैठे बैठे वैसे ही मन में ये वहम उत्पन्न हो गया कि कभी सरदार कपूर सिंघ मुझे अपने घर आने जाने के लिए मना तो नहीं कर देंगे? तब मैंने उन्हें एक पत्र लिखा, बेशक वह घर में था, बंद लिफाफा कोठी में फेंककर आ गया। उस पत्र में लिखा था, "सरदार साहिब आपके पास बहुत बड़े बड़े लोग आते हैं, काम के लिए आते हैं, नौकरियाँ लेने के लिए आते हैं, आप सहायता करते हो। मैं वायदा करता हूँ कि नौकरी लेने के लिए आपके पास नहीं आऊँगा। मेरी इच्छा केवल सिक्खी को जानने की हैअन्य कोई अभिलाषा नहीं। मैंने गोर्की की सभी रचनाएँ पढ़ी हैं। टॉल्सतीई के घर में वह नौकर की तरह उसकी सेवा करते हुए उसके आगे पीछे घूमता रहता और अपनी आत्मकथा में वह इन दिनों की बादशाही बारे वह गर्व से लिखता है कि मैंने उस महात्मा से बातें कीं, डांट भी मिली। मैं गोर्की नहीं हूँ। मुझे अदन के बाग से कभी बाहर तो नहीं निकालोगे? ज्ञान के वृक्ष से यदि मैं सेब तोड़कर खा लूं, तो भगा तो नहीं दोगे ईश्वर की तरह?"

अगले दिन सुबह 8 बजे होस्टल के कमरे के दरवाजे पर दस्तक हुई तो मैंने स्टडी टेबल से उठकर दरवाजा खोला। कपूर सिंघ खड़े थे। नीली जीनज़ की पैंट, नीली जीनज़ की जैकट और नीली पगड़ी। मैंने उसके पांव छुए। वह भीतर आया, छड़ी एक तरफ रखकर चारपाई पर बैठ गया और कहा, "ये पत्र क्यों लिखा है तुमने?"

मैंने कहा जी आप बड़े लोगों को भगा देते हो। मेरी तो कुछ भी ताकत नहीं। मैं तो विद्यार्थी हूँ केवल। मेरे साथ कब क्या घटित हो जाए कुछ पता नहीं।

कहा मैं तेरी उम्र में से निकल चुका हूँ। ये चढ़ती जवानी की उम्र, कितनी निष्कपट, ईमानदार होती है और कितनी आत्मविश्वासी, मुझे पता है। किन्तु तू अभी मेरी उम्र में से नहीं गुज़रा। जब मेरे जितनी तेरी उम्र होगी तब तुझे पता चलेगा कि बूढ़े कितने बेईमान और विद्वान् कितने जल्लाद होते हैं। तुमने कभी ऐसा देखा है कि मैंने जवानों का कभी अपमान किया हो? कभी कभी किसी बात पर तुझे या तेरे किसी मित्र को डांट देता हूँ तो वह पिता द्वारा अपने बेटे को समझाने वाली झिड़क होती है। तू तुरंत समझ जाता हैं। वृद्ध और विद्वान् डांट खा लेते हैं किन्तु बात समझने के लिए तैयार नहीं होते क्योंकि बेईमान हैं। सिक्ख युवक मेरा मूल्यवान स्वप्न है। तू निरंतर पढ़। गोर्की के पास पढ़ने के लिए साधन नहीं थे। मेहनत कर और स्वयं पर विश्वास रख तभी उससे आगे निकलेगा। अब कभी कभी मैं तेरे पास आया करूँगा।

कभी सप्ताह बाद कभी दो सप्ताह बाद, कभी होस्टल, कभी विभाग में वह स्वयं ही आ जाता। मैं तो लगातार उसके पास जाता ही रहता था। एक दिन डॉ. हरनाम सिंघ शान के पास बैठा था। मुझे और मेरे सहपाठी भगवान सिंघ को वहीं बुला लिया और कॉफी आ गई। सिक्खों के साथ साथ क्या क्या ज्यादतियाँ हुईं, इस बारे में दोनों बातें करने में मग्न थे और हम दोनों श्रोता सुनने में। शान कहने लगा, “सरदार जी, देखो अन्याय। पंजाबी विश्वविद्यालय  मैंने बनवाया किन्तु जब नियुक्ति का समय आया तो वाईस चांसलर किसी और को नियुक्त किया, रजिस्ट्रार किसी और को। मेरा नाम न निशान। फिर मैंने अमृतसर यूनिवर्सिटी बनवाई। वहाँ भी यही सब कुछ हुआ। वाईस चांसलर कोई और, रजिस्ट्रार कोई और। मेरा कहीं कोई ज़िक्र नहीं। है न अनर्थ सरदार साहिब।

कपूर सिंघ ने कहा, “हिन्दुस्तान को आपने स्वतन्त्र करवाया शान साहिब। राष्ट्रपति कोई और बना, प्रधान मन्त्री कोई और। फिर पंजाब प्रदेश आपने बनवाया। यहाँ भी गवर्नर कोई और मुख्य मन्त्री कोई और। आपके साथ हुए अन्याय का किस, को पता नहीं? इतना कहकर वह ज़ोर से ठहाका मारकर हँसा और हाथ में पकड़े कप में से आधी कॉफी शान के मेज़ पर गिर गई। शान की कॉफी गिरी तो नहीं थी किन्तु पी नहीं सका। हम दोनों श्रोता कॉफी का आनन्द लेते रहे। भगवान सिंघ ने बाहर आते समय धीरे से मेरे कान में कहा, “जब दो योगियों को मन्त्र फेंक कर शाप दे कर आकाश में एक दूसरे से युद्ध करते देखो तो घबराने की आवश्यकता नहीं। थोड़ी सी राख धरती पर गिरेगी, और कुछ नहीं होगा।”

सरदार कपूर सिंघ और तत्काली अकाली जत्थेदारों की राजनीति में ये अन्तर सदैव रहा कि जत्थेदारों का लक्ष्य राज्य की सत्ता प्राप्ति का होता और कपूर सिंघ का लक्ष्य सिक्खी। वह कहता, "राजनीति करना और सत्ता प्राप्त करना कोई पाप नहीं। अच्छी और बड़ी कुर्सियाँ इसी काम के लिए बनी हैं कि इन पर सुशोभित हों। सिक्ख बड़ी से बड़ी पदवियाँ लें किन्तु इस उद्देश्य से कि सिक्खी और सिक्ख का यश बना रहे। कुर्सी प्राप्त होते ही वह सब कुछ भुला देते हैं।

जिन्होंने संसद में दिए गए सरदार कपूर सिंघ के बयान नहीं पढ़े, वे 'साची साखी' पुस्तक पढ़ें। संस्कृत और फारसी के वह कितने बड़े विद्वान् थे, ये बात डॉ. राधाकृष्णन तक मानते थे। उच्च अंग्रेजी शिक्षा तो उन्होंने इंग्लैंड में रहते हुए ही ग्रहण की। दर्शन की एम.ए करने के बाद इंग्लैंड में ही आई.सी.एस की तैयारी की और अंत में सफलता प्राप्त की। एक दिन मैंने पूछा आप जवानी में बहुत मेहनत से पढ़ते थे। आपका बड़ा उद्देश्य क्या था? कहा उद्देश्य तो चाचा को पीटने का था। वह बिना मतलब पिता को तंग करता रहता था। उसे सबक सीखाना ज़रूरी था और सबक डी.सी बनकर ही सिखा सकता था और क्या?

एक दिन शाम को धुंधले से वातावरण में हम लोग पार्क की एक पगडण्डी पर सैर करते हुए घूम रहे थे। सामने से इस पगडण्डी पर एक साईकल सवार आ गया और सरदार जी के साथ उसकी टक्कर होते होते बची क्योंकि मैंने उसका हैंडल पकड़ लिया था। वह क्षमा मांगकर जाने लगा तो सरदार जी ने कहा, "भाई जिस डण्डी पर तू आ रहा है इसे पगडण्डी कहते हैं। पगडण्डी पता है क्यों कहते हैं इसे? पग अर्थात् पैर। वह रास्ता जिसे पैरों ने बनाया हो। घास, फूस, पत्थर आदि को मसलकर पैर डण्डी बनाते हैं। पैर ही बना सकते हैं पगडण्डियाँ। कभी देखा है किसी साईकल ने कोई डण्डी बनाई हो? साईकल इतना अपाहिज है कि स्वयं डण्डी नहीं बना सकता। इसी लिए सरकार ने इसके लिए सड़कें बनाई हैं। तू सड़क पर साईकल चलाया कर। पैदल जाने वालों के लिए ये रास्ता है क्योंकि उन्होंने इसे पैरों से बनाया है। साईकल सवार चला गया, सरदार कहने लगा, "पंजाब सिक्खों की पगडण्डियाँ धरती हैं। 18वीं शताब्दी से लेकर अब तक इन्होंने यहाँ दुःख सहे हैं। नंगे पाँव कांटे तोड़े हैं। पंजाब की धरती सिक्ख पगडण्डियों की सुगन्धियों से सुरभित रहेगी।"

1973 के आनन्दपुर प्रस्ताव की चर्चा अब तक हो रही है। इसका ड्राफ्ट कपूर सिंघ ने तैयार किया था। इस प्रस्ताव पर अकाली दल के उच्च नेताओं में बहुत विचार-विमर्श हुआ किन्तु इसे अंतिम रूप सरदार ने ही दिया। जो विद्वान् इस बात से असहमत हैं वे सरदार की रचना शैली को देखें। निरंकारियो ंको पंथ में बेदखल

करने के प्रस्ताव में और आनन्दपुर रैजोलिऊशन में कपूर सिंघ  की शैली स्पष्ट दिखाई देती है।

ऐमरजैंसी के दिन थे। उसने किसी भाषण में जत्थेदार टौहड़ा पर कुछ नुक्ताचीनी की। समाचारपत्र वालों ने इस खबर को नमक मिर्च लगाकर पेश किया और जत्थेदार टौहड़ा के विरुद्ध असभ्यक् शब्द सरदार के मुँह में डाल दिए। सरदार ने मुझे बुलाया और कहा"टौहड़ा साहिब संगरूर जेल में नज़रबंद हैं। उनसे मिलने जाओ और कहना, मुझे आपको ये बताने के लिए भेजा गया है कि मैं टौहड़ा साहिब की गलत नीतियों का तो विरोधी हूँ किन्तु मेरी शब्दावली वे नहीं है जो छापी गई है। मेरे लिए पंथ बड़ा है, टौहड़ा साहिब उसके पीछे हैं और मेरी तरह पंथ के सेवक हैं। वे जेल में बंद हैं। बाहर इतनी चिन्ताजनक कोई बात नहीं होती। जेल में बंद व्यक्ति को बाहरी लोगों द्वारा बेचैन नहीं करना चाहिए। अभी मिलने जाओ।

जैसे समझाया गया था वैसे ही सारी बात टौहड़ा साहिब को बता दी। खुश होकर कहा, "उन्होंने मेरे लिए बुरे शब्दों का प्रयोग नहीं किया। मेरा सौभाग्य। किन्तु यदि बुरा भी कहेंगें, तो भी मैं उनका सम्मान करूँगा। वे हम सभी से बहुत समझदार है। उनके बिना हम क्या करेंगे? तुम पूछना उनसे, कभी उनके बारे में बोलना तो दूर, बुरा सोचा तक नहीं। मेरी तरफ से फतह बुलाना। तू भी उनका सदैव सम्मान करना।

जब रिहाई हुई, चुनाव हुए, केन्द्र में जनता सरकार और पंजाब में अकाली सरकार बनी तो टौहड़ा साहिब सरदार कपूर सिंघ को उनकी कोठी मिलने गए। कहा आप अमेरिका जाकर सिक्खी का प्रचार करो। यहाँ तो थोड़ा बहुत हम भी कर रहे हैं। वहाँ केवल आप ही ऐसा कर सकते हो। खर्च की चिन्ता मत करना। जितना भी खर्च आएगा, उसका प्रबन्ध मैं करूँगा।

सरदार ने कहा मुझे यहाँ से दफा करके सिक्खों को किसे और कितने में बेचना है? जब तक जीवित रहूंगा पंथ का चौकीदार बनकर पहरा देता रहूंगा। तुम्हारे और तुम्हारे अन्य जत्थेदारों के आसपास ही रहूंगा। क्या पता कब बेच दों, क्या पता किसी के पास गिरवी रख दो?" टौहड़ा साहिब ने हँसकर कहा आप मालिक हो सरदार साहिब। हमारी प्रत्येक बात को चुटकियों में उड़ाने का हक है आपको... केवल आपको।

टौहड़ा साहिब ने खुद से बात बताईमैं मिलने गया तो बातें करते करते अचानक पता नहीं उनके मन में क्या विचार आया। मुझसे कहा तू कामरेड हैं। मैंने पूछा आपको ये संदेह क्यों हुआ? कहा तुने शिरोमणि कमेटी में कामरेडों की

भर्ती की है। दूसरे, तेरी मित्रता हरकिशन सिंघ सुरजीत के साथ है। फिर कैसे न माने तू कामरेड है? मैंने कहा अपने गाँव के किसी ज़रूरतमंद गरीब लड़के को नौकरी पर रख लिया इस उम्मीद से कि सिक्खी को समझ जाएगा तो ठीक होगा। रही बात हरकिशन सिंघ की। कोई सैद्धान्तिक सांझ नहीं। उसके और मेरे पिता मित्र थे, सिंघ थे। ये पारिवारिक मित्रता पुरानी है। सरदार साहिब मैं नितनेमी और लिबास को धारण करता हूँ। कामरेडी नित्यनेमी नहीं होता, बाणी का धारक नहीं होता। सरदार साहिब ने कहा चालाक कामरेड ये सब कुछ कर सकता है।

प्रोफैसर हरबंस सिंघ के पास मैं अकसर जाता और सरदार की टिप्पणियाँ सुनाता एक दिन उन्होंने कहा आप सरदार साहिब को याद करवाना, हमने अनेक बार उनसे प्रार्थना की विश्वकोष के लिए इंदराज लिखें। उत्तर ही नहीं देते। आप जब मिलो तो मेरी तरफ से निवेदन करना। मैंने सरदार जी से ये बात की। उन्होंने कहा इंदराज तो जितने कहेंगे लिख दूंगा परन्तु पटियाला जाओ ताू उनसे पूछना मेरे लेखन की वैटिंग तो नहीं करेंगे? अगली मुलाकात पर मैंने प्रो. साहिब से बात की, उन्होंने कहा वैटिंग तो करूँगा, वैटिंग तो अनिवार्य है। मैंने सरदार साहिब से कहा उन्होंने कहा है कि वो वैटिंग करेंगे। सरदार ने कहा यदि मैं उसके द्वारा बनाए विश्वकोष की वैटिंग करने लगा तब? जब गुरू गोबिन्द सिंघ भवन में जाओ, तो वैदिक सैक्शन पर लिखा वाक्य पढ़ना, लिखा हैट्रूथ इज़ वन, सेजज़ काल इट विध मैनी नेमज़ (सत्य एक है, साधुओं ने इसे अनेक नाम दिए हैं) तुम्हे पता है *टू काल नेमज़* का अर्थ गालियाँ देना होता है। ये है हरबंस सिंघ की अंग्रेज़ी। मेरी अंग्रेज़ी की वैटिंग करेगा!

बी.ए आनर्ज़ (1970-72) में जो पुस्तकें हमें पाठ्यक्रम में लगी हुई थी, उनमे सरदार की *सप्त शृंग* और प्रेम प्रकाश जी की *भारतीय काव्यशास्त्र* अप्रकाशित थीं, पटियाला में किसी लाईब्रेरी में से नहीं मिलीं तो एक विद्यार्थी से लेकर हाथ से उनकी कॉपी की। उस समय फोटोस्टेट की व्यवस्था नहीं थी। मेरे अध्यापक करतार सिंघ ने कहा दो प्रतियाँ नकल करना। एक मुझे चाहिए। दो कागज़ो के बीच कार्बन पेपर रखकर उसे लिखा। *बहु विस्तार, पुन्द्रीक और पराशर प्रश्न* पुस्तकें पढ़ीं। उनकी लिखित, जीवनियाँ अच्छी लगतीं किन्तु इस बात पर गुस्सा आता कि सरदार ने संत फ्रांसीसी पर लेख लिखा है और हिप्पो गैंडे पर भी। मैं सोचता यदि मुझे लिखना आ गया तो मैं हिप्पो गैंडे पर कभी नहीं लिखूंगा।

एक दिन एक नेता आया। चाय पीते हुए कहा मेरा सम्मान नहीं करती हाईकमांड। मैंने कुर्बानी की है, कितने वर्ष तक जेल में रहा पंथ के लिए। किसी को कोई परवाह नहीं।

सरदार ने कहा जत्थेदार कैद तो तुझे काटनी ही थी। इस बात का शुक्रिया अदा कर कि पंथ के नाम लग गई। तू तो भैंसे चोरी करने के दोष में जेल जाता यदि अकाली दल में न होता। मैं जब डी.सी था, जिस इलाके में जाता वहाँ के थाने के एस.च.ओ को कहता कि बसता-बे वालों को बुला। बसता-बे वे सूची होती है जिसे में ऐसे व्यक्तियों का नाम होता है जिनका स्वभाव ही अपराध करना होता है, इलाका निवासियों को बुलाकर एस.एच.ओ से कह देता कि पाँच-पाँच, सात-सात जूते लगाकर छोड़ दो। ये कोई बुरी बात तो नहीं कि तेरा नाम थाने की सूची में नहीं आया, अकाली दल में आ गया? अब ऐश करता रह।"

सरदार ने बताया अनेक वर्ष पहले ब.स. बल (जो बाद में अमृतसर विश्वविद्यालय में वाईस चांसलर नियुक्त हुआ) आया। उसने सिर मुंडवा रखा था। कहा बहुत समय से आपके पास आने की इच्छा थी किन्तु आने से डरता था। सरदार ने पूछा किस बात का डर था तुम्हें? उसने कहा मैंने मुंडन करवा रखा है, आप बुरा मानते हो, इसलिए। सरदार ने कहा जो काम करो यदि वह बुरा है, अनुचित प्रतीत होता है, तो उसे न करो। यदि उसे करने का निर्णय ले रखा है तब डर क्यों रहा है? दोनों काम क्यों करता है। मुंडन भी करवाता है और डरता भी इसलिए कि कहीं दिखने में बुरा न लगूं। मैं भी अनेक बुरे काम करता हूँ किन्तु डरता नहीं। बता क्या काम है?

उसने अपना पीएच.डी का शोध प्रबन्ध देते हुए कहा कृपया इसे देख लेना। मैंने मेहनत की है। देख लेना। सरदार ने शोध प्रबन्ध रख कर उसे एक महीने बाद आने के लिए कहा। महीने बाद जब वह आया उसे बिठाकर कहा मेरी प्रकाशित रचना को जब कोई पढ़ता है तो सहमत हो या असहमत परन्तु यदि मुझे जानता भी न हो तो पाठक इस परिणाम पर पहुँचता है कि किसी सिक्ख द्वारा लिखी हुई चीज़ है... ये सिक्ख दृष्टिकोण पर आधारित रचना है। किन्तु तेरे लेखन को पढ़ते समय तु मुझे कभी हिन्दु प्रतीत होता है, कभी सिक्ख, कभी कांग्रेसी, कभी स्वार्थी, कभी कम्यूनिस्ट। तेरा अपना कोई दृष्टिकोण नहीं। तू है क्या, पता नहीं चलता। स्वयं को स्पष्ट कर। ईमानदार रह।

एक दिन अजीब घटना हुई। स्वर्गवासी डॉ. भगत सिंघ एक नेक नेता होते थे और स्वास्थ्य मन्त्री भी रहे। सरदार साहिब के बड़े प्रशंसक थे ... जब समय मिलता

आ जाते। आकर बैठे ही थे कि सरदार अकालियों को गालियाँ देने लगा। कोई कसर नहीं छोड़ी। अकालियों का वजीर सामने खामोश बैठा हो, पार्टी को गालियाँ मिल रही हों, सुनता रहे ... ये बात भगत सिंघ को बेचैन कर रही थी, इस विषय की जगह कोई दूसरा विषय शुरू हो, अवसर देख रहा था। तभी भगत सिंघ ने कहा जी सभी तो बुरे नहीं होते। मैं भी अकाली हूँ। कोई बेईमानी नहीं की, आपका कहना मानता और सुनता हूँ। सुनते ही सरदार भड़क उठा अच्छा तू भी अकाली हैं? यदि तू भी अकाली है तो ...। फिर तो गाली नहीं छोड़ी जो उसे न दी हो। भगत सिंघ खामोश बैठा सुनता रहा। एक शब्द भी नहीं कहा। तभी चाय आ गई। सरदार ने पूछा भगत सिंघ शक्कर डालनी है या नहीं। भगत सिंघ ने कहा थोड़ी सी डाल दीजिए। कम लेता हूँ।" भगत सिंघ चाय का कप उठाकर पीने लगा। कपूर सिंघ ने कहा भगत सिंघ मैंने गालियाँ कुछ ज्यादा ही दे दीं। तू फिर भी आराम से बैठा चाय पी रहा है। मेरे कहने का बुरा नहीं माना?

भगत सिंघ ने कहा नहीं जी, बुरा किस बात का मानना? कपूर सिंघ ने कहा क्यों गुस्सा नहीं किया तूने मेरी गालियों का? भगत सिंघ ने कहा मैं डॉक्टर हूँ। गालियों पर किस बात का गुस्सा करना, यदि पागल व्यक्ति थप्पड़ मार दे तो भी बुरा नहीं मानता। मेरा काम गुस्सा करना नहीं, पागलों का ईलाज करना है। मैं आपका ईलाज कर सकता हूँ। अभी रोग लाईलाज नहीं हुआ।

कपूर सिंघ ज़ोर से हँसा और भगत सिंघ को गले लगाया। कहने लगा मैं तो क्या, ईमानदार व्यक्ति को कोई भी डरा नहीं सकता।"

गुरमति कॉलेज का प्रो. लाभ सिंघ उसे पटियाला में लैक्चर देने के लिए आमंत्रित करने आया। सरदार ने क्षमा मांगते हुए कहा अब मैं चण्डीगढ़ से कम ही बाहर जाता हूँ। लाभ सिंघ लगातार निवेदन करते रहे। असल में बात ये थी एक बार पहले कॉलेज ने बुलाया था किन्तु टैक्सी का किराया नहीं दिया था इस कारण जाने से इंकार कर रहे थे। लाभ सिंघ न माना तो उससे कहा बचपन में हम बच्चे देर तक कतूरों से खेलते रहते। जब कतूरा थक जाता, और खेलने का उसका मन न होता तो वह चूं चूं करने लगता। हम बच्चे समझ जाते और उसे छोड़ देते। सरदार साहिब मैं बहुत देर से चूं चूं कर रहा हूँ, अब मेरा पीछा छोड़ो।

मुझसे कहा इस बार वैसाखी वाले दिन आनन्दपुर साहिब में लैक्चर देने का आमंत्रण मिला है। जाऊँगा। तुम भी साथ चलना। सफ़र अच्छा रहेगा। साथ ही तुझे एक तमाशा दिखाऊँगा। निमंत्रण मिल गया है, अब लैक्चर क्या है, उसकी रूपरेखा बनाऊँगा। कपड़े इस्तरी, बूट पालिश करवाऊँगा, रिक्शा में बैठकर बस स्टैंड

जाऊँगा, वहाँ से आनन्दपुर साहिब। चढ़ाई अब चढ़ नहीं सकता, रिक्शाचालक से कहूंगा ऊपर ले चल। बगल में हाथ दबाए जत्थेदार मुझे आता देख लेंगे किन्तु इस प्रकार व्यवहार करेंगे जैसे मुझे देखा नहीं। रिक्शाचालक को जब किराया देकर भेज दूंगा तब शीघ्र मेरे पास आएँगे और बुलंद आवाज़ में फतह बुलायेंगे, गले मिलेंगे। पैसों का भुगतान होने के बाद।

सरदार ने भाषण दिया। किसी ने प्रश्न पूछा जी तम्बू में ले जाकर गुरू जी ने पाँच प्यारों के सिर वास्तव में काट दिए थे?

बताया गुरू कलगीधर साहिब जी ने हमसे समस्त जीवन कुछ नहीं छिपाया। इस एक अवसर पर पर्दा करके एक राष्ट्र को जन्म देने का कार्य किया। खालसा की स्थापना के समय उसने तुम सभी से पर्दा किया था। तुम लोगों को पर्दा हटाने का क्या हक है। खबरदार किसी ने ऐसा प्रश्न किया तो? खबरदार किसी ने अनुमान के आधार पर उत्तर देने की कोशिश की। कई वर्ष तक दशमेश पिता और उसके पाँच प्यारे हमारे बीच रहे। किसी ने इस महान घटना के बारें में कभी कोई जिक्र नहीं किया।

1978 के वर्ष अमृतसर में निरंकारियों ने तेरह सिक्खों का कत्ल किया। अकालियों की सरकार थी। सिक्खों में व्यापक रोष था। एक दिन कुछ सिक्ख मिलने आए और कहा सरदार साहिब, शहीदों की रूहें इन अकालियों को बेचैन नहीं करतीं? सरदार ने हँसते हुए कहा अकाली स्वयं प्रेत हैं। यदि रूहें इनके पास जाएँगी तो प्रसन्न होकर कहेंगे आओ नाचें गायें। सरदार जी शहीद रूहें व्यक्तियों को प्रभावित करती है प्रेतों को नहीं।

अमृतसर मंजी साहिब दीवान हॉल में जत्थेदारों के मध्य में बैठे थे। दस बारह ग्रामीण अकालियों ने नेता को कहा जत्थेदार जी हमें अग्रिम कार्यक्रम के बारें में बता दो। जत्थेदार खामोश बैठे रहे। सरदार ने कहा अगला पिछला कार्यक्रम बता तो रखा है आपको। तुम समझते क्यों नहीं? एक ने कहा पता नहीं चला। आप समझा दीजिए कि क्या कार्यक्रम है। सरदार ने कहा कार्यक्रम ये है कि भाई जितने पैसे लेकर आए हो यहाँ रख दो। फिर वापस जाकर भेजते रहो, भेजते रहो।

उसकी इच्छा थी कि उसके नाम के सामने सरदार की जगह सिरदार लिखा जाए। लोग इसी तरह लिखने लगे। पंजाबी भाषा के शब्द सिर के लिए उर्दू में सर शब्द है (सर फरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है) दोनों में कोई अन्तर नहीं सरदार इस शब्द को क्यों नापसंद करता था पता नहीं।

1978 की बात है जब पंजाबी विश्वविद्यालय में Who Killed Guru Teg Bahadar शोध पत्र पढ़ने आया। डॉ. फौजा सिंघ ने गुरू तेग बहादुर साहिब पर लेख लिखा था जिसमें गुलाम हुसैन के कुछ आपत्तिजनक वाक्य हू-ब-हू बिना किसी टिप्पणी के प्रकाशित कर दिए। सिक्खों में रोष व्याप्त हो गया अंततः फौजा सिंघ ने अकाल तख़्त से क्षमा मांगी। फौजा सिंघ के लेख में वर्णित स्रोतों को गलत सिद्ध करने के लिए लेख लिखा था। उस समय वाईस-चांसलर डॉ. इन्द्रजीत कौर थी, जो सरदार का बहुत सम्मान करती थीं। सैनेट हॉल पूरा भरा हुआ था। वाईस-चांसलर ने स्वागतीय भाषण देते हुए कहा सम्माननीय सरदार साहिब जी, आपका स्वागत है पेपर पढ़ने के लिए परन्तु इसमें डॉ. फौजा सिंघ के बारे में कुछ न कहना। वातावरण पहले ही तनावग्रस्त हो चुका है।

सरदार ने कहा मैं कभी प्रोफैसर नहीं रहा, इस कारण कुछ बातों का पता नहीं। विद्वान् भी नहीं हूँ। अब बड़ी समस्या सामने आ खड़ी है कि लेख पढ़ूँ और डॉ. फौजा सिंघ का भी जिक्र न करूँ। ये लेख तो मैंने लिखा ही इसलिए है कि फौजा सिंघ के स्रोतों को रद्द कर सकूं। चलो एक काम करते हैं। मैं बीबी इन्द्रजीत कौर से कहता हूँ कि वह गुरू तेग बहादुर जी पर पाँच मिनट के लिए कुछ कहें किन्तु गुरू तेग बहादुर जी का ज़िक्र न करें। उन्हें देखकर मैं भी कुछ प्रयास करूँगा।

चारों तरफ खामोशी छा गई। वाईस-चांसलर ने अपनी भूल की क्षमा मांगी तब कहीं पेपर पढ़ने के लिए माना नहीं तो वापस चला जाता। डॉ. गण्डा सिंघ ने प्रश्नों की बौछार की, सरदार ने उन्हें सन्तुष्ट किया। विश्व साहित्य हो या दर्शन, धर्म अध्ययन हो या इतिहास, कोई क्षेत्र ऐसा नहीं था जहाँ उनका सिक्का न चलता हो। किसी महफिल में बैठा हुआ वह बेशक कुछ न कहे, उसकी उपस्थिति होने पर गम्भीरता बनी रहती। पेपर का सत्र खत्म हुआ तो कुछ विद्यार्थी और अध्यापक चाय पीने के लिए उसे कॉफी हाऊस ले गए। बातों का सिलसिला शुरू हो गया।

एक अध्यापक ने पूछा आजकल क्या लिख रहे हो सरदार साहिब? सरदार ने कहा क्या लिख रहा हूँ? मैंने क्या लिखना है? मैं कोई प्रोफैसर तो हूँ नहीं। लिखने के लिए अध्ययन आवश्यक है, कागज़ चाहिए, टाईप करवाने के लिए पैसे चाहिएं और फिर उसे प्रकाशित करवाना पड़ता है। छप कर लोगों के सामने आना वीरता है, युद्ध है ये एक, आपको प्रमाणित करना होगा। मैं तो नौकरी से निकाला हुआ व्यक्ति एक गुमनाम उदासी भरा जीवन व्यतीत कर रहा हूँ। आप प्रोफैसर हो। आप बताओ अब तक आपने क्या लिखा है और आगे क्या लिख रहे हो।

सरदार के गुस्से होने का कारण? प्रश्न कर्त्ता अध्यापक की स्वयं कोई रचना प्रकाशित नहीं हुई थी।

गुरू नानक देव जी के गुरूपर्व के अवसर पर सरदार महेन्द्रा कॉलेज में सिक्ख दर्शन पर भाषण देने आया। सेमिनारों में प्रत्येक विद्वान् का उपहास उड़ाना प्रिंसीपल संत सिंघ सेखों का शौक था। कामरेड अध्यापक श्रोताओं में बैठे सेखों से कह रहे थे कि प्रश्न पूछकर सरदार का मज़ाक उड़ाए। सेखों ने कहा मेरा विषय नहीं। ये विषय सरदार का है और इस विषय के बारे में संसार में उससे अधिक कोई नहीं जानता। सरदार का नहीं, आप मेरा अपमान करवाना चाहते हो वास्तव में। मैं नहीं पूछंगा कोई प्रश्न। आप ही पूछ लो। करो हिम्मत।

अकाली राजनीति और सिक्ख सिद्धान्तों की नाव की पतवार को उसने अपने हाथ में पकड़ रखा था। हँसते हुए कहता, "सिक्ख घुड़सवारी करना छोड़ गए हैं। कभी कभी हाथी पर चढ़ जाते हैं। हाथी को महावत चलाता है। घोड़ा मैं अपनी इच्छा से चलाता हूँ। आपकी दिशा आपके हाथ में होनी चाहिए, घोड़े की लगाम आपके अपने हाथ में। अपनी होनी के स्वामी स्वयं बनो। ... अकाली राजनीति को घुड़सवारी सीखनी होगी।"

सरदार ने पंजाब विश्वविद्यालय लाहौर से दर्शन की एम.ए गोल्ड मैडल लेकर उत्तीर्ण की। लंदन से ट्राईपोस की। दर्शन की ये डिग्री उस समय प्रदान की जाती थी जब विद्यार्थी सिद्ध करता था कि उसने लातीनी और यूनानी भाषा की प्रारम्भिक शिक्षा ग्रहण कर ली है। ये भाषाएँ वहाँ से सीखीं, फारसी, संस्कृत और पाली का ज्ञान स्वयं प्राप्त किया। साथ ही साथ आई.सी.एस की तैयारी करते रहे। अपने विद्यार्थी जीवन की घटना सुनाई। परीक्षा से पहले, परम्परा अनुसार नए विद्यार्थियों ने पुराने सीनियर विद्यार्थियों को विदायगी पार्टी पर डिनर देना था। पैसे इक्ट्ठे किए गए। आपस में विचार विमर्श किया कि किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति को आमंत्रित किया जाए? किसे? कपूर सिंघ ने कहा चर्चिल को बुला लेते है। सभी हँसने लगे। प्रध ाान मन्त्री विंसटन एस. चर्चिल के हाथों में बर्तानीय साम्राज्य और समर्थक देशों की कमान थी। वह कैसे आ सकेगा?

कपूर सिंघ ने कहा नहीं आएगा न सही, उसकी इच्छा। मेरे साथ दो लड़के तैयार हो जाएं। प्रार्थना करने में क्या हर्ज? चले गए। मिलने की आज्ञा मिल गई, आने का निवेदन किया। चर्चिल ने पूछा किस शाम को? कपूर सिंघ ने कहा जी जिस शाम आपको फुर्सत हो? सचिव को बुलाया, पूछा कौन सी शाम खाली है। सचिव ने डायरी देखकर तिथि बता दी। स्वीकृति मिल गई। उठकर धन्यवाद करते

हुए कपूर सिंघ ने पूछा यदि आप बुरा न मानो तो विस्की का प्रबन्ध करें? चर्चिल ने कहायदि बकवास सुननी है तो न करना, यदि अकल की बात सुननी है तो फिर विस्की का प्रबन्ध कर दो। न पहले न बाद में कभी, विद्यार्थियों की विदायगी पार्टी में प्रधान मन्त्री आया।

कैलीफोरनिया के सिक्खों ने सरदार गुरतेज सिंघ को भाषण के लिए आमंत्रित किया। टिकट, सवा लाख रूपये सम्मानित राशि और सोने की मूठ वाली कृपाण भेंट करनी थी। पहुँच गया, भाषण के प्रारम्भ में ही कह दिया कि जो व्यक्ति मांस नहीं खाता वह सिक्ख नहीं हो सकता। संगत में बहुत गुस्सा फैल गया, क्षमा याचना के लिए कहा, न माना, मान-सम्मान छोड़कर वापस आना पड़ा। अनेक वर्ष तक मैं सोचता रहा, गुरतेज को ये बात कहने की क्या आवश्यकता थी? पता न चला। जुलाई 2011 में गुरतेज सिंघ एक अमेरीकी विद्वान् के साथ विश्वविद्यालय में आया। वाईस-चांलसर जसपाल सिंघ ने विचार-विमर्श में शामिल होने के लिए मुझे भी संदेश भेजा। भोजन करते समय वाईस-चांसलर साहिब ने सरदार कपूर सिंघ का ज़िक्र शुरू कर दिया, कहने लगेमैंने सरदार को गुरूद्वारा शीशगंज साहिब में लैक्चर हेतु बुलाया। आ गया। अभी बात शुरू भी नहीं हुई थी कि सरदार ने कहा, सिक्खों के लिए मांस खाना बहुत ज़रूरी है। इस बात पर विवाद शुरू हो गया जिसे सरदार ने धैर्यपूर्वक शांत किया।

ये बात सुनकर मेरी समस्या का समाधान हो गया। सरदार के कुछ मुरीद सरदार की हू-ब-हू नकल करते हैं तो फंस जाते हैं। जो गाड़ी सरदार चलाना जानता था उसका स्टेयरिंग किसी दूसरे को नहीं पकड़ना चाहिए।

लोगों ने देखा, एक गायक हारमोनियम का सुर दबाकर, बहुत देर तक गाता रहा। एक श्रोता ने पूछा उस्ताद जी हमनें देखा है कि गायकों की अंगुलियाँ लगातार हारमोनियम की भिन्न भिन्न सुरों पर चलती हैं आपने एक ही सुर को दबाए रखा। उस्ताद ने कहाअनजान लोग अपनी सुर ढूंढते रहते हैं किन्तु मिलती नहीं। मुझे मिल गई है, इसलिए क्यो छोडूं?

मैंने देखा है कि कपूर सिंघ के उपासक उसकी तरह विस्की पीने और गालियाँ देने के शौकीन हैं। लगभग सभी मास्टर तारा सिंघ के नम्बर एक शत्रु हैं। एक मित्र ने बताया मैंने अपने घर में मास्टर तारा सिंघ की तस्वीर लगा रखी थी। जब *साची साखी* पढ़ी, उसी समय उस तस्वीर को फाड़ कर कपूर सिंघ की तस्वीर लगा ली। सुनकर नागसेन ने कहा कपूर सिंघ के विरुद्ध किसी पुस्तक को पढ़ेगा तो सरदार की तस्वीर फाड़ कर फेंक देंगा, तेरा तो यही काम रहेगा।

*साची साखी* में वर्णित तथ्य गलत नहीं है किन्तु जब हमारा सरदार 1947 के नेतृत्व को बेझिझक कभी मूर्ख कहता है कभी बेईमान, तब कुछ ऐसे प्रश्नों का सामना करना पड़ता है जिनके उत्तर ढूंढते कठिनाई आती है। कपूर सिंघ का इस बात से दुःखी होना उचित है कि हिन्दुओं को महात्मा गांधी और पं. जवाहर लाल नेहरू जैसे नेता मिले, मुसलमानों को मुहम्मद अली जिनाह मिले, जो विदेश में पढ़े थे, संसार की राजनीति का ज्ञान था, अपने अधिकारों के प्रति जागरूक थे। इनके मुकाबले में सिक्खों को मिले स्कूल मास्टर, तारा सिंघ जो किसी तरह भी बर्तानिया सरकार से संवाद करने योग्य नहीं था। इस दृष्टि से सरदार अनुसार महाराजा भूपेन्द्र सिंघ की योग्यता प्रशंसनीय रही। उन दिनों में सिक्खों के राजनैतिक निर्देशन करने हेतु जिनाह और गांधी के मुकाबले शिक्षित कोई नेता कपूर सिंघ ही ठहरता है। जब सुभाष चन्द्र बोस जैसे जवान आई.सी.एस को अनदेखा कर राजनीति में कूद रहे थे उस समय हमारा सरदार डिप्टी कमीशनर बन कर जीवन के समस्त सुख भोगता रहा। ब्यूरोकैरट राजनेताओं से सम्बन्ध तो रखते किन्तु गोपनीय। सरदार खुलेआम मास्टर तारा सिंघ का मेज़बान होता। कांग्रेस का पूर्णतः विरोध करता, इसी राजनैतिक विरोध के कारण सरकार ने उसे अपमानित करके नौकरी से हटा दिया। जिस न्यायालय को वह पूर्णतः भ्रष्ट बताता है उसी के समक्ष सुप्रीम कोर्ट तक अपनी नौकरी वापस पाने के लिए अपील पर अपील करता रहा।

महाराजा भूपेन्द्र सिंघ की बौद्धिक योग्यता एवं शिक्षा के विषय में कोई विवाद नहीं, वह स्वयं पंथ की बागडौर संभालना चाहते थे और इसके लिए उन्होंने सेवा सिंघ ठीकरी वाले को जिम्मवारी दी। ठीकरीवाला सरदार महाराजा का सहपाठी था और क्राऊन प्रिंस के सहपाठी वही होते थे जिन्होंने अग्रिम कैबनिट में शामिल होना होता। सरकार में शामिल होने के बाद ठीकरीवाले ने महाराजा को अपने गांव में शानदार दावत दी, इस दावत के लिए क्रॉकरी इंग्लैंड से खरीदी और उस पर पेंटिंग पैरिस से करवाई गई थी। ठीकरीवाला सरदार संतुलित जीवन व्यतीत करने वाला नेक सिक्ख था जिसे महाराजा की अय्याशी पसंद नहीं थी। उसे महाराजा कहता था कि मास्टर तारा सिंघ जैसे गंवार नेता की अपेक्षा सिक्खों को समझाओ यदि अंग्रेज़ों से कुछ लेना है तो मैं दिलवा सकता हूँ। परन्तु ठीकरीवाला टाल-मटोल करता रहा। पंथ ने अमृतसर में विशाल कॉनफ्रैंस का आयोजन किया तो महाराजा ने बा-हुक्म सेवा सिंघ ठीकरीवाला का अमृतसर भेजा कि वह महाराजा की योग्यता पंथ के समक्ष रखे। ठीकरीवाले ने बोलने के लिए समय मांगा, जो कहा उसका संक्षिप्त अभिप्राय ये है
खालसा जी, महाराजा पटियाला ने मुझे जिम्मेवारी सौंपी है कि मैं आप लोगों को समझाऊँ, पंथ की लीडरशिप के योग्य इस समय महाराजा हैं। मैं आपको समझाने

में समर्थ नहीं हूँ क्योंकि अभी तो मुझे स्वयं का इस बात पर विश्वास नहीं हुआ कि महाराजा पंथ की लीडरशिप के लिए योग्य हैं। क्योंकि उनके हुक्म की पालना नहीं हो सकी, इस कारण मुझे उनकी सरकार में रहने का कोई अधिकार नहीं। यहाँ पटियाला सरकार को अपना अस्तीफा देते हुए मैं प्रार्थना करता हूँ कि एक सेवक के रूप में मुझे अपने पंथ में शामिल करे।

जैकारों की गूंज से उसका भव्य स्वागत हुआ। महाराजा पटियाला के हुक्म अनुसार सेवा सिंघ के विरुद्ध ठीकरीवाला थाने में चोरी का मुकद्दमा दर्ज हुआ। एफ. आई.आर अनुसार ठीकरीवाला गाँव के सांझे कुएँ पर पीतल का गड़वा यात्रियों को पानी पिलाने के लिए रखा हुआ था। सेवा सिंघ ने वो गड़वा चुराया है। पटियाला जेल में उस पर निन्दाजनक अत्याचार किए गए जिसके विरोध में अन्न का त्याग कर दिया। लम्बी भूख हड़ताल के बाद उसका देहांत हो गया। केन्द्रीय जेल पटियाला जिस बैरक में उसे बंदी बनाया गया था मैं भी वहीं बंदी रहा। इसे अब वी.आई.पी. बैरक कहते हैं। इसमें सेवा सिंघ ठीकरीवाले की मूर्ति है।

जैसे माझे दुआबे में सिंघ सभा क्रियाशील थी वैसे ही रियासती इलाकों में प्रजामण्डल लहर क्रियाशील थी। प्रजामण्डल के अमृतधारी नित्यनेमी नेताओं पर महाराजा की पुलिस डण्डें बरसाती, गाँव देखता रहता। बचपन में अपने घर के सामने मैंने मास्टर तारा सिंघ को देखा जो सरदार रिद्धा सिंघ की कुशलता पूछने आए थे। सैंकड़ों अकालियों के नारे ऐसे होते पंथ प्यारा पहले है, सरदार रिद्धा सिंघ बाद में। भाव ये कि दो वस्तुएँ प्रेम के योग्य है, सबसे पहले पंथ तत्पश्चात् जिसका नाम लिया जाता है वह व्यक्ति प्रिय होता है। सिक्खों ने महाराजा को रद्द कर दिया।

मास्टर तारा सिंघ के समय में तरणतारण और मोगा, केवल दो तहसीलों को छोड़कर कहीं भी सिक्खों का बहुमत नहीं था। उसके लिए दोनों में से एक का चयन करने की गुंजाईश बची हिन्दुस्तान के साथ रहना है या पाकिस्तान के साथ। उसने जिसे चुना वह किसी प्रकार से गलत नहीं था। मैंने मास्टर के चरित्र के बारे में अंग्रेज स्त्री का विवरण दिया जिसने लिखा रेल गाड़ी में सिक्खों के अद्वितीय लीडर के साथ लम्बे समय की यात्रा करने का अवसर मिला। इस पूरी यात्रा में उसने मेरी तरफ आँख उठाकर तक नहीं देखा। श्रोता की टिप्पणी नपुंसक होगा। मैं उसकी ईमानदारी के बारे में बातें करने लगा, उत्तर मिला मूर्ख व्यक्ति बेईमानी कर ही नहीं सकता। इन श्रोतों के समक्ष बीन बजाने से भैंस थोड़ा सा भी दूध नहीं नहीं देगी।

1977 में मुख्य मन्त्री बादल, सरदार की कोठी में आए, पूछा मोरारजी देसाई ने गुजरात में शराबबंदी कर दी है। मैं पंजाब में कर दूं? सरदार ने कहा बिल्कुल नहीं। शराबबंदी के कारण शराबी शराब पीना छोड़ नहीं देंगे। समीपी राज्यों से स्मगलिंग होगी, खेतों में भट्टियाँ लग जाएँगी। सरकार की आमदन कम होगी किन्तु शराबबंदी का कोई असर नहीं होगा। सिंघ सभा जैसे उच्च चरित्र के व्यक्ति, किसी प्रचार द्वारा समझाने में सफल हो जाएँ तो शराब छोड़ी जा सकती है, सरकारी पाबन्दियों से ये काम सम्भव नहीं।

उक्त सूचना इस कारण दी गई ताकि पाठक एक तरफ प्रवाह में बहकर गलत धारणा न बना लें। कपूर सिंघ की योग्यता निर्विवाद है परन्तु वह न तो इसका प्रयोग स्वयं के लिए कर पाया न पंथ के लिए। यही सिमरनजीत सिंघ और गुरतेज सिंघ के साथ हुआ। खालसा पंथ ने इन्हें रिकार्ड तोड़ वोट और मान-सम्मान दिया जिसे ये कायम न रख पाए।

## मेरा दोस्त ईरान

आज भारतीयों को ईरान सम्बन्धी अधिक जानकारी नहीं है। इसके कुछ कारणों का बोध मुझे उस समय हुआ जब मार्च, अप्रैल और मई 2008, तीन महीनों के लिए मैं बतौर विजिटिंग प्रोफैसर ईरान गया। पहली कठिनाई ये सामने आई कि वहाँ की सरकार ईरान को सैरगाह बनाने के लिए तैयार नहीं। विदेशी लोग ईरानियों से मिले-जुलें ये पसंद नहीं। नाच-गाने पर पाबन्दी है। औरतों को बुर्का पहनने का सरकारी हुक्म मिला हुआ है और इस हुक्म की पालना भी की जाती है। ईरानी स्त्रियाँ मुँह नहीं ढंकतीं, शुक्र है, यानि की इतनी स्वन्तत्रता है। अमेरिका से नफ़रत करते करते उन्होंने अंग्रेज़ी से इतनी नफ़रत की कि आपको अंग्रेज़ी जानने वाले नहीं मिलेंगे। कोई कोई साईनबोर्ड बोर्ड अंग्रेज़ी में है, बाकी सभी फारसी में। यदि आप वर्क परमिट लेकर चले भी गए तो भी सारी उम्र आपको ईरान की नागरिकता नहीं मिलेगी। केवल उसी बच्चे को नागरिकता मिलती है जिसका जन्म ईरान में हुआ हो और 18 वर्ष तक देश से बाहर न गया हो। यदि माता-पिता के साथ एक बार भी देश से बाहर गया हो तो उसे नागरिकता नहीं मिलेगी। उक्त सभी शर्तों को पूरा करने वाले उम्मीदवार की बहुत गहरी खुफिया जांच पड़ताल होती है।

हिन्दुस्तानी माता-पिता का ईरान में जन्म लेने वाला एक बच्चा सभी शर्तों को पूरा करता था, है भी शिया मुसलमान, उसने ईरानी लड़की से विवाह करवाया

किन्तु सरकार की तरफ से विवाह का केस सुलझाने में एक वर्ष लगा। तब तक वे एक साथ नहीं रह सकते थे। अभी विवाह की आज्ञा मिली है, नागरिकता का केस विचाराधीन है। इन परिस्थितियों के कारण ईरान बाकी दुनिया से अलग है। सारे देश में दो गुरुद्वारे हैं, एक तहिरान में दूसरा ज़ाहिदान में। तहिरान में सिक्खों की संख्या लगभग 500 है और ज़ाहिदान में 200 के करीब। हिन्दुओं की संख्या इतनी भी नहीं। किन्तु हिन्दुस्तानी मुसलमानों के बच्चे वहाँ शिक्षा प्राप्ति के लिए जाते हैं जिनमें से अधिकतर कठिन परिस्थितियों के होते हुए भी वहीं ठहर जाते हैं। इन विद्यार्थियों का अध्ययन क्षेत्र इस्लामी शिक्षा और फारसी सीखना होता है। ईरान के लोग हिन्दुस्तानियों को पाकिस्तानियों से अधिक पसंद करते हैं।

इतने कम समय की रिहायश में मैं बहुत कुछ जान गया हूँ, ये दावा सही नहीं। यदि मैं अकेला जाता तो मेरी जानकारी और भी सीमित रह जाती। मेरी पत्नी मेरे साथ थी इस कारण महिलाओं, लड़कियों आदि का आना जाना लगा रहता। जिसने ईरानी स्त्रियों को नहीं देखा उसे नहीं पता सुन्दरता क्या होती है। तीखे नैन नक्श, पतली लम्बी, गोरी नहीं, वे गुलाबी थीं। यूरोपियों का गोरा रंग नहीं जंचता। जिस यूरोपीय के अगर तीखे नैन नक्श हों, गुलाबी रंग हो, उसकी पृष्ठभूमि ईरानी खून की है। मैंने पूछा, हमारी पंजाबी कहानियों में अनेक बार कोहकाफ की परियों का वर्णन मिलता है। ये कौन होती हैं? अंसारी ने मुस्काते हुए कहाकाकेशिया की पहाड़ी स्त्रियाँ, और क्या? कोह का अर्थ पत्थर, पहाड़ी और काफ, काकेशिया के लिए। पुराना पैमाना मील की बजाए कोह (कोस) होता था जो लगभग डेढ मील का होता। जैसे हमनें मील-पत्थर गाढ़े हुए है, पहले कोह (पत्थर) हुआ करते थे। गुलाब के शौकीन या जापानी हैं या ईरानी। गुलाब को रोज़ कहते हैं, गुलाब नहीं। मैंने कारण पूछा तो बतायारोज़ फारसी का शब्द है जिसे अंग्रेज़ी ने ग्रहण कर लिया, गुलाब तो फूल का आब हुआ, किसी भी फूल का रस।

जिस शहर में हम ठहरे थे उसका नाम है कुम्म। हमारी मेज़बान संस्था थी सैंटर फॉर रिलीजस स्टडीज़। इस शहर में आठवें इमाम अली रज़ा की बहन हज़रत फातिमा मासूमा ने अपने पवित्र कदम रखे थे। पैगम्बर मुहम्मद के बाद शीआ मुसलमानों के लिए ईमामों का सत्कार है। सुन्नियों और शीओं के अकसर दंगे हो जाते थे, विशेषतः ताजियों के दिनों में। ईमामों की संख्या बारह है, बारह के बारह लोगों का कत्ल हुआ। बीबी फातिमा मासूमा बचते बचाते अपने कारवाँ के साथ चलती हुई जब कुम्म पहुँची तब तक उसके सभी साथी कत्ल हो चुके थे। ये एक छोटा सा गाँव था, गरीबों की बस्ती। फातिमा मासूमा सफ़र के कारण इतना थक चुकी

थी कि एक महीने बाद कमज़ोरी के कारण देहान्त हो गया। जिस स्थान पर उन्हें दफनाया गया उसका नाम हरम है और वह दुनिया की शानदार इमारतों में से एक है। मक्के के बाद ईरानियों के लिए मशहद और कुम्म पवित्र शहर हैं। मशहद में आठवें ईमाम की शहादत हुई, शहादत के लिए फारसी शब्द मशहद है। ये आठवां ईमाम, सातवें ईमाम अली रज़ा का बेटा था और अली रज़ा का परिवार पटियाला ज़िले के समाना शहर में रहता था। उसका ईमामबाड़ा समाना शहर में है। कुम्म, तहिरान से 150 कि.मी. की दूरी पर है। ईरान की संसद तहिरान में है किन्तु सरकार कुम्म में क्रियाशील है क्योंकि शीआ ईरान का हरेक धार्मिक नेता जिसे आयतुल्ला की उपाधि दी जाती है, कुम्म में रहता है और हरम में बैठकर फैसले करता है। ईरान के बादशाह के खिलाफ बगावत की शुरूआत आयतुल्ला खुमीनी ने हरम से ही की।

तहिरान में तीन मंजिली शानदार गुरूद्वारा है। मैंने मुहम्मद रूहानी से पूछा, ईरान में कितने गुरूद्वारे हैं? उसने बताया तीन थे, दूसरा पर्शियन गलफ के समीप अबादान में और तीसरा ज़ाहिदान में। अंग्रेज़ों के समय अबादान में सिक्खों की संख्या अधिक थी, एक सड़क का नाम ही सिक्ख ऐली था। अबादान से सिक्ख तहिरान आ गए जिस कारण गुरूद्वारे की इमारत को अजायबघर बना दिया गया। ज़ाहिदान के गुरूद्वारे का इतिहास एक रौचक घटना का परिणाम है।

पहलवी खानदान में केवल दो बादशाह हुए। पहला रज़ा शाह पहलवी, दूसरा मुहम्मद शाह, उसका बेटा। पहला बादशाह नेक व्यक्ति था। उसने ईरान को आध ुनिक बनाने के लिए प्रत्येक सम्भव प्रयास किया। वर्ष 1940 में वह ज़ाहिदान के दौरे पर गया। ये गाँव पाकिस्तान की तरफ है। इस गाँव का नाम पहले दुज़तिआब था, जिसका अर्थ है पानी-चोर। जब शाह गाँव के समीप से जा रहा था, उसने 6-7 किसानों को खेतों में जाते देखा, जिनके सिर पर दस्तारें थीं और दाढ़ी खुली हुई थीं। शाह अपने घोड़े से उतरा और सलाम करके विनम्रता पूर्वक कहाऐसे रूहानी फकीर मैंने अपने जीवन में पहली बार देखे हैं। किसान चले गए तो दरबारियों ने कहाहजूर ये कोई फकीर नहीं थे। ये तो गंवार किसान हैं, हिन्दुस्तानी, इनका धर्म अलग हैं, ये सिक्ख हैं। बादशाह लोगों की समस्याएँ सुनता रहा, जब जाने का समय हुआ तो कहामैं इन फकीरों का जाने से पहले एक बार फिर से दीदार करना चाहता हूँ। उन्हें बुलाया गया, शाह ने सत्कार करते हुए दोहरायामैं तुम्हारे चेहरों से पहचान गया हूँ कि आप बंदगी करने वाले नेक इंसान हो। सिक्खों ने कहाहजूर सच्ची किरत करते हैं और अल्लाह का नाम सिमरन करते हैं। ये आपकी कैसी सरकार है

कि हमें हमारी इबादतगाह तामीर करने की आज्ञा नहीं? कैसा मुल्क है ये जहाँ एक साथ बंदगी नहीं कर सकते?

बादशाह ने पूछाकितनी ज़मीन चाहिए? किसानों ने कहाएक एकड़। शाह ने कहामैं एक एकड़ ज़मीन दान में देता हूँ। सिक्खों ने कहाहम शाहों के शहंशाह हज़रत बाबा नानक के मुरीद हैं, न हम गरीब हैं, न हमें दान लेने की आदत। हम अपने पैसों से ज़मीन खरीदेंगे, आप आज्ञा तो दो। शाह ने एक एकड़ ज़मीन की कीमत पूछी तो बताया गयाबीस हज़ार तुमान। बादशाह ने कहा, ठीक है, आप बीस हज़ार तुमान ख़जाने में जमा करवा दो, मैं रजिस्ट्री का हुक्म देता हूँ। किन्तु मुझे भी हक है कि मैं इबादतगाह के लिए बीस हज़ार रूपये आपके पैगम्बर को भेंट करूँ। बादशाह ने बीस हज़ार का चैक भेंट किया और कहागाँव का नाम दुज़तिआब सही नहीं है। आज के बाद इस गाँव का नाम ज़ाहिदान (अल्लाह के मुरीद) होगा।

तहिरान के गुरूद्वारे के समीप से मैटरो गुज़रती है और जो स्टेशन गुरूद्वारे के पास है उसका नाम हैदरवाज़ा-ए-दौलत। यहाँ से जो चौड़ी सड़क गुरूद्वारे तक जाती है उसका नाम है सरदार कबीर ऐली। ऐली का अर्थ है रास्ता। मैंने पूछा दरवाज़ा-ए-दौलत तो ठीक है क्योंकि गुरू नानक साहिब से अधिक धनी कोई नहीं, परन्तु भक्त कबीर की बजाए सरदार कबीर नाम कुछ अजीब लगता है। मुझे बताया गया कि ऐसे नाम रखने ज़रूरी थे जो ईरानियों और सिक्खों दोनों को अपने लगें। दस गुरूओं के नाम ईरानियों को याद नहीं होंगे। बाबा फरीद के नाम पर पहले से एक सड़क है। वाणीकार भक्तों के नामों में से कबीर का नाम चुना गया क्योंकि कबीर ईश्वर के 99 नामों में से एक है। संत और भक्त शब्द इस नाम के साथ उचित नहीं लगते क्योंकि ये शब्द फारसी के नहीं हैं। सरदार शब्द सम्माननीय है। वहाँ एस.एस.पी के लिए भी सरदार शब्द है डिप्टी कमिश्नर के लिए भी। मुझसे पूछा जाताआपकी दानिशगाह (यूनिवर्सिटी) का सरदार कौन है? सरदार का मतलब चीफ। गुरूद्वारे में एक सिक्ख औरत मेरे पास आई और कहादेखो भाई, मेरा ये बेटा बीस वर्षीय बेटा केशधारी  है। यहाँ बाहरवीं कक्षा पास करने के बाद दो वर्ष तक फौज में नौकरी करनी आवश्यक है। फौजी अफसर कहते हैं कि केश कटवाकर टोपी पहन। इसने यहीं जन्म लिया,  केशों से प्रेम करता है। मैं फौज के सरदार से मिली थी, मान नहीं रहा। आप मेरी सहायता करो।

मैंने कहाआप ईरानी हो, आपका कहा नहीं मानता तो सरदार मेरी बात क्यों मानेगा? उसने कहाआप दानिश्वर हो। आपका कहना टाल नहीं सकता वह। बिना किसी उम्मीद के पाँच सात सिक्खों सहित मैं सेनापति से मिला, बताया कि

दानिश्वर हिन्दुस्तान हूँ, एक प्रार्थना करनी है। वह गले मिला। बात सुनने के बाद हुक्म दियाये जवान अपने मजहब में कामल रहता हुआ फौज की सर्विस करेगा। हस्ताक्षर।

गुरूद्वारे में भारत की सुप्रीम कोर्ट के रिटायर्ड चीफ जस्टिस कुलदीप सिंघ के भाई कंवलजीत सिंघ से मुलाकात हुई, जो डॉक्टर है। उसकी पत्नी पटियाला के प्रसिद्ध वकील कुलदीप सिंघ साहनी की बहन है। मैंने कहाबीबी मैं भी पटियाला का हूँ, इसलिए तुम मेरी बहन हुई। उसने पूछाआज अपने भाई से ही तो मिलने आई हूँ। मुझे आपके आने की सूचना मिल गई थी। उसने कहाकोई तकलीफ तो नहीं? किसी चीज़ की आवश्यकता है? मेरी पत्नी ने कहाईरान में कहीं तवा नहीं मिला। हमें ईरानी व्यंजन अच्छे नहीं लगते। आधे घंटे में तवा आ गया। ईरानवासी घर में रोटी नहीं बनाते। प्रत्येक गली में नानबाई की दुकान मिलेगी। गज़ गज़ के घेरे की रोटियाँ, तवे की तंदूरी की। किसी ईरानी को गर्म रोटी खाने का शौक नहीं। तीन चार दिनों के वास्ते रोटियाँ खरीद कर ले आए और दाल, सब्ज़ी, मीट के साथ खा लीं। भिन्न भिन्न प्रकार से सलाद, चावल और फल उनकी खुराक में शामिल हैं। दूध, दही और मक्खन अधिक मात्रा में, किन्तु न नमक डालते हैं न मिर्च। जिसे नमक चाहिए वह स्वयं ही डाल लेता किन्तु मिर्च नहीं। कोई खरीदता ही नहीं। सारे कुम्म शहर में हमने मिर्च ढूंढी, एक दुकान मिली उससे एक सप्ताह के लिए खरीद लेते।

तहिरान के बाज़ार में से जा रहे थे कि एक पेंटर का बड़ा शो रूम दिखाई दिया। मुझे देखते ही आर्टिस्ट आया और फोटो खींचने की आज्ञा मांगी। मैंने कहाकिस उद्देश्य के लिए? उसने कहाआप देर तक यहाँ बैठोगे तो नहीं। मैं आपकी तस्वीर को मॉडल मानकर एक पेंटिंग बनाऊँगा। अगली बार जब आप आओगे तो आपके मन में आएगा इसे पचास हज़ार में खरीद लूं किन्तु मैं आपको मुफ्त दूंगा क्योंकि तब तक अनेक पेंटिंगें बिक चुकी होंगी। मेरा हाथ पेंटिंग में बहुत अच्छा है।

पश्चिमी आलोचकों ने ईरानी कलाकारों पर दोष लगाया कि वह नकलची हैं, पुरानी मूर्तियों को देखकर नए, पुरानी जैसी बना बना कर बेच रहे हैं, इसी प्रकार पुरानी पेंटिगों की नकलें बेच रहे हैं। ये दोष निरर्थक है क्योंकि वे आपको बताकर बेचते है कि ये कलाकृति उस अजायबघर में रखी है, उसकी नकल है। पुरानी तस्वीरें जानवरों की खालों पर उकरी हुई हैं, अधिकतर बकरों की खालों पर। खाल का रंग हल्का पीला होता है। वे गेहूँ की बाली चौड़ी करते हैं, जैसे पंजाबने छोटी टोकरियाँ

बनाती हैं। इस समतल बाली को जोड़ जोड़ कर वह पलाई तैयार करते हैं। पेंटिंग का ग्राऊंड बिल्कुल खाल की शक्ल का बन जाता है जिस पर पुरानी तस्वीर की पेंटिंग बनाते हैं। बकरे की खाल पर बनी, 3500 वर्ष पहले की मिस्र की बहादुर महारानी अहमोस की एक पेंटिंग बगदाद के अजायब घर में रखी हुई है, माना जाता है कि ये 2500 वर्ष पुरानी है। इसकी नकल पाँच सौ रूपये में देते हैं। आप देखोगे तो नकल को नकल नहीं कह सकते। ईरानी कहते हैं, जो कलाकृतियाँ अजायबघर में रखी हैं, किसी भी कीमत पर आप उसे अपने घर नहीं ले जा सकते। हम अपनी कला द्वारा बहुत सस्ती आपके घरों में पहुँचा रहे हैं ये कौन सा गुनाह है?

ईरान पर जब सिकन्दर ने विजय प्राप्त की थी उस समय राजधानी शीराज़ होती थी। किन्तु सिकन्दर ने शीराज़ की जगह उसके समीप एक नई राजधानी का निर्माण किया जिसका नाम रखा परसपोलिस। यहाँ उसने शानदार महलों का निर्माण किया जो अब खण्डहर बन चुके हैं। कलाकारों एवं कम्पयूटर विशेषज्ञों की सहायता से ईरान ने सी.डी. तैयार की है-परसपोलिस रिकंस्ट्रक्टिड (नव निर्मित महानगर); सी.डी. चलाने पर खण्डहर दिखाई देते हैं, उदासी भरा संगीत चलता हैफिर धीरे धीरे, पत्थरों के कण जिन्हें हवा ने सदियों से रगड़ रगड कर ज़मीन पर बिखेर दिया था, उड़ उड़ कर स्तम्भों का रूप लेने लगते हैं, धीरे धीरे स्तम्भ एवं दीवारें बनने लगती हैं, फिर छत्तें बनती हैं, अंततः दीवारों और छत्तों पर पुराना महानगर दिखाई देने लगता है। फिर आबाद ईरान की धरती पर यूनानियों की बस्ती दिखाई देती है। सेनाएँ आ रही हैं, जा रही हैं, जज फैसले सुना रहे हैं, युवतियाँ नाच, गा रही हैं, पुराने सुर, पुराना संगीत।

ईरानियों जैसी कला संसार में अन्य कहीं नहीं। पेपर क्लिप भी यहाँ बिना पेंटिंग के नहीं मिलते। प्रत्येक घर के सारे फ़र्श कालीनों से ढके हुए। पहलवी बादशाह का महल हैरान कर देता है। एक दिन में उसे देख नहीं सकते, यदि प्रत्येक वस्तु को ध्यानपूर्वक देखना हो तो कम से कम एक सप्ताह का समय चाहिए। संसार के प्रत्येक देश से मिली सौगातें यहाँ रखी हैं। कौन कौन से दिन, किस किस देश के बारे, क्या क्या निर्णय किए गए और किस किस कमरे इसके बारे जानकारी दी जाती है। लैनिन, स्टालिन, चर्चिल, रूज़वाल्ट, मसोलिनी के साथ विचार-विमर्श करते समय बादशाह की तस्वीरें मुझे याद रहीं क्योंकि ये सभी राजनेता हमारी यादों में बसे हुए हैं। रथ, घोड़ों की सजावट का सामान, जेवर, कालीन देखकर मुझे अपने ड्राईंग रूम का कालीन पुराने रूमाल जैसा प्रतीत हुआ। तीन ईरानी प्रोफैसरों के परिवार मेरे घर

आएँगे, उनके आने से पहले मैं इस कालीन को एक तरफ रख दूंगा। मेरा कालीन सुन्दर है, मँहगा है, ईरानियों को दिखाने के काबिल नहीं।

कालीनों के बड़े शोरूम में जाओ। आपके सामने 15 X18 इंच के नमूनों की एलबम रखेंगे। एलबम में तस्वीरें नहीं, छोटे छोटे असली कालीन हैं। आप नमूने में से चुनकर उसका साईज़ बता दो। सप्ताह बाद आपको अपनी पसंद का कालीन मिल जाएगा या आपके देश भेज देंगे। कालीनों के ये छोटे छोटे नमूने भी बिकते हैं, दो दो सौ का एक एक। मैंने दस नमूने खरीदे, सुन्दर फ्रेम में लगवाकर मित्रों को दे दिए।

प्रोफैसर खलीन गम्बरी ने कहा देश जाने से पहले मासूमा के हरम में से प्रसाद लेकर जाना। किन्तु फिर वह खामोश हो गया। कहाआपके भारतीय मित्र मुहम्मद हबीब को तो भीतर जाने की आज्ञा मिल जाएगी किन्तु आपको नहीं, गैर मुसलमान के प्रवेश पर पाबन्दी है। हाँ आपकी पत्नी जा सकती है। इनके बारे कौन सा पता चलना है। आप न जाएँ, क्योंकि जब आपको रोका जाएगा, बुरा लगेगा, ये अपमान होगा एक शानदार मेहमान का। मैंने कहा मैं प्रत्येक सम्भव प्रयास करूँगा भीतर जाने का। यदि वापस भेज दिया गया तो बुरा नहीं मानूंगा क्योंकि आपकी परम्परा का सम्मान करना मेरा कर्त्तव्य है। खलील की इच्छा के विरुद्ध उसके कहने के बावजूद मैं अपने मित्र और पत्नी सहित भीतर का दरवाज़ा पार करने लगा तो छह फुट लम्बे एक बुजुर्ग ने मेरी बाँह पर फूलों की शाखा का स्पर्श किया, सम्मानपूर्वक अपनी छाती पर हाथ रखकर झुका, फिर फूलों से लदी शाखा से दरवाज़े की तरफ इशारा किया, अर्थ था, बाहर वापस जाओ। इतने सलीके से कोई वापस जाने के लिए भी कह सकता है... मैंने सोचा, अच्छा ही हुआ जो यहाँ आने का निर्णय लिया। ईरानियों की एक दिलकश अदा देख सका। मैं प्रतिदिन बीबी मासूमा के दरबार के पास से गुज़रता क्योंकि मुझे माँ गुजरी याद आती रहती। जैसे हसन हुसैन, वैसे ही साहिबज़ादे। नाम और स्थान बदल बदल कर हीरो हमें दिखाई देते रहते हैं।

सुनहरी मिसरी का प्रसाद! मैंने हीरों जैसी देसी मिसरी तो देखी थी किन्तु यहाँ सुनहरी मिसरी कैसे? अंसारी ने बतायाइसमें केसर मिलाया गया है। केसरी मिसरी केवल ईरान में मिलेगी। सारी दुनिया केसर का जितना उत्पादन करती है, उससे दो गुणा अधिक केसर यहाँ ईरान में मिलता है। प्रत्येक रेस्तरां में केसरी मिसरी के मर्तबान रखे हैं, हुक्म करो, चीनी की जगह मिसरी की चाय चाहिए, मिलेगी। ज़्यादातर सफ़र बस में किया, लोकल भी, दूर भी, प्रत्येक बस ए.सी. है। पीछे का आधा भाग स्त्रियों के लिए आगे का आधा भाग पुरुषों के लिए। आटोमैटिक

खिड़कियाँ अलग अलग। एक अजनबी मुसलमान यात्री मुझसे आगे की सीट पर बैठा था। वह उठा, प्रार्थना की आप मेरी सीट पर आ जाएँ, मैं आपकी सीट पर बैठ जाऊँगा। इससे क्या फर्क पड़ता है? मैंने पूछा। उसने कहाजी, आपकी तरफ पीठ करके नहीं बैठ सकता। मुझे ये बदसलूकी लगती है।

ऐसे वाक्य आम सुनने को मिलतेकुदम किशवर शुमा, वतन शुमा कुजस? (आप कहाँ से आए हो? वतन कौन सा है?) आया शुमा अज़ हिन्दुस्तां आमादि (क्या आप हिन्दुस्तान से आए हो?) आया शुमा रूहानी ए हिन्दुस्तां हसतीत? (क्या आप हिन्दुस्तान के मौलवी हो?) बेशुमा व किशवरेतान दुरूत मी फरिसतम (आपको और आपके देश को सलाम), खुदा शुमा रा खुशनी गहिदार्त (खुदा आपको आपके देश को सुखी रखे)। लड़कियों के समूह नज़रें झुकाकर चलते दिखाई देतें, धीरे धीरे बातें करतीं, चोरी से आपकी तरफ देखेंगी फिर नज़रे झुका लेंगी, जैसे किसी प्रतिष्ठित सरदार की हवेली से औरतें, लड़कियाँ बाहर जाती हों। आँखों में, चाल में, वाणी में ठहराव, संकोच, शर्म और सलीका। मेरी पत्नी कहतीमेरी कोई बेटी नहीं है। एक होनी चाहिए थी, किन्तु इन लड़कियों जैसी। धीरे से कोई कोई समीप से गुज़रते हुए कहता खुश आमदीद ईमामि हिन्दुस्तां, खुश आमदीद। एक व्यक्ति सलाम दुआ करने के बाद मेरे पास खड़ा रहा दो मिनट तक कुछ वाक्य बोलता रहा फिर मेरी दाढ़ी को चूमा और चला गया। मैंने रूहानी से पूछा क्या कह रहा था ये? उसने बताया आपका स्वागत किया, फिर आपके देश की कुशलता मांगी, आपके परिवार को दुआएँ दीं, फिर कहामुझे पक्का विश्वास है, जैसे हमारे ईमामों ने हमारी शान कायम रखी, तू अपने राष्ट्र की शान प्रत्येक स्थिति में कायम रखेगा, तुम्हारी सूरत बिल्कुल हमारे ईमामों जैसी है। तू बड़ी मेहरबानियों का मालिक है।

ये सब जबरदस्ती मुझे महान् बनाने में लगे हैं। पछताएँगे जब देखेंगे कि दावा उचित नहीं था। मिर्ज़ा गालिब ने कहा नहीं था एक मुद्दत चाहिए आह का असर होने के लिए। तब तक कौन जीवित रहेगा?

तहिरान दिखाने के लिए ड्राईवर टैक्सी लेकर आ गया। मैंने रास्ते में उसका नाम पूछा, पच्चीस वर्षीय गुलाबी मुख वाले ड्राईवर ने कहाजी हुसैन। मैंने कहा, ये क्या हो रहा है? जिस किसी लड़के से उसका नाम पूछा उत्तर मिलाहुसैन। उसने हँसते हुए कहासही सुना है आपने। अधिकतर लड़कों के नाम हुसैन और लड़कियों के नाम फातिमा हैं। हम हुसैन और फातिमा (हज़रत अली की बीवी, पैगम्बर मुहम्मद

की बेटी और करबला के शहीद हसन और हुसैन की माँ) के नाम से सभी पागल हो गए हैं।

बातें करते करते मैंने कार की खिड़की से बाहर देखा तो बड़ी झील दिखाई दी, हुसैन को कार रोकने और फोटो खींचने के लिए कहा। उसने कहा नहीं जी ये झील नहीं, ये तो नरक है। ये नमक की ऊपरी सतह है जो पानी की तरह चमक रही है। दलदल है ये, भ्रम से यदि कोई जानवर या व्यक्ति उधर चला जाता है तो समझो हमेशा के लिए गया। बादशाह पहलवी दूसरा अपने शत्रुओं को हैलीकॉप्टर द्वारा इसी नरक में गिरवा देता था। अब पूरी सावधानी से जब हम नमक उखाड़ते हैं तो तो कोई कोई लाश इतनी ताज़ी निकलती है जैसे अभी अभी सोया हो, बस अभी जाग जाएगा। मैंने बीच में रोकते हुए कहा हुसैन तुम्हारी ये बात सही नहीं है क्योंकि नमक में तो लाश गल जाती है। उसने कहा नहीं जी, नमक लाश को खराब होने नहीं देता। हमारे शरीर का सबसे कोमल अंग आँखें हैं। नमकीन आँसू इनकी हिफाजत करते है, गलाते नहीं।

मैंने रूहानी से कहाथोड़ी सी फारसी सिखा दो मुझे भाई। मान लो मैंने कुम्म जाना हो, फारसी में कैसे पूछेंगे कि कुम्म कौन सी बस जाती है? उसने कहा दुनिया के सभी मौलवी कुम्म में जन्म लेते हैं, कुम्म में जाते हैं और कुम्म से आते हैं। जिस बस की तरफ पाँच सात मौलवी जा रहे हों समझो वह बस कुम्म जा रही है। हमारे समीप कुम्म जाने वाली बस रुकी तो मैंने देखा, 40 सवारियों में से 34 मौलवी थे।

रूहानी हँसमुख है। तीन वर्ष पहले मेरे विश्वविद्यालय में आया था, चित्रकार भी है, इसका वर्णन मैं भाई लकशवीर सिंघ के लेख में कर चुका हूँ। उसने मुझे एक ईरानी लतीफा सुनाया। एक मौलवी के पास हर रोज़ एक व्यक्ति जाता था कि मेरे घर में जिन्न का वास है, ताबीज दे दो। मौलवी ने उसे बहुत समझाया ये सब तुम्हारा वहम है, जिन्न, भूत का ख्याल दिमाग में से निकाल दे। किन्तु वह नहीं माना तो एक दिन मौलवी ने चार ताबीज देकर कहा अपने घर के चारों कोनों में ये ताबीज दबा देना। जिन्न नहीं आएगा। उस व्यक्ति ने ऐसे ही किया। जिन्न नहीं आया। यह बताने और शुक्रिया करने के लिए जिन्न अब नहीं आता, वह फिर से मौलवी के घर गया। मौलवी को बताया कि जिन्न ने आना बंद कर दिया है। मौलवी ने कहा इसका मतलब ये है कि तू जिन्न से अधिक खतरनाक हैं। वो चार ताबीज जो मैंने तुम्हें दिए थे, उन जैसे ताबीज मैंने अपने घर के चारों कोनों में दबा

दिए ताकि तू आना बंद कर दे। तेरे घर जिन्न ने आना बंद कर दिया किन्तु तू मेरे घर आने से नहीं रुका।

कुछ मौलवी इतनी देर तक ज़मीन पर सजदा करते रहते हैं कि उनके माथे पर माँस की सख्त गाँठ और दाग पड़ जाता है। इन मौलवियों का सत्कार अधिक होने के कारण कोई कोई मौलवी चम्मच गर्म करके अपने माथे पर लगा लेता है तो उसका भी वही आदर-सत्कार होने लगता है।

हबीब ने गम्बरी से पूछाप्रोफैसर साहिब, आप बादशाह की हुकुमत को सही मानते हो या आज की इसलामी हुकुमत? गम्बरी ने कहा आपका प्रश्न क्योंकि राजनैतिक है, राजनैतिक उत्तर दूंगा। ईरान के एक दल का कहना है पूरी स्वतन्त्रता चाहिए, दूसरा कहता है पूरी इसलामी हुकुमत, तीसरा दल कहतानहीं मि ला-जुला प्रबन्ध होना चाहिए। मैं तीनों से असहमत हूँ। अभी, जबकि स्वयं से भी सहमत नहीं हूँ तो अन्य तीनों से कैसे सहमत हो सकता हूँ?

गम्बरी से मैंने पूछाहिन्दुस्तानी धर्मों के बारे आपका क्या प्रभाव है? उसने कहासभी सामी मजहब नकाबपोश हैं। हिन्दुस्तानी धर्म इनकी अपेक्षा खुलेदिल वाले हैं। एक तो वो घड़ियाँ होती हैं जिनके केवल डायल और सूईयाँ दिखाई देती हैं, एक वो घड़ियाँ हैं जो पारदर्शी हैं, सारी मशीनरी चलती दिखाई देती है। हिन्दुस्तानी अधि िक पारदर्शी हैं।

वह बौद्ध साहित्य पढ़ाता है। मैंने पूछा आपको क्या लगता है बौद्ध मत अन्य सभी से अधिक पारदर्शी है? उसने कहा नहीं, हिन्दु मत अधिक पारदर्शी है। इसमें सर्वोत्तम रूहानी उड़ान से लेकर आदमज़ात की निम्न से निम्न रसातल और बुराई मौजूद है, और ये सब कुछ धर्म का भाग है। धन देवी (लक्ष्मी) की पूजा भी होती है कामुक अंगों की भी।

गम्बरी कहने लगा, छोड़ो ये बातें। थक जाएँगे। तुम्हें ईरान का लोक गीत सुनाता हूँ। उसने जो टप्पे सुनाये उनके अर्थ हैं :

*युवतीः  परदेस जा रहे प्रियतम मेरे लिए क्या लाओगे?*
*युवक : इत्र और चूड़ियाँ, गोरिए इत्र और सुन्दर चूड़ियाँ।*
*युवती : पर सुना है तू तो दारे (डेरीयस) का सिपाही है,*
*तुझसे मेरा क्या सम्बन्ध सैनिक?*
*युवक : न गोरिए न। किसी ने चुगली की है मेरी। मैं तो*
*रूमी और शीराज़ी के देश का बाशिंदा हूँ, मेरा दारे से क्या सम्बन्ध।*

दारा महान् प्रतापी बादशाह था बेशक, ईरानी गोरियों⁄लड़कियों को रूमी और शीराज़ी पसंद हैं। शीराज़ी को लोक गीतों में रूहानियत का घूंघट उठाना वाला युवक कहा जाता है, ज़बानि गायब। गम्बरी हँसमुख व्यक्ति है, उसने हाफ़िज का शेयर सुनायाजिस गली में मेरी महबूबा रहती है, उधर मत जाना। यदि कहीं दिखाई दी, उसकी तरफ देखते देखते चलेगा तो दीवारों से टकराएँगा। सुना कर कहापगड़ियाँ बंध ी होने के कारण सिक्ख बच जाएँगे, बाकी संसार मारा जाएगा सिर में चोटें लगने से।

मिफताह ने बतायाअंग्रेज़ गोरे गोरियां यहाँ आकर ईरान और ईरानियों के बारे लिखी पुस्तकें मांगते हैं। जो पुस्तकें हम उन्हें देते हैं, उन्हें लेकर हँसते हुए कहते हैं ये तो हमने लिखी हैं। जो तुमने लिखा है, वो दो। हमने अंग्रेज़ी में जब कुछ लिखा ही नहीं तो क्या दें?

खुरशीद ने बताया कि साअदी और हाफिज़ को इस बात का कोई अफसोस नहीं कि फारसी में अरबी के शब्द मिल रहे हैं। उनके लिए ख्याल सर्वोत्तम है भाषा नहीं। किन्तु फिरदौसी को अरबी से नफरत है। अपने शाहनामे में उसने अरबों को बहुत गालियाँ दी हैं। शाहनामा-ए-फिरदौसी के दो शेयर सुनो :

बसे रंज बुरदम दर ईं सालिसी।
अज़म जिंदा कर्दम बदीं पारसी।
नमीरम अजीं पस कि मन जिंदा अम।
कि तुखमि सुख़न रा परा कंदा अम।

(इन तीस वर्षों में बहुत कष्ट झेले।
मैंने अपनी फारसी भाषा और अपने देश को जीवित कर दिया।
मरूँगा नहीं अब, क्योंकि फारसी भाषा के बीज
मैंने पूरे ईरान में बिखेर दिए हैं।)

फिरदौस शहर का नाम अब तूस है। फिरदौस का अर्थ है स्वर्ग, पहले तद्भव रूप फिरतूस बना फिर अंत में तूस रह गया। एक बड़ी सड़क पर लगा निर्देशित बोर्ड बता रहा था कि ये रास्ता अर्राक की तरफ जाता है। अंग्रेज़ी में Arrack लिखा पढ़कर मैंने पूछा ईराक के स्पैलिंग गलत क्यों लिखे हैं? मुझे बताया गया कि ये रास्ता ईराक की तरफ नहीं, अर्राक जाता है। अर्राक ईरान का वह सूबा है जहाँ के घोड़े सारे संसार में प्रसिद्ध हैं। लो जी, कमाल हो गया। पुराने पंजाबी ग्रन्थों में अर्राकी घोड़ों का वर्णन है, कहीं कहीं रॉकी भी लिखा जाता है, किन्तु ईराकी नहीं। मैं समझता था कि पंजाबी लोगों ने ईराकी शब्द को बिगाड़ कर अर्राकी

लिख दिया है। मेरे गाँव में कोई घोड़ा खरीद कर लाता तो पूछा जाता अर्राकी कितने का मिला है भाई? घोड़े का स्वामी खुश हो जाता कि पूछने वाला ढीचक टैर को अर्राकी कह रहा है।

कुम्म की ऊँची पहाड़ी पर पैगम्बर खिज़र की दरगाह है। नीचे से ऊपर तक आने जाने में घंटा लगता है। तकरीबन हर शाम हम दरगाह चले जाते। लोग खुशी खुशी मिलते। एक दिन मैंने अपनी पत्नी से कहा कि मैं यहाँ बैठता हूँ तुमने जाना है तो चली जाओ। वह चली गई। मैं बैंच पर बैठा था तब एक औरत मेरे पास आई और पूछा तुरा खानम कुजां असत? (तेरी पत्नी कहाँ चली गई?) मैंने खिज़र दरबार की तरफ अंगुलि उठाकर कहा ऊंजा, ज़िआरति दरबारि खिज़र। फारसी में कहा मेरा ये वाक्य व्याकरण अनुसार गलत है किन्तु इसका अर्थ वहाँ, खिज़र के दरबार की परिक्रमा करने, वह समझ गई। जब वह फिर कुछ कहने लगी तो मैंने कहाफारसी न मी दानम (फारसी मुझे नहीं आतीएक पुरानी फिल्म का गीत मुझे याद था जिसका प्रयोग किया), सुनकर औरत हँसी और कुछ कहकर चली गई। मैंने ईवेज़ी से पूछाक्या कहा है? उसने बताया कह रही थी, अच्छी भली फारसी तो बोल रहा है साफ साफ कहो बात नहीं करनी।

वहीं एक पचास वर्षीय व्यक्ति ने मुझे कहायदि आज्ञा हो तो हसन हुसैन की नाअत सुना दूँ? ये नाअत (प्रशंसा युक्त गीत, कसीदा) मुहम्मद इकबाल की है। उसने इतना सुन्दर गाया कि समझ न आने के बावजूद भी मैं धुनें सुनकर दंग रह गया। मैंने उसे बताया कि उर्दू में लिखित उसके तीन दीवान मैं पढ़ चुका हूँ किन्तु फारसी मुझे नहीं आती। इकबाल ने अच्छा लिखा है फारसी में? उसने कहा अच्छा? उर्दू में इतना समय व्यर्थ गंवाया उस पागल ने? क्या ज़रूरत थी? जब इतनी गज़ब की फारसी नज़्म लिख सकता था, फिर क्यों धक्के खाये उसने? मैंने कहा भाई मेरे जैसे गंवार के लिए लिखकर अच्छा नहीं किया उसने? फिर मैंने पूछा क्या कारोबार है आपका। उसने बताया कि सब्ज़ी बेचने का काम करता है। मैंने कहा कमाल हो गया ये तो। सब्ज़ियाँ बेचने वाला इतना सुन्दर गा सकता है! उसने कहा इन सुरों का अभ्यास सब्ज़ी बेचने वाले बहुत करते हैं, यदि गाने की तरफ ध्यान दें तो आज के गायक छोकरे सब्जियाँ बेचने लगें। समझे? खूब हँसे।

एक दिन सब्ज़ी खरीदते समय मैंने दुकानदार से कहापाँच सात किलो का तरबूज़ दे दो। उसने कहातरबूज़ मेरे पास नहीं है। मैंने बड़े ढेर की तरफ इशारा करके कहा वो रखे तो हैं। उसने कहा आप इन्हें तरबूज़ कहते हों? मैंने कहा और क्या? आप क्या कहते हो? उसने कहातरबूज़ के बारे हम ईरानियों को कुछ

नहीं पता। हम इन्हें हिंदवाणा कहते हैं क्योंकि ये आपके देश हिन्दुस्तान से आया है हमारे पास। देखो, हदवाणे का इतिहास भी सब्ज़ी वाले ने सुनाया।

हमें कुम्भ में गए पन्द्रह दिन हो गए थे कि खुशी का वातावरण बन गया। सर्कुलर आया कि धर्म अध्ययन का ये सैंटर अब यूनिवर्सिटी बन गया है। अगले दिन कॉनफ्रैंस हाल मैं एक विशाल सभा हुई। यूनिवर्सिटी का वाईस-चांसलर तहिरान संसद का डिप्टी स्पीकर भी है। उसका नाम है नवाब अबुल हसन। मुझे, हबीब और मेरी पत्नी को स्टेज पर बिठाकर सम्मान की लहरें चला दीं। सभी ये कह रहे थे हमारे हिन्दुस्तानी भाइयों के पवित्र कदम यहाँ पड़े तो सैंटर, यूनिवर्सिटी बन गया। मैंने वाईस चांसलर से कहा ये ज़्यादती क्यों कर रहे हो? हमने क्या किया है इसके लिए? नवाब साहिब ने कहाऔर क्या करना था आपने? हम पिछले दस वर्षों से कोशिश कर रहे थे किन्तु सरकार मान नहीं रही थी। आप न आते तो ये सर्कुलर आना ही नहीं था। हम आपका अहसान कभी नहीं भूलेंगे। नेक लोगों ने कुछ करना नहीं होता, केवल कदम रखे और अल्लाह ने बिगड़े काम बना दिए।

मुझे भी दो शब्द कहने के लिए कहा। अनुवादक साथ होता था, मुहम्मद रूहानी। मैंने बिस्मिल्लाह का रट्टा लगा रखा था, सही बिस्मल्लाह का उच्चारण किया। एक विद्यार्थी ने खड़े होकर कहा दानिश्वरि हिन्दुस्तान, ये तो हमारे बिस्मल्लाह का उच्चारण किया आपने। हम आपका बिस्मिल्लाह सुनना और उसके अर्थ जानना चाहते हैं। मैंने सोचा पहले मैं फतह बुलाऊँगा, फिर फतह के अर्थ बताऊँगा, क्यों न ज़फरनामे का शेयर ही सुना दूं। मैंने सुनाया

कमालि करामात कायम करीम।<br>
रज़ा बख्श राज़िक रिहाकुन रहीम।

सारी की सारी मजलिस खड़ी हो गई, कहा वाह, इतना सुन्दर बिस्मिल्लाह हुआ नई दानिशगाह का!! पाँच बार गाकर बिस्मल्लाह पढ़ा गया। दसम पातशाह के इस फारसी शेयर के अर्थ करने की आवश्यकता वहाँ नहीं थी। मुझे अहसास हुआ कि बड़ों द्वारा सौंपी गई दौलतों में से यदि एक मासा भी पास हो तो कितना सम्मान मिलता है।

14 अप्रैल 2008 को प्रबन्धकों के आमंत्रण पर तहिरान के गुरूद्वारे में वैसाखी के त्योहार पर भाषण देने गया। मेरी बात सबको अच्छी लगनी थी, मुझे पता था। इस कारण नहीं कि मैं इतिहास या दर्शन का विशेषज्ञ हूँ। मेरे बुजुर्गों के आशीर्वाद कारण मुझे गुरू साहिबान का नाम अदब से लेना आ गया था। केवल इतना करने से वाह वाह हो जाती है। लंगर खाने के उपरान्त कुछ परिवार मेरे इर्द-गिर्द

आकर बैठ गए। एक 40 वर्षीय सिक्ख बीबी से मिलवाया गया, महेन्द्र कौर। उसके जैसी फारसी ईरानी लोगों को भी नहीं आती। ईरान में बुर्का पहनने का रिवाज़ है। फर्क केवल इतना है कि मुसलमान लड़कियाँ काला बुर्का पहनती हैं, हमारी लड़कियाँ चाहे किसी रंग की चादर ओढ़ लें। जब किसी स्थान पर तहिरान में बहुत बड़ा कार्यक्रम होता है, तब महिन्द्र को स्टेज सचिव की जिम्मेवारी दी जाती है। साथ साथ वह बड़े शायरों के विवरण देती है, उसे ईरानी कल्चर, इतिहास का बहुत ज्ञान है। जब वापस जाने लगे तो मेरे पास आकर उसने कहा कुछ बातें केवल आपसे करनी हैं। मैं और मेरी पत्नी एक तरफ जाकर बैठ गए। हल्की हल्की धूप थी। चाय मंगवा ली। अपने परिवार के बारे बताने लगी कि जब मेरे पिता की मृत्यु हुई तो मेरे रिश्तेदारों और परिवार ने मुझे फालतू समझ लिया। और क्या कर सकती थी? या तो पढ़ती रहती या पिता को याद करके रोती रहती। आँसू कष्टदायक तो होते हैं किन्तु ये आपकी शख्सियत को संवारते हैं। आपकी रूह को बार बार धोते रहते हैं। आखिर में कहामैंने इस कारण आपके साथ अपनी निजी दुःखदायक बातें सांझी कीं ताकि आप मेरे लिए अरदास करो कि मैं इन लोगों पर कभी खफा न होऊँ, बददुआ न दूं। आपका भाषण सुनते समय मुझे लग रहा था आपकी अरदास कबूल होगी। बड़ी सरकार आपका कहना मानती है, मुझे विश्वास है। ये जो घर परिवार के सदस्य होते हैं, ये वस्त्र हैं जिनसे हम अपना जिस्म ढकते हैं, हमारी ओढ़नी है यें। जैसे भी हों ओढ़ने तो पड़ेंगे ही। इनको उतार कर फेंक दें तो हमारा नग्न शरीर ही दिखाई देगा। इस कारण अपनी लम्बी दास्तां सुनाई ताकि आपकी दुआ से मैं इनसे दूर न होऊँ। जैसे भी हैं, प्रेम करने से मत रोक इन्हें।

इस लड़की का पिता इस्फाहान शहर का समृद्ध व्यापारी था। मध्यकाल में ईरान की राजधानी इस्फाहान थी। फारसी और अंग्रेज़ी स्थान स्थान पर कहावत लिखी हुई हैहाफ द वलर्ड इज़ इसफाहान। मैंने ये क्लासिकल शहर देखा है। महिन्द्र को बताया। उसकी आँखें भर आईंकहा, मेरा बचपन इस्फाहान है, मेरी जवानी का नाम तहिरान। इस्फाहान जैसा टुकड़ा धरती पर दूसरा नहीं बना कभी। मैंने वहाँ जाते रूद दरिया पर 99 डाटों वाला पुल देखा। इस दरिया के किनारे फिरदौसी ने शेयर लिखा था :

बर लबि जूई नशीनो, गुज़रे उमर बेबीं।
(दरिया किनारे बैठो। बहते पानी जैसी उम्र देखो।)

शाह अब्बास का महल देखा जहाँ शेरशाह सूरी से पराजित हूमायूं ने शरण ली थी। ईरान के बादशाह तहिमास और हूमायूँ आमने-सामने बैठे हैं, दोनों की बहुत

बड़ी ऐतिहासिक पेंटिंग महल की दीवार पर बनी हुई है। दोनों के हाथों में जाम हैं। सेविकाएँ खाने-पीने की वस्तुएँ लेकर खड़ी हैं और इशारे की प्रतीक्षा कर रही हैं। मैंने महिन्द्र से पूछा, तुम्हारी वाणी इतनी विनम्र और सादगी पूर्ण कैसे बनी? उसने हाफिज़ की रूबाई सुना दी :

फकीर विनम्र क्यों होते हैं पता है तुम्हें?
मस्जिद में दाखिल होने से पहले जूते बाहर उतारने होते हैं।।
जिस्म और जिस्म की आवश्यकताएँ, अहंकार और ईर्ष्या,
रूह के जूते हैं।
बड़े दरबार में तब दाखिल हो पाओगे जब ये जूते उतार दोगे।

जैसा कि मैं बता चुका हूँ, ईरानी ऊँची आवाज़ में बात नहीं करते, ऊँची ऊँची हँसते नहीं। मुझे जबरदस्ती उन जैसा बनना पड़ा। मैंने उनके इतिहास को उनके बीच बैठकर पढ़ा तो अनेक रहस्य प्रकट हुए। वे बहुत विनम्र हैं, सहनशक्ति इतनी कि शताब्दियों तक अत्याचार सहन करते रहें। जब लड़ते हैं, तब पूरे का पूरा परिवार युद्ध में लड़ने मरने के लिए तैयार हो जाता है। प्रोफैसर अंसारी ने बताया कि बादशाह पहलवी दूसरा, मूर्ख सा तो था किन्तु दरिंदा नहीं था। खुमीनी ने उसके विरुद्ध बगावत की तो शाह के माध्यम से दस हज़ार के लगभग जवान इस युद्ध में मारे गए। जब खुमीनी से पैरिस से तहिरान आकर नई सरकार बनाई तो अमेरिका के इशारे पर सद्दाम हुसैन ने ईराकी सेना की चढ़ाई करवा दी। इस युद्ध में दो लाख व्यक्ति मरे थे। मैं दसवीं में पढ़ता था। बंदूक चलाने की ट्रेनिंग केवल 15 दिन की थी। मैं युद्ध में गया था। मेरे स्कूल में एक बारह वर्षीय लड़का हठ कर रहा था कि वह युद्ध में जाएगा, आयु कम होने के कारण आज्ञा नहीं मिली। वह रोने लगा, फिर भाग गया। अपने पिता की पुरानी बंदूक उठा लाया और युद्ध में मारा गया। स्कूल में उसकी यादगार है। इस युद्ध में बहुत नुकसान हुआ था। तो क्या हुआ? हम मर गए किन्तु पराजित नहीं हुए। देख लो अब मेरा ईरान। आपने अमेरिका तो देखा हुआ है। यहाँ अमेरिका से क्या कम है?

ईरान में अनपढ़ मज़दूर की दिन की मज़दूरी भारतीय करंसी अनुसार 750 रूपये है। सभी के पास कारें। मोटर साईकल केवल किसी किसी विद्यार्थी के पास है। मोटर साईकल सवार पैट्रोल पम्प पर जाए, पाईप उठाकर टंकी भरे और चला जाए, पैट्रोल पम्प का मालिक पैसे नहीं लेता। फूल और फल इतने बड़े ऐसे लगते हैं जैसे नकली हों।

अंसारी से कहा दस किलो गेहूँ के आटे का प्रबन्ध करो। उसने कार में बिठाया और बेकरी पर जाकर आटे की आवश्यकता बताई। नानबाई ने कहा तुम्हें तो पता है आटा बेचना गैरकानूनी है। प्रोफैसर ने बताया ये हिन्दुस्तानी मेहमान हैं, कृपया दे दें। फारसी में एक दूसरे से कुछ कह रहे थे, हमें समझ में नहीं आया। मैं आता हूँ, कहकर अंसारी कहीं चला गया, पन्द्रह मिनट बाद आ गया। एक किताब दोनों ने खोलीं। उसके बाद नानबाई ने हमसे कहावो रखा है आटा। जितना चाहिए ले जाओ। पैसे नहीं लिए, बार बार कहने पर भी। मुझे अंसारी ने कहा अंत में नानबाई ने आटा देने के लिए ये शर्त रखी कि हाफिज़ के दीवान में से हुक्मनामा लो। मैं दीवान लेकर आया था। हुक्मनामा निकला नेक दिल से जो काम करेगा, खुदा मेहरबान होगा। नानबाई आटा बेचते हुए यदि पकड़ा जाता तो लाईसैंस रद्द हो जाएगा है बेकरी का।

ईरान का पुरातन नाम आरीआन है, आर्यों का देश। जब लगभग पाँच हज़ार वर्ष पहले आर्यों का एक कारवाँ मध्य ऐशिया से चलकर यूरोप की तरफ गया और दूसरा कारवाँ सिन्ध पार करके भारत में प्रवेश कर गया, उस समय इस काफिले ने सिन्धु घाटी का नाम आर्याव्रत रखा। पंजाबी लोकवेद में दो बहुत ही सुन्दर शब्द पुरातन काल से प्रयुक्त हो रहे हैं। एक है अड़िया, दूसरा अड़िए। पुराने समय में जब किसी पुरुष को सम्मानपूर्वक सम्बोधित किया जाता था, उसे आर्य कहा जाता था जिसका तद्‌भव रूप अड़िया बना और स्त्री को आर्ययी कहा जाता था जिससे अड़िए शब्द प्रचलित हुआ। जब भारतीय विद्वानों ने अनुसंधान पुस्तकों में सिद्ध करने का प्रयास किया कि संस्कृत सभी भाषाओं की जननी है तब इसका विरोध ईरानियों और भारत में रहने वाले पारसियों ने किया जो अरबों के आक्रमण के समय यहाँ आकर बस गए थे। ईरानियों ने कहा कि पुरातन आर्यों की भाषा पहलवी थी। पहलवी में पारसियों के धर्मग्रन्थ जंद और अवेस्ता हैं। जो दो काफिले पहलवी बोलते बोलते कूच कर गए, नए स्थानों और नए लोगों के बीच जाकर उनकी भाषा, लेखन और उच्चारण बदल गए। उदाहरण स्वरूप वे दृष्टान्त देते हैं कि न पहलवी में टवर्ग (ट, ठ, ड, ढ, ण) था न उसके आधुनिक रूप फारसी भाषा में टवर्ग है। ये द्राविड़ धुनें संस्कृत में शामिल हो गईं क्योंकि पड़ोसी द्राविड़ों ने प्रभावित करना ही था। ये और अन्य बहुत से कारण सिद्ध करते हैं कि पुरानी फारसी, जिसे पहलवी कहते हैं, संस्कृत से प्राचीन है। फिर संस्कृत भारोपीय भाषाओं की जननी कैसे हुई?

मेरे मन पर ये प्रभाव पता नहीं क्यों पड़ गया था कि ईरानी मुसलमान पुरातन पारसी धर्म (जोराष्ट्रीय मत) से नफरत करते होंगे। इस प्रभाव के दो कारण

हैं, एक तो मैंने धर्म इतिहास के अध्ययन से ये जाना कि अरबों ने पारसियां को निदर्यता से मारा पीटा, केवल वही बचे जो उजड़ कर भारत आ गए। जो मुसलमान बन गया उसे छोड़ दिया अन्यों का कत्ल कर दिया गया। दूसरा कारण ये है कि आम सिक्ख ये मानने को तैयार नहीं कि वैदिक मत से उसकी कोई विचारात्मक सांझ है। इसके कारण बेशक सांस्कृतिक सांझ की बजाए राजनैतिक हैं, किन्तु ऐसी मानसिकता, कम या अधिक, कहीं न कहीं मौजूद अवश्य है। मुझे लगता था यही भेदभाव पारसियों और मुसलमानों के बीच होगा। मेरा ख्याल गलत निकला। शीआ ईरानी, पारसियों को अपने आदर्श बुजुर्ग मानते हैं और पारसी सल्तनतों का वर्णन करने में गर्व अनुभव करते हैं। दारा, रुस्तम, सुहराब, इसफंदयार, नौशेरवां आदि सुलतानों पर किस्से, काव्य, महाकाव्यों की रचना की गई है और पाठ्यक्रम में इन विषयों को पढ़ाया जाता है। अंतिम दो बादशाहों ने अपने नाम के पीछे पहलवी प्रत्यय का प्रयोग किया और पहलवी कहलवाने में गर्व अनुभव करते थे। इच्छुक विद्यार्थियों को आज भी पहलवी भाषा का अध्ययन करवाया जाता है। पारसियों के पुरातन ध ार्म मन्दिर आतिशि देदगाह (अग्नि मन्दिर) पूर्णतः सुरक्षित हैं जिनमें पुरातन ज्योति प्रज्वलित है। ईरान में अब तक हिजरी कैलण्डर जारी नहीं किया गया। पारसियों का कैलण्डर है क्योंकि ये सूरजी कैलण्डर है जो चन्द्रमा की तिथियों पर आधारित हिजरी कैलण्डर की अपेक्षा अत्यधिक वैज्ञानिक है।

प्राचीन त्योहार नौरोज़ प्रत्येक वर्ष दो सप्ताह के लिए मनाया जाता है। नौरेज का अर्थ है नया दिन, जैसे हिन्दुस्तानी नया संवत् मनाते हैं, या कुछ स्थानों पर बसंत का त्योहार मनाया जाता है, वैसे ही ईरान में दो सप्ताह की सरकारी छुट्टी के दौरान जश्न मनायें जाते हैं। मेरी मेज़बान संस्था मरकज़ि आदीआन (सैंटर ऑफ रिलीज़स स्टडीज़) की लाइब्रेरी का दरवाज़ा पार करते समय देखोगे कि मुख्य दरवाज़े के ऊपर पारसी धर्म ग्रन्थों की चिनाई की गई है। मध्य में सबसे विशाल ग्रन्थ, फिर दोनों तरफ आकार घटता जा रहा है और गुबंद बन गया है। जब पुस्तक खोलकर देखो तो छपाई के डिज़ाईन देखकर दंग रह जाओगे।

एक दिन मैंने बताया कि सिक्खों पर मुगलों ने बहुत अत्याचार किए थे, औरतों और बच्चों को भी नहीं छोड़ा। उन्होंने ने पूछा ये अत्याचार कब तक चलता रहा? मैंने बताया लगभग दो शताब्दियाँ तक। एक प्रोफैसर ने कहा बस? केवल दो शताब्दियाँ? हम शीआ हैं। डेढ हजार वर्षों से लगातार सुन्नियों द्वारा हम पर अत्याचार किया जा रहा है। तुम पर से ये बला टल चुकी है। हम पर अभी तक

चल रही है। यहाँ केवल ईरान में बहुसंख्यक होने के कारण शीआ बचे हुए हैं बाकी सारे संसार में कम संख्या होने के कारण कष्ट झेल रहे हैं।

ईरान के पुराने बादशाह तुर्क थे। तुर्क बहुत साहसी और योद्धा प्रवृत्ति के थे जबकि ईरानियों का स्वभाव शांत था। अनेक बार ईरानियों ने तुर्कों के साथ मित्रता करने का प्रयास किया किन्तु असफल, क्योंकि तुर्क सुन्नी थे, ईरानी शीआ। रूसी आज़रबाईजां कभी ईरान का भाग था। इंकलाब आने के बाद भी वो कम्यूनिस्ट नहीं बने क्योंकि वे कल्चर से प्रेम करते थे। न तो वे स्वयं किसी से झगड़ते थे न ही किसी को हस्तक्षेप करने देते थे। जैसे जर्मनों के मुकाबले फ्रांसीसी योद्धा नहीं, उसी प्रकार तुर्कों के साथ लाल सेना के मुकाबले ईरानी, योद्धा नहीं। नज़रे झुकाए, सहन करते हुए, स्वयं को बचाते हुए वे जीवित रहे, न अपने संस्कारों का त्याग किया न ही ध्‍ार्म का। लैनिन के सिद्धान्त *End justifies means* का बोध उन्हें हज़ारों वर्षों से है। फ्रांस का प्रभाव जैसे यूरोप पर दिखाई देता है, वैसे ही दुनिया पर ईरान का प्रभाव आपको प्रत्येक क्षेत्र में दिखाई देगा। कहा गया है कि फ्रांस निवासियों के समान ही ईरानी अय्याश हैं, सुस्त हैं, कलाकार हैं, निराशावादी हैं। किन्तु ये भी सत्य है कि हेरोडोटस से लेकर आज तक, सिद्ध हो चुका है कि प्रभाव ग्रहण करने की अपेक्षा ईरानी प्रभावित करते हैं।

ईरानियों का सर्वोत्तम नशा शायरी है। व्यापारी, किसान, मज़दूर आपको गाते दिखाई देंगे। बस या रेलगाड़ी में कोई एक व्यक्ति किसी गीत की कोई पंक्ति शुरू कर दे, सभी गाने लगते हैं। एक ईरानी ने स्वयं इसके बारे टिप्पणी देते हुए कहा"मेरा देश सर्वोत्तम है। अंग्रेज़ों ने संसार को कानून दिया, जर्मनी ने विज्ञान, यूनान ने बौद्धिक चिन्तन का जीवन निरीक्षण सिखाया और ईरान ने दुनिया को सुन्दर सुन्दर झूठ बोलने सिखाये। ईरानियों जैसे गप्पी कहाँ मिलेंगे?" ये टिप्पणी उनकी कला की तरफ संकेतित है। प्लैटो ने कलाकारों को नकलची और गप्पी कहकर निन्दा की थी। मनसूर को जब उसके मुरीदों ने बताया कि आपके विरुद्ध बगदाद में अफवाहें फैलाई जा रही हैं, हँसते हुए उसने कहाफिर तो हम कमाल हैं। इसका मतलब ये है कि देश के गंवार लोगों को हमने कहानीकार बना दिया। और क्या चाहिए इससे अधिक? शेख साअदी खुलेआम कहता है कि ऐसा सत्य बोलने की क्या आवश्यकता जो नुकसानदायक हो? वह झूठ ही अच्छा जिससे सद्‌भावना बने, प्रेम रहे। जो लोग गप्प छिपाते हैं, उनसे ईरानी अच्छे हैं जो बताते हैं हम गप्पी हैं। जो तुम्हें बताए कि मैं गप्पी हूँ, वह गप्पी कैसे हो सकता है?

मीसोटामिया सभ्यता की खुदाई में जो मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं, या स्लेटों पर तस्वीरें हैं, तराशे चेहरों पर व्यापक दुःख दिखाई देता है। दर्द है, किन्तु चेहरा शांत है, जैसे बहुत रोने के बाद नक्श, जैसे मोनालिज़ा। हतर शहर से लेकर अफगानिस्तान तक की खुदाई में से दुःख की दास्तां निकली। दुःख के कारणों का पता नहीं, कहानी के प्रारम्भ का स्थान ज्ञात नहीं, दुःख का रहस्य व्यापक है। मैंने एक प्रोफैसर से कहा ध्यानपूर्वक कभी मिफताह और रज़ा को देखा है? हँसकर मिलते हैं, प्रत्येक कमी को पूरा करने के लिए तत्पर रहते हैं, मेल-मिलाप रखने वाले हैं, किन्तु तुम्हें नहीं लगता कि इनके चेहरों के पीछे दुःख छिपा हुआ है? प्रोफैसर ने हँसकर कहा इन दोनों के चेहरों पर ही क्यों, प्रत्येक ईरानी के चेहरे पर शोक है। देखो, हमारे ईमामों की जन्म तिथियों का भी तो हमें पता है, हसन, हुसैन और बारह ईमामों के जन्मदिन ईरानी नहीं मनाते, शहादतें मनाते हैं और रोते हैं। ईरानियों को ऐसा प्रतीत होता है जैसे खुश रहने, हँसने खेलने से खुदा खफा हो जाता है, व्यक्तियों को दुःखी देखकर खुदा खुश होता हो। मैंने देखा, मस्जिद में माईक पर एक व्यक्ति गा रहा होता, बीच बीच में आहें भरता, सभी श्रोता आँखें पोचते रहते। किसी शहीद का दुःख। गायक खुद नहीं रोता, रोने की धुनें बनाता है क्योंकि वह तो अनेक बार ये गीत गा चुका है और गायेगा।

मैंने कहा किन्तु पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियाँ प्रसन्न दिखाई देती हैं। उसने कहालगती हैं, हैं नहीं। स्त्रियाँ पुरुषों के मुकाबले परिस्थितियों से समझौता जल्दी कर लेती हैं। उन्हें जबरदस्ती बुर्का पहनना पसंद नहीं। पुरुषों ने ये वर्दी उन पर थोप रखी है। होना तो ये चाहिए था कि पुरुषों के लिबास स्त्रियाँ डिज़ाईन करें क्योंकि इसमें वे ही निपुण हैं किन्तु हुआ इसके विपरीत। लड़कियाँ सेना में हैं, पुलिस में हैं, नर्सें और डॉक्टर हैं, उन्हें वर्दियाँ अच्छी नहीं लगतीं। कई तो अपनी वर्दी अपने दफ्तर में ही रखती हैं। डयूटी पर पहन लेती है, वापसी के समय अपना सिविल लिबास पहन लेती हैं। पुरुष स्वयं इस्लामी वर्दी से स्वतन्त्र है किन्तु स्त्री पर पाबन्दी है। ये तो एक बात हुई, और भी बहुत कुछ है। कई आन्दोलन भी स्त्रियों द्वारा शुरू किए गए समय समय पर। अनेक स्त्रियाँ पहलवी राज्य को आज के मौलवी राज्य से ज़्यादा उचित मानती हैं।

मेरी पत्नी ने मुझे अनेक स्थानों पर दिखाया जहाँ कोई लड़की, कोई स्त्री मोबाईल पर शहीद की गाथा सुनकर रो रही होती। अत्यन्त सुन्दर ईरान अत्यन्त उदासी के दौर से गुज़रता मैंने देखा।

*लौट कर आया हूँ मैं फिर ए अमीरी कारवाँ।*

*छोड़ आया था जहाँ तू वह मेरी मंज़िल न थी।*

प्रैस और सिनेमा के ऊपर सैंसर है। प्रत्येक घटना के बारे आपको पता नहीं चल सकता। वर्ष 2003 में अंग्रेज़ी की प्रोफैसर बीबी अज़रा नफीसी की पुस्तक *Reading Lolita in Tehran* फोर्थ अस्टेट ने पहले लंदन, फिर न्यूयार्क ने छापी। इस पुस्तक की दास्तां आगे वर्णित करेंगे।

पाँच मई को समस्त संसार में प्रसिद्ध लाइब्रेरी देखने गए जिस का नाम है किताबखानाए मरअशी नजफी। सात मंजिली इमारत है जिसकी दो मंजिले अध ाोभाग में हैं। नजफी का जन्म गरीब घर में हुआ, मज़दूरी करने लगा। पच्चीस वर्ष का था, जब देखा कि एक अंग्रेज़ कुरान की सुन्दर सैंची खरीद कर लाया है। मरअशी नजफी ने पूछा अरबी इन्हें आती तो है नहीं, न इनका ईमान है इसमें, फिर ये क्यों खरीदते हैं? उसे बताया गया कि ये प्राचीन रचनाएँ अत्यधिक मूल्यवान खज़ाना हैं। हम गरीब लोग डालरों के बदले में इन्हें दे देते हैं। मरअशी के मन में निश्चय किया कि इस खज़ाने को लूटने से बचाएगा।

वह आठ पहरों में से एक समय भोजन करता, जो धनी स्वयं हज्ज करने में असमर्थ होते, उनसे पैसे लेकर हज्ज करने जाता और बचत में से कोई पुरानी पेंटिंग, कोई किताब खरीद लेता, संभाल देता। एक अंग्रेज़ को किताब खरीदते देखा, उससे झगड़ने लगा, अंग्रेज़ जितने पैसे दे रहा था मरअशी के पास उतने नहीं थे, किन्तु उसने अंग्रेज़ को थप्पड़ मारा। पुलिस में शिकायत हुई। जेल गया। धीरे धीरे लोगों को उसके जनून और ईमानदारी का पता लगने लगा। सहायता मिलने लगी। अंत में उसकी प्रसिद्धि को कबूल करते हुए सरकार ने उसे आयतुल्ला की उपाधि दी और लाईब्रेरी के निर्माण हेतु धन दिया। लाईब्रेरी के मुख्य दरवाज़े पर लिखा हैये इमारत किताबों की जेल नहीं है इन किताबों को यहाँ से स्वतन्त्र करवा अपने घर ले जाकर पढ़ो।

लाईब्रेरी में खाल पर उकरा हुआ 1300 वर्ष पुराना कुरान रखा है जिसके अरबी शब्दों पर मात्राएँ नहीं है, अपंगों की तरह उस ज़माने में मात्राओं के बिना काम चलाया जाता था। अबुल असबद, जिस अरबी का बहुत ज्ञान था और कुरान का हाफिज़, ने इसकी दूसरी इससे मिलती जुलती नकल तैयार करवाई। असबद के उच्चारण अनुसार इसकी मात्राएँ लगाई गईं। मरअशी ने उरमची शहर में से चीनियों की हस्तलिखित कुरान प्राप्त की जिस रचना को ख़ति बहारी कहा जाता है। पुरानी अरबी फारसी रचनाओं की शैलियाँ भिन्न भिन्न हैं तैमूरी, तहिरानी, सफवी, औजारी, शीराजी, इस्फाहानी, कश्मीरी, लिपि-शैलियों के डिज़ाईन मनमोहक हैं। घोड़े

के एक बाल का निब्ब रूप में प्रयोग करते हुए अनेक सूक्ष्म रचनाएँ हैं जिन्हें केवल लैंज द्वारा ही पढ़ा जा सकता है। बकरे की खाल पर दाऊद की पुरानी लातीनी अंजील रखी हुई है जिसके 200 पृष्ठ हैं जिनका भार 16 किलो है। इथोपियन, इबरानी और आरमीनी लिपि में अंजीलें मिलती हैं। पालि, तिब्बती, बर्मी और गुरमुखी की प्राचीन रचनाएँ रखी हुई हैं।

मरअशी ने मित्र को पत्र में लिखायदि मांगने पर पुस्तक न दूं तो बुरा मत मानना, अपनी महबूबा कौन किसी दूसरे को देता है?

एक अन्य पत्र में लिखाइस समय मेरी जेब में 35 पैसे हैं केवल। कर्ज़ देना है। मेरे पास 30 हज़ार किताबें हैं किन्तु रखने के लिए जगह नहीं है। इस समय भूख लग रही है, घर में खाने के लिए एक दाना भी नहीं। या खुदा, फिर भी तेरे अतिरिक्त मुझे किसी पर विश्वास नहीं मरअशी नजफी।

उसके जीवित रहते इमारत बन गई थी। उसने सरकार के समक्ष हिन्दुस्तान जाने की इच्छा व्यक्त की। उसे डिपलोमैट पासपोर्ट दिया गया। चलने से पहले कहा भारत में स्फार्तखाने से बात करवायें। सफीर को फोन किया गया। सफीर ने कहा हजूर मैं आपको लेने के लिए हवाई अड्डे पर आऊँगा। जो जो स्थान देखने हैं बता दो, वहाँ जाने की व्यवस्था करेंगे। मरअशी ने कहामै लाल किला या ताजमहल देखने नहीं आ रहा। आज तक सारी दुनिया में फारसी की अधिक पुस्तकें हिन्दुस्तान द्वारा छापी गई हैं, पहले हाथों से फिर मशीनों से। इस कारण पवित्र धरती को प्रणाम करना है। दूसरा नवल किशोर और मोतीलाल बनारसीदास के खानदानों को सूचना भेजो। जब इन्हें पता चलेगा मरअशी नजफी आ रहा है तो ये आपसे पहले मुझे लेने के लिए हवाई अड्डे पर पहुँच जायेंगे। इनके घरों में पहले जाऊँगा, फिर आपके स्फार्तखाने में आऊँगा। फारसी साहित्य प्रकाशित कर इन खानदानों ने ईरान को अमीर बनाया। मैं मांगता तो इनके बुजुर्ग मुझे कीमती रचनाएँ भेज देते। मरने से पहले शुक्रिया नहीं किया तो अल्लाह नाराज़ हो जाएगा।

दूसरी उसकी इच्छा थी कि लाश हरम में नहीं उसकी लाईब्रेरी की सीढ़ियों में दफनाई जाए, "किताबों के आशिक मेरे बच्चे जब मेरे ऊपर से गुजरेंगे, उनके कदमों के स्पर्श से मुझे चैन मिलेगा।"

वसीयत अनुसार दफन किया गया। कब्र पर ये शब्द उकेरे गए थे जो नजफी ने मौत से दस दिन पहले स्वयं लिखे थे *किताब में से जन्म लिया, किताब के कारण जीवित रहा, अब किताबखाने में आराम करूँगाआयतुल्ला मरअशी नजफी।*

आज इस लाईब्रेरी में 31 हज़ार दुर्लभ हस्तलिखित रचनाएँ हैं। पुराने और अधूरे पृष्ठों को पूरा करने के लिए उसी रंग का कागज़ तैयार करके इस प्रकार चिपका देते हैं कि आप पहचान नहीं पाओगे कि कहाँ जोड़ा गया है या शेड में कोई फर्क हो। अब उसका बेटा सय्यद महमूद मरअशी इस लाईब्रेरी का चीफ है और उसे हुजतुल्ल इसलाम (इसलाम का दार्शनिक) की उपाधि मिली हुई है। उसने हमें बताया, मैं तीन बार हिन्दुस्तान गया हूँ। हिन्दुस्तान में मीर हामिद हुसैन बड़े विद्वान् हैं। उनकी कब्र आगरा में है। दूसरे दानिश्वर थे दिलदार अली नसीराबादी। इन दो हिन्दुस्तानियों पर हमें गर्व है। अलीगढ़ यूनिवर्सिटी की लाईब्रेरी अच्छी है। हैदराबाद गया तो दुःख हुआ कि छिपाकर सलारजंग की अमूल्य किताबें यूरोप को बेची जा रही हैं। हमारे पास अकेले नवल किशोर द्वारा भेजी गई 500 फारसी की किताबें हैं। कलकत्ता से 220 वर्ष पहले की पुरानी प्रकाशित कृतियाँ हमारे पास हैं। आगरा में काज़ी नरूला की कब्र पर चादर चढ़ाने गए तो वहाँ के कव्वाल सुन्दर धुनों में कसीदा गा रहे थे। मैं गाने को कुफर मानता हूँ। मैं रूक नहीं पाया और गाने लगा। हम पर हिन्दुस्तानियों की बहुत कृपा है।

वापसी वक्त कार में बैठते समय अंसारी ने बताया देखा कैसे सारा दिन खुशी खुशी महमूद अपने पिता की बातें करता रहा और लाईब्रेरी दिखाता रहा। विदेशी मेहमानों का स्वागत ये स्वयं करते हैं। इसकी माता ने हमें बताया था कि बचपन से ही इस बच्चे का सूक्ष्म स्वभाव है। पाँच छह वर्ष का था जब इसे कहती जा अपने अब्बू को जगाकर दूध पिला दे तो नज़दीक जाकर आवाज़ नहीं देता था, न हाथ से छूकर उठाता था। अब्बा के पैर से अपनी गाल का स्पर्श करता।

बिना बताए एक दिन मैं खलील गम्बरी के घर चला गया। घंटी बजाई। भीतर से आवाज़ आई कौन? मैंने अपना नाम बताया। पाँच मिनट, दस मिनट, बीस मिनट बीत गए, दरवाज़ा नहीं खुला। मुझे गुस्सा आ गया, क्या वापस चला जाऊँ? आखिर दरवाज़ा खुला तो मैंने कहा आपको अच्छा नहीं लगा मेरा आना? ऐसी बात है तो आज्ञा दो। चला जाता हूँ। उसने कहा आपने आने के बारे बताया नहीं था। मैं ऐसे ही मलंगों की तरह बैठा था। आपका नाम सुना, तो क्या मैं ऐसे ही आ जाता? इतनी बड़ी शानों वाला सरदार मेरे घर आए, उसे भीतर लेकर जाने की तैयारी भी करनी थी। मैंने जल्दी जल्दी घर ठीक किया, फिर लिबास पहना, देर तो मैंने नहीं की। उसकी आँखें भर आईं।

ये बात रूहानी को बताई तो उसने कहा किसी ईरानी को डांटना नहीं। ऊँची आवाज़ में बात न करना। ये तुरंत रोने लगते हैं बच्चों की तरह।

अहमद नफीसी की बेटी अज़रा नफीसी, यूनिवर्सिटी ऑफ तहिरान में अंग्रेज़ी की प्रोफैसर थी किन्तु उसे अपने विद्रोही स्वभाव के कारण पहले नौकरी से अस्तीफा देना पड़ा, फिर सरकार ने देशनिकाला दे दिया तो वह 1997 में अमेरिका चली गई जहाँ जान हापकिनज़ यूनिवर्सिटी में प्रोफैसर नियुक्त हुई। उसने अन्तर्राष्ट्रीय प्रसिद्धि प्राप्त समाचारपत्रों/पत्रिकाओं के लिए तो लिखा ही, दो किताबें भी छपवाईं। पहली किताब नोबोकोव के उपन्यासों का आलोचनात्मक अध्ययन था और दूसरी किताब जिसने उसे बहुत यश दिया वह है, *रीडिंग लौलिता इन तहिरान।* इस किताब पर अंग्रेज़ी में फिल्म बन चुकी है। दो बच्चों और पति सहित अब वाशिंगटन की निवासी है।

पिता अहमद नफीसी दृढ़ आत्मविश्वासी ईमानदार खुद्दार व्यक्ति था। राजनीति में उसकी लगातार प्रसिद्धि रही जिसके कारण उसे ईरान की राजधानी तहिरान की कार्पोरेशन का मेयर सर्वसम्मति से चुना गया। तहिरान के इतिहास में वह सबसे कम आयु का मेयर था। मेयर का पद संभालने के बाद उसे मुसीबतों ने घेर लिया। बादशाह मुहम्मद शाह पहलवी की मण्डली न समझदार थी न ईमानदार। जबरदस्ती वह मेयर से मनमर्ज़ी के नाजायज़ काम करवाने के इच्छुक थे। अहमद किसी दूसरी मिट्टी का बना था। जो ऐसी परिस्थितियों में होता है वही हुआ, उसे भ्रष्टाचार के दोष में बंदी बना लिया गया। मुक़द्दमें दौरान औपचारिक गवाही के आधार पर पाँच वर्ष की सज़ा हुई। ट्रायल चलते उसने अपने बच्चों को विदेशों में पढ़ने के लिए भेजा क्योंकि अपनी राजनैतिक गतिविधियों के कारण वह उनका भविष्य खतरे में नहीं डालना चाहता था। बेटी अज़रा ने अमेरिका से अंग्रेज़ी में पीएच.डी. की। बादशाह देश छोड़ कर चला गया, मण्डली समाप्त हो गई तो अज़रा ने तहिरान में आकर पढ़ाना शुरू कर दिया। आने वाला समय उसके लिए अलग तरह की मुश्किलें लेकर आएगा इसका उसे ख्याल नहीं था।

अज़रा लिखती है, "मेयर चुने जाने के बाद पिता की, परिवार को बहुत प्रतिष्ठा मिली, ये स्वाभाविक था किन्तु जब बादशाह ने जेल भेज दिया, तो शौहरत सारे ईरान में फैल गई। लोगों को यकीन नहीं आ रहा था कोई ऐसा व्यक्ति है जो बादशाह के विरुद्ध फैसला करके जेल जाने के लिए तैयार है। पिता जी से जेल में मुलाकात करने वालों की भीड़ लगी रहती।"

स्टेट का स्वभाव हर समय एक जैसा होता है। जब सरदार सेवा सिंघ ठीकरीवाला को महाराजा भूपेन्द्र सिंघ ने कैबनिट मन्त्री नियुक्त किया तब सेवा सिंघ ने अपने गाँव ठीकरीवाला में महाराजा को डिनर दिया जिसके लिए क्रॉकरी इंग्लैंड

से खरीदी और उस पर जो पेंटिंग करवाई गई वह पैरिस की थी। जब सेवा सिंघ सरदार ने महाराजा की प्रत्येक बात में सहमत होने से इंकार किया तो पुलिस ने ठीकरीवाला गाँव के सांझे कुएँ पर पानी खींचने वाली गड़वी-रस्सी चोरी करने का मुकद्दमा दर्ज करके पटियाला जेल भेज दिया जहाँ उसकी मौत हो गई।

प्रोफैसर नफीसी का अन्य लोगों की तरह ख्याल था कि इंकलाब के लिए संघर्ष खत्म हुआ, अब चैन के, सुख के दिन आएँगे। विश्वविद्यालयों में पढ़ाई शुरू हो गई किन्तु अब अजीब किस्म की हलचल देखी गई। लिखित और मौखिक हुक्मनामे/रहतनामे जारी होने लगे। लड़कियाँ लड़कों से बातें करें, इस पर पाबन्दी लगा दी गई। कोई लड़की ऊँची आवाज़ में बात नहीं करेगी, हँसेगी नहीं, यदि देर हो गई तो भागकर क्लास रूम में नहीं जाएगी। रोते हुए एक लड़की ने नफीसी को बताया मुझे इस कारण देरी हो गई मैडम, मेनगेट दरवाज़े पर तैनात सुरक्षा स्टाफ की औरतों ने पर्स चैक किया तो उसमें से लिपस्टिक निकली। वे जिद्द कर रही थीं कि तेरे माता-पिता को बुलाकर तुम्हारी ये करतूत बतानी है, मैंने माफी मांगकर अपना पीछा छुड़ाया और आ गयी।

नफीसी ने यूनिवर्सिटी और अपने घर की लड़कियों को संगठित करके संघर्ष हेतु प्रेरित करना शुरू कर दिया। एक बार तो थक गई और अस्तीफा देने का विचार मन में आया, एक कुलीग ने कहा तुमने कैसे पढ़ाना है, कितने समय तक पढ़ाना है, तुझे नौकरी पर रखना है या निकालना है, यदि निकालना है तो कैसे, ये निर्णय अब तेरे हाथ में नहीं, लड़कों के हाथ में है।

नोबोकोव का उपन्यास *'लौलिता'* विश्व में प्रसिद्ध रहा है। वर्ष 1970 बी. ए. में मैंने ये उपन्यास इस कारण पढ़ा क्यों चटाखेदार वस्तु थी। कुछ समय बाद ये समझ में आया कि इसमें वर्णित अश्लीलता के पीछे लौलिता की विवशता और शोषण के बारे में सोचने की उस समय अक्ल नहीं थी। प्रोफैसर नफीसी अपनी छात्राओं को इस सम्बन्धी जागरूक करवाने के लिए इस किताब को केन्द्र बनाती है। दूसरी किताब जिसका अध्ययन नफीसी के घर किया जाता, वह थी, बुलबुल हज़ार दास्तान। चर्चा वे अपनी छात्राओं के साथ अपने घर पर करती, यूनिवर्सिटी में नहीं। कहानी में वर्णित मलिका की बेवफाई सिद्ध होने पर बादशाह उसे मृत्यु दण्ड देता है, सेविकाओं का एक एक करके कत्ल किया जाता है, इस संदेह पर कि वे उसके पाप की भागीदार हैं। कहानियाँ सुना सुनाकर केवल एक लड़की शहिरज़ाद बचती है। लोगों को याद रह जाती है बेवफा मकतूल मलिका या बची शहिरज़ाद। बीच में कत्ल होने वाली सेविकाएँ जिनका कोई दोष नहीं था उनमें पाठकों की कोई

रुचि नहीं। यही वे अपनी छात्राओं को बताना चाहती है कि अंसख्य ईरानी लड़कियों के दुःखों की कहानी को महत्त्व देना होगा। आजकल नोबोकोव के उपन्यास लौलिता, नफीसी की किताबें, और हज़ार दास्तान किताब पढ़ने पर पाबन्दी है।

नफीसी सोचती, "नौकरी से निवृत्त होने के बाद जो दुःख हुआ उसके कारण मैं आत्महत्या करती या फिर अपनी वायलन लेकर दिन रात सुरों की लहरों में मस्त रहती। मैंने दूसरा रास्ता चुना। साहित्य मेरी वायलन, मेरी छात्राएँ उसके सुर।"

राज्य परिवर्तित होने के बाद लड़कियों के विवाह की आयु 18 वर्ष से कम करके 9 वर्ष कर दी गई और नाजायज़ काम सम्बन्धों की सज़ा पत्थर मारकर जान से मार देना निश्चित की गई तो इसके विरुद्ध तूफान खड़ा हो गया, कानून वापस लेना पड़ा।

लड़कियों की कक्षा में एक अध्यापिका ने ब्लैकबोर्ड के मध्य में एक रेखा खींच कर बायीं तरफ लिखा ईसाई लड़की, दायीं तरफ मुसलमान लड़की, बताना शुरू किया ईसाई लड़की विवाह से पूर्व कुंवारी नहीं रहती। मुसलमान लड़की कुंवारी रहती है। दूसरा वाक्य विवाह के बाद ईसाई लड़की दायें बायें झख मारने से नहीं रुकती, मुसलमान लड़की सारी उम्र अपने पति के साथ रहती है। इसी तरह कपड़े पहनने, सैर-सपाटा, लिपस्टिक, बिंदिया, हार-शृंगार फैशन आदि की तुलना की। लड़कियाँ ऊँची ऊँची हँसने लगीं। मैडम ने इसका कारण पूछा तो एक ने कहामैडम आप अपनी तरफ से तो इसलाम के गुणों का वर्णन कर रही हो, लड़कियाँ इस कारण हँस रही हैं कि
आपकी व्याख्या सुनकर उनका मन ईसाई बनने का हो रहा है। बंद करो ये भाषण।

स्विटरज़लैंड के स्कूल में पढ़ती नफीसी को अध्यापक ने कक्षा से बाहर बुलाकर बताया, तेरे पिता को सरकार ने बंदी बना लिया है। "मैं अपने पिता से मिलने तहिरान गई। ऐयरपोर्ट पर अहसास हुआ कि पिता जी जेल में हैं क्योंकि पहली बार ऐसा हुआ है कि मुझे लेने ऐयरपोर्ट नहीं आए।" कभी खबर मिलती उन्हें जल्दी ही गोली मार दी जाएगी, कभी कोई कहता, रिहा होने वाले हैं। अभी तीन सप्ताह पहले *पैरिस मैच* समाचारपत्र में छपी उनकी रंगीन बड़ी तस्वीर देखी थी। उनके साथ सेनापति डी गाल खड़े थे। डी गाल जब तहिरान आया था तो पिता ने फ्रांसीसी भाषा में स्वागतीय भाषण दिया था जिसमें विक्टर हिऊगो सहित अनेक फ्रैंच विद्वानों का विवरण दिया था। डी गाल ने उन्हें फ्रांस का सर्वोत्तम सम्मान *लीअन ऑफ ऑनर* देने का निर्णय किया। बाद में जब उन्हें सज़ा सुनाई गई, दूसरे दोष सिद्ध

नहीं हो सके, अदालत ने केवल एक दोष सही माना, वह थाबड़ों का कहना नहीं मानता। बेटी लिखती है, ये दोष सही था। इस दोष की सज़ा मिलने पर न पिता को न ही परिवार के किसी सदस्य को कोई अफसोस हुआ।

नफीसी के पड़ोस में एक लड़का रहता था, पूरा अय्याश। इतनी दौलत उसके पास कहाँ से आई कुछ पता नहीं। कभी कभी सुनते कि समग्लर है। उसके घर में एक दिन हथियारबंद लड़के (ध्यान रहे कि ये हथियारबंद लड़के पुलिस पार्टी के नहीं होते, स्वयं बने इसलामी सकुएड थे) उसे गिरफ्तार करने आ गए तो वह दीवार फांद कर नफीसी के लॉन में छिप गया। ये लड़के नफीसी के घर आए तो वह डर गई, इस कारण नहीं कि किसी गरिफ्तारी या सज़ा का डर था, छिपे दुश्मन को मारने या गिरफ्तार करने के लिए जब वे छत्त पर चढ़े, डर इस बात का था कि वो डिश ऐंटिना देख लेंगे क्योंकि डिश लगाना अपराध था। किन्तु वे अपने शिकार कर पीछा इतनी एकाग्रता से कर रहे थे कि एक लड़का पोजीशन लेने के लिए डिश के पीछे छिप गया किन्तु ये भूल गया कि उसने गैर कानूनी वस्तु देखी है। कुछ फायर करने के बाद छिपा हुआ लड़का पकड़ा गया। ले जाते समय लड़कों ने बताया ये बहुत बड़ा समग्लर है। पैरिस में कई कत्ल कर चुका है। कुछ दिनों बाद लड़का सही सलामत घर वापस आ गया। एक दिन नफीसी के घर आकर कहने लगा बीबी आप सरकार के पास शिकायत करो कि ये लड़के जबरदस्ती आपके घर में घुसे और फायरिंग करनी शुरू कर दी। नफीसी ने शिकायत तो करनी नहीं थी। स्पष्ट है, सौदा हो गया था। लड़का फिर से ठाठ-बाट से अपने घर रहने लगा।

शनाज़ और उसकी सहेलियाँ कैस्पियन सागर के किनारे छुट्टियाँ मनाने गईं। सभी ने इसलामी लिबास पहना हुआ था, ज़ाबते में। एक सहेली का मंगेतर सागर किनारे रहता था, निर्णय हुआ कि उसके घर चाय पी जाए। सभी पारिवारिक सदस्य बैठे थे तो आंगन की दीवार फांद कर इसलामी सैकुएड के हथियारबंद लड़के अन्दर आ गए। तलाशी ली गई। न नशा मिला, न आपत्तिजनक कोई सी डी, न कुछ और। किन्तु लड़कों के पास तलाशी का वारंट था, वे अपनी रेड व्यर्थ गंवाना नहीं चाहते थे। जेल ले गए। वहाँ 48 घंटे तक उन कमरों में रखा जहाँ नशेड़ी स्त्रियाँ और वेश्याएँ बंद थीं। फिर मैडीकल अफसर के पास भेजी गईं कि कुंवारापन-टैस्ट करो, लेडी डॉक्टर के पास मैडीकल कॉलेज की छात्राएँ बैठी थीं जो ये काम सीख रही थीं। डॉक्टर ने कहा लड़कियाँ ठीक हैं। लड़के कब मानने वाले थे? ये सोचकर कि रहम किया गया है, प्राईवेट क्लिनिक ले गए। वहाँ भी सही रिपोर्ट मिली। फिर कहा बिना बताए घर से क्यों आईं? लड़कियों ने कहा घर बता कर आईं थीं, हमारे

माता-पिता को बुलाओ तो सही। पच्चीस पच्चीस कोड़े मारने का दण्ड दिया गया। ढूंढते ढूंढते जब तक माता पिता लड़कियों पास पहुँचे तब तक वे अधमरी हो चुकी थीं।

ईरानी लड़कों की ये कार्यवाही पढ़कर मुझे गुस्सा आ गया किन्तु जल्दी ही मेरा दिमाग ठीक हो गया जब याद आया कि ईरान में इंकलाब आने के बाद ऐसे आदेश जारी किए गए, पंजाब में तो खालिस्तान बनने से पहले ही खालसा कोड ऑफ कंडक्ट लागू हो गए थे।

दिन रात प्रचार होने लगा, विस्की बंद, घरों में भी। न नाचना है, न लड़कियों ने खेलना है, पश्चिमी अश्लील गीत नहीं सुनने, केवल लोकगीत या इंकलाबी गीत ही सुनने हैं। चोटी बनाकर रखें, जहाँ तक सम्भव हो सके लड़कियाँ पढ़ने लिखने की रुचि का त्याग करें। एक दिन नफीसी अपने पति के साथ यूनिवर्सिटी जा रही थी। गेट के बाहर भीड़ थी और झगड़ा हो रहा था। पता चला कि नेता तिलगानी की मौत हो गई। उसकी लाश को लेकर जाने के लिए एक तरफ हिजबुल्ला पार्टी के सदस्य अपना अधिकार जता रहे थे, दूसरी तरफ मुजाहिदीन। मुजाहिदीन का दावा था कि वे धार्मिक नेता के वारिस हैं किन्तु हिज़बुल्ला पार्टी जो ईश्वर के कानून को सही रूप में धरती पर लागू करने के लिए वचनबद्ध है, वह खींच रहे थे। आम जनता सिर और छाती को पीट पीट कर रो रही थी आज दुःखदायी दिन है, आज तिलगानी स्वर्ग में पधार गया है।"

इसलामी राज्य ने कितने व्यक्तियों का कत्ल ये कह कर किया ये बंदेशाह के मुरीद है, कोई गणना नहीं क्योंकि प्रेस पर सख़्त सैसर था। आयतुल्ला खुमीनी का बयान आया हमने रूलिंग पार्टी को छोड़कर बाकी सभी राजनैतिक पार्टियों पर पाबन्दी लगा दी ... गल्तियाँ किससे नहीं होतीं? हम समझते रहे हमारा सामना इंसानों से होगा। किन्तु ये हमारी गलती थी। हमें तो जंगली जानवरों के साथ लड़ना पड़ रहा है। हम किसी भी स्थिति में उन्हें सहन नहीं करेंगे।

नफीसी ने अपनी कक्षा में जर्मन चिन्तक थिओडोर अडोर्नो का ये वाक्य विद्यार्थियों को लिखवायासर्वोत्तम सदाचार वह होता है जो आपको आपके घर में भी बेचैन रखे।

ऐमनैस्टी इंटरनेशनल को जुलाई 1982, जिल्द XII न. 7 से ये सूचना प्राप्त हुई : नामउमीद गरीब ; गिरफ्तारी 9.6.1980; गिरफ्तारी का स्थान- तहिरान; कैद- कज़र जेल तहिरान; दोष- पश्चिमी आदतें, पश्चिमी कल्चर में जन्म, पोषण, पढ़ने के लिए लम्बे समय तक पश्चिम में रहना, पश्चिमी सिगरेट पीना, अनुचित

रुचियाँ भी देखी गईं; कैद पहले तीन वर्ष फिर मौत, मुकद्दमे का विवरण दोषी की जेल के बंद कमरे में मुकद्दमे की सुनवाई हुई। उसने एक मित्र को फ्रांस के पते पर पत्र लिखा जिससे अधिकारियों को उसके बारे सूचना प्राप्त हुई; वर्ष 1980 में तीन वर्ष की सज़ा सुनाई गई। उमीद गरीब जब सज़ा काट रहा था 2 फरवरी 82, माता-पिता को खबर मिली उसे फांसी दे दी गई है। फांसी के कारण क्या थे, पता नहीं।

जब अन्तर्राष्ट्रीय मानवीय अधिकार संगठनों ने इन अत्याचारों का विरोध किया तो खुमानी का बयान आया अपराधियों पर मुकद्दमा चलाने की आवश्यकता नहीं। गुनाहगार पर मुकद्दमा चलाना मानवीय अधिकारों की उल्लंघना है। मानवीय अधिकारों की सुरक्षा हेतु अनिवार्य है कि अपराधी को पकड़ते ही मार दिया जाए। लोग हमारी निन्दा कर रहे हैं क्योंकि हम दरिंदों को मार रहे हैं।

मौलवियों ने स्त्रियों के अधिकारों को एक के बाद एक बाद झटका दिया। बुर्के के समय बहुत दिक्कत आई। जबरदस्ती बुर्का पहनने के विरोध में अनेक बार स्त्रियों ने हथियारबंद आन्दोलन किए। रज़ा शाह पहलवी ने 1936 में कानून बनाया था कि बुर्का पहनना या न पहनना औरत का निजी मामला है, इसमें हस्तक्षेप की पाबंदी है। किन्तु मौलवी बेचैन थे। जब तक बुर्का पहनना अनिवार्य नहीं किया जाता, तब तक कैसे माना जाएगा शाह नहीं रहा, कि ये इसलामी गणराज्य है? नफीसी ने स्थान स्थान पर भाषण दिए कि मेरी दादी, नानी मरने तक बुर्का पहनती रहीं, जबकि मेरी माँ ने बुर्का छोड़ दिया था। अब तक अनेक औरतें खुशी खुशी बुर्का पहनती है किन्तु जबरदस्ती बुर्का पहनने के कानून के विरोध में आन्दोलन करेंगे। कॉफी हाऊस में नफीसी ने देखा, उसका एक कम्यूनिस्ट विद्यार्थी जोश से मेज़ के नज़दीक खड़ा कोक पीता हुआ कह रहा है दुश्मन दो प्रकार के होते हैं। एक जो सामने प्रत्यक्ष दिखाई देता है। एक वो जो आपके भीतर बैठा है, लगता मित्र है किन्तु है दुश्मन। दोनों को एक ढंग से मारना चाहिए। क्या स्टालिन ने तासकी के शिष्य, वाईट गार्ड, दीमक और चूहे नहीं मारे थे?

खुमीनी को जब बताया कि किसी यूनिवर्सिटी में कामरेडों का बहुत दबदबा है, उसने मुसलमान विद्यार्थियों से कहा मुट्ठी भर कामरेड दानिश्गाह के अधिकारी, तुम हाथ पर हाथ रखे बैठे हो? उनके विरुद्ध दलीलें तैयार करो, उन्हें ललकारो, खड़े हो जाओ तुम ताकतवर हो। मान लो किसी व्यक्ति के पास दो कुत्ते हैं, एक का नाम सय्यद रखा दूसरे का शेख, तो क्या तुम उस पर मुकद्दमा करोगे? गोली मार

कर काम तमाम कर दो। हमला करो ताकि दुश्मन शिकायत करता हुआ घूमे। शिकार नहीं शिकारी बनो।

जब देखा कि औरतें बुर्का पहनने से इंकारी हो रही हैं तो सख्ती करने का निर्णय लिया गया। पहले नौकरीपेशा औरतों से कहा गया, यदि बुर्का नहीं पहनना तो नौकरी से छुट्टी। फिर बाज़ारों, दुकानों में कहा गया कि दुकानदार बिना बुर्का पहने औरत को सौदा नहीं देंगे, इंकार करने पर सरकार को बताया जाए। सदाचारक-सकुएड बनाए गए, सफेद वर्दियाँ, सफेद टयोटा कार में तीन लड़के और एक जवान औरत। जहाँ कहीं किसी को बिना बुर्का पहने देखें, या दुकानदार बागी औरत को सौदा देता दिखाई दे, भारी जुर्माना करो, 76 कोड़ों की सज़ा दो।

अरब ने जब छठी शताब्दी में ईरान पर आक्रमण किया, ईरानी शायद बादशाह के अत्याचारों से थक चुके थे, शत्रु के लिए दरवाज़े खोल दिए। अरबों ने पहले महल लूटे, फिर ईरानियों के घरों और मन्दिरों को लूटा, धर्मग्रन्थ जलाए। जब तक ईरानियों को समझ में आया तब तक उनकी विरासत, धर्म, इतिहास, साहित्य, भाषा सब कुछ छिन चुका था। नफीसी लिखती है अब्बा हमें फिरदौसी और रूमी पढ़ाते समय कहते, जो सुन्दर इतिहास फिरदौसी ने लिखा, वह उसकी निजी सृजना है, वह सारा मिथ्या है, किन्तु फिर भी हमारा असली घर वही है, अपना देश वही है जिसका निर्माण रूमी और हाफिज़ ने किया। शत्रुओं के लिए हमने दरवाज़े खोल दिए। इस बार शत्रु को दूरी तय करके नहीं आना पड़ा। मुझे किसी बात की चिन्ता नहीं, चिन्ता है तो इस बात की कि वे रूमी और हाफिज़ को सैंसर कर रहे हैं। हमारा सुन्दर देश जिसे विदेशी लोगों ने उजाड़ दिया था, फिरदौसी, रूमी और हाफिज़ ने फिर से आबाद कर दिया, अब वह फिर से उजड़ रहा है। नीतशे ने लिखादरिंदे को मारो किन्तु ध्यान रखो खुद दरिंदा नहीं बनना। अंधे कुएँ में देखोगे तो ध्यान रखना, अंधा कुंआँ भी तुम्हारी तरफ देखेगा।

नफीसी कहती हैमैंने पढ़ाना छोड़ दिया, बात करनी बंद कर दी। मैं घर में ही रहने लगी। ये मत समझना मैं हार गई हूँ। मैं लाचार, मज़बूर हूँ, हारी नहीं। यदि मैं दुश्मन से सहमत होती तो आप कह सकते थे कि नफीसी हार गई। चुप होना पड़ा। मैं खामोशी का मॉडल नहीं बनी। ठीक है मैं जीत नहीं पाई, किन्तु मेरी हार सिद्ध करो। खामोश इंसान कायर नहीं होता। मैं इसलामी रिपब्लिक ऑफ ईरान से बाहर हो गई हूँ, दुनिया में तो हूँ अभी। जैसे मुझे अब्बू पर गर्व है, उसी तरह मेरा शायर अब्बू मुझ पर गर्व करता है।

नफीसी अमेरिका से वापस आई, पुराने मित्र, दोस्त मिले, कई विद्यार्थी मिले जिनमें से एक, नसरीन सात वर्ष बाद मिली। उससे पूछा कैसे बीता समय? नसरीन ने बताया, अपनी सहेलियों सहित गलियों में पैंफलेट बांटते हुए पकड़ी गई। आपको पता ही है कि सरकार मुजाहिदीनों के रक्त की प्यासी थी। मेरी कई सहेलियों को फांसी दे दी गई किन्तु मेरी किस्मत अच्छी रही दस वर्ष की सज़ा मिली। जेल में एक औरत आई, उसकी 12 वर्षीय बेटी माँ को मिलने के लिए जेल के दरवाज़े पर कभी दायीं तरफ तो कभी बायीं तरफ चीखते हुए घूम रही थी, गार्ड ने गोली मार दी। माँ मुझे भी याद आई थी, रोना आया किन्तु इस लड़की का हाल देखकर खामोश हो गई। मेरा पिता धार्मिक व्यक्ति था, दूसरे सरकार के रसूख वाले स्थानों पर उसके कुछ विद्यार्थी नियुक्त थे, इससे बहुत सहायता मिली। पहले तो जेल में मेरे साथ उचित व्यवहार किया जाने लगा फिर मेरी सज़ा कम होते होते तीन वर्ष रह गई। बाहर तो मैं आ गई किन्तु एक तो मुझे यूनिवर्सिटी में पढ़ने की आज्ञा नहीं है, दूसरे मैं प्रोबेशन पर हूँ, मेरी निगरानी की जा रही है। जब मैंने आखरी बार आपकी क्लास अटैंड की थी, होमवर्क न करने के कारण आपने मुझे डांटा था। माफी मांगी, आप चुप हो गए। अब फिर से माफी मांगती हूँ मैडम।

ईराक के साथ हो रहा युद्ध लम्बा होता गया तो अकसर यूनिवर्सिटी में छुट्टी हो जाती। कभी इस कारण कि पुराना विद्यार्थी युद्ध में शहीद हो गया, कभी इसलिए कि ईरानी सेना ने ईराकी काफिरों को पराजित कर दिया है। किसी को इस बात की परवाह नहीं थी कि ईराकी काफ़िर भी मुसलमान हैं। एक दिन कक्षाएँ बंद हो गईं, एक विद्यार्थी "शहीद" हो गया है, श्रद्धांजलि में कहा गया "मृत्यु नहीं; उसका विवाह है। प्रत्येक शहीद की महबूबा ईश्वर होता है।" लड़कियों ने मुँह पर दुपट्टे रखकर हँसना शुरू कर दिया, एक ने कहाइतने शहीद, यानि कि इतने पतियों के साथ ईश्वर का क्या बनेगा? ठीक है; अल्लाह अपने हुक्म से औरतों के विरुद्ध जो करता रहा है, भुगतेगा अब महूबबा के रूप में। प्रत्येक स्त्री के विरुद्ध व्यभिचार का आदेश सुना देता है ईश्वर। अब शहीद उसका चाल-चलन ठीक करेंगे।

जिस जेल में नसरीन रही, वहीं माहताब को पाँच वर्ष की कैद हुई। माहताब ने बताया नेक आचरण के कारण मुझे ढाई वर्ष की माफी मिल गई। जिस जेल के प्रबन्धक पुरुष हों, आपको पता ही है मैडम कि वहाँ नेक आचरण की माफी किन औरतों को मिलती है।

इन सारी घटनाओं को भूलने हेतु नफीसी लाईब्रेरी चली गई। किताबों की पंक्तियों की तरफ देखती देखती आगे बढ़ती गई। देखा इलियट की किताब *Four*

*Quartets* रखी है, उठा ली, आँखें बंद करके इस तरह खोली, जैसे वाक्य लेने के लिए हाफिज़ का दीवान खोला जाता है, बंद आँखों से जिस स्थान पर अंगुलि रखी, पंक्तियाँ थीं :

*At the still of the turning world*
*Neither flesh nor fleshness*
*Neither from nor onwards*
*At the still point, there the dance is (Burnt Norton)*

इंकलाब के बाद बहाईयों के कब्रिस्तान को बुलडोज़र से समतल बना दिया गया, कब्रों का कहीं कोई निशान शेष न रहा। इस स्थान पर पार्क बना कर उसका नाम बख़्तरान रखा। बहाईयों को जीवन जीने में किन किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, ये बात छोड़ो, मुर्दों का दफन भी मुसीबत बन गई। बादशाह रज़ा शाह पहलवी की कब्र को खोदकर, उस स्थान पर पब्लिक शौचालय बनाया गया जिसका उद्घाटन इंकलाब के रूहे रवां खुमीनी ने सबसे पहले पेशाब करके किया। युद्ध इसके बेटे मुहम्मद शाह के विरुद्ध था, किन्तु वह विदेश भाग गया और बाहर ही उसकी मृत्यु हुई, उसकी कब्र न सही, पिता की ही सही।

ईराक से शुरू हुए युद्ध ने ईरान को तबाह कर दिया जिसमें दो लाख ईरानियों की मौत हुई। इंकलाबी इस कारण निराश थे कि लड़ना तो देश के आन्तरिक दुश्मन से था, युद्ध हो गया ईराक विरुद्ध, जो ताकतवर था। जगह जगह पराजय सहनी पड़ी, बरबादी का मुँह देखना पड़ा। अंततः युद्ध रुकने पर खुमीनी का बयान आया, "शांति मेरे लिए ज़हर का प्याला पीने के समान है। योद्धा ये अनुभव कर रहे हैं जैसे पराजय का दूसरा नाम युद्धबंदी है।

खुमीनी की मृत्यु उपरान्त देश में 40 दिन के लिए व्यापक सरकारी शोक मनाया गया। स्त्री पुरुष विलाप करते हुए काफिले बनाकर गलियों बाज़ारों से गुज़र रहे थे। पाँच वर्षीय लड़की ने चौबारे की खिड़की से बाहर देखते हुए पूछाक्या हुआ? माँ ने जब बताया, उसने कहा गलत खबर है, यदि वह मर गया होता तो स्त्रियाँ बुर्का पहन कर बाहर क्यों निकलती?

मुसलमानों में विश्वास है कि महापुरुष की लाश पर लिपटी चादर का यदि एक छोटा टुकड़ा मिल जाए तो घर में सुख-शांति रहती है। ऐसा ही अजीब विश्वास मैंने सिक्खों में भी देखा है। आप्रेशन ब्लूस्टार बाद 1984 में मुझे फांसी चक्कियों में बंद रखा गया। ये छोटे छोटे सैल्ल (काल कोठरियाँ) उनके लिए हैं जिन्हें फांसी की सज़ा मिल चुकी हो। मुलाकात करने आए जिस व्यक्ति को पता चलता कि मैं काल

कोठरी में हूँ, तो वह कहता कि अगली बार मुलाकात करने आऊँगा कृपया फांसी वाले कुएँ की लकड़ियों में से एक छोटा टुकड़ा ले आना। लकड़ी काटने के लिए कोई कोई तो एक छोटा चाकू मेरी जेब में डालने की कोशिश करता, मैं इंकार कर देता। जब खुमीनी की लाश को दफनाने के लिए कब्रिस्तान में लाया गया तो कपड़े के एक टुकड़े को पाने के लिए भीड़ उस पर टूट पड़ी। पल में ही चादर उतर गई और ताबूत के बाहर खुमीनी की एक नंगी टांग लटकती दिखाई दी। तुरंत गार्ड ने काम संभाला, लाश हैलीकॉप्टर द्वारा वापस तहिरान ले गए और कफ़न पहना कर जब वापस कब्रिस्तान में आए तो खुमीनी के एक मित्र नतग नूरी हुजतुल्ल इसलाम ने हाथ में कोड़ा लिया जिससे वह कफ़न के समीप आने वाले लोगों को मारता। आखिर इस तरह रूहेला खुमीनी का अंतिम संस्कार हुआ। रूहेला खुमीनी मतलब ईश्वर की रूह। खुमीनी के बाद जब राष्ट्रपति का चुनाव हुआ तो आइतुल्ला खातमी ने इस चाबुक मास्टर को हरा दिया।

खुमीनी का जनाज़ा देखकर वापस आए टैक्सी ड्राईवर ने कहा धर्म के नाम पर कितने बड़े बड़े धोखे हो जाते हैं ये देखकर मैं हैरान हूँ, मुझे डर लगने लगा कि कहीं हमारे पैगम्बर और ईमाम भी ऐसे ही न हों। आकाश तक गूंजते नारे- ईमाम खुमीनी ज़िन्दाबाद। ये अफ़वाह उड़ी कि चांद में उसकी तस्वीर दिखाई देती है। समझदार लोग चांद में उसकी दाढ़ी मूँछ ढूंढ लेते। एक प्रोफैसर से नफीसी ने गुस्से से पूछा पता चला है कि तू भी तहिरान जनाज़े में शामिल हुआ था? उसने हँसकर कहा जीवन में एक बार तो अवसर मिला था बीबी। नाराज़ न हो। हर रोज़ तो उस जनाज़े का नज़ारा दिखाई नहीं देगा।

हैनरी जेमज़ ने लिखाहम अंधेरे में काम करते हैं, जो कर सकते हैं करते हैं, जो मिलता है, दे देते हैं, प्रत्येक संदेही वस्तु के लिए भावुक हैं, हमारे लिए भावना शिरोमणि है। इसके अतिरिक्त जो बचता है वह पागल हुनर है।

खुमीनी के बाद उसके दौर की यादें बचीं। कुछ विद्यार्थी उसके मुरीदों द्वारा किए गए अत्याचारों को भूल नहीं पाए। मुस्लिम विद्यार्थी एसोसिएशन के एक नेता ने अपनी सहपाठी लड़की की शिकायत की थी कि उसके सकार्फ के नीचे एक मांस का टुकड़ा ढका हुआ नहीं जिस कारण शिकायत कर्त्ता के मन में कामुक भावना उत्पन्न होती है। लड़की को सज़ा मिली क्योंकि शिकायत कर्त्ता लीडर था। वह लड़का ईराक युद्ध में शहीद हो गया। शहादत में भी ताकत नहीं कि लड़की के मांस के दिखाई देते टुकड़े वाली बात को भूल सकें। नफीसी के कुछ प्रश्नक्या इस लड़के ने कभी इश्क किया होगा? वह नेता बन गया, इंकलाबी हो गया, प्रतिष्ठित कमांडर

की उपाधि मिली,  शहीद हो गया, क्या कभी उसका मन नहीं करता था कि जिस लड़की के गले का मांस उसकी आँखें चुंधिया देता था उसका हाथ पकड़ कर बगीचे की सैर करे, गीत गाए, गीत सुने? शहीद होने की बजाए यदि वह आम लड़का होता तो अधिक सही नहीं था भला?

एक दिन दुःखदायी घटना घटी। यूनिवर्सिटी के एक विद्यार्थी ने अपने ऊपर तेल डालकर आग लगा ली और मर गया। वह युद्ध में लड़ने गया था। बूढ़ी माँ का इकलौता बेटा। माँ को पैसे भेजता। युद्ध समाप्ति पर यूनिवर्सिटी में पढ़ने लगा, किन्तु प्रसंगहीन हो गया। किसी को उसकी बहादुरी या युद्ध की बातों में रुचि नहीं थी। वह फालतू चीज़ बन कर रह गया। दो केन पेट्रोल के लेकर गेट से भीतर गया, गेटकीपरों ने रोका नहीं क्योंकि युद्धवीर को सभी जानते थे। एक खाली कमरे में गया। लपटों का बवंडर बना भागता हुआ बाहर आया, चीखता हुआ कह रहा था हमारे साथ धोखा हुआ, झूठ सुन रहे थे हम, देखो हमारे साथ क्या हुआ।

अस्पताल में उसकी मौत हो गई। न मातम का जुलुस, न भाषण, न श्रद्धांजलि, न गुलदस्ते, जैसे कुछ हुआ ही नहीं। न उसके इंकलाबी मित्रों ने कुछ कहा न विरोधियों ने। लाऊड स्पीकर पर ऐलान हुआ कक्षाएँ सामान्य दिनों की तरह ही लगेंगी। कक्षाएँ लगीं किन्तु सामान्य दिनों की तरह नहीं।

कक्षा में औरत के अधिकारों के बारे अकसर विचार-विमर्श होता। जस्सी ने कहा, मुसलमान के लिए नौ वर्षीय कुंवारी कन्या चाहिए। मन्ना बोली, क्यों, एक क्यों? बेशक, भूखा मरता हो चार का हकदार है। इसलाम उसका समर्थक है। नसरीन ने कहा चार क्यों? छोटे छोटे जितने चाहे निकाह करवा ले। दस मिनट से लेकर 99 वर्ष की अवधि तक को छोटा निकाह कहा जाता है। राष्ट्रपति रफसनजानी ने सुधार करते हुए घोषणा की कि ईरान में अस्थाई विवाह करने उचित हैं तो ईरान की प्रत्येक पार्टी ने इसका विरोध किया। स्त्रियों की अपेक्षा पुरुष अधिक विरोधी थे। बेशक शरा (धर्म) में इसकी व्यवस्था है, लोगों ने राष्ट्रपति से कहा तुम्हारे ये शरई सुधार वेश्यागामी नहीं तो और क्या हैं?

पुरुष किसी भी लड़की की तरफ इशारा करके कह सकता है मैं इस लड़की से  विवाह करवाना चाहता हूँ। लड़की को ये अधिकार नहीं। बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में लड़की के विवाह की आयु 9 वर्ष थी, बाद में 13 वर्ष की गई, उसके बाद 18 वर्ष। नफीसी की माँ ने अपनी पसंद के युवक से विवाह करने का फैसला किया था। जब देश में पहली संसद बनी, उसमें 6 औरतों का चयन किया गया, जिसमें नफीसी की माँ भी थी। माँ और अब्बू अकसर कहतेहम बादशाह के विरुद्ध

इस कारण युद्ध में शामिल हुए ताकि अधिक अधिकार और स्वतन्त्रता मिल सके। हमें क्या पता था पहले अधिकार भी छिन जाएँगे।

ईरान के संसदीय इतिहास में केवल दो औरतें केन्द्रीय केबनिट में वज़ीर बनी थीं। इंकलाब के बाद दोनों को मृत्यु की सज़ा सुनाई गई। एक, औरतों की खुशहाली के मंत्रालय की वज़ीर थी जो शाह के समय में देशनिर्वासित होकर पश्चिम में ईरानी औरतों के अधिकारों की वकालत करती रही थी, दूसरी नफीसी के स्कूल की प्रिंसीपल थी। दोनों पर काफिर होने और चरित्रहीनता का दोष लगाया गया। प्रिंसीपल को पत्थर मार मारकर मार दिया गया। नफीसी लिखती है शुक्र है अल्लाह का, जैसी ये दोनों औरतें थीं, हमारी बेटियों में आज भी वही ताकत और स्वाभिमान कायम है। एक दिन ये औरतें हमारी नायिकाएँ बनेंगी।

इस समय देश में 48 बच्चे जेलों में बंद हैं जिन्हें फांसी की सज़ा हो चुकी है। कानून अनुसार 18 वर्ष से कम आयु के बच्चे को फांसी नहीं दे सकते। कैदी, जब 18 वर्ष के होंगे उन्हें फांसी दे दी जाएगी। इनको राज्य पलटने का दोषी माना गया है।

उक्त सब कुछ जानने के बाद ईरान फिर भी सुन्दर है। जो वर्णित किया ये तो स्टेट है। स्टेट के का स्वभाव किसी को पता हो या न हो, सिक्खों को पता है। स्टालिन की वारदातें जानने के बाद रूस कब किसी को बुरा लगा? ये वही रूस है जिसने मुझे पाँचवी कक्षा में रूसी लोक कथाएँ (हिन्दी), पढ़ने के लिए अच्छी किताब दी। गज़ब की छपाई, गज़ब कागज़, चित्रों एवं जिल्द सहित पंजाबी भाषा में रूसी लोक कहानियाँ। रूसी साहित्य से मैं इस कारण परिचित हो सका क्योंकि कम पैसों में अच्छी किताबें मिल जाती थीं। रूसी किसानों और मज़दूरों का स्वभाव मुझे पंजाबियों जैसा लगता था। जिस ईरान में ताकतवर और धार्मिक बादशाह हुए, फकीर और शायर हुए, जहाँ की सूक्ष्म कला की संसार में मांग रही और आज तक है, वह बुरा कैसे हो सकता है? जिस स्थान पर सख्ती का दौर चला, वहाँ स्थान स्थान पर ईश्वर ने सूक्ष्म फूलों की वर्षा की।

ईरानी और भारतीय सम्बन्धों में वृद्धि होनी चाहिए। दिल्ली में स्थित ईरान कल्चर हाऊस बेजान और व्यर्थ पड़ा है, आवश्यकता है क्रियाशील होने की। ईरान कल्चर हाऊस से सूचना मांगो, खामोश, किताबें मंगवाओ उत्तर नहीं।

रिचर्ड फ्री ने अपनी किताब ***पर्शिआ*** में लिखा है "प्राचीन फारसी साहित्य लिखित रूप में दारा और उसके बेटे गिरगिस के शिलालेखों पर मिलता है। आकामनी हुकुमत की शान दिखाई देती है। अपनी रचनाओं में दारा बार बार ये शब्द

खुदवाता है "जो लिखवाया, सत्य लिखवाया। इसे सत्य मानना।" जैसे बता रहा हो मेरे शत्रु गप्पी हैं जो मुझे गप्पी कहेंगे जबकि मैं सच्चा हूँ। रचना से प्रतीत होता है जैसे पूरा गप्पी है। फिर इंसान सोचता है कि गप्प लिखवाने के लिए पत्थरों पर इतनी मेहनत कौन करता? बाद के कजर हुकुमत के शिलालेखों के शब्द सुन्दर हैं, शब्द चयन अद्भुत है, निपुणों का काम सराहनीय है क्योंकि लिखित सामग्री गप्प है। अवेस्ता धर्म ग्रन्थों के मन्त्रों का भी जो चाहे अर्थ निकाल लो, विपरीत अर्थ भी निकल आते हैं। यही हाल शायरों का है। लड़की की बात करते समय कहेंगे ईश्वर बारे बात कर रहे हैं। शेयर, शराब और जाम के हैं, कहेंगे नाम सिमरन की बात हो रही है। पुराने शायर कथाकार हैं, बादशाहों के प्रशंसक, फिर सूफी आए, कामचोर, सुस्त, नशेड़ी, फिर आधुनिक शायर आए, रोमांटिक, बेशर्म। तीनों श्रेणियों ने कल्चर को बरबाद किया, किन्तु तीनों प्रकार का साहित्य दुनिया में पठनीय है। बेशक चार पाँच पीढ़ियों से विदेश में रह रहे हों कहेंगे हम ईरानी हैं। बेशक भ्रष्ट हों, गरीब हों, बादशाहों के गुलाम रहे हों, कहेंगे यही हम धनी ईरानी हैं। ईरान का साहित्य, कला भवन निर्माण और इतिहास, प्रत्येक चीज़ अमीर है।"

ईरान को मेरा सलाम।

## लाली का चौगिर्दा

मित्रों ने कहालाली के बारे लिखूं। खाली दिमाग और खाली आँखों से इधर उधर देखने लगता। मैं उसके बारें क्या लिखूं? जिसे मैं जानता नहीं उसके बारे में क्या लिख पाऊँगा? लोग पृष्ठों पर पृष्ठ ईश्वर के विषय में लिख रहे है, ईश्वर के विषय में लिखने हेतु कोई गुरू नानक चाहिए, कोई टैगोर चाहिए। इन दो महान् लोगों के नाम इसलिए यहाँ लिए क्योंकि ये वो शख़्स हैं जो ईश्वर से झगड़ा करते थे। झगड़ते उससे है जो आपका अपना है। मैं राजाओं और युद्धों की बात नहीं कर रहा, ये उनकी तरफ संकेत है जिनके कदम छूने हेतु बादशाहों की लम्बी लाईन लगी हो। जो समझदार मित्र कह रहे थे लिखो, वह आशान्वित थे। उनसे अधिक कई समझदार लोगों ने कहा बिल्कुल न लिखना। उसमें से कुछ नहीं मिलेगा, व्यर्थ समय नष्ट करोगे, कुछ और लिख ले।

हुआ ये कि 11 अप्रैल 2004 को मेरी एक छोटी सी रचना *पंजाबी* में प्रकाशित हुई जिसमें मैंने लाली का, उसके घर का और उसके पिता का वर्णन किया था। वर्ष 1968 में जब दसवीं कक्षा पास करके, महेन्द्रा कॉलेज में दाखिला लेकर, प्री-मैडीकल करके डॉक्टर बनने का निर्णय किया, तब मेरी जेब में चवन्नी भी नहीं थी। मैं लाली के पटियाला बहेड़ा रोड पर बने मकान के तबेले में डेरा जमा कर बैठ गया और पढ़ना शुरू किया। पन्द्रह वर्षीय ये लड़का देखता, लाली के साथ राज़दां आ रहा है, सोमपाल रंचन आ रहा है, सुरजीत पात्र, नूर, शिव कुमार... अर्थात् सभी के सभी अजूबे। पहली बार एल.पी मशीन चलती देखी, पहली बार टेपरिकार्डर पर स्पूल घूमते देखे... दूर से।

मेरी इस रचना को पढ़ने के बाद अनेक लोगों को लगने लगा कि लिख सकता है ये लाली के बारे में किन्तु लिखता नहीं। इसलिए लिखने के लिए मनाने लगे।

टैगोर के वाक्यों ने सहारा दिया। *चोखेर बाली* की भूमिका में लिखते हैं, "*बंग दर्शन* का सम्पादक श्री चन्द्र बार बार लम्बी कहानी लिखने की मांग कर रहा था, इसे क्रम में प्रकाशित करेंगे, पत्रिका के रविवार के दिन के सैक्शन में। टूटे हुए तारों के समान छोटी कहानियों की तो वर्षा होती रही, लम्बी कहानी (उपन्यास) लिखी नहीं थी। जब वह नहीं माना, तो मैंने स्वीकृति दे दी। वह तो खुशी खुशी चला गया, मैं बेचैन हो गया, सोचता रहा क्या करूँ। मैंने स्वयं से कहा दिल की भट्ठी में आग जला, लोहा तपा, फिर हथौड़े से प्रहार करता रह, खुद ही कोई न कोई आकृति प्रकट होगी। यही है आपकी चोखेर बाली।"

सम्भव है कुछ बात बन पाए। किन्तु क्योंकि पाठकों को गुमराह करना मेरा स्वभाव नहीं है, मेरी यादों, मन पर पड़े प्रभावों में लाली अनुपस्थित है, उसका पिता उपस्थित है, इसलिए अधिक बातें उसके पिता के बारें होंगी। किन्तु यह भी जानने की एक विधा है, पिता में से शायद पुत्र दिखाई दे जाए। उपनिषद् में उदालक अपने पुत्र श्वेतकेतु से कहता हैतू सोने से बनी वस्तुओं का निरीक्षण परीक्षण करके सोने के बारे में जानना चाहता है। इसके विपरीत चल, तू केवल सोने को जानने का प्रयास कर, उससे

निर्मित वस्तुओं का ज्ञान स्वयं हो जाएगा। ब्रह्म के विभिन्न रूपों में द्रष्ट्व्य वस्तुओं को जानने की अपेक्षा ब्रह्म को जान, कुदरत का बोध स्वयं हो जाएगा।

लाली के घर पहुँचने की दास्तान। मेरा बड़ा भाई गुरदयाल सिंघ दसवीं कक्षा में बहुत अच्छे अंक लेकर पास हुआ, मैरिट में उसका नाम आया, आगे पढ़ने के लिए पैसे नहीं थे, इसलिए एयर फोर्स में सिपाही भर्ती हो गया। यह बात 1958 की है जब वह मुझे पहली कक्षा में दाखिल करवा कर चला गया। मुझसे कहा यदि दसवीं में मुझसे अधि ाक अंक प्राप्त किए तो तुझे कॉलेज में दाखिल करवा दूंगा। मैं रट्टा लगाने में निपुण था, अभी भी हूँ। मुझे पांचवी में पता चला गया था कि मेरा दिमाग मध्यम स्तर का है, रट्टा लगा और अपना काम सिद्ध कर, नहीं तो फेल हो जाऊँगा। आठवीं की मैरिट लिस्ट आई, मुझे आठ रूपये महीने का वजीफा मिला, फीस माफ। दसवीं का परिणाम आया तो भाई से बहुत अधिक अंक मिले थे। छुट्टी पर घर आए, मैंने खुशी खुशी अंक कार्ड दिखाया। शाबाश मिली तो मैंने कहाचलो अब पटियाला दाखिल करवा दो। उसने हँसते हुए कहाकहाँ हैं पैसे? तुझे एयर फोर्स में भर्ती करवाने आया हूँ। मुझे बहुत दुःख हुआ, गुस्से से कहा तो पहले वायदा क्यों किया था? हँसते हुए कहा वायदा करने के कारण ही तू इतने अंक ले आया नहीं तो तूने इतना कब पढ़ना था। मारे गए। भर्ती अम्बाला में होती थी। सर्टीफिकेट लेकर गाँव से अम्बाला की तरफ चल पड़े। बस चार घंटे लगाती थी। मैं बैठ गयासोचता रहा, भाई ने प्राईवेट इंग्लिश की एम.ए कर ली है। मैं भी पढ़ना छोड़ूगा नहीं। बहुत मेहनत करूँगा। युद्ध होंगे तो बहादुरी से युद्ध करूँगा। यदि मर गया तो भी ठीक है, ऐसा जीवन कोई जीवन है? यदि बच गया तो उन्नति करता हुआ एयर मार्शल की पदवी से रिटायर होऊँगा। एयर मार्शल मैं पन्द्रह मिनट में ही बन गया, फिर मैं वो भाषण तैयार करने लगा जो मैंने रिटायर होने पर देना था। उस समय फुर्सत नहीं होगी अभी खाली बैठा हूँ। मैंने पूरा भाषण तैयार करके मौखिक याद कर लिया, आज तक याद है किन्तु अब वह किसी काम का नहीं। अब प्रोफैसर रिटायर होऊँगा, वही भाषण तैयार करना है।

अंग्रेज़ी और गणित का टैस्ट हुआ। कद, भार का माप लिया। सब कुछ ठीक। अफ़सर ने कहा फिट है। लाओ सर्टीफिकेट दिखाओ। मैंने काग़ज मेज़ पर रख दिए। देखो। अफ़सर ने कहा तेरी उम्र तो पन्द्रह वर्ष की है, सत्रह होनी चाहिए उम्र। जाओ, दो वर्ष बाद आना। बड़े भाई से पूछा अब क्या करूँ? उसने कहा दो वर्ष तक पिता के साथ खेती कर, और क्या करना है? मैंने बहुत कहा तब तक मैं ये भी भूल जाऊँगा जो पढ़ा है। किन्तु उस समय अन्य कोई उपाय नहीं था।

मैंने हार नहीं मानी। लाली के पिता थे सरदार गुरनाम सिंघ। उनकी हवेली जाने की दास्तान आप पहले निबन्ध में पढ़ चुके हैं। मामा उसे चाचा बुलाता था। इसलिए मैंने उन्हें नाना कहना शुरू कर दिया। जब काम बताया तो कोठी के बाहर तबेले की तरफ इशारा करते हुए कहाये उठा चारपाई और वहाँ रख ले। नौकर-चाकर यहाँ कोई नहीं

है। साफ करके डेरा जमा ले। मामा को ये बात अच्छी नहीं लगी, कहा चाचा ये कमरे बंद रहते हैं, इनमें से दे दे एक कमरा भानजे को? सरदार ने कहा लाली का विवाह हो गया है। अब तो यहाँ आतें समय मैं भी दुविधाग्रस्त होता हूँ। कहीं मुझे ही यहाँ रहने के लिए मना न कर दें। नए ज़माने का तुझे नहीं पता राम सिंघ। मैंने हौसला करते हुए एक आज्ञा और मांगी नाना जी मुझे पता चला है कि ये हवेली बंद रहती है। मेरा अकेले का मन नहीं लगेगा। गाँव से अपने एक मित्र को ले आऊँ? आप समझ लेना कि रखवाली के लिए एक की जगह दो पहरेदार मिल गए, मुफ्त में। उसने हँसते हुए कहा काका यदि कोई लड़का पढ़ाई में होशियार है तो ले आ। नेक बनकर रहना होगा यहाँ।

हम तीनों पैदल पटियाला बस स्टैंड पहुँच गए। सरदार अपने गाँव फतहगढ़, लहरागागा के समीप संगरूर ज़िले की तरफ और मामा जी अपने गाँव की बस में चढ़ गए। मैं अपने गाँव आ गया। मिस्त्रियों का लड़का अजीत मेरा स्कूल सहपाठी था। हमने एक साथ ही दसवीं पास की। पढ़ने में मुझसे कम था। पिता के साथ शाह के आरे पर काम करने लगा। उसे एक तरफ ले जाकर धीरे से सारी बात बताई कि मुफ्त रहने के लिए छत्त मिल गई, चल अब दाखिला लेते हैं। उसने कहा ये उठा साईकल, मेरे गाँव अतालां जा, माँ से बात कर। यहाँ से अब तू दफा हो, पिता समझ रहा है तू काम में बाध ा पहुँचाने आया है, बातें करने।

मैं गाँव गया, माँ ने तो मानना ही था, कहा पिता को मनाने की कोशिश करूँगी, उम्मीद कम ही है, परन्तु देखते हैं क्या बनता है। कल अजीत तुझे बता देगा। मैंने कहाएक बार की फीस भर दो। छह महीने की फीस 83 रूपये है। उसके बाद हम माफ करवा लेंगे, साथ ही टयूशन भी पढ़ाएँगे। खुश होकर अजीत ने अगले दिन बताया कि चलेंगे। मुश्किल बहुत आई, किन्तु आखिर पिता को मना लिया। वह यही कह रहा था मुझे मुश्किल से सहारा मिला था काम में सहायता करने के लिए, अब वह भी जा रहा है।

बस मैं बैठकर राजिन्द्रा अस्पताल की चुंगी पर उतर गए। रिक्शा चालक से बहेड़ा रोड चलने के लिए कहा, उसने अठन्नी मांगी। अजीत ने कहा मैं चला लेता हूँ, तू पीछे बैठ, चवन्नी देंगे। रिक्शाचालक ने हँसते हुए कहा रिक्शा चलाना कोई खेल नहीं। किन्तु चलो अठन्नी ही सही। हम अपने स्वप्न देश में पहुँच गए। दूसरी बार जब वह गाँव में गया तो अपना साईकल ले आया, दोनों के पास एक साईकल था। मैंने मैडीकल में दाखिला लिया और अजीत ने आर्टस में। पहली बार महेन्द्रा कॉलेज देखा तो ऐसा लगा, यहाँ दाखिला लेने वाला महान् होता है बेशक जेब में अठन्नी भी न हों।

लाली का ससुराल परिवार पटियाला में था। अपनी पत्नी के साथ तो बहेड़ा रोड कम ही आता था, मित्रों के साथ ही अधिक दिखाई देता था। सरदार गाँव में रहता, कभी कभी महीने दो महीने बाद दो चार दिन रहकर वापस आ जाता। पटियाला के समीप नाभा रोड पर छह एकड़ ज़मीन थी। लैंड सीलिंग एक्ट से पहले सारा गाँव फतहगढ़ उसी

का था परन्तु सीलिंग के पश्चात् उसकी कीमत कम करके 200 एकड़ बचा ली थी। गाँव की हवेली किला थी, ऊँचे स्थान पर बना एक किला। हम पटियाला में स्वयं ही रोटी बनाते। दाल या सब्जी, जो सुबह खाते वही शाम को। दिन ऐसे ही बीतता। इस तबेले की खुरली में हमने मिट्टी डाल दी। उसके ऊपर एक सतह ईंटों की बनाकर, अख़बार से उसे ढक दिया। यही था हमारा कुकिंग रेंज, यही डाईनिंग टेबल। एक स्टोव, चार कटोरियाँ, चार गिलास, अजीत हँसते हुए कहतासमाजवाद आ गया। भैंसो और इंसानों का डाईनिंग टेबल एक ही। आर्थिक समानता।

सुरजीत पात्र के शब्दों में उसका 'पिछले जन्म' का नाम हरदिलजीत सिंघ सिद्धू था, बड़े जागीरदार का बेटा, किन्तु अपने राजपाट का त्याग करके निकला आज का सिद्धार्थ। अंग्रेज़ी की एम.ए, करके दिल्ली दक्षिण घूम चुका था। मुम्बई से महानगर को भी जान चुका था और कलकत्ता विश्वविद्यालय में बंगाली विद्वानों के साथ गोष्ठियों में संवाद कर चुका था। अध्यापिका डॉ. दलीप कौर टिवाणा अपने परिवार का सदस्य ही मानती थीं। उन्होंने हमें स्नेह और अपनत्व की भावना से भर दिया। उनका स्वभाव स्नेह और अपनत्व से पूर्ण था। उन्होंने ही मुझे लाली से मिलवाया था; लाली, ये सुरजीत है, मेरा विद्यार्थी, ये भी आपके इलाके का है। एक शाम को लाली कहने लगा चल कवि, शहर चलते हैं। पटियाला शहर विश्वविद्यालय से सात किलोमीटर दूरी पर है। पात्र ने कहा लाली जी, पैदल ही। कहने लगा नहीं, कथा पर सवार होकर चलेंगे। उस दिन के बाद कभी पैर धरती पर नहीं टिके। हमेशा कथा पर सवार रहा। संसार में महान् पुस्तकें पढ़ने में दिन रात व्यस्त, मग्न, उपन्यास कहानियों के पात्रों को जैसे साथ साथ लिए घूमते रहते। विश्वसाहित्य से कम की बात नहीं करते थे। लोरका, सोफ़ोकलीज़, सार्त्र, कामू, वहाँ ऐसे थे जैसे कपूरथला में बावा बलवंत, हरभजन सिंघ, शिवकुमार, मीशा होते थे।

ब्रैखत, नेरूदा, पाज़ पहले लाईब्रेरियों में नहीं मिले, पात्र को पटियाला की गलियों, बाजारों में लाली के साथ घूमते हुए मिले। लाली दिन रात उपन्यासकारों के पात्रों और कवियों के बिम्बों के मध्य में ही विचरण करता। उसका प्रत्येक वाक्य कविता, बौद्धिकता या हास्य से जागता। उसके साथ चलने का अभिप्राय था कल्पना की गलियों में से निकलना जहाँ स्वप्न, वास्तविकता, देश विदेश सभी साथ रहते। वह कभी भी कहीं भी धूनी जला लेता, कहीं चिता जगा लेता और पात्रों और गाथाओं को प्रकट करता। वह अपनी बातों से दोपहर को शाम में, शाम को गहरी अंधेरी रातों में और रातों को सुबह में बदल देता।

एक बार पात्र के पास मोहनजीत आया हुआ था; होस्टल के कमरे में रात को 11 बजे लाईट बंद कर रजाईयाँ ओढ़ी ही थीं तभी दरवाज़े पर दस्तक हुई और आवाज़ आई क्यों भाई? कब्रों में लेटने लगे हो, अरे कब्रें तो बीस वर्ष गहरी हो गईं। कब्रों पर कोई दीया जला दें...। लाईट चलाई, दरवाज़ा खोला, लाली साहिब खड़े थे स्टोव जला कवि, गर्म पानी रख, अलख जगायें, बहुत उदास है रात।

रखो मज़ार पर कुछ दीये ये टूटे हुए

इन्हीं से काम चलाओ, बहुत उदास है रात।

ये 1967 की बात है शायद। उस समय देश विभाजन को बीस वर्ष हो चुके थे, 20 वर्ष गहरी कब्रों का संकेत यही था। फ़िराक गोरखपुरी की उदास रात से शुरू हुई लाली की बात सुखबीर की रात के चेहरे तक पहुँच गई, वहाँ से गुलज़ार की **चतुर्भुज चौरस** रात तक, गुलज़ार से बात होते होते मुम्बई फिल्म उद्योग की तरफ मुड़ने लगी किन्तु रास्ते में लाहौर आ गया, लाहौर की पंजाबी फिल्में आ गईं, पुनः एक बार 20 वर्ष गहरी कब्रों के पास से मुम्बई गुज़री, फिर कुछ देर गुलज़ार के गले लगने के बाद मीना कुमारी की तरफ रुख किया, मीना कुमारी से मधुबाला, मधुबाला से मैरेलिन मनरो, मनरो से अमेरिका की फिल्मों, फिल्मों से चार्ली चैपलिन, चार्ली चैपलिन से उस फिल्म की *ग्रेट डिक्टेटर*, ग्लोब को फुटबाल बनाकर खेल रहे हिटलर, वही फुटबाल उड़ा, होस्टल के ऊपर से, पूर्व में सूर्य बनकर उदित हुआ, ऐसे हुई सुबह, लाली ने, कथा के उड़न खटोले पर सवार करके पता नहीं एक रात में कौन कौन से संसार दिखाए। एक शाम वह नीतशे की प्रसिद्ध पुस्तक *दस स्पेक जरदुश्त* का उर्दू अनुवाद लेकर आयाः *जरदुश्त ने कहा था,* तीन रातों में उसका समस्त अनुवाद पढ़कर सुनाया। लाली की सृजना शक्ति, चेतना, उत्तर देने की कला अद्‌भुत थी। वह अपनी बातों से त्रिकाल दर्शन करवा देता। इतिहास, मिथ्यास, महानगरों, महाकाव्यों, ब्रह्माण्ड, एक क्षण का विराट रूप...।

लाली को एक बार पात्र ने पूछा आप कुछ लिखते क्यों नहीं?

- मैं कैसे लिखूं, मेरे एक तरफ बुल्लेशाह खड़ा रहता है कहता है दिखा क्या लिखा है? दूसरी तरफ गुरू बाबे खड़े हैं।

लाली का एक मामा बहुत पढ़ा लिखा था, उसके एक हाथ में जाम होता एक में पुस्तक। जब लाली बी.ए में पढ़ता था एक कहानी लिखी, उसे दिखाने गया। पढ़कर कहा जब दॉस्तवस्की जैसा कुछ लिख पाया तब मेरे पास आना।

एक शाम लाली, पात्र को प्रो. राज़दां के घर ले गया, नई नई पुस्तकों से सजा घर, स्नेहमयी निर्मल हँसती आँखों वाला चंचल और पवित्र हँसी वाला राज़दां, कांच के गिलासों में स्वर्णमयी पागल पानी, पानी की भंवर के समान घूम रहीं एल.पी यहूदी धुनें (ज्युइश मैलोडीज़), आँखे बंद करके उन धुनों को सुनने लगे तो अजीब दृश्यों में अनुवादित होने लगीं।

हमने पढ़ने लिखने का काम शुरू कर दिया था, दो महीने बाद लाली का पिता गाँव से आया। पूछा कैसे हो लड़को? हमने कहा ठीक हैं जी। फिर पूछा पटियाला देखा? हमने हाँ में सिर हिलाया। - क्या क्या देखा? उत्तर "माल रोड, बारादरी बाग, किला मुबारक, अदालत बाज़ार, मोती महल। फिल्म नहीं देखी। ये अच्छी चीज़ नहीं होती।" "मुझे पता था यही उत्तर होगा। पास होने के लिए जितने अंक चाहिए नहीं मिले तुम्हें। जिसे तुम लोगों ने पटियाला समझा, ये तो वो स्थान है जहाँ पटियाला रहता है। कुछ दिन रहूंगा तुम लोगों के पास। पटियाला दिखाऊँगा। ठीक है? हमने हाँ कर दी। कहातुम्हें दिखाऊँगा

राज़दां, बेदार, दलीप टिवाणा, विश्वनाथ तिवारी, गुलवंत सिंघ, गण्डा सिंघ, प्रीतम सिंघ। मिलेंगे उस्ताद बाकिर हुसैन से, कुंवर मृगेन्द्र सिंघ को, महाराजा यादविन्द्र सिंघ को, लाल चंद यमला और हरपाल टिवाणा को। भलवान केसर सिंघ की हवेली में जाएँगे। एक शायर है कुलवंत गरेवाल। एक जोगिन्द सिंघ है, उसके जैसी हीर कोई नहीं गा सकता, उसका नाम ही जोगिन्द्र हीर रख दिया है। सुना है ये नाम कभी? किसी का नाम नहीं सुना था मैडम टिवाणा के अतिरिक्त, जिनकी कहानी *बस कण्डक्टर* दसवीं कक्षा के पाठ्यक्रम में थी। उन्होंने एक और फैसला सुनाया रिक्शा, तांगे या बस की सवारी करने नहीं दूंगा। पैदल चलना होगा, तब पटियाला मिलेगा धीरे धीरे, मंजूर है? गूंगों बहरों की तरह हाँ में सिर हिलाते गए। 25-30 किलोमीटर पैदल चलना उसके लिए आम बात थी। जब एक गाँव से दूसरे गाँव जाता, नौकर, कुत्ता और घोड़ा उसके साथ होते। सवारी नहीं करता था, कहता जब थक गया तब सवारी करूँगा। थकता था नहीं। मैंने उसे कभी घोड़े पर सवार नहीं देखा। आगे आगे जा रहा है, बाकी सभी पीछे पीछे।

उस समय बहुत ही सुन्दर प्रतीत होता, आज भी कभी कभी महेन्द्रा कॉलेज की तीर्थयात्रा करने का मन करता है। खरड़ के विधायक स्वर्गीय सरदार विचित्र सिंघ 1985 में मेरे घर आए, चाय पानी के बाद कहा महेन्द्रा कॉलेज चलना है। मैं उनके साथ कार में बैठ गया। कॉलेज पहुँचे तब याद आया आज तो छुट्टी है। उन्होंने कहा तभी तो आया हूँ कि आज छुट्टी है। अध्यापक, विद्यार्थी नहीं देखने, कॉलेज देखना है। शुक्र है छुट्टी के दिन कॉलेज कहीं नहीं जाता। मैं यहाँ पढ़ा हूँ। आपने मुझे जेल में बताया था आप इसी कॉलेज के विद्यार्थी थे। आओ एक चक्कर लगाएँ।

मैंने सरदार से पूछा आप भी महेन्द्रा कॉलेज में पढ़े हो? जोर से हँसते हुए कहा "अरे, ये कॉलेज बनाया है किसी ने? ये तो स्कूल होता था बाहरवीं कक्षा तक। एक दिन सरकारी पत्र आया कि आगे से इसे स्कूल नहीं कॉलेज कहा जाए। ऐसे कहने से, एक पत्र से स्कूल कॉलेज बन जाता है? चीफज़ कॉलेज लाहौर में पढ़ा हूँ। अन्दर आओ। ये दिखाई दे रही हैं ट्राफियाँ, कप और शील्डों की पंक्तियाँ? बताओ, शैल्फ पर कोई जगह खाली है कहीं? विद्वता का कभी दावा नहीं किया। खेलने में बहुत रुचि थी, इसलिए हॉकी का कप्तान बना। जहाँ खेलने जाते, जब पता चलता कि फतहगढ़ीए से टक्कर है, बुखार चढ़ जाता था दूसरों को।

टीम की तस्वीर देखी। महाराजा यादविन्द्र सिंघ बैठे थे। मैंने पूछा अच्छे खिलाड़ी थे महाराजा? हँसकर कहा ठीक थे, टीम में शामिल कर लेते थे, फस्ट कलास ट्रेन की टिकटें मिल जाएँगी, उनके कारण आलीशान होटलों में रहने की व्यवस्था हो जाती थी।

वह जब हँसता तो ऐसा लगता जैसे झरना बह रहा हो। ये शब्द लिखते समय मुझे चैखव का *वानका* याद आ गया। अपने बाबा जी को ख़त में लिखे वाक्य हैं, "बाबा तू जब जंगल में क्रिसमिस ट्री के लिए जाता, मैं भी तेरे साथ ही चलता। पेड़ काटते समय

जब मुझे ठण्ड से कांपते देखता तो तू बहुत हँसता, तेरे साथ सारा जंगल हँसने लगता।"

घुमावदार तार से बनी कुर्सी पर बैठे बातें करते देख मैं सोचा करता महाराजा रणजीत सिंघ की दोनों आँखें ठीक रहतीं, यदि चेहरे पर चेचक के दाग न होते तो बिल्कुल ऐसा ही होता। आँखें मशालों की तरह चमकतीं। ये नहीं कि उसे गुस्सा नहीं आता था। गुस्से में स्वयं को बुरा-भला कहता, जिस पर क्रोधित होता, उसे नहीं।

पाठको, मेरी पृष्ठभूमि और इस सरदार की पृष्ठभूमि देख कर आपके मन में विचार उत्पन्न हो सकता है कि हम उससे डरते थे। कभी नहीं। मेरे पिता जी हमें डांट-डपट भी देते, थप्पड़ भी मारते थे। सरदार से डरना तो क्या अपितु हम उसके घर में स्वयं को सुरक्षित महसूस करते थे। मेरी कक्षा का एक लड़का जो कक्षा में वोटों के समय मुझसे हार गया, मुझे आँखें दिखाने लगा। एक दिन मैंने उसे मनाया और सरदार की हवेली में ले जाकर चाय पिलाई। उसका गाँव संगतपुरा था, सरदार के गाँव से दो किलोमीटर की दूरी पर। सरदार ने लड़के से पिता का नाम पूछा, उसने बता दिया। सरदार ने कहा काका अपने पिता से कहना उसे फतहगढिया याद करता है। मिलने क्यों नहीं आता? उससे पूछना मेरे साथ उसकी कैसी दोस्ती थी। बस, इतनी सी बात, तेजा सिंघ हमेशा के लिए तेरा मित्र बन गया।

एक दिन कहा बहुत शोर मचा रखा है बच्चों ने कि लाली बहुत होशियार है, इसके जैसा विद्वान् नहीं है कोई। मुझे इसके द्वारा लिखा, छपा हुआ कोई पृष्ठ तो दिखाओ जिसके कारण ये हलचल उत्पन्न हुई। दिखावा करते हैं ये आजकल के लड़के। मैं तो कहता हूँ कि छोड़ दे किताबों का ये जंजाल। जीप लेकर दे देता हूँ। कुत्ते रखे शान से। पाँच-चार बंदूकधारी अपने साथ बिठा लिया करे। शराब वगैरह पी लिया कर। थोड़ी बहुत अक्ल आ जाए इसे। जहाँ से गुज़रे, लोग कहें तो सही, ये जा रहा है फतहगढ़िये सरदार का बेटा लाली।

लैक्चरार की पदवी हेतु अर्ज़ी देने वालों में लाली भी था। दफ्तर ने वाईस-चांसलर कृपाल सिंघ नारंग को बताया हरदिलजीत सिंघ सिधू (लाली) इस पदवी हेतु योग्य नहीं है। नारंग ने कहा क्या फर्क पड़ता है, हमने कौन सा उसे रखना है, ऐसे ही शोर मचाएगा कि इंटरव्यू के लिए नहीं बुलाया। बुला लो। अंग्रेज़ी का एक्सपर्ट खुशवंत सिंघ था। लाली का नम्बर आया। जब शुरू हो जाता तब रूकता कब था? अकेला अंग्रेज़ी साहित्य हीं नहीं, जर्मन, फ्रांसीसी, रूसी साहित्य, केवल साहित्य ही नहीं, चित्रकारी, संगीत, लोकगीत। नारंग का विचार था आएगा चक्कर लगाकर चला जाएगा। जब निर्णय लिया गया तो विद्वानों ने कहा हरदिलजीत। नारंग ने कहा इसकी शैक्षिक योग्यता पूरी नहीं। खुशवंत सिंघ ने कहा अंग्रेज़ी का व्यक्ति रखना है न, जहाँ खुशवंत सिंघ हस्ताक्षर करेगा, योग्य माना जाएगा। लाओ फाईल, हस्ताक्षर करें। लाली को नियुक्त किया गया, किसी ने कोर्ट कचहरी का दरवाजा नहीं खटखटाया।का सहारा नहीं लिया।

मैं हरजीत गिल्ल से मिलने गया। गिल्ल साहिब उस वक्त लाली के विभाग के

अध्यक्ष थे। ये बात बताई, हँस कर कहा लाली के बारे में दंतकथाएँ प्रचलित हैं। नौकरी लेते समय उसके सामने कोई कठिनाई नहीं आई। योग्यता पूरी नहीं थी, किन्तु नारंग ने विरोध नहीं किया। सुरजीत ली, जोगिन्द्र पुआर और भूपेन्द्र सिंघ योग्यताएँ पूरी करते थे, इन्हें बहुत मुश्किलों का सामना करना पड़ा। नारंग अनुसार ये पक्के नक्सलवादी थे, बहुत ही खतरनाक। ऐडहाक नौकरी 6 महीने के लिए दी जाती है, इन्हें तीन महीने से अधिक नियुक्ति पत्र नहीं मिलते थे। क्योंकि लाली कम्यूनिस्ट नहीं था उसे बहुत सरलता से नौकरी मिल गई।

लाली ज्वाईनिंग रिपोर्ट देने गया, गिल्ल से कहा किसी को बताना मत कि लाली नौकर लग गया है। मेरे भाईचारे में मेरी बदनामी हो जाएगी, मालिक नौकर बन जाए, ये शर्मनाक बात है।

गिल्ल ने कहा मैं क्यों बताऊँगा किसी को?

लाली किन्तु मुझे प्रतिदिन सुबह आकर उपस्थिति लगाकर चार बजे तक बैठना होगा। पता तो चल ही जाएगा।

गिल्ल तुम पर कोई पाबन्दी नहीं। तुम्हें कोई नौकर नहीं समझेगा, कोई भी वाईस-चांसलर हो, वह तुम्हें रोकेगा टोकेगा नहीं।

इस प्रकार लाली सारी उम्र मालिक बना रहा।

लाली से मिलने आया एक लड़का गिल्ल के कमरे में गया, पूछा लाली कहाँ है? गिल्ल ने कहा यदि तू लाली को जानता है तो तुझे पता होना चाहिए वह इस समय कहाँ है, यदि नहीं जानता, तो मिलकर क्या करेगा?

डॉ. भगत सिंघ वाईस चांसलर के पास किसी ने लाली के विरुद्ध चुगली की, कहा, काम नहीं करता, कक्षा में नहीं जाता, वृक्ष के नीचे बैठा व्यर्थ बातें करता रहता है सारा दिन। उसे समझाओ। भगत सिंघ ने कहा तू भी लाली की कक्षा में कभी कभी बैठ जाया कर, तुझे भी अक्ल आ जाएगी। लाली जहाँ बैठा है, वही कक्षा है। लाली विश्वविद्यालय के लिए नहीं बना बल्कि उसके लिए विश्वविद्यालय बना है।

हरजीत गिल्ल के पास किसी ने शिकायत की लाली और सुरजीत ली सारा दिन कॉफी हाऊस में बैठकर बातें करते हैं और घर चले जाते हैं। आप विभाग में बैठकर काम करने के लिए क्यों नहीं कहते? गिल्ल ने कहा मर जाने दे इन्हें चाय चाय पी पी कर। यहाँ बैठकर कौन सा काम करेंगे, मुझे भी नहीं करने देंगे। मेरा मन तो करता है दस मील की दूरी पर होना चाहिए कॉफी हाऊस, आते जाते ही खत्म हो जाएं ये।

सरदार जब आता तो हम बहुत अच्छी दाल सब्ज़ी बनाते, वह कहता क्यों, चटनी में घी डालकर रोटी नहीं खा सकते क्या? गुड़ के साथ निवाला गले से नीचे नहीं उतरता? नाभा रोड पर जो खेत था उसमें गन्ना बीजा हुआ था। कटाई करने वालों ने 20-22 किलो गुड़ का थैला भेजा, वह हमें दे दिया। किसी से कहा दो किलो घी दे जाओ, वह घी हमें दे दिया। एक रिटायर मास्टर मिलने आया। उसे कहा मास्टर जी ये लड़के

बहुत मेहनती हैं, नेक हैं। बेशक दसवीं कक्षा की लड़कियों को टयूशन पढ़ने के लिए लगा दो इनके पास। मुझे दो लड़कियों को पढ़ाने हेतु माई की सराय के समीप एक घर में ले गया। लड़कियों के माता-पिता बहुत सम्मान करते थे, लड़कों की टयूशन से अधिक पैसे देते। लड़कियाँ कहना मानती थीं, जो भी पाठ याद करने के लिए देता था अगले दिन याद होता। लड़के अधिकतर बेपरवाह होते।

राज़दां, रंचन और लाली तीनों अंग्रेज़ी के अध्यापक थे। विश्व साहित्य पर घंटों संगोष्ठि होती। रंचन बाद में फुलब्राईट प्रोफैसर भी बना। हम उनके लिए चाय, शिंकजवी, जो भी कहते बना देते, भूख लगती तो जग में दाल फ्राई और लिफाफे में ढाबे से रोटियाँ ले आते, इस बात से क्या लेना देना कि हमारे पास पैसे नहीं। पैंटे कमीज़े खूंटियों पर लटक रही होतीं, जिस जेब में से मन करता पैसे निकाल लेते। किसकी जेब थी जिसमें से आज डिनर आया है? पता नहीं। इतना ध्यान अवश्य रखते, जिस जेब से पैसे निकाले हैं बकाया उसी में रखना है। न्याय पूरा करते। ये बात नहीं कि ईमानदार थे। चोरी करने का हौसला नहीं था। इनकी जेब को हाथ लगाने का साहस कोई सिकन्दर कर सकता है। ब्रटरंड रसल ने लिखा, "गैलीलीओ ने देखा, आकाश की छत्त पुरानी हो गई है। उसने छत्त बदल दी। चार शताब्दियों पश्चात् आईनस्टीन ने कहा गैलीलीओ वाली छत्त ठीक थी किन्तु अब पुरानी हो गई है। दूसरी बार आकाश आईनस्टीन ने बदला।"

मेरा आकाश लाली ने नहीं उसके पिता ने बदला। मेरा पटियाला आपके पटियाला से अलग है। विश्वविद्यालय उसके साथ आते तो पैदल आते। एक दिन मुझसे पूछातुम्हें किस बात की सबसे अधिक खुशी हुई है हरपाल? मैंने कहा जैसा गाईड हमें मिला वैसा किसी महाराजा की किस्मत में नहीं लिखा। है न कमाल? हाथ पर हाथ मारकर बहुत हँसा, कहा यार मैं लोगों के साथ व्यर्थ कब घूमता हूँ? किसे तमीज़ है बात पूछने और सुनने की? मुझे भी तो तुम लोगों के साथ घूमने से खुशी मिलती है। आएगा एक दिन जब लोग कहेंगे अजीत पटियाला है, पन्नू पटियाला है। मुझे गुरू बाबा जी पर विश्वास है, तुम्हारी मेहनत पर विश्वास है। ऐसे पढ़ना कि नौकरी लेने के लिए मेरे पास सिफारिश के लिए आना ही न पड़े।

लाली की जेब में कभी भी पाँच रूपये से अधिक पैसे नहीं होते थे, तब भी नहीं, जब प्रोफैसर बन गया। रोटी, विस्की, चाय, लस्सी, जो खाया पिया, उसका बिल जो साथ है वो देगा। सारी उम्र यही हुआ। यदि आपका विचार है कि ये बात मुझे बुरी लगी तो आप गलत हो। लाली जैसा फकीर ऐसा ही करेगा। कुलवंत गरेवाल के स्वभाव में बादशाही थी। वह बढ़िया से बढ़िया खाने पीने की वस्तुएँ खरीदता, पैसे स्वयं देता। अब तक मुझे पैसे देने नहीं देतातू छोटा हैं, चुपचाप बैठा कर। यदि कोई मित्र दूर जाता हुआ दिखाई दे जाता, बुलाना है, ऊँची आवाज़ में नहीं, तेज़ कदमों से चलता हुआ उसके पास पहुँचता या फिर किसी विद्यार्थी को उसकी तरफ भगा देता।

सुरेन्द्र शर्मा ने लाली के साथ लम्बा समय व्यतीत किया है। उसकी बातें सुनें

लाली के पास समकाली समय के प्रश्न भी हैं, उत्तर भी। शब्दों की अपेक्षा हवा में जब लहरातें हाथों से उड़ान भरता है तब कला, धर्म, रूहानियत और चिन्तन से सम्बन्धित समस्त खण्डों ब्रह्माण्डों के दर्शन करते करवाते हुए वह श्रोता को न केवल कला से मुक्त और स्थान से मुक्त करता है अपितु ठहराव से भी मुक्त कर देता है ... इतना सब कुछ होते हुए भी उसके बारे लिखना कठिन है क्योंकि हर पल आपके पास होते हुए भी यही अनुभव होता है कि जैसे ये व्यक्ति पृथ्वीलोक का नहीं किसी अन्य लोक का है।

-राजपुरा का शेखर अच्छा फोटोग्राफर है, उसकी बोलतीं तस्वीरें देखकर विख्यात उपन्यास *ब्रीजिज़ ऑफ मैडीसन काऊंटी* की शर्त याद आ जाती हैं अच्छा फोटोग्राफर केवल लाईट और शेड को ही शूट नहीं करता, उसका सारा जीवन इन दोनों पक्षों को सही अनुपात में संतुलित करने में बीत जाता है। ये बात अलग है कि तस्वीरों में लाईट और शेड के साथ साथ व्यक्ति और स्थूल वस्तुएँ भी शामिल हो जाती हैं। हुआ ये कि स्टिल्ल फोटोग्राफी करते करते शेखर के मन में पिक्चर फिल्म बनाने का विचार आया, कहानी, सक्रीन प्ले, डॉयलाग भी स्वयं ही लिखेगा। अपने इस फैसले के बारे में लाली को बताया तो उसने सहजता से समझाया अन्य बातें तो हम फिर कभी करेंगे शेखर, पहले तू किसी अच्छे लेखक की नई कहानी चुन जिसे शूट करना सरल हो। कहानी ढूंढने का काम सुरेन्द्र शर्मा को दिया गया।

चुनावित कहानियों पर कई दिनों तक बहस होती रही। इसी दौरान सुरेन्द्र ने एक दिन बलवंत सिंघ की हिन्दी कहानी *गुमराही* सुनाई। ये कहानी उस बच्चे के बारे है जो घर से स्कूल के लिए निकलता है किन्तु स्कूल नहीं पहुँचता। अध्यापक द्वारा शिकायत करने पर पिता बच्चे का पीछा करता है। अनेक मोड़ काटने के बाद एक स्थान पर पिता और पुत्र मिल जाते हैं। बच्चा डरता है, पिता हौसला देता है, निर्भीक बच्चा खुशी खुशी पूरा दिन ऐसे दिलचस्प स्थानों पर घुमाता है जिन्हें पिता ने अपने व्यस्त जीवन में कभी नहीं देखा था। प्रत्येक स्थान के विषय में बच्चे को जो जानकारी है वह अद्‌भुत है, अनेक अजनबी उसे जानते हैं। शाम को पिता और पुत्र घर आते हैं तो दोनों के मध्य समझदारी एवं स्नेह का सूत्र बंध चुका होता है। रात को अपने कमरे में लेटे हुए पिता सोच रहा है बच्चा अपना रास्ता ढूंढने में समर्थ हो रहा है किन्तु मैंने जीवन की सुन्दरता के अनेक स्तर अभी तक नहीं देखे। बच्चे को नहीं, पिता को रास्ते की आवश्यकता है।

बातें, फिल्मों, गीतों और साहित्य में मानवीय रिश्तों की तलाश कर रही हैं। दिन कब बीत गया, पता ही नहीं चला। शर्मा ने कहा भाई हमने बस भी लेनी है। लाली उठने लगा था कि शेखर ने रोक लिया, कहा मैं *गुमराही* की सक्रिप्ट सुनाना चाहता हूँ। सक्रिप्ट सुनाने लगा। आम हिन्दी फिल्मों की तरह शेखर ने कहानी में अदल बदल करते हुए उसमें रेप, रेस, मुजरा और भंगड़ा डाल दिए, इनके बिना डिस्टीबियूटर फिल्म नहीं उठाते। दो ढाई घंटे सक्रिप्ट सुनने में बीत गए।

इशारे को न समझते हुए शेखर ने प्रश्न दोहराया आप समझे नहीं भाई, बाकी

बातें तो बाद में होती रहेंगी, कम से कम ये तो बताते जाओ कि मूल कहानी में जो परिवर्तन किए है वो आपको कैसे लगे?

लाली ने कहा शेखर यदि जूता पहन लिया है तो इसका मतलब ये नहीं कि मैं इसे उतार नहीं सकता।

गुरदयाल सिंघ उपन्यासकार और लाली बाबे में बहुत पुरानी मित्रता है, निश्चिन्त होकर अपनी अपनी बात कह देते और सुन लेते हैं। गुरदयाल ने पूछा कैसा रहा फिर परसो?* उत्तर अभी पचास पृष्ठ पढ़े हैं, पूरा होने के बाद बात करेंगे। फिर पूछा बाबा जी कहाँ तक पहुँचे हो? लगभग सौ पृष्ठ पढ़ लिए है, वहाँ पहुँचा हूँ जहाँ परसा चारपाई पर बैठा है। एक दिन फिर से पूछाबात किसी नतीजे पर पहुँची?

लाली बात पूरी क्या होनी थी गुरदयाल, तीन महीने हो गए परसा चारपाई से ही नहीं उठा।

सुरेन्द्र ने सोफोकलीज़ की रचना *राजा इडीपस* नाटक की रिहर्सल देखने की प्रार्थना की। उसने पूछा इस ग्रीक त्रासदी का अभिनय आप किस भाषा में कर रहे हो? बताया हज़रत अवारा द्वारा किया हुआ उर्दू अनुवाद है, उर्दू में खेलेंगे। रिहर्सल दौरान एक दिन गलतियाँ देखकर कहा कहते थे उर्दू में खेलेंगे, आप तो साफ ग्रीक में बात कर रहे हो। फिर उर्दू उच्चारण की बारीकियों की जानकारी देते हुए ग/ग़, ज/ज़ का सही उच्चारण एवं अर्थ बताया। सोफोकलीज़ के बारे में बताया कि ये नाटक अपनी संरचना के कारण महान् नहीं अपितु मानवीय मन की गहराइयों को मानसिक ऊँचाई से देखने का अवसर प्रदान करता है। नाटक में घटित मुख्य घटना, माँ-बेटे के शारीरिक सम्बन्ध को आध ाार बनाते हुए फ्रायड ने इस प्रकार की रुचि को इडिपस कम्पलैक्स का नाम देते हुए सोफोकलीज़ को अपनी श्रद्धांजलि भेंट की।

इडीपस द्वारा अपनी प्रजा को दिए भाषण से नाटक का प्रारम्भ होता है। प्रारम्भ करते हुए सुरेन्द्र ने कहा अजीज़ो। लाली ने कहावॉवल की अपेक्षा पहला शब्द कंसोनैंट हो तो अत्यधिक प्रभावशाली होता है, 'अजीज़ो के स्थान पर 'मेरे अजीज़ो' कहना।

नाटक पूर्णतः असफल रहा। शो के बाद वह आया, खामोश सुरेन्द्र के कंधे पर हाथ रखा, आँसू आ गए तो फ़ैज के शेयर से हौसला दिया।

एक बार सुरेन्द्र और लाली ने किसी सरकारी संस्था द्वारा आयोजित नाटक देखने का निर्णय किया। हॉल अभी खाली था किन्तु वह सबसे पीछे बैठ गया। सुरेन्द्र उसे आगे लेकर जाने की जिद्द में था, वह मुस्कराया, कहाये सरकारी कार्यक्रम है। सरकार कोई भी हो सोचने समझने वाले व्यक्ति को काबू में करने के उसके पास दो ढंग होते हैं एक पुरस्कार का दूसरा सम्मान का। पुरस्कार प्राप्ति का तो हमने कोई काम किया नहीं परन्तु इनका क्या भरोसा कब किसी बात को आधार बनाकर गले में हार डाल दें। गले केवल तलवारों से ही नहीं दुष्ट व्यक्ति के हाथों पहनाए गए हारों से भी कट जाते हैं।

मैडम लाली ने बाबे के हाथ में थैला देकर सब्ज़ी मण्डी गोभी खरीदने भेजा।

एक कार रास्ते में उसके समीप आकर रूक गई, पहले तो कोई भीतर से बुलाता रहा, फिर दरवाज़ा खोलकर बाहर आया तो पता चला रंचन है। पुराना मित्र, अब शिमला विश्वविद्यालय में पढ़ाता था, गले मिले, सुख-दुःख की बातें कीं और समीप ही चाय की दुकान पर चाय पीने बैठ गए। बातें करते करते दो घंटे बीत गए तब रंचन ने कहालाली मना मत करना। तेरे साथ अभी और बातें करने का मन है, चलो शिमला चलते हैं, अंग्रेज़ी की नई दुर्लभ पुस्तकें आई हैं, एक पेंटिंग प्रदर्शनी भी लगी हुई है। मैंने अंग्रेज़ी में एक उपन्यास लिखा है मेरी इच्छा है कि उसे सबसे पहले तू ही सुने। मन पसीज गया, कार में बैठकर शिमला पहुँच गए। मैडम सात दिनों तक प्रतीक्षा करती रही। बेशक घूमने फिरने के दरवेशी स्वभाव का पता था किन्तु इतने दिनों तक लापता? एस.एस.पी साहिब को फोन किया, "सब्जी लाने के लिए भेजा था, एक सप्ताह बीत गया, आये ही नहीं। एस.एस.पी ने कहा मैडम सब्जी किसी दूसरे से मंगवा लीजिए।"

सतिन्द्र सिंघ नूर ने कहा अनिश्चिन्तता का आलम था। कल पहला पेपर है। वार्षिक परीक्षा का, सर्व सहमति से निर्णय हुआ कि लाली के पटियाला वाले बाग में जाकर आम खाए जाएँ। चल पड़े, वर्षा शुरू हो गई, कच्चे रास्तें पर फिसलते संभलते बाग में पहुँच गए। आम तो खाए किन्तु वहाँ रात को रहने की कोई व्यवस्था नहीं थी। आधी रात को भीगते हुए वापस आए, अगले दिन सुबह पेपर में बैठ गए। एक दिन पता चला कि अम्बाला में सत्यजीत रे की फिल्म लगी हुई है, एक दिन के लिए। अगले दिन पेपर था। तो क्या हुआ, पेपर होता रहेगा। साईकलों पर सवार होकर फिल्म देखने गए आध ी रात को वापस आए।

वर्ष 2008, अंग्रेज़ी विभाग में अध्यापकों के लिए रिफ्रैशर कोर्स चल रहा था। मुझे खबर मिली कि दो लैक्चर प्रो. सोमपाल रंचन देगा। लैक्चर से पहले गैस्ट हाऊस में जाकर उससे मिला और 1968 की पुरानी बातें याद करवाते हुए कहा, दो लड़के आपकी सेवा में आगे पीछे घूमते रहते थे जब आपने *लिटरेरी स्टडीज़* मैगज़ीन निकाला था? इसके तीन संस्करण छपे, फिर ये बंद हो गया। सब याद आ गया। मुझे उसने अपनी पुस्तक *पैसेज टू पंजाब* दी और अनेक पुरानी बातें सुनाईं।

फुलब्राईट प्रोफैसर, पाल तार, अपनी आर्टिस्ट पत्नी रिन तार के साथ अमेरिका से पंजाबी विश्वविद्यालय के अंग्रेज़ी विभाग में अमेरीकी साहित्य पढ़ाने के लिए आया। विश्वविद्यालय ने उसे एक छोटा सा फ्लैट आर-टाईप दिया जो उसे पसंद नहीं आया। वाईस-चांसलर को भला बुरा कहकर शहर में एक बड़ा सुन्दर घर किरायें पर लिया जिसके सामने बारादरी बाग था और समीप ही माल रोड। बाज़ार भी नज़दीक था। वह पंजाब देखने आया था और पंजाब के माध्यम से भारत। एक दिन रंचन से कहा शहर मैंने देख लिया है। हम पंजाब का कोई गाँव देखना चाहते हैं। जब तक इच्छा हो वहाँ रहें। जिससे मर्ज़ी होगी बात करे सकें। आपस में विचार-विमर्श के पश्चात् निणर्य हुआ लाली

के गाँव फतहगढ़ चलते हैं। राज़दां, लाली और रंचन इस अमेरीकी दम्पत्ति को लेकर हाकम सिंघ की टैक्सी द्वारा गाँव की तरफ चल पड़े।

रास्ते में जगह जगह टैक्सी रोककर पाल तार तस्वीरें खींचता एक टांग पर बगुले के समान खड़ा हुआ पशु चराता चरवाहा, पक्षी भैंस के कान से चिपटा हुआ, बगुला भैंस पर झूला झूलता हुआ ...। आज से चालीस वर्ष पूर्व का पंजाब कैमरे में बंद हो रहा था। उसे बताया गया था कि पंजाब गंवार लोगों का इलाका है, मार-पीट, खून का बदला खून... स्वयं को बचाकर चलना। सुनाम तक सब ठीक रहा, आगे रास्ता कच्चा था, टैक्सी फिसल रही थी किन्तु ड्राईवर उस्तादी से सफर तय करता गया। फतहगढ़ के समीप एक छोटी नदी की तरह पानी प्रवाहित हो रहा था जिसमें से कार का निकलना मुश्किल था। नगर निवासियों सहित लाली के पिता ने कार को आते और रुकते देखा। बीस, पच्चीस लोग पजामें, चादरों को ऊपर उठाकर पानी में से निकलकर मेहमानों तक पहुँचे। दम्पत्ति ने सरदार से हाथ मिलाया। लाली, रंचन आदि ग्रामीण लोगों के वाक्यों का अनुवाद करते रहे। सरदार ने सभी को बैठने का इशारा किया। जैसे स्कूल के बच्चे मास्टर का आदेश मानते हैं, वैसे ही सभी लोग पैरों के भार बैठ गए। एक ने कहा वह आ रहा है हमारा जहाज। ये जहाज न तो खराब होता है, न ही इसका एक्सीडैंट होता है। पाल ने देखा, ताकतवर बलद गड्डा खींचते हुए आ रहे थे, पानी से निकलता हुआ गड्डा मेहमानों तक पहुँचा, वापसी का रुख किया, मेहमानों को गड्डे में बैठने के लिए कहा। सभी गड्डे पर सवार होकर भव-सागर को पार करके गाँव की सीमा में पहुँच गए। ग्रामीणों को ख़बर मिल गई थी कि विदेशी मेहमान आ रहे हैं, देखने के लिए गाँव वहाँ आ गया। नज़रें इतनी उतावली जैसे आँखों से पी जाएँगे। अंधेरा होने लगा। नौकर लालटेन पकड़ कर हवेली के दरवाज़े पर खड़ा था। मेहमानों के रहने का प्रबन्ध ऊपर चौबारे में था। सरदार अंग्रेज़ी में बातें कर रहा था किन्तु कभी कभी उसे गोरी का वाक्य समझ में न आता। बेशक चीफज़ कॉलेज में पढ़ा था परन्तु गाँव से कभी बाहर नहीं निकलता था। अकादमिक संस्थाएँ दूर रह गई थीं। दो बंदूकधारी गार्ड पहरा दे रहे थे। हवेली की चारों दिशाओं में चार ऊँचे टावर थे, सुरक्षा कर्मचारियों के लिए पोजोशीन लेने का प्रबन्ध था। इस रहस्यमयी स्थान को मेहमान उत्सुक्ता पूर्वक देख रहे थे जैसे कोई विस्मयजनक स्वप्न हो। शानदार विशाल कमरे में ठहराया गया, सोफे, कुर्सियाँ उचित ढंग से रखे हुए, चार चार कुर्सियों के मध्य एक मेज़, कढ़ाई किए हुए मेज़पोश, आरामदायक कुर्सियाँ। हवेली में कुल पन्द्रह नौकर थे, दो कातिल भी थे, जेल से पैरोल पर रिहा होकर आए थे। शिकंजवी के जग, बड़े बड़े गिलास। सफर के कारण मेहमानों को प्यास भी लगी हुई थी, स्वाद लेकर पी। गाँव में बिजली नहीं आई थी। लैम्प लगा रखे थे, लालटैनें इधर उधर घूम रही थीं। अंधेरे में से बाहर खिड़की से देखा। कार की लाईटें कोठी की तरफ आ रही थीं, पता नहीं ड्राईवर हाकम किस मार्ग से ले आया। गड्डे के साथ ही खड़ी कर दी। खिड़की में से पाल ने ड्राईवर को हिप हिप हुर्रे कहा और बीयर निकाली।

सरदार ने कहा यहाँ ऊपर सारा प्रबन्ध हो चुका है। विस्की की बोतल मेज़ पर आ गई। जाम शुरू हो गए।

हाकम उनसे कुछ दूरी पर बैठा था, अंग्रेज़ ने कहा हाकम आकर अपना जाम बना ले। हाकम आधा गिलास भर कर ले गया। पीने पिलाने के इस दौर के बाद भोजन आया... शानदार ... विभिन्न प्रकार के सूप, सब्जियाँ, चिकन, आचार, खीर। नीचे आंगन में गाँव के दो व्यक्ति आकर बैठ गए, एक के हाथ में इकतारा और दूसरे के पास घड़ा था। टप्पे, द्विर्थक टप्पे। मेहमानों को प्रत्येक टप्पे का अर्थ बताने के बाद दूसरा टप्पा गाया जाता, बुनियादी मानवीय सम्बन्ध, ग्रामीण आवश्यकताएँ, सादगी, सभी कुछ मेहमानों के लिए रोचक। गायक टप्पा गाने ही वाला था कि लाली के चचेरे भाई ने आकर सरदार के कान में कुछ कहा। गाँव के लोग सरदार को बापू जी कहते थे, किन्तु जब सरदार अनुपस्थित होता, पाल उसके बारे बातें करते समय ओल्डमैन शब्द का प्रयोग करता। किसी का बैल बीमार है, किसी का बेटा बीमार है, किसी के गड्डे का पहिया टूट गया है ... कहीं झगड़ा हो गया है। सभी अपनी मुश्किलें सरदार को बताते। ये गाँव एक देसी कचहरी था, प्रत्येक की फरियाद सुनी जाती, समाधान किया जाता, सांत्वना, हौसला मिलता, मानवीय सम्बन्धों की एकता का सूत्र।

हाकम ने ज्यादा पी ली। उसे सहारा देकर जब नौकर सोने के लिए ले जा रहे थे, उनसे झगड़ने लगा। ऊँची आवाज़ में बोलने लगा। उसकी ऐसी हालत देखकर पाल शर्मिन्दा हो गया, सरदार से क्षमा याचना करने लगा। सरदार ने हँसकर कहाक्षमा किस बात की? एक आधे व्यक्ति को यदि नशा न हुआ तो महफिल में क्या मज़ा? रंग लगा दिया आपके ड्राईवर ने। सुबह शाबाश दूंगा इसे।

सरदार ने पूछायदि आपका कोई व्यक्ति शराबी हो जाता है तो आप क्या करते हो? पाल ने कहा वैसे तो अधिक पीते ही नहीं। मेरे नौकरों को मैं स्वयं पैग बना कर देता हूँ, ज्यादा नहीं डालता। यदि कोई स्वयं अधिक पीकर शराबी बन जाता है तो मैं उसे रोटी नहीं देता, कमरे में बंद करके बाहर से ताला लगा देता हूँ। सुबह जब ताला खोलते है तो उस व्यक्ति को अक्ल आ चुकी होती है। सरदार ने कहा मैं किसी को ताला नहीं लगाता, किसी का भोजन बंद नहीं करता तो भी सुबह अक्लमंद बने घूमते हैं।

चार लोग, दो वही कातिल थे, दो बंदूकधारी, हाकम को नीचे ले जाने लगे तो वह चिल्लाया, गालियाँ देने लगा, ललकार कर कहामैं भी जाट हूँ, एक एक करके आओ मेरे सामने, फिर देखता हूँ तुम लोग क्या हो। देख लूंगा मैं तुम्हें। अंग्रेज़ और उसकी पत्नी शर्मिन्दा हो रहे थे, सरदार और उसके लोग हँस रहे थे, हाकम को नीचे ले जाकर चारपाई पर लिटा दिया, सो गया।

हाकम को नीचे भेजने के बाद पंजाब की हिंसा पर चर्चा शुरू हो गई। पाल ने कहा मुझे दक्षिणी भारत के एक व्यक्ति ने बताया है कि पंजाबी खूंखार हैं। सरदार ने कहा पंजाब का प्रत्येक निवासी स्वयं को जाट मानता है, योद्धा समझता है, उसके

मन में स्वाभिमान नाम की चीज़ है, यदि उसे छेड़ दो तो उसे गुस्सा आ जाता है। उसे पुलिस या सेना में भर्ती की नौकरी पसंद है क्योंकि वह हथियार चलाने का शौकीन है। पंजाब ने मुगलों के विरुद्ध युद्ध किया, अंग्रेज़ों से युद्ध किया, दो विश्व युद्धों में अंग्रेज़ों की तरफ से युद्ध किया... उसका स्वभाव ही युद्ध करना एवं जुझारू किस्म का है किन्तु उसे हिंसक कहना गलत है। पंजाब ने विद्वान् दिए, फकीर दिए, धर्म ग्रन्थ दिए, कलाकार, गायक दिए। पंजाबी को जब गुस्सा आता है तब वह पीठ पीछे प्रहार नहीं करता, सामने से ललकार कर शत्रु की छाती पर गोली मारता है, रुक कर देखता है कि काम तमाम हो गया है या अभी और ज़रूरत है। किन्तु उसे नाराज़ किया ही क्यों जाए, जब उसे गुस्सा आता है तब पता करना चाहिए कि क्या कारण है इस गुस्से का।

पाल और उसकी पत्नी पंजाबी वेशभूषा में थे और पाल पंजाबी भाषा के कुछ शब्द सीख गया था, लोक गीतों का, रस्मों-रिवाज़ों का आनन्द प्राप्त कर रहा था। पाल को सुरक्षा की आवश्यकता थी, वह सोच समझ कर प्रत्येक निर्णय करता। यही अन्तर था। पंजाबी सुरक्षित है, वह गिनती-मिनती नहीं करता। पंजाब के कुछ सिद्धान्त हैं जिन पर कठिन पहरा है, जीवन का ऐसा अनुशासन संसार में शायद ही कहीं हो।

पाल को फिर से हाकम याद आ गया, कहा मुझे लगा कि कहीं कोई खून खराबा ही न हो जाए ... देखना तो चाहिए था जिन्हें गालियाँ दे रहा है वे कौन हैं! सरदार ने कहा यहाँ इस तरह से कत्ल नहीं होता। कत्ल तो यहाँ ज़मीन के झगड़े में होते हैं या फिर जो कत्ल हो चुका है उसके प्रतिकार में। पाल ने पूछा आप प्रतिकार लेने के पक्ष में हो? सरदार ने कहा जी बिल्कुल। मेरा यदि कोई कत्ल कर दे तो लाली उसका प्रतिकार क्यों न ले?

"क्यों? कानून नाम की कोई चीज़ नहीं होती?" पाल ने पूछा।

"बढ़ रहे हैं कानून की तरफ, धीरे धीरे, बढ़ रहे हैं। पुलिस, अदालतें, जेलें समस्त तन्त्र हैं, किन्तु अधिकतर न्याय नहीं मिलता, जब न्याय नहीं मिलता तो पंजाबी कहता हैमैं स्वयं ही कर देता हूँ न्याय।"

पाल सहमत नहीं था, "किन्तु कत्ल कत्ल है, कारण जो चाहे बताओ।"

सरदार ने कहाआप सही हो, तो भी, अरबों की तरह पंजाबी पीछे से प्रहार नहीं करता, लास ऐंजलस, शिकागो, न्यूयार्क के गुण्डों की तरह फिरौती लेकर कत्ल नहीं करता, अपने किसी बौने सरदार के इशारे पर कत्ल नहीं करता, किसी मसोलीनी, किसी हिटलर के अभिमान के विरुद्ध यदि पंजाबी हथियार उठाता है, उठाने दो।

पाल पंजाबी की गहराई तक नहीं पहुँच सकता था। वह उसे ऊपर से देख रहा था, प्रेम, जन्म, विवाह, मृत्यु आदि के पश्चात् होने वाली रस्मों को उसे पता नहीं था। तुरंत ही कोई छोटा तर्क या दलील देकर फैसला सुना देता। उसके मन पर जो प्रभाव पड़ता, वही उसकी जजमैंट होती। इम्प्रैशन और जजमैंट में क्या अन्तर है उसे पता नहीं था। पाल

ने कहा आप न मानो, पंजाबी हिंसक हैं, लहू के प्यासे, हिन्दु, सिक्ख सभी। गांधी, अहिंसा, गाय पूजा ... बातें ये, किन्तु मन में हिंसा का भाव। पता है ऐसा क्यों है? आपके लोगों को कत्ल करने की रूहानी आज्ञा मिली हुई है। गीता और गुरू गोबिन्द सिंघ... हिंसा के हक में थे, क्या सिक्ख गर्व से नहीं कहते कि हमारे गुरू जी संत सिपाही थे? मैं सब जानता हूँ। कृष्ण और गुरू गोबिन्द सिंघ जी हिंसा के पक्ष में थे।

रंचन ने कहाकृष्ण और गुरू जी हिंसा के हक में नहीं थे पाल। वे कहते थे कि अपने साथ अन्याय मत होने दो। कृष्ण ने बहुत बार कौरवों को समझाया, वे नहीं माने। गुरू जी का कहना है पहले समस्त उपाय करके देखो, जब कोई वश न रहे तो तलवार के दस्ते पर सबसे अंत में हाथ रखो। गुरू जी अंत में वहाँ पहुँच गए जहाँ जन्म और मृत्यु में कोई अन्तर नहीं रहता। पंजाबी अधिक समय तक गुलाम नहीं रह सकते। बंगालियों या दक्षिण भारतीयों के समान वे बाबू नहीं बन सकते। अमेरिका, बर्तानिया, कैनेडा, कीनिया में जाकर उन्होंने मज़दूरी की किन्तु शीघ्र ही ज़मीनों, कारखानों और कम्पनियों के स्वामी बन गए। पंजाबी को खाने-पीने, पहनने और सोचने में सादगी पसंद है, वह दर्शन, तर्क की सूक्ष्मताओं से बेपरवाह है। दर्शन छोड़ो, वो तो मौत से भी बेपरवाह, इसी बेपरवाही के कारण वह बचा हुआ है। मूर्खता और बेपरवाही में अन्तर है।

बिस्तरे बिछा रखे थे, सभी, चौबारों के बाहर खुले आकाश की छत्त के नीचे। कुछ देर बाद रंचन के मन में ख्याल आया, ओह, ये क्या हो गया? गलती हो गई। सरदार को बताना चाहिए था कि अंग्रेज़ ऐसे नहीं सोते, उन दोनों के लिए चौबारे में सोने का प्रबन्ध करना चाहिए था। कोई बात नहीं, सुबह क्षमा मांग लूंगा और कल प्रबन्ध हो जाएगा।

सुबह हुई, रंचन उठा तो देखा पाल पत्र लिखने में मग्न था। पाल ने कहा रंचन तू चार वर्ष तक अमेरिका में पढ़ा है। दूसरों को तो पता नहीं किन्तु तुझे तो पता है कि अमेरीकी लोगों को प्राईवेसी पसंद है। वैसे मेरा स्वभाव इस वातावरण के अनुकूल होता जा रहा है। सुबह सुबह कोई जोर से लोहे का दरवाज़ा खटखटाता है। नौकर एक दूसरे से ऐसे बातें करते हैं जैसे झगड़ रहे हों, पता चलता है कि बादलों के बारें में बात हो रही है। देर रात तक यही शोर, हर समय, हर पल। जिसका मन करता है मन्दिर का घंटा बजा देता है, जो चाहे भीतर आ जाए, बिना बताए, बिना बुलाए, भिखारी और मेहमान एक समान। मुझे तो ऐसा अनुभव होता है कि इसी शोर से बचने के लिए भारतीय जंगलों में चले जाते हैं या पहाड़ी पर चढ़ जाते हैं। जिन्हें आप लोग संन्यासी कहते हो, आप लोगों ने उन्हें इतना तंग किया कि वे दुःखी होकर हमेशा के लिए भाग गए। घर में शांति हो तो संन्यासी कोई क्यों बने। मुझे आपकी पहेलियाँ अब समझ आने लगी हैं।

सरदार किसी अच्छे गायक की तलाश करने लगा। बताया कि कल को नाचने गाने वाले बाबे आएँगे।

पाल अमेरिका को पत्र लिख रहा है, "अजीब, अद्भुत पंजाब! खुशी हो तो भी,

दुःख हो तो भी, बिना बुलाए गाँव का गाँव वहाँ पहुँच जाता है। कोई प्राईवेसी नहीं। मृत्यु किसी के घर, सारा गाँव वहीं आकर बैठ जाता है, सभी महिलाएँ रोती रहती हैं, पीटती रहती हैं। जिसके घर में मौत हुई है यदि उस घर की महिला नहीं रोती पीटती नहीं, तो बाहर से आई महिलाएँ उसकी छाती पीटने लगती हैं। रोना-धोना, पीटना आदि सुर ताल में होता है। इस महफिल में छोटी लड़कियाँ बड़ों से रोना सीख रही हैं। मांस मांस को मारता रहता है, कभी छाती पर, कभी जांघों पर, कभी मुँह, हाथों से पीटना। पीट पीट कर अपनी त्वचा नीली कर लेती हैं। क्या सभ्यता है ये, कैसा सभ्याचार है? व्यक्ति भीड़ में गुम है, यहाँ कोई अकेला नहीं, अकेला रह ही नहीं सकता। इस दृष्टि से मैं समझता हूँ कि यहाँ कोई व्यक्ति स्वतन्त्र नहीं, इन्हें स्वतन्त्रता क्या है पता ही नहीं न ही उसे जानने की इच्छा है, सभी ने एक दूसरे के साथ स्वयं को एक धागे में पिरो रखा है।

"सभी बेपर्दा होकर, खुली छत्तों पर, आंगन में सो जाते हैं। साथ ही पशु, कुत्ते, बिल्ले, मुर्गियाँ, बतखें, कबूतर, सभी एक साथ। सरदार अपने नौकरों को दूसरे सरदारों की बातें सुनाता है, वह जोर जोर से हँसते हैं, मुझे लगता है मैं सो गया हूँ, नहीं मैं अभी सोया नहीं, मैं सोया हूँ देर तक ऐसा सोचता रहता हूँ।"

एक सुबह रंचन ने देखा, दोनों तैयार हो कर छत्त पर खड़े हैं और भिन्न भिन्न दिशाओं से गाँव की तस्वीरें खींच रहे हैं। सरदार की हवेली बहुत ऊँची है। सारा गाँव उससे निम्न है। गाँव में किसी के घर चौबारा नहीं, घर कच्चे हैं, प्रत्येक घर की छत्त दूसरे की छत्त से जुड़ी हुई ... कमाल है ... व्यक्ति चाहे तो सारा गाँव छत्त पर से घूम सकता है। एक चारपाई पर दो औरतें सो रही थीं, दूसरी तरफ कहीं एक ही चारपाई पर दो लड़के सो रहे हैं। पति पत्नी ये देखकर शरमा रहे हैं, तस्वीरें खींच रहे हैं। पिता पुत्र एक ही चारपाई पर।

ऐसा लगता है जैसे ज़मीन पर फतहगढ़ पालथी मारकर बैठा है। एक औरत पीतल के गिलासों में दो लोगों के लिए चाय लेकर आई है, एक पति होगा दूसरा देवर। हाँ यकीनन, देवर, क्योंकि जेठ होता तो घूंघट निकाल कर आती। पत्नी हँसती है ... वही लोक गीतों में वर्णित देवर ... पाल ... टप्पों वाला ... खींच तस्वीर। वो देख, मुर्गा मुर्गी के पीछे भाग रहा है, तस्वीर खींच, बार बार बांग दे रहा है। उस दूसरे घर में बूढ़ी औरत ऊँचे स्वर में बूढ़े को गालियाँ दे रही है, बूढ़ा लड़ने की अपेक्षा सिर खुजला रहा है ...फोटो। पंजाब अमेरिका जा रहा है।

गोरी सिगरेट पीते हुए कई बार शौचालय जा आई है। सिगरेट पिए बिना उसका पेट साफ नहीं होता। जितने चक्कर आज उसने शौचालय के लगाए हैं, उससे कहीं अधिक उत्तर सरदार ने पाल के प्रश्नों के दे दिए हैं। गाँव कब आबाद हुआ, आबादी कितनी, घर कितने, कुल ज़मीन, कुल पशु, कारखानें आदि आदि। सरदार के उत्तरों से ऐसा प्रतीत हो रहा था कि गाँव आत्मनिर्भर है, गेहूँ, चावल, मक्की, सरसों, गन्ना, सब्जियाँ, दालों का

स्वयं ही उत्पादन करता है। काते हुए सूत के वस्त्र, कम्बल भी सूत के, बकरे, मुर्गे, सूअर, सभी कुछ गाँव में मिल जाता है। शहर में लोग तभी जाते हैं जब कुछ विशेष, गहना आदि खरीदना होता है, किसी अलग डिज़ाईन का, जो गाँव के सुनार के पास न हो।

सरदार बताता है आप शहरी हो इसी कारण आपको विश्वास नहीं कि गाँव में प्रत्येक वस्तु मिलती है। देखा आप कॉर्न फलेक्स, ब्रैड, विटामिन की गोलियाँ, आयरन कैप्सूल, कब्ज़ के लिए, दस्त के लिए दवा, बीअर सब कुछ अपने साथ लेकर आए हो फतहगढ़ तक। अमेरिका फतहगढ़ पहुँचेगा तो खाने पीने की वस्तुएँ साथ लेकर आएगा, क्योंकि फतहगढ़ में सफाई नहीं, गंवार फतहगढ़ के घरों की छत्तें आपस में समान नहीं, गलियों, नालियों का कोई स्तर नहीं, घर सीधी कतारों में नहीं।

कच्चे घर के आंगन में इस गाँव की महिला ऊपर देखती है, पति पत्नी उसकी तस्वीरें खींच रहे हैं तो औरत हँसने लगती है, फोटो के लिए नहीं हँसी, मन से हँसती है, फिर शर्म आ गई है, देखो शीघ्रता से भीतर चली गई।

गोरे ने कहा मैं गांव की बुनाई देखना चाहता हूँ। सरदार ने नौकरों से कहा दरियाँ, फुलकारियाँ लेकर आओ। भिन्न भिन्न रंगों की डिज़ाईनों की। तस्वीरें खींची, रेखा गणित जैसे परफैक्ट डिज़ाईन। पाल ने पूछा मैं इस कारीगर की तस्वीर खींचना चाहता हूँ, कहाँ रहता है? सरदार ने हँस कर कहा प्रत्येक घर की लड़की में ये कला है। ये वस्तुएँ यहाँ ठेके पर नहीं बनतीं, यही कारण कि ये बिक्री के लिए नहीं हैं, सौगात देने के लिए हैं। यदि आप किसी महिला की बनाई पंखी, कढ़ाई किया दुपट्टा या फुलकारी खरीदना चाहते हो तो मुफ्त देंगे, पैसे नहीं लेंगे ये लोग।

गुसलखाने में से निकलकर रिन सरदार के पास आई वाह कितने सुन्दर और गज़ब के पैटरन हैं पाल ! हम खरीदेंगे। सरदार ने कहा पाल को बता रहा था कि ये बिक्री के लिए नहीं हैं, मुफ्त देंगे। नौकर एक पैकट लेकर आया। खोला, सात फीट लम्बा, चार फीट चौड़ा दुपट्टा, नाभी, लाल, पीले, हरे रेशम से कढ़ाई किया हुआ।

"हजूर सूबेदार हज़ारा सिंघ की सरदारनी ने मेम साहिबा के लिए भेजा है।"

"थैंक्यू, थैंक्यू ... से माई थैंक्स टू सरदारनी साहिबा।

हैरान होकर रिन ने सरदार से पूछाले लूं? बताओ मुफ्त लेना ठीक भी होगा? सरदार ने कहानॉट ऐट आल फॉर सेल। टेक दिस ऐज़ ए गिफ्ट।

"पक्की बात?" रिन को अभी भी विश्वास नहीं हो रहा था।

सरदार ने हँस कर कहा बिल्कुल पक्की बात, सोलह आने शुद्ध मोहब्बत। रिन ने नौकर से कहा वे खुद देने क्यों नहीं आई? नौकर ने बताया मैंने भी यही पूछा था, सरदारनी ने कहा मुझे उसकी भाषा नहीं आती क्या करूँगी वहाँ जाकर? वैसे भी शर्मीले स्वभाव की है। कहा है कल को गिद्धा तो है, कल जाऊँगी।

पाल ने कहा बहुत बड़ी मुसीबत है हमारे लिए ये देश। ऐमबैरेसिंग। प्रत्येक व्यक्ति कुछ न कुछ देने आता है। मैंने कार डीलर से सामान्य ही कहा तुम्हारे जूते बहुत

सुन्दर है, सुनते ही उतार कर मुझे दे दिए। मेरा कहने का क्या ये अभिप्राय था? जैसे कि हम भिखारी हैं। किन्तु मुझे पता है, इन बातों के पीछे इनका अपना कोई न कोई मतलब अवश्य होता है, गिना मापा हुआ हिसाब किताब, ऐसे ही नहीं।

लाली ने कहा तुम्हारा कहने का अभ्रिपाय है कोई आपको देखे नहीं, आपको कोई बुलाए नहीं। जरा मुझे भी तो पता चले क्या कैलकुलेशन है? बदले में आप क्या दे सकते हो इनको? पैसे? लेंगे नहीं। और क्या?

ये बातें हो रही थीं कि एक सिक्ख दर्जी खद्दर लेकर आया। एक थान सफेद रंग का दूसरा खाकी। सरदार ने पाल को इशारा किया कि वे माप दे दे। वह खड़ा हो गया। दर्जी ने छाती का माप लिया और कहा मज़बूत, चौड़ी छाती है जवान। पाल ने तुरंत पूछा क्या कहा? क्या कहा है टेलर ने? सरदार ने बताया कि तेरी छाती की प्रशंसा की है, किले की तरह मज़बूत। 'ओ मॉय गाड! पाल बहुत हँसा। व्यक्ति, व्यक्ति के शरीर की प्रशंसा पब्लिकली करे ... ये सभ्यक् व्यवहार नहीं।

फिर दर्जी ने पूछा थान में से रंग पसंद कर लो। पाल ने कहा दोनों रंग अच्छे है किन्तु दोनों नहीं ले सकता क्योंकि सरदार का दौगुना खर्च हो जाएगा। रिन ने कहा पाल तू भी मूर्ख है, एक पसंद कर ले गिफ्ट के लिए, दूसरे के पैसे दे दे। सभी हँसने लगे, सबसे ज्यादा सरदार हँसा, कहा इन्हें अक्ल कब आएगी? कभी नहीं।

रिन ने गुस्से में कहाओ शिट!

रिन दो शब्दों का अकसर प्रयोग करती, अरस (ors) और शिट। शुरू शुरू में अंग्रेजी जानने वाले इन पंजाबियों को हैरानी हुई कि औरतें बात करते समय ऐसे कु शब्दों का प्रयोग नहीं करतीं किन्तु अब इन्हें ये सब सुनने की आदत पड़ चुकी थी। सत् श्री अकाल कहकर दर्जी चला गया।

पाल ने कहा मेरी इच्छा ताबीज पहनने की है। मिलेगा?

सरदार ने कहा यकीनन। ये बताओ कि सोने का या चांदी का, किस डिज़ाईन का, ऊपर कुछ लिखवाना है ? किसी का नाम, कोई मन्त्र, कोई निशानी?

रिन ने जोर से हँसते हुए कहा पाल तुझे इतना खिला देंगे कि खूनी दस्त लग जाएँ। होश कर होश। सरदार खामोश हो गया। उसने इनका मज़ाक नहीं उड़ाया। मेज़बान अपने मेहमान के लिए, उसकी इच्छाओं की पूर्ति के लिए जीता है। इस सुहृदयता के बदले में देने के लिए रिन के पास शब्द थे- अरस... शिट... डाईसैंटरी। धन्यवाद के रूप में वापस दी गई सौगातें!

पाल ने कहा नहीं नहीं .... केवल ताबीज।

रिन फिर से चिल्लाई पाल ... पाल ... डाईसैंटरी मुर्दाबाद।

सभी सोचने लगे... ताबीज खाली हो तो भी ताबीज ही होता है, इससे पता चलता रहता है कि व्यक्ति मोटा हो रहा है या पतला, स्वास्थ्य में संतुलन रखा जा सकता है। यदि अच्छे सुनार से आर्डर पर बनवायें, सुन्दर भी लगता है। किसी को पता नहीं चल

रहा कि ताबीज का डाईसैंटरी से क्या सम्बन्ध है।

पाल ने कहा मेरे लिए चांदी का ताबीज ठीक है। भारत का राष्ट्रीय पक्षी मोर यहीं गाँव में देखा है। ताबीज पर मोर बन सकता है?

-क्यों नहीं? सरदार ने कहा, बनेगा। साईज़?

पाल ने कहा एक इंच बाई आधा इंच। बहुत सोहना। बहुत सोहना शब्द पाल ने पंजाबी भाषा में कहे। इन दोनों शब्दों को सुनकर सभी बहुत खुश हुए। पंजाबी भाषा को जाने बिना पाल पंजाब को कैसे जान पाएगा? किन्तु चार महीनों के लिए आया है, चार महीनों में पंजाबी भाषा नहीं सीख सकता। लोगों के सभ्याचार का प्राण उनकी भाषा होती है। पाल अमेरिका में बेजान पंजाब दिखाएगा।

सरदार ने कहा साहिबो, नाशता कर लो, चलें, देरी हो रही है। गाँव का दौरा करेंगे। खेत, स्कूल, गुरूद्वारा दिखाऊँगा। एक कब्बडी मैच का प्रबन्ध हो गया है, पंजाब का प्राचीन खेल। लंच से पहले वापस आ जाएँगे क्योंकि शाम को अखाड़ा लगेगा।

सज़ा काटकर आया हुआ व्यक्ति मीत, सरदार का अंगरक्षक, साथ साथ चल रहा था। ईंटों के बड़े दरवाज़े के नीचे से गाँव के बाहर निकले जहाँ कुएँ पर महिलाएँ कपड़ें धो रही थीं, बच्चे नहा रहे थे, खेल रहे थे। पशु पानी पी रहे थे, खाली घड़ों को भरा जा रहा था। स्कूल आ गया। दो कमरे, कमरों के आगे वरांडा। सामने मैदान, जहाँ कब्बडी का मैच होना था। बड़े छोटे लोग इनके पीछे पीछे आ रहे थे, अनेक लोगों ने आज खेत में काम नही किया। कब्बडी देखने के लिए नहीं, मेम देखने के लिए।

कब्बडी की टीमें अभी पहुँची नहीं थीं। संदेश मिला कि आ रहे हैं। सरदार ने स्कूल मास्टर से कहा इन्हें ऐसे ही क्यों बिठाना है। छोटे बच्चों का मैच दिखाओ, मेहमान नमूना तो देखें। प्राईमरी स्कूल में दस बारह वर्ष से अधिक कोई बच्चा नहीं था। सारा स्कूल बाहर आ गया। मास्टर जी ने कहा चलो भाई जिसका कब्ड्डी खेलने को मन कर रहा है वह बाहर आ जाये। बच्चों ने तुरंत ही कुर्ते पजामे उतार दिए। नीचे से रंग बिरंगे घर में सिले हुए कछहरे निकल आए। किसी ने कोई दिशा नहीं दी। स्वयं ही छह एक तरफ, छह दूसरी तरफ हो गए। गेहूँ रंग के भूरे शरीर धूप में चमके। मेहमानों के लिए मास्टरों की कुर्सियाँ लगा दी गईं। लाली ने मेहमानों को खेल के नियम बताए।

मास्टर ने सीटी बजाई। एक लड़का बीच बनी रेखा पर आ गया, झुक कर दोनों हाथों की अंगुलियों पर मिट्टी का स्पर्श किया, फिर माथे पर, फिर आँखों पर, फिर कानों पर। फिर उसने एक लम्बी सांस भीतर खींची और कब्ड्डी कब्ड्डी करता हुआ विरोधी टीम की तरफ दौड़ा। दूसरों ने उसे पकड़ने के लिए चक्कर बना लिया। जैसे ही एक लड़के को छूकर वापस भागा, छूए गए लड़के ने टांगों की कैंची बना ली। कैंची बनाने वाले ने प्रहारक को पकड़ने के लिए हाथ आगे किए तो कब्बडी कब्बडी करते लड़के ने उसकी छाती पर हाथों से इस तरह प्रहार किया कि कैंची खुल गई। सम्पूर्ण कला, पूरी ताकत

दिखाकर, विजयी होकर अपनी टीम में आया। दर्शकों की संख्या अधिक थी, तालियों से शाबाश मिली। दौड़ भाग, कैंची, जिस्म का जिस्म से टकराना, कला, चेतनता, ताकत, एक ही समय, सांस की शृंखला टूटनी नहीं चाहिए।

तभी दूसरी तरफ से आक्रमणकारी इधर आया। कबड्डी कबड्डी करता शीघ्रता से धरती पर जैसे बैठ ही गया, सप्रिंग की तरह उछल कर किसी एक के पैर को कब छू गया पता ही नहीं चला। सभी ने तालियों से उसे शाबाश दी, गोरे गोरी ने भी। अब उन्हें खेल समझ आ रहा था। हमला और हमले से बचाव, हमले से बचाव करो और हमला करने वाले को पकड़ो। कई बहुत ताकतवर थे, जिस कारण बाज़ी जीत जाते, कुछ कमज़ोर थे, वे फुर्ती और हुनर से बाज़ी जीतते। दुश्मन को पकड़ने के घेरे को तंग करते जाते परन्तु जब हमला हो गया फिर अकेले की किस्मत अकेले के साथ। ये अकेले को अकेले की कबड्डी थी।

सम्भव है ये खेल कुश्ती जितना पुराना हो। पता चला है कि कुश्ती यूनान से आई है, परन्तु कबड्डी पंजाब का प्राचीन खेल है, पंजाब को देखकर दूसरे लोग भी खेलने लगे। इसके लिए किसी बाहरी सामग्री की आवश्यकता नहीं होती। पैर से रेखा बनाओ और खेल शुरू। इस जैसा कोई दूसरा खेल नहीं जिसे ताकत, फुर्ती, दिमाग, सांस, आवाज़ सभी शामिल हों। किसी कोच या मैदान की आवश्यकता नहीं। बच्चे तो खिलाड़ियों की संख्या भी नहीं देखते। मान लो चरवाहा खेतों की तरफ जा रहा है, कोई स्कूल के रास्ते में है, देखा रास्ते में मैच हो रहा है, देखने का मन करे तो रुक जाओ। इच्छा खेलने की है तो कमीज़ उतारो और शामिल हो जाओ। इस खेल में न काम की उत्पत्ति का दृश्य, न योगियों का योग, छूना और दौड़ना केवल।

पाल उत्साहित हो गया गज़ब का खेल है ये तो। पूर्ण स्वाभिमान, पूर्ण जोश, अकेला अकेले से लड़ेगा, है न शान? हमारे पश्चिमी खेल इसका क्या मुकाबला करेंगे? लाली ने पाल को बताया अब सरकार ने अकेले को अकेले की कबड्डी बंद करके, सभी अकेले को, की कबड्डी शुरू कर दी है। रंचन ने कहा पाल, सरकारी कबड्डी में शान, उत्साह है ही नहीं, हमलावर पाले के समीप खड़ा कबड्डी कबड्डी करता रहता है। अकेले को अकेले की कबड्डी में ताकतवर हमलावर विरोधी टीम के ऊपर से चक्कर लगा आता था, किसी में साहस नहीं होता था उसे पकड़ने का। ये है रोमांस। सरकारी कबड्डी बेजान है। इस शहरी कबड्डी को गाँव की कबड्डी पर जबरदस्ती थोपा गया है, शहर का गाँव पर हिंसक आक्रमण है। गाँव ने सरकारी कबड्डी को स्वीकार नहीं किया। किसी ने भी नहीं।

छोटे बच्चों का मैच खत्म हुआ ही था कि बड़े आ गए। अपने अपने खेतों से काम करते करते इधर आ गए। पसीने और मिट्टी से भीगे छोटे खिलाड़ियों ने न तो पसीना पोंछा न ही मिट्टी साफ की, उसी तरह कपड़े पहन लिए। खेल के मैदान में सबसे आगे

बैठ गए। देखने के लिए उत्सुक, कि जहाँ हमने खेल को छोड़ा, वहाँ से बाज़ी आगे जाएगी या पीछे जाएगी?

सभी जवान, गभरू, सुगठित शरीर, जांघिए पहने हुए, चमकते जिस्म, थिरकते बाजू, सुन्दर नक्श, तांबे रंग के जिस्म। एक युवक जिसके केश भूरे और घुंघराले थे, गोरा सुन्दर, ये सरदार के परिवार में से था, इसका नाम भूरी था। एक लड़के का रंग काला था, उसका नाम भी काला। गाँव के लोग उस नाम को भूला देते है जो माता-पिता देते हैं, गाँव अपनी इच्छा से नाम रखता है, इस नाम का कोई अर्थ उस लड़के की शख़्सियत से जुड़ा होता है।

भूरी ने खेल प्रारम्भ किया। वही पवित्र रस्म। अखाड़े की मिट्टी ... माथा टेकना। कबड्डी कबड्डी करता हुआ झिझकते हुए भूरी आगे बढ़ा... एक लड़के ने ऊँची आवाज़ में कहा समीप आ भूरी समीप, यार हम तुझे खा तो नहीं जाएँगे। दर्शक हँसने लगे। पाल और रिन भी हँसे। भूरी उत्तेजित नहीं हुआ, हार-जीत के बिना ही वापस आ गया। फिर काला, भूरी की दिशा में रेड मारने गया। बहुत ही सुगठित शरीर, चौड़ी छाती, ताकतवर जांघें, चेहरा शांत। ऐसा लग रहा था, जैसे कहने पर आया है, खेलने में रुचि नहीं थी। एक योगी के समान विरोधी पक्ष के चारों तरफ से चक्कर लगा आया, प्रत्येक उसे पकड़ना चाहता था, किसी का साहस नहीं हुआ। दर्शकों में अनन्त उत्तेजना, रेडर शांत। पाल ने कहा वे अब पकड़ लेंगे, सांस भी टूटने वाली है। दोनों बाँहें फैलाए वह बाज़ के समान लग रहा था। एक लड़का जो काले से लम्बा, गुस्से में झपट्टा मारकर उसे पकड़ने लगा। काले ने ऐसा धक्का मारा कि पकड़ने वाला लड़खड़ाया, गिर गया। दौड़ कर नहीं, कबड्डी कबड्डी करता हुआ आत्मविश्वासी काला चलकर पाले तक पहुँचा। देर तक तालियों की गूंज सुनाई देती रही, स्कूल की इमारत में से ये गूंज वापस आती सुनाई दी।

रिन ने कहा शानदार लड़का। विश्वास नहीं था बच कर आएगा।

पाल ने कहा ये है असली खिलाड़ी।

फिर एक सिक्ख युवक रेड के लिए निकला, आगे के लड़कों में से सिक्ख ने कैंची बनाकर गिरा लिया। दोनों के जूड़ो पर रूमालें। टांगे एक दूसरे के साथ बांध लीं, बाँहों के साथ बाँहें। जैसे दो अजगर आपस में उलझे हुए हों। पता ही नहीं चल रहा था कि टांगे किसकी हैं और बाँहें किसकी। पकड़ा गया रेडर साहस छोड़ने वालों में नहीं था, घसीट घसीट कर इंच इंच पाले की तरफ खींच रहा था, आँखों में पसीना गिर रहा था और जिस्म पसीने और रक्त से भीगा हुआ। मिट्टी की रगड़ के कारण शरीर छिल गया था। जैसे आदिकालीन योद्धा युद्ध कर रहे हों। स्पार्टन दृश्य।

अचानक कबड्डी कबड्डी की आवाज़ बंद हो गई, विजेता ने अंगुलि से पाले को छुआ, पकड़ने वाले ने अपनी पकड़ बनाए रखी। कमज़ोर शरीर वाले रैफरी मास्टर ने आकर छुड़ाया। रेडर कह रहा था मैं विजेता हूँ... रेखा को छूकर ही सांस ली। पकड़ने वाला कह रहा था नहीं ... मैं विजेता हूँ पहले इसकी सांस टूटी फिर इसने पाले को छुआ।

कबड्डी की आवाज़ पाले को छूने के बाद नहीं, पहले आई थी। दर्शक भी दो भागों में विभाजित हो गए। आधे एक पक्ष में आधे दूसरे के पक्ष में। अंत में रैफरी को निर्णय देने के लिए कहा गया। मास्टर ने कहादोनों विजेता हैं, दोनों को एक एक नम्बर। जबरदस्त तालियाँ। दोनों पक्षों का सम्मान बना रहा।

अगला खिलाड़ी लम्बा, पतला था, चलने से पहले विरोधियों को ऊँची आवाज़ में कहा भाइयों, मैं बाल-बच्चेदार आदमी हूँ, मेरे साथ ऐसा मत करना, जो अभी देखा है। यदि तुममें से कोई मेरे समीप आया, मैं भाग जाऊँगा। सभी हँसने लगे। उत्तेजित होता हुआ ये युवक भाग और शीघ्रता से एक को छुआ और कथनानुसार जीत कर जल्दी वापस आ गया। पराजित टीम में से एक ने कहा अगली बार देखेंगे कैसे नम्बर लेकर भागता है। अब आ। विजयी ने कहा छूकर तो देख... थ्री नट थ्री की गोली हूँ, व्यक्ति उछल कर वो गया वो गया।

लंच का समय हो गया। मैच अभी चल रहा था। सरदार मेहमानों को लेकर हवेली में गया। लाली ने मेहमानों को बताया असली मैच तो अब हमारी अनुपस्थिति में होगा। पाल ने पूछा वो कैसे? उसमें क्या अन्तर होगा ? लाली ने बताया अब तक ये एक किस्म से मेहमानों के लिए मनोरंजन का मैच था। अब ये लोग जीत-हार के लिए खेलेंगे। पाल ने पूछा नई तकनीक होगी ? लाली ने कहा तकनीक नई नहीं। दर्शकों की भीड़ में नए अच्छे खिलाड़ी आकर बैठ गए हैं। दोनों टीमें अपने अपने कमज़ोर खिलाड़ियों की जगह नए अच्छे खिलाड़ियों को शामिल करेगी। तब होगा कठिन युद्ध। एक पक्ष की हार तो दूसरे की जीत होगी। फिर अगला मैच होगा। फिर अगला। गोरी ने पूछा ऐसा कब तक होता रहेगा? लाली ने कहा अंत तक, जब तक ब्रह्माण्ड है तब तक पंजाब खेलेगा। ये खेल कभी खत्म नहीं होगा पाल, पंजाब खत्म नहीं होगा। जीतेगा और खेलेगा। जीतेगा, हारेगा, खेलना नहीं छोड़ेगा।

रिन ने कहा मुझे इनके जांघिए बहुत सुन्दर लगे। अमेरीकी खिलाड़ी भी जांघिए पहनते हैं, परन्तु वे सुन्दर नहीं होते। पंजाबियों का जांघीआ तो ऐसा लगता है जैसे इनका मांस ही है, जिस्म से अलग नहीं।

लाली ने टप्पा सुनाया जिसका अर्थ है तेरी चमड़ी सुन्दर है लड़की। मन करता है इसका जांघिआ बना लूं। पाल ने हँसकर कहा वाह, मेरा इच्छा भी अब जांघीआ पहनने की हो रही है। लाली, जो टप्पे हमने संग्रहित किए हैं क्या ये उनमें है? लाली ने कहा नहीं... ये तो अभी अभी याद आया है। "भाई भूलना मत ... यही तो असली चीज़ है। लिख देना।"

रंचन ने कहा पंजाबियों का जांघीआ इस कारण शानदार है क्योंकि ये उनकी मर्दानगी का चिह्न है, मर्दानगी दिखाता भी है, छिपाता भी है। निक्करें क्या मुकाबला करेंगी जांघिओं का? बंगालियों असामियों की सूक्ष्मता, मद्रासी लोगों की लघुता नहीं है पंजाबी में तो क्या? उसके पास ताकत है, ताकत, जिसके कारण फसले लहराईं, व्यापार खुशहाल

हुआ, इसी ताकत से युद्ध और इश्क किया। पंजाब की औरत  शक्तिशाली है, घर में, खेत में काम करती है, इश्क करती है, हीर, सोहणी, साहिबा की तरह इश्क में मौत कबूल है, युद्ध करते पुरुष यदि हिम्मत हार जाएँ, घर वापस आ जाएँ, तो उन्हें फिर से युद्ध के मैदान में छोड़ आती है जहाँ सभी मर जाते हैं। जो काम वो कर नहीं सकती वो ये कि घुंघरू पहनकर मीराबाई की तरह पत्थर की मूर्ति के सामने नाच नहीं सकती। पत्नी बनकर, कस्तूरबा के समान पति की माँ का अभिनय नहीं करेगी। हिन्दुस्तान जब वास्तविक अर्थों में सैकुलर होगा, तब वे प्रतिमाओं, मूर्तियों, सांपों, गायों को पूजने की बजाय पंजाबन की किसी निशानी की पूजा करेगा।

लंच से पहले बीअर की एक बोतल पी ली, लंच के बाद फिर से एक बोतल। सरदार पीता नहीं था। भोजन में चिकन सूप, चिकन, मटन, चावल, रोटी। अंडों की भूर्जी भी। सबके बाद हलवा। पति पत्नी ने हाजमा ठीक करने के लिए गोलियाँ खाईं। अपने अपने कमरे में आराम के लिए चले गए।

दोपहर को आराम करने के बाद शाम होते ही सभी सरदार के आस-पास इक्ट्ठे हो गए। चांदी के ताबीज लेकर सुनार आया। तीखे नक्श, गोरा रंग, सफेद दाढ़ी, पूर्ण सहजावस्था में, जैसे सपाईनोज़ा हो। धागे के काले गोले फीतों में लटक रहे ताबीज एक एक दिखाता गया, ताबीज के एक तरफ खुले भाग की तरफ इशारा करते हुए सुनार ने पूछाइसमें मंत्र रखना है या नहीं? पाल ने कहा नहीं। फिर पूछा बंद कर दूं? सरदार ने कहा हाँ। छोटी छोटी ठोकरों से उसने ताबीज का मुँह बंद कर दिया।  ताबीज के धागों को ऐसे पकड़ रखा था जैसे बहुत ही मूल्यवान वस्तुएँ हों। पाल ने कई तस्वीरें खींची। पाल, रंचन और लाली तीनों के गले में ताबीज पहनाकर सुनार चला गया। रिन ने कहा सुन्दर दिखाई दे रहे हैं।

पाल ने कहा लाली, लोक गीतों में अंगुठी, मछली, लौंग, टिक्का, कितने ही गहनों के नाम आए हैं। ये गहने दिखाओ। इनकी तस्वीरें टप्पों के साथ छपेंगीं तभी पाठकों को इनकी पृष्ठभूमि का पता चलेगा। लाली गाने लगा कच्ची टुट गई जिनहां दी यारी, पत्तणा ते रोण खड़ीआं। रिन ने हँसकर कहा ये टप्पा अमेरिकी लड़के लड़कियों को समझ नहीं आएगा, क्यों रोना? यारी किसी और से कर लो। रोने का क्या मतलब? तेरी मेरी इक जिंदड़ी, सुनते हुए रिन ने कहा नहीं नहीं, अमेरिकी लड़की कहेगी मेरा एक अलग अस्तित्व है, अलग खाता, बराबर हक, उसे एक जिंदड़ी कहा तो वह मुकद्दमा कर देगी।

लाली ने कहाकिन्तु टप्पे का अनुवाद हो नहीं सकता। टप्पा किसी सभ्याचार का प्रतिनिधि है, लोक गीत है। हाइकू का अनुवाद हो सकता है क्योंकि ये एक व्यक्ति की रचना है। वह देख पाल, गिद्धा डालने का समूह आ रहा है। सभी छत्त से उधर देखने लगे, चलते हुए नहीं, नाचते आ रहे हैं। यदि चलते हुए गाँव में प्रवेश करते तो ग्रामीण वासियों ने इस बात का बुरा मानना था।

पानी के समीप आकर रुक गए। रिन ने पूछाअब गड्डा भेजोगे? सरदार ने

कहा नहीं, खुद ही पानी में से चल कर आ जाएँगे। रिन ने पूछा किन्तु उनकी चादरें खराब हो जाएँगी। लाली ने कहा नहीं ये चादरों के किनारें पकड़कर उसे ऊपर उठा लेंगे। चादरें बहुत काम की वस्तु हैं, पहन लो, बिछा लो या अपने ऊपर लेकर सो जाओ। सारे काम करती है। सरदार ने कहा गरीब के लिए कफन भी हैं।

अपनी अपनी चादरें संभालकर सभी पानी में से निकल कर आ गए। एक तरफ ग्रामीणवासी उनके स्वागत के लिए खड़े थे। बच्चों से लेकर बूढ़ों तक सभी। कंधे पर बैठे बच्चे, झुके हुए वृद्ध, सभी। स्त्री-पुरुष सभी। रिन ने कहा पाल, कैमरा, स्नैप। अब तक पाल हज़ार से अधिक तस्वीरें खींच चुका था। मुंडेर पर बैठी स्त्रियों को इन्होंने पहली बार देखा था देखो रिन, घूंघट में से गिद्धा टीम को देख रही हैं। ये इक्ट्ठ हवेली के बड़े दरवाजें से प्रवेश करके भीतर आया। रंग बिरंगी चादरें, लम्बे सफेद कमीज़, कढ़ाई की हुए नोकदार जूते, रंग बिरंगी पगड़ियों पर शमले। गलें में ताबीज, हाथों में कड़े और घुटनों से घुघरालें। भीड़ उनके साथ अन्दर चली गई। आंगन और वरांडे में लगभग चार सौ व्यक्ति खड़े थे। संख्या बढ़ने लगी, तो सीढ़ियों पर बैठ गए, खड़े हो गए।

रिन ने पूछा सारा गाँव ही भीतर क्यों? सरदार ने कहा ये गाँव है। सभी आएँगे, सभी का स्वागत होगा। मुझे पता था आएँगे वो देखो चाय के पतीले। फिर सरदार ने मीत को ऊँची आवाज़ में कहा मीत, चाय पीए बिना कोई नहीं जाना चाहिए। मीत ने कहा ठीक है बापू जी। सभी पीत्तल के गिलासों में चाय पी रहे थे, बातें कर रहे थे, आवाज़ों का समुद्र।

पाल ने कहा कितना अद्भुत दृश्य है। ऐसे इक्ट्ठ तो यहाँ आम होते रहते हैं? सरदार ने कहा अब कम। लाली पटियाला रहता है। मैं रहता तो गाँव में हूँ किन्तु अब गाँव के कामों में अधिक हस्तक्षेप नहीं करता। किसी समय सारे गाँव की ज़मीन मेरे नाम थी, अब कम रह गई। जब मैं सरदार था तब ऐसे इक्ट्ठ आम होते थे।

- वे दिन याद आते हैं?

- नहीं, कोई फर्क नहीं।

- फर्क क्यों नहीं, इतनी सम्पत्ति/छिन चली गई?

- अब भी बहुत बची हुई है, पीढ़ियों तक समाप्त नहीं होगी। देखो ज़मीन कम हुई, मेरी आवश्यकताएँ भी कम हो गईं, जिम्मेवारियाँ भी कम हो गईं।

- परन्तु आपको क्या काम है? खेत में तो नौकर काम करते हैं।

- काम क्यों नहीं? मैं इनके काम का विभाजन करता हूँ, इनके झगड़े निपटाता हूँ, इनके बच्चों के विवाह, बड़ों का संस्कार करता हूँ। लाठी पकड़ कर बैल खींचने के अतिरिक्त भी अनेक काम होते हैं।

- भूतपूर्व और तत्कालीन प्रबन्ध में कोई विशेष अन्तर आया?

- हाँ। उस समय सौ व्यक्ति काम करते थे। तीनों पहर उनके लिए रोटी बनती

थी। अब केवल पन्द्रह रह गए हैं, कभी दस रह जाते हैं।

- ग्रामीणों के साथ जो सम्बन्ध थे उनमें कोई फर्क पड़ा?

- आप साक्षात् देख रहे हो, यदि कोई फर्क होता तो क्या सारा गाँव यहाँ मेरी हवेली में बैठकर चाय पी रहा होता? मुझे प्रेम करते हैं, मेरा कहना कभी न माने ऐसा नहीं।

- आपके जैसे और भी सरदार हैं आस-पास के गाँवों में?

- पहले थे। चले गए।

- कहाँ गए?

- शहरों में। ग्रामीणवासियों ने अनेकों को आग में जलाया।

- क्यों? पाल ने पूछा।

- शराबी कबाबी थे, औरतबाज़ थे, लोगों को बुरे लगे, मार दिया।

- आप अच्छे सरदार हो?

- मुझे क्या पता। लोगों से पूछो।

- ट्रैक्टर क्यों नहीं लेते?

- ट्रैक्टर खरीद लिया तो ये लोग कहाँ जाएँगे? ज़मीन नहीं है इनके पास।

- आप शहर क्यों नहीं गए?

- शहर में मेरा मन नहीं लगता। कभी कभी चला जाता हूँ, वापस यहीं आता हूँ। यहीं रहना है। लाली शहरी बन गया। मेरे बाद ये ट्रैक्टर खरीद कर आधुनिक खेती करेगा या ज़मीन बेचकर कोई अन्य कारोबार, इसकी इच्छा। जब तक मैं हूँ, मुझसे गाँव अलग नहीं होगा। गाँव मेरा परिवार है।

मीत ने पूछा बापू जी चाय पिला दी। और कोई हुक्म?

- सरपंच के घर जाओ, पूछो गाँव में कार्यक्रम करवाना है, क्या मैं हवेली में करवा दूं। ये बड़े कलाकार हैं, इन पर पहला अधिकार गाँव का है। यदि प्रबन्ध नहीं हो सकता तो यहाँ मेरे घर में आ जाएँ, गाँव यही आ जाए।

पाल ने पूछा किन्तु अभी तो आपके कहा था कि ये गाँव आपकी बात मानता है। कोई बता रहा था आपके वचन गाँव के लिए कानून है। फिर सरपंच से क्यों पूछते हो।

सरदार ने कहा मैं इनका कहना मानता हूँ, इनसे पूछ कर काम करता हूँ, तभी तो ये मेरी बात मानेंगे, तभी तो मेरा वचन कानून होगा। कल अगर आप कह दो कि आपने वापस जाना है, मैं कहूंगा, नहीं, गाँव उदास हो जाएगा, अभी मैंने और बातें करनी है, अभी दो दिन तक नहीं जाना, आप मेरा कहना मानोगे? प्रेम पूर्वक कहे मधुर वाक्यों से बड़ा कानून मुझे तो दिखाई नहीं देता।

तभी मीत आ गयाबापू जी सरपंच ने कहा पहला अधिकार सरदार का है क्योंकि सरदार के निमंत्रण पर आए है, फिर भी मेरी प्रार्थना है स्कूल के मैदान में ठीक रहेगा, वहाँ भीड़ नहीं होगी। मैं प्रबन्ध कर रहा हूँ।

सरदार ने कहा ठीक है, गाँव को बता दो कि अखाड़ा स्कूल में होगा। गाँव वहाँ आमंत्रित है सरदार की तरफ से।

मीत हवेली की मीनार पर चढ़ गया, हाथों का बिगल बनाकर ऊँची आवाज़ में पहले दाएँ, फिर बाएँ, फिर सामने तीन बार निमंत्रण की घोषणा की। उसकी आवाज़ में गरज थी, ताकत थी। "भाइयो! स्कूल के मैदान में पहुँचो। वहाँ अखाड़ा लगेगा। खत्म होने के बाद कलाकार हवेली में आएँगे, उनके साथ आप सभी हवेली में आना। सुनो भाइयो, सरदार का निमंत्रण सुनो।"

आवाज़ सुनते ही हवेली के बाहर खड़े लोग अपने अपने घरों की तरफ चले गए, फिर आंगन में बैठे लोग निकले, फिर वरांडों में से, अंत में छत्तों पर बैठे लोग नीचे उतर गए। सभी मिनटों में चले गए। एक भी वहाँ नहीं रहा।

पाल ने कैमरा, टेप रिकार्डर लिया। सभी स्कूल की तरफ चले गए। लोग पहले से ही वहाँ बैठे थे। अधिकतर बैठे थे, थोड़े-बहुत पीछे पंक्तियों में खड़े थे। दो ढोलक वादक ढोल बजा रहे थे। ढोल की आवाज़ भी निमंत्रणपत्र है, जिसने मीत की आवाज़ नहीं सुनी, ढोल की आवाज़ सुनकर आ गए। इन्होंने इस कारण भी ढोल बजाना था क्योंकि कलाकार तैयार हो  रहे थे, क्योंकि गले में लटका हुआ था इस कारण भी बजाना ही बजाना था।

लोग धरती पर बैठे थे, मेहमान कुर्सियों पर। सरदार के लिए चारपाई लगा दी गई, वह बैठ गया।

- कौन सी बोलियाँ सुनने की इच्छा है पाल? लाली ने पूछा।

- जो ये लोग सुनाना चाहें। पाल ने कहा।

- परन्तु ये आपके लिए हैं, इसलिए आपकी बात मानेंगे।

- ठीक है फिर। इश्क की बोलीयों से शुरू करें।

तुरली वाला लम्बा युवक सिक्ख नहीं था, किन्तु गिद्धा और भंगड़ा पगड़ी के बिना नहीं होता, वह टीम का लीडर था। उसने बाँह को उठाकर, लोगों की तरफ अंगुलि से इशारा किया। चार छन्दों वाली बोली सुनाई और अंतिम छन्द पर सभी साथ नाचने गाने लगे। हाथों में लकड़ी की नागिनें ढोल के डग्गे से ताल मिलाने लगीं। बहुत देर तक नाचते गाते रहे। तभी श्रोताओं में से एक उठा, अपने स्थान पर खड़ा होकर बोली गाने लगा, बोली की अंतिम पंक्ति मंच की टीम ने उठा ली, पहले से भी अधिक जोश के साथ गई। ढोली पीछे की तरफ इतना झुका कि कैंठे की डोरी ज़मीन को छूने लगी।

रिन ने पूछा इन्होंने टीम के सदस्यों को श्रोताओं के बीच बिठा रखा है?

- नहीं, लाली ने बताया, जिसकी इच्छा है वह बोली गा सकता है, स्वागत है। जैसे कबड्डी में जो चाहे खेल सकता है। फिर बोलियों का विषय बदलकर राजनीतिक व्यंग्य बन गया। फिर एक लम्बी फैशनेबल महिला पर व्यंग्य, सभी श्रोताओं ने हँसते हुए दोहराने की मांग की। पाल ने कहा लाली चलें। लाली ने कहा क्यों? पाल ने कहा लोग बोलियाँ

कम सुन रहे हैं और मेम की तरफ अधिक देख रहे हैं। विशेषतः वो जो फैशनेबल महिला के बारे में थी उसने तो बात ही खत्म कर दी। लाली ने कहा आप रंचन के साथ जाइए, मैं क्योंकि मेज़बान हूँ, अभी रुकूंगा। वे हवेली में आ गए।

पाल ने बताया रंचन मैं उपन्यास लिख रहा हूँ। उसका एक अध्याय फतहगढ़ गाँव होगा।

- क्या थीम होगा?

- थीम ये कि दो शताब्दियों तक इंग्लैंड का राज्य रहा, अब यूनिवर्सिटी स्तर तक शिक्षा प्राप्त है परन्तु भारत ने पश्चिम के प्रभाव को बिल्कुल भी स्वीकार नहीं किया। लाली ने सात्र, कामू, अमेरीकी, यूरोपीयन चिंतकों का अध्ययन किया है। पश्चिमी विद्वान् के समान व्याख्या अच्छी कर लेता है, पश्चिम का प्रभाव उसकी शख्सियत में, पटियाला में भी दिखाई देता है। यहाँ गाँव में आकर वह ग्रामीण हो गया है। राजनीतिक कत्ल उचित है, इस प्रकार की बोलियाँ सुन रहा है, फैशन के खिलाफ, औरत के विरुद्ध, सुन रहा है अपने पिता की तरह फ्यूडल लार्ड हो गया है। बल्कि उससे भी अधिक। जब उसके पास पिता के बाद ज़मीन आ गई तो लाली उससे अधिक गुस्से वाला जागीरदार होगा। देख रंचन, कातिल यहाँ खेतों में काम कर रहे हैं। सरदार ने पैसे के बल पर बड़ा वकील करके उम्र कैद की सज़ा को पाँच वर्ष तबदील करवा लिया। रिहा होते ही यहाँ आ गया। और भी अनेक है यहाँ। पटियाला में मेरा पड़ोसी वकील अपने गाँव के व्यक्ति के कत्ल के मुकद्दमे को बिना फीस लिए लड़ रहा है, और वकील गाँव में दस वर्ष पहले गया था।

- किन्तु इसमें बुरा क्या है पाल?

- बुरा? यही तो फ्यूडलिज़्म है, ये मेरा कबील है, ये उसका, एक मालिक है, दूसरे उसके गुलाम हैं। दिल्ली से लेकर फतहगढ़ तक कहीं लोकतन्त्र नहीं, जागीरदारी है। अखाड़े में मैंने देखा सरदार अपने लोगों के इक्ट्ठ को अलग अलग दिशाओं में पोजीशन लेने के लिए निर्देशित कर रहा था, इतने बड़े जलसे में कभी कहीं भी लाठियाँ बरस सकती हैं। मुझे माहौल अपराधी लगा, इसी कारण आ गया।

घंटे बाद लाली अपने पिता के साथ आ गया। बीअर शुरू हो गई। लाली से पूछाकोई विशेष बोली? लाली ने कहा सभी विशेष। मैंने लिख लीं हैं, गूगे पीर कीं, गोरखनाथ कीं। एक बांझ औरत गोरखनाथ के पास संतान प्राप्ति के लिए जाती है। गोरखनाथ बाजरे के दो दाने देता है। औरत जुड़वां बच्चों को जन्म देती है। गोरख की जय जयकार। सुनकर रिन ने कहा जहाँ जाओ, बांझपन का दुःख, इतनी आबादी है, फिर भी कोई औरत बांझ नहीं रहना चाहती, तौबा। हम कुरूक्षेत्र गए, वहाँ के सुन्दर मन्दिर को एक राजा ने बनवाया था। अपनी रानी सहित माथा टेकने आया, कहा, यदि संतान दे दो तो फिर आऊँगा, मन्दिर बनवाऊँगा। संतान हुई, मन्दिर बनवाया। मुझे तो लगता है कि यहाँ औरतें बांझ नहीं, पुरुष ही नामर्द हैं।

सरदार ने कहा विवाह का और क्या मतलब होता है। अय्याशी? ये तो विवाह

के बिना अधिक होती है। विवाह का अर्थ संतान उत्पत्ति हेतु धर्म की शपथ लेना है। फिर विवाहित दम्पत्ति संतान के लिए प्रार्थना क्यों न करें?

पाल ने कहा देखो प्रत्येक व्यक्ति संतान नहीं चाहता। रिन बांझ नहीं, मैं भी ताकतवर मर्द हूँ। हमने निर्णय ले रखा है बच्चे पैदा न करने का। मेरा काम लिखना है, रिन का पेंटिंग करना। हमें किसी और चीज़ की आवश्यकता नहीं।

मीत आया बापू जी, गिद्धा टीम आ रही है पीछे पीछे गाँव भी।

- ठीक है। खाने-पीने का प्रबन्ध करो।

- हाँ बापू जी। बकरों को काट कर मीट की देगें तैयार कर ली गई। दाल, सब्ज़ी, हज़ारों रोटियाँ तैयार थीं। जवान लड़के खिलाने के लिए बैठे थे।

- देख, एक बात का ध्यान रखना। भोजन मेरे लोगों ने बनाया है, खिलाएँगे गाँव के लड़के। समझा? बिना मतलब के बकवाद सरदार के लोग खा गए अधिक, दूसरों को मिला कम। देखते रहना, कोई वस्तु कम न रहे।

- बापू जी, हमने तो भोजन गाँव के लोगों से ही बनवाया है। यदि कोई कह दे स्वादिष्ट नहीं, हमारे लिए तो ये मरने के समान है।

- शाबाश मीत। शाबाश। भोजन के बाद लोग हवेली से बाहर आ गए। पाल ने अभी और रिकार्डिंग करनी थी। गिद्धा पार्टी छत्त पर आ गई। ढोल बजा, बोली गायी। पाल ने रुकने का इशारा किया। देखना चाहता था कि रिकार्डिंग ठीक हुई या नहीं? टैस्ट फेल। रिकार्डिंग नहीं हुई। शायद ढोलक की आवाज़ ज्यादा ऊँची है। ढोल बजना बंद। बोली गायी गई। रिकार्डिंग फिर से फेल। ये लकड़ी की नागिने व्यर्थ हैं इनकी भी पिच्च ऊँची है। ये भी बंद। एक व्यक्ति बोली गाये... बिना किसी साज़ के। बोली तो गायी... किन्तु ये कैसी बोली है? ढोल और नागिन के बिना... नाचे बिना। पाल चिढ़ गया... चलो बाकी कल देखेंगे। सरदार ने गिद्धा पार्टी से नीचे जाकर सोने के लिए कहा। वे लोग नीचे चले गए।

मीत ऊपर आया, सरदार से कहा जी गाँव बाहर दीवारों के साथ खड़ा है। उनकी इच्छा है और सुनने की है। सरदार ने कहा सुन लो। किन्तु अधिक समय तक नहीं। मीत ने कहा ज्यादा देर तक नहीं। दो घंटे। बस दो घंटों से अधिक नहीं। सरदार ने कहा ठीक है। दो घंटे केवल। दीवारों के साथ खड़ा गाँव भीतर आंगन में आ गया। अब तो हद हो गई। गिद्धा पार्टी तो केवल साथ दे रही थी। बोलियाँ तो गाँव के लोगों ने गाईं। एक के बाद दूसरा, दूसरे के बाद तीसरा... कभी कोई बच्चा ... फिर बूढ़ा ... फिर जवान ... पागलपन का नाच... पागल कर देने वाला जोश। देवते धरती पर उतर आए ... गिद्धा पार्टी तो दर्शक बन गई... मंच गाँव ने संभाल लिया ... जाट के खिलाफ बोली ... ब्राह्मण के खिलाफ बोली ... प्रत्येक जाति का मज़ाक उड़ाने वाली बोली ... औरत की सुन्दरता ... घूंघट ... पर्दा ... मौसम ... लूटना ... युद्ध ... शांति... प्रत्येक बोली। जीजा साली, देवर भाभी, सास बहू, ननद भाभी, गुरू नानक देव जी, गुरू गोबिन्द सिंघ जी ..

. प्रेम ... नफरत ... गुस्सा ... काम ... दुःख ... पश्चात्ताप ... प्रत्येक पक्ष पर बोली। इतनी बोलियाँ कि प्रत्येक आगे आ रहा था किन्तु नम्बर नहीं आ रहा था। अधिकतर शराबी थे, किसी ने कोई गुस्ताखी नहीं की। यही है पंजाब, वह पंजाब जो ग्लोब को अंगुलि पर रखकर, अंगूठे से ठेला मारने से पहले ईश्वर से पूछे बताओ हेड या टेल, कौन सी तरफ लेनी है, फिर ठेला मार दे। ईश्वर नहीं, पंजाब ससांर का रैफरी है, ईश्वर इसके लिए खेलता है।

पाल बेचैन था। छत्त पर बैठे बैठे रिन से कहा ये भीड़ खतरनाक है। देखो आपस में उलझने लगे हैं। शर्त लगा लो प्रत्येक ने शराब पी हुई है। रंचन ने कहा हाँ लगभग सभी ने पी हुई है। मैं नीचे चक्कर लगाने गया। मीत मेरे पास आया, कहा देखो जी आप साहिब बहादुर हो। मेरे पास यदि आपके लिए मँहगी विस्की होती, अवश्य पिलाता। जेब में से देसी शराब निकाल कर कहा यजमान का दान कबूल करो पुरोहित जी। मैं एक बड़ा पैग लगा आया हूँ। बेचैनी सी तो हुई किन्तु जो है वह ठीक है। जब मैंने मीत द्वारा दी शराब पी तो उसकी खुशी की कोई सीमा नहीं थी। फिर बताया कि सरदार को ऐसे ही बापू नहीं कहता। वह है ही हमारा बापू। महाराज की सौगन्ध मैंने उस व्यक्ति को कत्ल नहीं करना था। वह पाकिस्तान से आया रिफ्यूजी था। बिना मतलब उसने दो तीन बार बापू जी का अपमान कर दिया। एक दिन मेरे सामने बापू को गलत बात कही। मुझे गुस्सा आ गया। मैंने उसके कान के पास मुक्का मार दिया। मुझे बस यही करना था। किन्तु उसने कृपाण निकाल ली। इससे पहले कि वह मुझ पर आक्रमण करता मैंने बंदूक निकाली और गोली दाग दी। वह उसी समय मर गया। कोई सरदार को गाली देकर दिखाये। मैं फिर वही काम करूँगा। जब रिफयूजी यहाँ आकर ठहरें, हम उनकी आबादी में गए . .. किसी चीज़ की आवश्यकता हो तो हाज़िर हैं... आपका यहाँ आना हमारा सौभाग्य, हमारा माथा तुम्हारा, हमारा दिल तुम्हारा, बस हमारी बहू बेटियों की लाज बनाए रखना, हमारे बड़ों को गलत मत बोलना। हमारी कुछ परम्पराएँ हैं, अच्छी लगती हैं या बुरी उनका सम्मान करना। उस व्यक्ति को बात समझ नहीं आई।

मीत ने बोली गाई। गोरे ने उसकी तरफ अंगुलि करते हुए कहा ये व्यक्ति सबसे अधिक खतरनाक है। मीत की बोली का अर्थ था गोरे की नीयत में खोट है। इसके पास पैसा है, ये समझता है उससे जो चाहे खरीद सकता है। उसके दिन कम है। इस बोली का अनुवाद पाल को नहीं सुनाया गया।

रिन ने कहा ये भीड़ मुझे इस कारण खतरनाक लगती है क्योंकि इस में एक भी स्त्री नहीं है। स्त्रियाँ पुरुषों से दूर रहती हैं। छत्तों पर बैठकर तमाशा देखती हैं। लाली ने बताया, गाँव की महिलाएँ कल आएँगी और केवल आपके लिए नाचेंगी, गिद्धा करेंगी। पाल ने कहा देखेंगे। आज जंगली व्यक्ति देखे, ऐसे खतरनाक व्यक्ति मैंने कहीं नहीं देखे।

दो घंटे बीत गए तो सरदार ने कहा अब बस। रुक गए। गाँव अपने अपने घरों में चला गया। गिद्धा पार्टी के कलाकार वरांडे में सो गए जहाँ गेहूँ की बोरियां रखी

हुई थीं, सामने पशु, मुर्गीखाना। पशु, मुर्गियाँ, कलाकार सभी सो गए। लालटेनें बंद करके पूरा गाँव सो गया। क्या पता ये स्वप्न देख रहा हो कि ऐसी रात फिर देखेंगे। ये पुराना घर है। पुराना घर, ओलडमैन, बूढ़ा कुत्ता, बूढ़े पहाड़, बूढ़ा पंजाब देश, बूढ़ा भारत, सभी स्वप्न देखते हैं। इनका इतिहास बहुत प्राचीन है। शोधार्थी अभी किनारों पर ही घूम रहे हैं। पुराने ठीकरे, हड्डियाँ, सिक्के, धुनें, गीत तलाश कर जोड़ने होंगे। अभी ये काम शेष है।

गाँव सो गया किन्तु सरदार और उसके मेहमान नहीं सोए। दिन में घटित घटनाओं पर चर्चा होने लगी। पाल ने कहागाँव हिंसक है। स्त्री और पुरुष अलग अलग हैं, समलैंगिकता है। परम्पराएँ, रिवाज़ महत्त्वहीन हैं। सरदार के सामने उसने कहा लाली मैं ऐसे गाँव में रहने के बारे में सोच भी नहीं सकता। तू भी यहाँ मत रहना। मैं तुझे कैलीफोरनिया में फैलोशिप दिला दूंगा। पंजाबी लोकधारा का अंग्रेजी अनुवाद करना। सरदार ने कहा इसकी जो इच्छा करे। गाँव में रहे या शहर में, अमेरिका जाए, कॉलेज की लड़कियों से बातें करे। ये स्वतन्त्र है। मेरी आयु बीत चुकी है। जैसी भी बीती, मैं सन्तुष्ट हूँ। मुझे किसी बात का पश्चात्ताप नहीं।

गोरे ने हँसकर कहा सरदार, संन्यास की तैयारी है?

रिन ने पूछा इस शब्द का क्या अर्थ है?

पाल ने बताया भारतीय जीवन के चार पड़ाव निश्चित हैं। पहला है ब्रह्माचर्य, विद्या प्राप्त करो, कामवासना से दूर रहो। दूसरा पड़ाव है विवाह करो, संतान उत्पत्ति, धन कमाओ। ऐश करो। तीसरा पड़ाव है मोह ममता से दूर रहो, घर में रहो किन्तु हस्तक्षेप न करो। अंततः चौथे पड़ाव में सब कुछ त्याग दो। ईश्वर की तलाश करो। सौ वर्ष के चार भाग अर्थात् पच्चीस पच्चीस वर्ष विभाजित किए गए हैं।

रिन ने कहा किन्तु पाल भारतीयों की औसत आयु चालीस वर्ष है। फिर ये फार्मूला किस काम का?

पाल ने कहा यहाँ गरीबी है, बिमारी है, उपचार नहीं है। देख रही हो, बिशन है 32 वर्ष का किन्तु 50 वर्ष का लगता है। राज़दां और मैं समायु हैं, 40 वर्ष किन्तु राज़दां 50 वर्ष का लगता है।

रंचन ने कहा एक बात ये भी है कि भारतीय अपनी आयु छिपाते नहीं। राज़दां पर एक बार चेचक ने प्रहार किया दूसरी बार तपेदिक ने। दो बार मृत्यु के मुँह से वापस आया है। उसकी छाती में एक फेफड़ा है और छाती की कुछ हड्डियाँ गल चुकी हैं। इस कारण टेढा बैठता है, टेढा खड़ा होता है। रिन चालीस वर्ष की है, मेकअप करके दुल्हन की तरह सजती है, चाहती तो है कि तीस की लगे किन्तु 50 वर्ष की लगती है। लुका-छिपी का ये खेल नहीं चलेगा। ये राज़दां से बड़ी दिखाई देती है। मेरी आयु 32 वर्ष है। किन्तु इच्छा 40 का दिखाई देने की है। मुझे जवानी की अभिलाषा नहीं। मैं शीघ्र ही 50 वर्ष का होकर वानप्रस्थाश्रम ग्रहण करना चाहता हूँ, जिम्मेवारियों से मुक्त।

पाल ने कहा तेरा अंतिम वाक्य तेरा नहीं किसी ब्राह्मण का है।

रंचन मैं हूँ ही ब्राह्मण। न्यूयार्क में रहता हूँ, विस्कांसिन पढ़ता हूँ, कैलीफोरनिया में पढ़ाता हूँ, तो भी ब्राह्मण का ब्राह्मण ही हूँ।

चिढ़ कर रिन ने कहा आज मैं बोर हो गई हूँ। चारों तरफ पुरुष ही पुरुष, पुरुषों की भीड़। कहीं एक महिला नहीं। कहीं महिलाएँ हैं, केवल महिलाएँ। इन्हें कब पता चलेगा कि प्रेम क्या है?

रंचन ने कहा प्रेम, अर्थात् कामवासना, इससे अच्छे अनेक शब्द हैं डिक्शनरी में ।

रिनप्रेम से अच्छा शब्द आज तक नहीं बना। मैं इस शब्द पर कुर्बान हूँ। फिल्म की नायिका का वाक्य सुना है हे प्यार, तुझे अक्ल भी आएगी कभी या नही? फिर पूछा रंचन तुझे डिक्शनरी में कौन सा शब्द सबसे अच्छा लगता है?

रंचनअनेक शब्द सुने हैं, स्वतन्त्रता, वफादारी, नेकी, मित्रता, सत्य, ये सभी उतने ही पवित्र हैं जितना प्रेम। इन शब्दों के अभाव में प्रेम महत्त्वहीन है।

रिन अच्छा ये बताओ रंचन इन सभी शब्दों में तुम्हारा सबसे प्रिय कौन सा शब्द है?

- सत्य, मैं ब्राह्मण हूँ रिन।
- तुम्हारा शब्द कौन सा है लाली?
- मित्रता।
- और सरदार का?
- नेकी। सरदार ने कहा नेकी और वफादारी।

रंचन ने पूछा तुम्हारे लिए प्यार शब्द सर्वोत्तम है किन्तु कौन सा प्यार? कुत्ते से या ईश्वर से? पति से या आशिक के साथ? फ्री लव या स्लेव लव?

रिन ने कहाईश्वर को छोड़कर अन्य सभी के साथ। अन्य सभी प्यार कबूल। सरदार ने कहा अच्छा, चलता हूँ, सोना है।

उसके जाने के बाद पाल ने कहा यह सरदार ठीक है। ये न हो तो लगातार गोलाबारी होने लगे। खतरनाक लोग इसके आगे झुक जाते हैं। जंगली लोगों में एक डिऊक भी होना चाहिए। इसका हुक्म चलता है। चलेगा। गाँव समझ गया है... ये गाँव का रक्षक है। गाँव का कारोबार देवता और ईश्वर के बिना चल सकता है, सरदार के बिना नहीं।

गोरे ने लाली से पूछा मीत ने अपने भतीजे को थप्पड़ क्यों मारा?

लाली ने कहा उसने कहा था कि वह अपने मित्र के घर सोना चाहता है।

मीत ने कहा यहाँ मेरे कमरे में सो जा। कहीं नहीं जाना।

पाल यह हमबिस्तर, हमजीनस का मामला है लाली। बुरी बात है।

रंचन एक दस बारह वर्षीय अमेरिकी लड़की हमारे पास यहाँ कुछ सप्ताह रही थी पंजाब में। वह कहती थी मुझे यहाँ के लोग अच्छे लगे। पिता-पुत्र, भाई, मित्र एक

दूसरे से गले मिलते हैं। माँ, बेटी, बहनें, सहेलियाँ, हाथ में हाथ, बाँह में बाँह डालकर चलती हैं, बड़ी आयु के लोग छोटों को गले लगाते हैं। मुझे ये सब बहुत अच्छा लगा। हमारे देश में ऐसा नहीं होता। तुम्हारी नज़र में नुक्स है पाल। जिसने कुत्ता पाला हुआ है, आप कहोगे ये भी हमजीनस का विकृत रूप है। मैं अमेरिका गया तो एक सोशल वर्कर मैडम हमें तौर-तरीके सिखाने आई। ऊँचा लम्बा कद, पुरुष जैसी लगती थी। उसने कहा पब्लिक में लड़का लड़के का हाथ, लड़की लड़की का हाथ पकड़कर नहीं चलेगी। अकेले अकेले छिप कर जहाँ चाहो धक्के खाओ, पब्लिक में अभद्र दृश्य अस्वीकार्य हैं। मेरे विचारानुसार ये घोषणा कर देनी चाहिए कि जो भी पंजाबी अमेरिका में जाता है अपने हाथ पैंट की जेब से बाहर न निकाले, पुलिस पकड़ लेगी।

अगली सुबह मेहमानों ने नाशता किया तो उसी समय गाँव की लड़कियाँ, बूढ़ी स्त्रियाँ एक एक दो दो करके आने लगीं। कुछ ही देर में आंगन पूरा भर गया। अविवाहित, नवविवाहित आदि सभी। पाल ने कहा किन्तु ढोल तो है नहीं। लाली ने कहा इन्हें ढोल की आवश्यकता नहीं। इनका साज़ इनके हाथ हैं। बोलियां गायेंगी, गिद्धा होगा। लाली ने रिन को नीचे उनके पास जाने के लिए कहा। रंचन ने हँस कर कहा पुरुषों में तेरा क्या काम रिन? तेरी जगह नीचे है। रिन ने पूछा मेरी बात तो वो समझ नहीं पाएँगी, फिर मैं नीचे जाकर क्या करूँगी? लाली ने कहा केवल एक बार उनके बीच जाकर खड़ी हो जाओ। बाकी का काम वो खुद करेंगी।

रिन नीचे उनके बीच जाकर खड़ी हो गई। लड़कियाँ उसके समीप आ गईं। कमीज़ सलवार पहने गोरी उनके बीच खड़ी थी, लड़कियाँ उसे छू छू कर देख रही थीं और हँस रही थीं। सभी बहुत ही ऊँची ऊँची, बिना किसी कारण के, केवल खुशी में हँसी। ऊपर बैठे व्यक्ति उन्हें इस तरह हँसते देखकर हँसने लगे। लड़कियों ने जब पुरुषों को हँसते देखा तो हँसना बंद नहीं किया अपितु दुपट्टों से अपना अपना मुँह ढक लिया। आँखों से पानी बहने लगा, हँसी के फव्वारे टावरों के ऊपर से निकल गए। लाली ने पाल को बताया मुद्दत से इस घर को औरत की तलाश है। बचपन में माँ की मृत्यु हो गई, तभी से इस घर में उदासी छाई हुई है। सरदार को कोई विवाह करवाने के लिए कहता तो उत्तर देता किसके लिए? पुत्र प्राप्ति के लिए विवाह होता है, फल मिल चुका है, और क्या चाहिए?

गिद्धा शुरू हुआ। बोली गायी गई। बोली के अंतिम छन्द पर गिद्दा, दो लड़कियाँ मध्य में आकर बाँहों में बाँहे डालकर वक्राकार में नाचने लगीं। फिर किक्कली की मुद्रा में नाचने लगीं। पाल ने कहा बहुत अच्छा। पुरुषों के नाच से बहुत अच्छा नाच। फिर पाल ने पूछा बापू कहाँ है? लाली ने कहा साथ के गाँव में गए हैं। कोई विशेष काम था? लाली ने कहा नहीं, कोई काम नहीं था। फिर क्यों गए हैं? क्योंकि बापू नाचती और बोलियाँ गाती लड़कियों को नहीं देखते। ओह, यू मीन वनवास, और हँसने लगा। लड़कियाँ रिन को खींचकर बीच ले आईं और नाचने के लिए कहा। रिन ने कहा अगली बार। जब दोबारा आई तो नाचूंगी। परन्तु लड़कियाँ कहाँ मानने वाली थीं।

नाचने लगीं। बेशक इन लड़कियों जैसा नहीं, फिर भी बहुत नाची, माथे पर पसीना आ गया तो रुक गई। लड़कियाँ दुपट्टे से उसका माथा पोंछने लगीं। एक लड़की ने बोली गायी :

कुझ लुट लया मैनू साधां संता
कुझ लुट लया सरकारां।
गहने गट्टे सौहरयां खोह लये
रूप लुट लया यारां। नी मैं लुटी गई, लुट लई ज़रदारां, नी
मैं लुटी गई।

तीन घंटे तक गिद्धा होता रहा, दोपहर हो गई। सभी ने शरबत पिया और चली गईं।

मेहमानों ने वापसी की तैयारी शुरू कर दी। सामान कार में रखने लगे। हाथ में धागे का एक गोला लेकर मीत आया और पाल को दे दिया। ये किसलिए? पाल ने पूछा। ये उस सूत में से है जिसे मैंने जेल में काता था। पाल ने कहा इसे मैं रखूंगा। ये सबसे पवित्र उपहार है। मेरे लिए कीमती। सरदार ने एक बहुत ही सुन्दर छोटी सी छुरी जिसका कवर बहुत सुन्दर था, पाल को दी। पाल ने छुरी की नोक रिन की छाती पर रखते हुए कहा अब मैं सरदार हूँ। तुझे सीधी करूँगा।

रिन ने कहा शुक्रिया फादर। आपने कितनी सौगातें दी, थैंक्स। आपने हमें कितना मान-सम्मान दिया। जब पटियाला आओ तो हमारे यहाँ अवश्य आना। लाली तो हमारे घर का बेटा है अब। अनुवाद में सहायता करता है।

सरदार ने रिन के हाथों में एक शाल रखा। नीले, हरे, भूरे रेशम की कढ़ाई, मोरपंख की आँखें, किनारों पर ज़री की कढ़ाई। चार महीने लगे थे इसकी कढ़ाई करने में। रिन ने कहा कैलीफोरनिया, लैगुना हिल्लज़ पर हमारा घर है, कभी आना ज़रूर।

- लाली आएगा, मैं तो बूढ़ा हो गया हूँ, सरदार ने कहा।

पाल ने कहा हाँ लाली आएगा कैलीफोरनिया। लाली पंजाब है, पंजाब का स्वागत होगा। कैलीफोरनिया यूनिवर्सिटी को लाली की आवश्यकता है, उसे पंजाब की संस्कृति का पता है।

सीढ़ियों से नीचे आ गए। कार के समीप हज़ारों लोग विदायगी देने के लिए खड़े थे। हाथ हिलाकर विदा किया। पुरातन बड़े दरवाज़े को पीछे छोड़कर कार सराय के दरवाज़े से बाहर निकल गई।

रिन ने कहा लाली, यहाँ स्त्री-पुरुष अलग अलग रहते हैं, हमारी तरह नहीं। इसी दूरी के कारण बोलियों, टप्पों में वियोग की दुःखदायी झलक है। सुन्दर और अच्छी नज़्म के लिए वियोग आवश्यक है।

खबर मिली कि पाकिस्तान ने आक्रमण कर दिया है। पाल वापसी की तैयारियाँ कर रहा था। लाली ने पूछा अचानक वापसी क्यों? पाल ने कहा युद्ध शुरू हो गया

है। दूतघर से संदेश आया है वापस आ जाओ। रंचन ने कहा मैं चार वर्ष तक अमेरिका में रहा, युद्ध देखे, आपको क्या खतरा है? पाल खामोश रहा। फिर कहा नहीं ... आपकी बात और है। मुझे तो जाना ही होगा। वैसे भी दूतघर का आदेश अनदेखा नहीं कर सकते।

लाली, रंचन, राजदां मिलने आए। पाल को, मेम को गले लगकर मिले। रंचन ने कहागले मिलने में समलैंगिकता दिखाई दी? बहुत हँसे।

पाल ने बताया एक सप्ताह बाद यू.पी जाएँगे। वहाँ कुछ विश्वविद्यालयों में लैक्चर हैं। कल शाम को पार्टी है। हाकम ने पूछा कैसी पार्टी? दो अक्तूबर, जन्म दिन है पाल का। हाकम ने कहा वाह, लाल बहादुर शास्त्री और महात्मा गाँधी का जन्मदिन भी है। बधाई। बहुत ही शान से शाम को जन्मदिन मनाया गया। लाली, कंवर मृगेंद्र सिंघ को वादकों सहित ले आया। विचित्र वीणा शुरू हो गई। तबला वादक बहुत ही कुशल थे। कुछ समय पश्चात् ऐसा लगा जैसे बहुत बड़ा मुकाबला हो रहा है। कंवर ने अनेक सुर बजाये, उबड़-खाबड़ से, वीणा वादन रुक जाता ... तबला वादक बहुत ही कुशलता पूर्वक उन सुरों को तबले पर दोहराता, कोई गलती नहीं। पाल हँसने लगा ... संगीत में कबड्डी। पंजाब का नाम कबड्डी ठीक है।

अगले दिन हाकम की जगह राज़दां और रंचन को लेने गई कार का ड्राईवर साधु था। साधु को हाकम के बारे में पूछा। उसने कहा, पता नहींटैक्सी स्टैंड ने मालिक ने मुझे हुक्म दिया मैं आ गया। शायद वह गाँव गया हुआ है। पाल को पूछा उसने कहा, पता नहीं। टैक्सीचालकों ने कहीं और भेज दिया होगा।

शाम को सभी बैठे बातें कर रहे थे। साधु ने विस्की निकाली, कार में से खाने का सामान निकाला। एक बड़ा लोथड़ा भूने हुए पोर्क का था, दूसरा बीफ का। बीअर पहले से ही बहुत रखी थी। पाल ने बीफ का टुकड़ा काटकर कांटे से ऊपर उठाया और व्यंग्य करते हुए कहा कुछ खायेंगे, कुछ नहीं खायेंगे। अपने लिए टुकड़ा काटते हुए रिन ने कहा भारतीयों को कब पता चलेगा ये स्वादिष्ट भोजन है? आप लोगों को तरी के अतिरिक्त कुछ बनाना नहीं आता। पाल ने कहा तुम समझ नहीं सकती रिन, इनका अपना स्टाईल है ... इंडियन वेअ ऑफ कुकिंग, इंडियन वेअ ऑफ ईटिंग, इंडियन वेअ ऑफ वाकिंग, सिंगिंग, डांसिंग... इंडियन वेअ ऑफ मेकिंग लव। हम आपके साथ तीन महीने तक रहे, आपको पता नहीं हमारा भी कोई स्टाईल है, उसमें आप लोगों की कोई दिलचस्पी नहीं। स्वयं इतने गुम हो कि कहीं दूसरी जगह देखते ही नहीं। मैंने हाकम को हटा दिया मेरी इच्छा, सभी इस बात को लेकर मुझसे मन ही मन ख़फ़ा हैं कि क्यों हटाया। आपको इस बात से क्या लेना देना? मुझे अच्छा नहीं लगा हटा दिया। मैं किसी के साथ भावुक क्यों बनूं। आपका व्यवहार भावुक है, यही फ्युडलिज़्म है। मैंने टैक्सी स्टैंड पर मैनेजर को नया ड्राईवर भेजने के लिए कहा, वह साधु को ले आया, कहने लगा इसकी और मेरी चारदीवारी साथ है। एक ही परिवार समझो। इतना पागलपन? ये कैसी योग्यता हुई?

- बिल्कुल ही पागलपन, रिन उससे सहमत थी।

राज़दां ने कहा यदि उसने कहा कि हमें एक ही परिवार के सदस्य समझो, इसमें क्या गलत है?

पाल ने कहा ऐसे तो सारा संसार एक परिवार ही बन गया समझो। खेत से खेत लगता है, सीमा के साथ सीमा लगती है। हमने बिशन रसोईये से कहा कि एक सप्ताह के लिए बिहार जायेंगे, ये जिद्द कर रहा है साथ चलने की ... आपके बिना मेरा मन नहीं लगेगा। क्यों है न कमाल। ये बेकार की भावनाएँ मुझे पसंद नहीं हैं। आपको ये बात समझ में क्यों नही आती?

और कोई बात जो आपको अच्छी नहीं लगती? राज़दां ने पूछा।

- हिंसा। हिन्दुस्तान हिंसक है। तुम तीनों भी। पाल चिल्लाया।

- और कुछ? राज़दां ने पूछा।

कुछ समय तक पाल खामोश रहा। तीनों बाहर जाने के लिए खड़े हो गए।

कहाँ जा रहे हो? अभी तो मैंने बात शुरू की है। आओ बैठो।

नहीं रुके। अपने अपने ठिकाने पर पहुँच कर सो गए। पाल ने वापस आने के लिए संदेश भेजे, कार भेजी, कोई पाल के पास नहीं गया। जिस दिन पाल ने अमेरिका जाना था, अनेक परिचित विदा करने आए। ये तीनों नहीं आए। विदायगी के समय सभी हैरान थे, तीनों यहाँ क्यों नहीं हैं? अनेक लोगों ने पाल से पूछा, रिन को पूछा, दोनों खामोश। इंडो अमेरिकन मित्रता ऐसे नहीं टूटनी चाहिए थी।

रंचन ने कहा वे याद आते रहेंगे। लाली के गाँव की यादें, गिद्धा, नृत्य, लम्बी सैर, विचार-विमर्श, सब स्पष्ट दिखाई देर रहा है। उन्हें हममें कोई अच्छाई दिखाई नहीं दी और अमेरिकी लोगों में कोई दोष नहीं। क्या हमें वो याद करेंगे कभी? शायद हाँ, शायद न। इंसान है आखिर ... यादें पीछा तो नहीं छोड़तीं। किन्तु वे अमेरिकी हैं, भावनाओं से मुक्त ... नहीं, नहीं भावनाओं से नफरत करने वाले। हम इस बात से सन्तुष्ट हैं कि हमने उन्हें प्रेम दिया, साथ दिया, जानकारी दी और फिर रद्द किया। रिजैक्शन ऐबसोलयूट नहीं होती। हम उसी का त्याग करते है, जिससे प्रेम करते हैं। ज़ैन (Zen) अध्यापक कहते हें सत्य दिखाई नहीं देता चिन्ता किस बात की? दिखाई देगा भविष्य में। इस जन्म में न सही अगले जन्म में। आशा का त्याग नहीं करना।

महाराजा दिलीप सिंघ और कोहिनूर हीरे की बातें करते समय मैंने कई बार सिक्खों को रोते देखा है। जितनी मेरी हैसियत है, मैंने अपनी राजधानी फतहगढ़ और उसके महलों को उजड़ते होते देखा है।

पटियाला का गरेवाल खानदान एक प्रतिष्ठित घराना था। उधर सरदार ने अपनी बहू को एक किलो सोना दिया था। कोई बात थी जिसके कारण सरदार सन्तुष्ट नहीं था। ये मत समझना कोई दहेज लेने देने की बात थी। पिता-पुत्र की फकीरी ही तो इस लेख को लिखने के लिए विवश करती रही। किन्तु वे खुश नहीं था। मेरी मामी ने मुझे पास

बिठाकर धीरे से बताया विवाह के पश्चात् कुछ दिनों तक तो लाली अपनी पत्नी के साथ घूमता रहा। फिर फतहगढ़ गाँव चले गए। सारी हवेली खुश थी। वर्षो पश्चात् किसी स्त्री के पाँव घर में पड़े थे... मालिकन का कदम। एक दिन सरदार ने लाली को एक तरफ बुलाकर कहाशहर और गाँव में क्या अन्तर है जानता है लाली? तेरी पत्नी छत्त पर खड़ी होकर केश संवार रही देखी। अन्दर ड्रैसिंग टेबल रखे हैं। गाँव के लोग इन बातों को पसंद नहीं करते। लाली ने पत्नी तक ये संदेश पहुँचा दिया। पत्नी ख़फा होकर पटियाला आ गई। केश कटवा दिए। कहा, अब कभी गाँव नहीं जाएगी। दोहते, मेरा मन उसी दिन से उदास है, जब से मैंने ये खबर सुनी है। बड़े खानदानों की बहू-बेटियाँ बड़े दिल वालीं और दूरद्रष्टा होती हैं। ये शुभ संकेत नहीं है। इस हवेली को नज़र लग गई है। जिस की बात इलाका मानता है, बहू को सबसे पहले उसकी बात माननी चाहिए थी। होना तो ये चाहिए था, जिस संन्यासी ने समस्त उम्र वनवास भोगा, बहू गाँव में रहती। यहाँ कौन सी उसकी सास ननद थी तानें मारने वाली? फतहगढ़ उदास हो गया।

- औरत के बगैर घर वीरान है। औरत के पास घर की चाबियाँ हैं, अन्न के गोदाम की, अलमारियों, संदूकों की। सुबह धूप, शाम को दीया जलाना उसका काम है। ईश्वर का नाम लेकर रसोई में आग जलाती है। सारा परिवार उसका मेहमान है और औरत मेज़बान। वह त्योहारों की तिथियों को याद रखती है, व्रत का उसे पता होता है, मर्दों को उनके पूर्वजों की याद दिलवाती है, उसमें सूक्ष्मता है। मर्दों को खेतों, कामों के अतिरिक्त कुछ पता नहीं होता। जिस घर में औरत नहीं उस घर के आगे तो भिखारी भी नहीं रुकता।

समय भयानक है, पढ़ा, सुना था, इतना भयंकर मैंने पहली बार देखा।

टैगोर ने लिखा रेगिस्तान ने घास की पत्ती के समक्ष प्रेम की पेशकश की। पत्ती ने इंकार किया और भाग गई। रेगिस्तान लाखों वर्षों से विरह की आग में जल रहा है।

जो मित्र लाली को महान् साहित्य पारखी कहते, मैं प्रश्न करताकुछ लिखा है तो दिखाओ। उत्तर मिलता सुकरात ने एक पंक्ति भी नहीं लिखी, तब सुकरात, सुकरात नहीं? मैं दूसरा प्रश्न करता एक युवक जिसका नाम प्लैटो था, अपने गुरू के वचनों में इस कदर बंध गया कि उसके द्वारा सुकरात प्रकट हो गया। मैं आप लोगों को प्लैटो समझता हूँ, आपके माध्यम से लाली प्रकट क्यों नहीं हुआ?

मेरी पत्नी ये लेख लिखने के विरुद्ध है। उसका कहना है पराजित व्यक्ति की कहानी शुरू करने का क्या फायदा? इसमें से किसी को क्या मिलेगा? मैंने कहा विजयी व्यक्ति की कहानी तो सभी लिखते हैं, मैं पराजित नायक की कहानी लिखूंगा। विरुद्ध इस कारण भी है क्योंकि रंगमंच पर मेरी भूमिका बुरी है। पहरेदार की भूमिका मुझे स्वीकार नहीं करनी चाहिए थी। मैं क्या करता? यदि व्यक्ति सूत्रधार होता, मैं स्वयं ही इंकार कर देता। इस नाटक का सूत्रधार ईश्वर है। उसे कौन इंकार कर सकता है? कभी कभी बुरी भूमिका, अच्छे अभिनय के कारण अच्छी लगने लगती है। जो जिम्मेवारी मिली निभाई।

अजीत का विवाह मेरे विवाह से तीन वर्ष पहले हुआ। सरदार बारात में लौंगोवाल आया था जहाँ बारात ठहरी थी। अपने विवाह की तिथि तय होने के बाद मैंने अजीत से पूछा सरदार को कार्ड खुद देने गया था या किसी के हाथ भेजा था? अजीत ने बताया कहाँ, मैंने तो कार्ड नहीं छपवाए थे। हाथ से चिट्ठी लिखकर डाक में डाल दी थी। मैंने भी कार्ड नहीं छपवाए थे, चिट्ठी पोस्ट कर दी। उस घर के बारे में बताया जहाँ बारात जानी थी, मानसा ज़िला बठिण्डा।

सरदार नहीं आया। पता चला पटियाला में है, अपनी पत्नी सहित बहेड़ा रोड चला गया है। चरण छूए, आशीषें मिलीं, शगुन मिला, ठण्डा गर्म पीने खाने को मिला। मैंने पूछा मेरी चिट्ठी नहीं मिली? कहा मिल गई थी। फिर पूछा आए क्यों नहीं? अजीत की बारात में तो आए थे, मुझे लगा आओगे। कहा अजीत तुमसे अधिक समझदार है। चिट्ठी में उसने लिखा था कि अतालां से लौंगोवाल बारात जाएगी, एक गाड़ी फतहगढ़ से आपको लेकर आएगी। सुबह दस बजे तैयार रहना। तूने मानसा जाने के लिए सुनाम में से निकलना था। लिख देता गाड़ी फतहगढ़ में से जाएगी। मैं आ जाता। तुझे और तेरी पत्नी को पता भी नहीं होगा, इसका पिता चहल सरदार मेरा मित्र है। वह मुझसे रुतबे में बड़ा है। मैं एक गाँव का मालिक, वह छह गाँवों का मालिक। गाँववासियों ने चहल सरदार से बात की कि अपने गाँव के पास से रेलगाड़ी निकलती है, रुकती नहीं। हमने मानसा जाना होता है। चहल सरदार ने कहा रुकवा देते हैं। रेल विभाग से बात की, विभाग ने कहा दस एकड़ ज़मीन मुफ्त दे दो, स्टेशन बना देंगे। सरदार ने ज़मीन दे दी। जब पहली बार नरेन्द्रपुरा स्टेशन पर गाड़ी रुकी तक जश्न मनाने वालों में मैं भी था। बेटी तेरे पिता, विस्की पीते थे। अफीम भी खा लेते थे। दो तीन पैग लगाकर घोड़ी पर बैठकर खेतों की तरफ चक्कर लगाते। वर्ष 1962 में चीन से युद्ध शुरू हो गया। अंधेरे में जिस तरफ सरदार ने घोड़ी दौड़ायी, वहाँ खाईयाँ थीं... सायरन सुनते ही खाईयों में जाकर छिप जाओ। सरदार को पता नहीं था। घोड़ी खाई में गिर गई, टांगें टूट गईं, मर गई। चहल सरदार बहुत उदास हुआ और उसने हमेशा के लिए विस्की, अफीम छोड़ दी। अब नहीं, तो कभी नहीं।

कल सिद्धार्थ चित्रकार मिला। लाली को 25 वर्ष से जानता है। मैंने बतायालाली के बारे लिखने की कोशिश कर रहा हूँ, कुछ दिखाई नहीं दे रहा। हँसकर कहा लाली भूत है। दिखाई देने वाला भूत। एक भूत और हो तो लाली को देखे। मैंने कहा दूसरा भूत लाली को ढूंढ लेगा, किन्तु हमें दूसरे ने भी बात समझानी नहीं। हमारे सामने दो भूत होंगे तो मुश्किल और भी बढ़ जाएगी।

सिद्धार्थ ने कहा वह संकेतों, मिथकों और रूपकों के माध्यम से बातें पकड़ने का प्रयास करता है। उसके हाथ, भुजाएँ, आँखें, होठों की अपेक्षा अधिक बात करती हैं। एक दिन जाते जाते रूक गया सड़क के बीच घास उगा हुआ देखा। खड़े हो गए, घास से कहा अरे तुझे न तो गाय खायेगी न भैंस, न भेड़ के काम आओगे न बकरी के।

क्यों उग आए यहाँ? पहियों के नीचे कुचले जाने के लिए? फिर बैठ गए, हमें कहा देखो, ऊपर जाने के लिए जितनी ताकत थी इसने लगा दी, जब थक गया, सिर झुका दिया। ये देखो, झुका हुआ सिर।

*नाद प्रगास* के युवक लाली से मिलने आए। आयु अधिक होने के कारण ज़्यादा बातें नहीं कर पाए। उठे। उनकी दस्तारें सहलाते हुए कहादस्तार के बगैर व्यक्ति लाहौर नहीं जा सकता।

धीरे से ऐसी बात लाली ही कर सकता है। लाहौर पंजाब की दस्तार है। पंजाब जब पंजाब से मिलने की झिझक त्यागेगा उसी समय रेगिस्तान में गुम पुन्नू मिल जाएगा।

पटियाला या फतहगढ़, आज लाली के पास कुछ नहीं। जब सब कुछ था, तब जायदाद पर अभिमान नहीं किया, अब नहीं है तो भी कोई बात नहीं। खाली आकाश को काली घटा ने घेर लिया, देर तक छाई रही, बरसातें हुई, लड़कियाँ खुशी में नाचीं, गीत गाए, फिर आकाश साफ हो गया। तीयां, गीत, घटा के साथ लुप्त हो गईं, लाली दर्शक बना रहा। उसके जैसा अन्य कोई नहीं द्रष्टा। ऋषिओं ने वेद मन्त्र लिखे नहीं, देखे थे, इस कारण जो व्यक्ति ऋषिओं को लेखक कहता है, उसे अनपढ़ समझा जाता है। ऋषि मन्त्र-द्रष्टा थे।

मैडम टिवाणा ने बताया जब सरदार लाली को माँ को विवाह कर लाया था, सास को पता चला सिर गूंथा नहीं हुआ, सग्गी फूल नहीं पहने हैं कहापहले सिर गूंथो फिर रथ से उतार कर पानी पीऊँगी। रथ में सिर गूंथा गया तब सास दरवाज़े पर आई। बहुत सख्त थी वह।

मैंने अपनी पत्नी से बात की, उसने कहा ये सच नहीं है। हमारे खानदानों में बहू-बेटी को दरवाज़े पर खड़ा रखने की परम्परा नहीं है। पहर लगता है सिर गूंथने को, पता है? नाई, नायन, ब्राह्मण, ब्राह्मणी आदि किसलिए होते हैं? किसी रस्म में कोई गलती न हो जाए, ये सलाहकार सतर्क एवं होशियार रहते है। खुले केश अपशकुन की निशानी होते हैं। मैडम टिवाण को गलत सूचना मिली है। हमें उन लोगों का पता है जिन्होंने ये बातें बनाईं।

लाली की प्रेरणा से पात्र और अमितोज ने स्पेनी शायर लोर्का का नाटक *आग के कलीरे* पंजाबी में अनुवाद करके नीलम मान सिंघ के निर्देशन में जब पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ में प्रदर्शित किया तो दर्शक दंग रह गए थे।

*अक्खी ड्डिठा संत जरनैल सिंघ* पुस्तक रचयिता दलबीर सिंघ आप्रेशन ब्लू स्टार के बाद सितम्बर 1984 में गुरदयाल बल के घर C-13, यूनिवर्सिटी कैम्पस में अंडर ग्राऊँड रह रहा था। बल ने लाली को घर बुलाया। केहर सिंघ और बलकार सिंघ पहुँच गए। सिक्ख, सदमे में से थे। माहौल उदास था। लाली ने कहा अकाल तख़्त का निर्माण शीघ्र नहीं होना चाहिए। प्रतिदिन एक ईंट लगानी चाहिए, केवल एक ईंट। फिर उसने स्वतन्त्रता, वीरता, रुदन, युद्ध आदि की बातें सुनाते हुए स्पैनिश साहित्य के आगू सरवांतीज के *डान*

*कविगजोट* से लेकर अब तक के साहित्य की सैर करवाई। यूनानी उपन्यासकार चिंतक निकसो कजांतजैकस की अमर कृति *फ्रीडम एण्ड डैथ* की चर्चा शुरू कर दी। यूनान के समीप द्वीप क्रीट में स्थानीय ईसाई, तुर्कियों से युद्ध कर रहे हैं। माईकल और पाशा *ओडीसी रीविज़िटिड* में योद्धा है। इस पुस्तक में वर्णित स्वतन्त्रता की गाथा सुनाते समय लाली ने आदमज़ात की शान का ऐसा मार्मिक वर्णन किया कि चार घंटों तक कोई कुछ नहीं बोला। अब दलबीर 85 वर्ष का हो गया है। वह उस समय के लाली को आज तक नहीं भूला। फोन पर पूछता है कैसा है बल आपका लाली अब? जीवन में एक बार उससे मिला, उसका चेहरा, 27 वर्षों से मेरी आँखों के आगे सजीव घूम रहा है, उसकी आवाज़ की ध्ुन सुनाई देती है, अंगुलियों की अंगुठियाँ भी आज तक दिखाई दे रही हैं।

प्रत्येक सुबह उसे एक श्रोता चाहिए था। मक्के पर यहूदियों का हमला, कश्मीर का हज़रतबल संकट, मिस्र में मुस्लिम ब्रदरहुड की प्रसिद्धि, श्रीलंका में लिटे की मार्केबाज़ी, बेअंत सिंघ की हत्या या किसी नोबेल पुरस्कार प्राप्त करने वाली की कला एक जैसी रोमांचित शैली में वर्णित करता। रवीन्द्र रवी और बलवंत मागट जैसे उसके विरोधी सिर झुका कर सुनते। ग्लोब उसके लिए छोटी सी गेंद है, कुछ और बड़ी होती तो ठीक होता।

पंजाबी लोक-वेद की जानकारी जितनी लाली को है आज दूसरे को नहीं है। इस कारण लोकवेद के वाक्य द्वारा बात समाप्त करता हूँयदि वश में करने का मन्त्र नहीं आता तो शमशानघाट में जाकर चिता जगानी नहीं चाहिए।

काफ़्का ने लिखा लाखों वर्ष पहले मृत याद में यदि प्राण आ जाएं, फिर वह न तो सोएगी न सोने देगी। लाली और काफ़्का ऐसी ही यादों के नाम हैं।

रंचन, पात्र और सुरेन्द्र शर्मा इस रचना में उतर गए हैं, मैं उनका धन्यवादी हूँ। बल ने कैटालिस्ट का काम किया। मेरी कैमिस्ट्री की पुस्तक का एक अध्याय *कैटालिस्ट* था। कैटालिस्ट की एक्टीवेशन ऐनर्जी थोड़ी सी होती है किन्तु काम कितने बड़े करवा लेता है, हम फार्मूलों से उसका समाधान करते। लाली के प्रश्न का समाधान न हो सका।

लाली के विषय में लिखना प्रारम्भ किया था। पिता उसकी अपेक्षा अधिक उपस्थित है किन्तु लाली भी अनुपस्थित नहीं है। उसकी उपस्थिति और अनुपस्थिति का पता ही नहीं चलता। पंजाबी विश्वविद्यालय में होते हुए भी वह सारी उम्र अनुपस्थित रहा। कैमिस्ट्री ने ऐबसैंट ऐलीमैंट की बात बताई। अब हमारे सामने दो कम्पाऊँड रखे हैं। एक में ऐलीमैंट कभी नहीं आया। दूसरे में आया और चला गया। अब दोनों में ये ऐलीमैंट गैर हाज़िर है, इसलिए बराबर होने चाहिएँ, परन्तु ये दोनों भिन्न भिन्न हैं। ऐलीमैंट गैर हाज़िर हो गया, परन्तु हाज़री लगी हुई है जो उसके आने का बोध करा रही है। अपने आने-जाने की निशानी छोड़कर कम्पाऊँड को प्रभावित कर गया है।

पाठको ने गोर्की द्वारा रचित टॉलस्टाय का शब्द चित्र पढ़ा है। इन दोनों का पारस्परिक सम्बन्ध साहित्य के अतिरिक्त भी था। डांट सुन लेता, तो क्या, फिर से आ जाता। टॉलस्टाय छोटे छोटे काम बताता, खुशी से करता। साहित्य मनफी, मेरा और सरदार

का वही रिश्ता था जो गोर्की और टॉलस्टाय का था। एक अन्तर भी है, टॉलस्टाय की बुरी आदतें, सरदार में नहीं।

मेरे अंग्रेज़ी के अध्यापक प्रोफैसर नरेन्द्र कालिया थे। दो दिन के अवकाश के बाद कक्षा की तरफ आ रहे थे तो मैंने सत् श्री अकाल कहा। उर्दू के शायर थे, कक्षा के बाहर उर्दू में बात करते। मैंने कहा सर, कोई कोई अध्यापक होता है, जो, न आए तो विद्यार्थी उदास होते हैं। उत्तर दिया कोई कोई तालिब ए इलम भी ऐसा होता है, टीचर नज़र दौड़ाता है इधर उधर, उसका प्रिय तालिब ए इलम गैर हाज़िर है, वह भी उदास होता है। बहुत हँसे।

**सूचना**

साहित्य और इतिहास के विद्यार्थियों के लिए इस नाटक के पात्रों के नाम, स्थान और घटनाएँ यथार्थ है। मैं धर्म का विद्यार्थी हूँ। मेरे लिए सब कुछ कल्पित है, मिथ्या, माया। मंच पर केन्द्रिय भूमिका डिऊक की है। अन्य पात्र, अंग्रेज़ी साहित्य में रुचि वाले, पूर्व के बच्चे हैं। कुछ पात्र सीधे हैं कुछ ऐबसर्ड। पूर्व ने पश्चिम से संवाद रचाया। किसका अभिनय अच्छा रहा किसका बुरा, कौन जाने।किसी ने तालियाँ नहीं बजाई। चुपचाप बिना एक दूसरे से बात किए, नज़रें नीचे करके कब्रिस्तान में से दर्शक अपने अपने घरों में चले गए। मैंने कब्र पर दीया जला दिया। क्या पता टप्पे, कव्वालियाँ गाने हेतु कव्वाल आ जाएँ। लाली बारे मेरी ये रचना शायद पहली हो, हे! सच्चे पातशाह, अंतिम कभी न हो। काफ़का के पिता ने कहा था ठीक है, आग में से निकलकर सोना शुद्ध हो जाता है किन्तु व्यक्ति आग में से निकलकर खूनी जानवर बन जाता है।

मैं तुझसे सहमत नहीं हूँ पिता। तेरा कथन पश्चिम के लिए उचित है। मैं पूर्वी हूँ। आग में से निकल कर पूर्वी व्यक्ति साधु बन जाता है, शुद्ध सोना। जैसे डिऊक।